**अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन**

**सहज**

**मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद**

**पर आधारित**

**मानवीय आचार संहिता**

**रूपी**

**संविधान व्यवस्था  
 सूत्र व्याख्या**

Definition and Description of the Constitutional System

as Code of Humane Conduct

English translation version by: Sanjeev Chopra, New Delhi, India

schopra45@yahoo.com

Draft / Work-in-progress

ए. नागराज

श्री भजनाश्रम, अमरकंटक

जिला – अनूपपुर, म. प्र. (भारत) – 484886

Status as on 2 April, 2024

Pages translated (draft translation / first round) = 229 pages + 1 (Part-3)

= 230 out of 304 pages (of Hindi book)

| 1 | Draft translation (first round by translator)  (doing Part-3 now, pages 23-30, completed till 23)  (Part-4, pages 31-49)  (Part-5, pages 50-64)  (Part-6, pages 65-97)  (Part-1, 2, 7, 8, 9,10, 11, 12 completed = 6+16+65+ 30+23+10+12+67 = 229 pages) | Started on 8 Sept, 2023 |
| --- | --- | --- |
| 2 | Target for completion of draft translation | 31 Aug 2025 |
| 3 | Own review (second round by translator) | Later |
| 4 | Peer review | Later |

प्रकाशक :

जीवन विद्या प्रकाशन, दिव्यपथ संस्थान

अमरकंटक, जिला - अनूपपुर (म.प्र.), भारत, 484886

www.divya-path.org | info@divya-path.org

प्रणेता एवं लेखक :

ए. नागराज

सर्वाधिकार दिव्यपथ संस्थान के पास सुरक्षित

सहयोग राशि : 200/-

पूर्व संस्करण :प्रथम – 2007, द्वितीय - 2009

मुद्रण :जुलाई - 2022

ISBN : **978-81-956883-5-7**

प्रामाणिक वेबसाइट :www.madhyasth.org मुद्रक : युगबोध डिजिटल प्रिंटर्स,

प्रिंटेड पुस्तक प्राप्ति :books@divya-path.org समता कॉलोनी, रायपुर, छ.ग. – 492010  
 **All Websites :** www.jvidya.com

सदुपयोग नीति :

यह प्रकाशन ‘सर्वशुभ’ के अर्थ में है और इसका कोई व्यापारिक उद्देश्य नहीं है। इसका उपयोग एवं नकल, निजी अध्ययन के लिए उपलब्ध है। इसके अलावा किसी भी अर्थ में प्रयोग (नकल, मुद्रण, आदि) करने के लिए ‘दिव्यपथ संस्थान’, अमरकंटक, जिला अनुपपुर (म.प्र.) भारत - 484886 से पूर्व में लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है। यह अपेक्षित है की इन अवधारणाओं को दूसरी जगह प्रयोग करते समय इस ग्रंथ का पूर्ण उद्धरण (संदर्भ) दिया जाएगा। कृपया दर्शन की पवित्रता बनाये रखें।

**विकल्प**

1. अस्थिरता, अनिश्चयता मूलक भौतिक-रासायनिक वस्तु केन्द्रित विचार बनाम विज्ञान विधि से मानव का अध्ययन नहीं हो पाया। रहस्य मूलक आदर्शवादी चिंतन विधि से भी मानव का अध्ययन नहीं हो पाया। दोनों प्रकार के वादों में मानव को जीव कहा गया है।

विकल्प के रूप में अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन विधि से मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्ववाद में मानव को ज्ञानावस्था में होने का पहचान किया एवं कराया।

मध्यस्थ दर्शन के अनुसार मानव ही ज्ञाता (जानने वाला), सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व जानने-मानने योग्य वस्तु अर्थात् जानने के लिए संपूर्ण वस्तु है यही दर्शन ज्ञान है इसी के साथ जीवन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान सहित सहअस्तित्व प्रमाणित होने की विधि अध्ययनगम्य हो चुकी है।

अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन ज्ञान, मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्ववाद-शास्त्र रूप में अध्ययन के लिए मानव सम्मुख मेरे द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

2. अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन के पूर्व मेरी (ए. नागराज, अग्रहार नागराज, जिला हासन, कर्नाटक प्रदेश, भारत) दीक्षा अध्यात्मवादी ज्ञान वैदिक विचार सहज उपासना कर्म से हुई।

3. वेदान्त के अनुसार ज्ञान “ब्रह्म सत्य, जगत मिथ्या” जबकि ब्रह्म से जीव जगत की उत्पत्ति बताई गई।

उपासना :- देवी देवताओं के संदर्भ में।

कर्म :- स्वर्ग में मिलने वाले सभी कर्म (भाषा के रूप में)

मनु धर्म शास्त्र में :- चार वर्ण चार आश्रमों का नित्य कर्म प्रस्तावित है।

कर्मकाण्डों में :- गर्भ संस्कार से मृत्यु संस्कार तक सोलह प्रकार के कर्मकाण्ड मान्य है एवं उनके कार्यक्रम है।

इन सबके अध्ययन से मेरे मन में प्रश्न उभरा कि -

4. सत्यम् ज्ञानम् अनन्तम् ब्रह्म से उत्पन्न जीव जगत मिथ्या कैसे है? तत्कालीन वेदज्ञों एवं विद्वानों के साथ जिज्ञासा करने के क्रम में मुझे :-

समाधि में अज्ञात के ज्ञात होने का आश्वासन मिला। शास्त्रों के समर्थन के आधार पर साधना, समाधि, संयम कार्य संपन्न करने की स्वीकृति हुई। मैंने साधना, समाधि, संयम की स्थिति में संपूर्ण अस्तित्व सहअस्तित्व होने, रहने के रूप में अध्ययन, अनुभव विधि से पूर्ण समझ को प्राप्त किया जिसके फलस्वरूप मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद वाङ्गमय के रूप में विकल्प प्रकट हुआ।

5. आदर्शवादी शास्त्रों एवं रहस्य मूलक ईश्वर केन्द्रित चिंतन ज्ञान तथा परंपरा के अनुसार - ज्ञान अव्यक्त अनिर्वचनीय।  
 मध्यस्थ दर्शन के अनुसार - ज्ञान व्यक्त वचनीय अध्ययन विधि से बोधगम्य, व्यवहार विधि से प्रमाण सर्व सुलभ होने के रूप में स्पष्ट हुआ।

6. अस्थिरता, अनिश्चियता मूलक भौतिकवाद के अनुसार वस्तु केन्द्रित विचार में विज्ञान को ज्ञान माना जिसमें नियमों को मानव निर्मित करने की बात कही गयी है। इसके विकल्प में सहअस्तित्व रुपी अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन ज्ञान के अनुसार अस्तित्व स्थिर, विकास और जागृति निश्चित संपूर्ण नियम प्राकृतिक होना, रहना प्रतिपादित है।

7. अस्तित्व केवल भौतिक रासायनिक न होकर भौतिक रासायनिक एवं जीवन वस्तुएं व्यापक वस्तु में अविभाज्य वर्तमान है यही “मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद” शास्त्र सूत्र है।

**सत्यापन**

8. मैंने जहाँ से शरीर यात्रा शुरू किया वहाँ मेरे पूर्वज वेदमूर्ति कहलाते रहे। घर-गाँव में वेद व वेद विचार संबंधित वेदान्त, उपनिषद तथा दर्शन ही भाषा ध्वनि-धुन के रूप में सुनने में आते रहे। परिवार परंपरा में वेदसम्मत उपासना, आराधना, अर्चना, स्तवन कार्य संपन्न होता रहा।

9. हमारे परिवार परंपरा में शीर्ष कोटि के विद्वान सेवाभावी तथा श्रमशील व्यवहाराभ्यास एवं कर्माभ्यास सहज रहा जिसमें से श्रमशीलता एवं सेवा प्रवृत्तियाँ मुझको स्वीकार हुआ। विद्वता पक्ष में प्रश्नचिन्ह रहे।

10. प्रथम प्रश्न उभरा कि -

ब्रह्म सत्य से जगत व जीव का उत्पत्ति मिथ्या कैसे?

दूसरा प्रश्न -

ब्रह्म ही बंधन एवं मोक्ष का कारण कैसे?

तीसरा प्रश्न -

शब्द प्रमाण या शब्द का धारक वाहक प्रमाण?

आप्त वाक्य प्रमाण या आप्त वाक्य का उद्गाता प्रमाण?

शास्त्र प्रमाण या प्रणेता प्रमाण?

समीचीन परिस्थिति में एक और प्रश्न उभरा

चौथा प्रश्न -

भारत में स्वतंत्रता के बाद संविधान सभा गठित हुआ जिसमें राष्ट्र, राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय चरित्र का सूत्र व्याख्या ना होते हुए जनप्रतिनिधि पात्र होने की स्वीकृति संविधान में होना।

वोट-नोट (धन) गठबंधन से जनादेश व जनप्रतिनिधि कैसा?

संविधान में धर्म निरपेक्षता - एक वाक्य एवं उसी के साथ अनेक जाति, संप्रदाय, समुदाय का उल्लेख होना।

संविधान में समानता - एक वाक्य, उसी के साथ आरक्षण का उल्लेख और संविधान में उसकी प्रक्रिया होना।

जनतंत्र - शासन में जनप्रतिनिधियों की निर्वाचन प्रक्रिया में वोट नोट का गठबंधन होना।

ये कैसा जनतंत्र है?

11. इन प्रश्नों के जंजाल से मुक्ति पाने को तत्कालीन विद्वान, वेदमूर्तियों, सम्माननीय ऋषि महर्षियों के सुझाव से -

(1) अज्ञात को ज्ञात करने के लिए समाधि एक मात्र रास्ता बताये जिसे मैंने स्वीकार किया।

(2) साधना के लिए अनुकूल स्थान के रूप में अमरकण्टक को स्वीकारा।

(3) सन् 1950 से साधना कर्म आरम्भ किया।

सन् 1960 के दशक में साधना में प्रौढ़ता आया।

(4) सन् 1970 में समाधि संपन्न होने की स्थिति स्वीकारने में आया। समाधि स्थिति में मेरे आशा विचार इच्छायें चुप रहीं। ऐसी स्थिति में अज्ञात को ज्ञात होने की घटना शून्य रही यह भी समझ में आया। यह स्थिति सहज साधना हर दिन बारह (12) से अट्ठारह (18) घंटे तक होता रहा।  
 समाधि, ध्यान, धारणा क्रम में संयम स्वयम् स्फूर्त प्रणाली मैंने स्वीकारा। दो वर्ष बाद संयम होने से समाधि होने का प्रमाण स्वीकारा। समाधि से संयम संपन्न होने की क्रिया में भी 12 घंटे से 18 घंटे लगते रहे। फलस्वरूप संपूर्ण अस्तित्व सहअस्तित्व सहज रूप में रहना, होना मुझे अनुभव हुआ। जिसका वाङ्गमय “मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद” शास्त्र के रूप में प्रस्तुत हुआ।

12. सहअस्तित्व :- व्यापक वस्तु में संपूर्ण जड़ चैतन्य संपृक्त एवं नित्य वर्तमान होना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- परमाणु में विकासक्रम के रूप में भूखे एवं अजीर्ण परमाणु एवं परमाणु में ही विकास पूर्वक तृप्त परमाणुओं के रूप में ‘जीवन’ होना, रहना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- गठनपूर्ण परमाणु चैतन्य इकाई – ‘जीवन’ रूप में होना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- भूखे व अजीर्ण परमाणु अणु व प्राणकोषाओं से ही संपूर्ण भौतिक व रासायनिक रचनायें तथा परमाणु अणुओं से रचित धरती तथा अनेक धरतियों का रचना स्पष्ट होना समझ में आया।

13. अस्तित्व में भौतिक रचना रुपी धरती पर ही यौगिक विधि से रसायन तंत्र प्रक्रिया सहित प्राणकोषाओं से रचित रचनायें संपूर्ण वन-वनस्पतियों के रूप में समृद्ध होने के उपरांत प्राणकोषाओं से ही जीव शरीरों का रचना रचित होना और मानव शरीर का भी रचना संपन्न होना व परंपरा होना समझ में आया।

14. सहअस्तित्व में ही :- शरीर व जीवन के संयुक्त रुप में मानव परंपरा होना समझ में आया।

सहअस्तित्व में, से, के लिए :- सहअस्तित्व नित्य प्रभावी होना समझ में आया। यही नियतिक्रम होना समझ में आया।

15. नियति विधि :- सहअस्तित्व सहज विधि से ही :-

(i) अस्तित्व में चार अवस्थाएं

o पदार्थ अवस्था

o प्राण अवस्था

o जीव अवस्था

o ज्ञान अवस्था

और

(ii) अस्तित्व में चार पद

o प्राणपद

o भ्रांति पद

o देव पद

o दिव्य पद

(iii) और

o विकास क्रम, विकास

o जागृति क्रम, जागृति

तथा जागृति सहज मानव परंपरा ही मानवत्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी नित्य वैभव होना समझ में आया। इसे मैंने सर्वशुभ सूत्र माना और सर्वमानव में शुभापेक्षा होना स्वीकारा फलस्वरूप चेतना विकास मूल्य शिक्षा, संविधान, आचरण व्यवस्था सहज सूत्र व्याख्या, मानव सम्मुख प्रस्तुत किया हूँ।

*भूमि स्वर्ग हो, मनुष्य देवता हो,*

*धर्म सफल हो, नित्य शुभ हो।*

**- ए. नागराज**

**मध्यस्थ दर्शन के मूल तत्व**

**1.** **उद् घोष**

· जीने दो और जियो।

**2.** **मंगल-कामना**

· भूमि: स्वर्गताम् यातु,

मानवो यातु देवताम्,

धर्मो सफलताम् यातु,

नित्यम् यातु शुभोदयम्॥

· भूमि स्वर्ग हो,

मानव देवता हों,

धर्म सफल हो,

नित्य मंगल हो॥

**3.** **अनुभव ज्ञान**

· सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति, सत्ता (व्यापक) में सम्पृक्त जड़-चैतन्य इकाईयाँ अनन्त।

· व्यापक (पारगामी व पारदर्शी) सत्ता में सम्पृक्त सभी इकाईयाँ रूप, गुण, स्वभाव व धर्म सम्पन्न, त्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में है।

**4.** **सिद्धान्त**

· श्रम-गति-परिणाम।

**5.** **उपदेश**

· जाने हुए को मान लो।

· माने हुए को जान लो।

**6.** **स्थिति**

· स्थितिपूर्ण सत्ता में सम्पृक्त स्थितिशील प्रकृति।

· सहअस्तित्व नित्य वर्तमान।

**7.** **प्रमाण**

· अनुभव व्यवहार प्रयोग

· अनुभव ही प्रमाण परम

प्रमाण ही समझ ज्ञान

समझ ही प्रत्यक्ष,

प्रत्यक्ष ही समाधान, कार्य-व्यवहार,

कार्य-व्यवहार ही प्रमाण,

प्रमाण ही जागृत परंपरा,

जागृत परंपरा ही सहअस्तित्व।

**8.** **यथार्थ**

· ब्रह्म सत्य, जगत शाश्वत।

· ब्रह्म (सत्ता) व्यापक, जीवन पुंज अनेक।

· जीवन पुंज में अविभाज्य आत्मा, बुद्धि, चित्त, वृत्ति, मन।

जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में मानव का वैभव।

· ईश्वर व्यापक, देवता अनेक।

· मानव जाति एक, कर्म अनेक।

· भूमि (अखण्ड राष्ट्र) एक, राज्य अनेक।

· मानव धर्म एक, समाधान अनेक।

· जीवन नित्य, जन्म-मृत्यु एक घटना।

**9.** **वास्तविकता**

· सहअस्तित्व में विकास क्रम, विकास।

· जागृति क्रम, जागृति।

· जागृति पूर्वक अभिव्यक्तियाँ समझदार मानव परंपरा।

**10.** **ज्ञान**

· सहअस्तित्व में जीवन ज्ञान।

· सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान।

· मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान।

· अनुभव ही ज्ञान।

**11.** **अनुसंधान**

· गठनपूर्णता।

· क्रियापूर्णता।

· आचरणपूर्णता।

**12.** **आधार**

· सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति (सहअस्तित्व)।

**13.** **प्रतिपादन**

· भौतिक रासायनिक प्रकृति ही विकास क्रम में है। परमाणु ही विकसित रूप में चैतन्य इकाई है।

· चैतन्य इकाई अर्थात् जीवन ही जागृति पूर्वक मानव परंपरा में अखण्ड सामाजिकता सहज प्रमाण।

· सतर्कतापूर्ण मानवीयता, देव मानवीयता एवं सामाजिकता।

· सजगतापूर्ण दिव्य मानवीयता।

· गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता एवं आचरणपूर्णता।

**14.** **सत्यता**

· सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति ही सृष्टि।

· प्रकृति ही नियति।

· नियति ही व्यवस्था।

· व्यवस्था ही विकास एवं जागृति।

· विकास एवं जागृति ही सृष्टि है।

· नियम ही न्याय, न्याय ही धर्म, धर्म ही सत्य, सत्य ही ऐश्वर्य (सहअस्तित्व), ऐश्वर्यानुभूति ही आनंद, आनंद ही जीवन, जीवन में नियम है।

· भ्रमित मानव ही कर्म करते समय स्वतंत्र एवम् फल भोगते समय परतन्त्र है।

· जागृत मानव कर्म करते समय तथा फल भोगते समय स्वतंत्र है।

**15.** **मानव शरण**

· अखण्ड सामाजिकता सार्वभौम व्यवस्था (सहअस्तित्व) सहज प्रमाण परंपरा।

**16.** **मानवीय व्यवस्था**

· मानवीयता। मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

**17.** **व्यक्ति में पूर्णता**

· क्रियापूर्णता।

· आचरणपूर्णता।

**18.** **समाज में पूर्णता**

· सर्वतोमुखी समाधान।

· समृद्धि।

· अभय।

· सहअस्तित्व सहज प्रमाण परंपरा।

**19.** **राष्ट्र में पूर्णता**

· कुशलता।

· निपुणता।

· पाण्डित्य।

**20.** **अन्तर्राष्ट्र में पूर्णता (अखण्ड राष्ट्र)**

· मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था में एकात्मता (सार्वभौमता)।

**21.** **मानव धर्म**

· सुख, शान्ति, संतोष एवं आनंद।

**22.** **धर्म नीति का आधार**

· तन, मन तथा धन रूपी अर्थ के सदुपयोग हेतु व्यवस्था।

**23.** **राज्य नीति का आधार**

· तन, मन तथा धन रूपी अर्थ की सुरक्षा हेतु व्यवस्था।

**24.** **अनुगमन और चिंतन**

· स्थूल से सूक्ष्म।

· सूक्ष्म से कारण।

· कारण से महाकारण।

**25.** **जागृति का प्रमाण**

· अमानवीयता से मानवीयता।

· मानवीयता से देव मानवीयता।

· देव मानवीयता से दिव्य मानवीयता।

**26.** **मांगल्य**

· जीवन मंगल।

· उदय मंगल।

· समाधान मंगल।

· अनुभव मंगल।

· जागृति मंगल।

**27.** **सर्व मांगल्य**

· मानव के चारों आयाम (कार्य, व्यवहार, विचार व अनुभूति), पाँचों स्थिति (व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र व अन्तर्राष्ट्र) तथा दश सोपानीय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में निर्विषमता (सामरस्यता) एवं एकसूत्रता।

**28.** **महा मांगल्य**

· सत्यानुभूति जागृति (भ्रम मुक्ति)।

**29.** **उपलब्धि**

· सहअस्तित्व में स्थापित मूल्यों में अनुभूति।

· समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण - यही सर्वशुभ।

· भ्रम मुक्ति और नित्य जागरण।

**30.** **शिक्षा में पूर्णता**

· चेतना विकास मूल्य शिक्षा।

· कारीगरी (तकनीकी) शिक्षा।

**31.** **परंपरा में सम्पूर्णता**

· मानवीय शिक्षा संस्कार।

· मानवीय संविधान।

· मानवीय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था।

**विकल्प में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा**

**अ** - (**अ**) (**आ**)

1. अस्तित्व - होना, निरंतर होना, सहज रूप में रहना।

2. अविभाज्य - व्यापक वस्तु में एक-एक वस्तुओं का निरंतर क्रियाशीलता, निरंतर वर्तमान रहना।

3. आश्रम - श्रमपूर्वक मानव चेतना अनुसार प्रमाण प्रस्तुत करना। प्रयत्न पूर्वक मानव चेतना अनुसार प्रमाण प्रस्तुत करना।

4. अनन्त - जो गणितीय विधि से गणना समझ में नहीं आया - होने की संभावना रहे। कल्पना में हो समझ में नहीं आया हो - ज्ञात होने की संभावना हो।

5. अध्ययन - अनुभव सहज प्रकाश में स्मरण पूर्वक किया गया क्रियाकलाप एवं समझने का प्रयास।

6. अखण्ड समाज - मानव जाति, धर्म, राज्य व्यवस्था में एकरूपता संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था में एकरूपता सहज वर्तमान परंपरा।

7. अध्ययनगम्य - अध्ययनपूर्वक अस्तित्व सहज वस्तु समझ में आना।

8. अजीर्ण परमाणु - परमाणु के तृप्त होने में जितने अंशों की आवश्यकता सुनिश्चित रहती है उससे अधिक अंशों का गठन होना विकिरणीयता प्रभाव को प्रसारित करते रहने और अपने से कुछ अंशों को विसर्जित करने के लिए प्रयत्नशील रहना।

9. अणु - जड़ परमाणुओं का संगठित रूप, एक से अधिक परमाणुओं का संयुक्त क्रियाकलाप।

10. अपराध - पर-धन, पर-नारी, पर-पुरुष, पर-पीड़ाकारी कार्य व्यवहार एवं संग्रह सुविधा को आजीविका मान लिया हुआ पशु मानव, राक्षस मानव।

11. आवर्तनशीलता - जागृत मानव परंपरा में ही हर उत्पादन के लिए स्त्रोत बनाये रखते हुऐ उत्पादन पूर्वक समृद्ध होना।

12. अभय - वर्तमान में विश्वास सम्पन्न मानव ही अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या सहज प्रमाण।

13. अर्पण - कुछ देकर लेने की विधि से अर्पण। लेने की अपेक्षा सहित श्रम सेवा नियोजन क्रिया।

14. अमरत्व - परिणाम का अमरत्व अमर है। गठनपूर्णता = जीवन।

15. अभ्युदय - सर्वतोमुखी समाधान प्रमाण वर्तमान।

16. आशा - सुख पूर्वक जीने की आशा।

**इ**-**ई**

17. इच्छा - दर्शन एवं उसके प्रगटन की संयुक्त चिंतन क्रिया का चित्रण।

18. ईमानदारी - सर्वशुभ सम्पन्न समझदारी को प्रमाणित करने के लिए निश्चित योजना तैयार करना।

**उ**-**ऊ**, **ए**

19. उभयतृप्ति - कम से कम दो या दो से अधिक संबंधों में मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभयतृप्ति।

20. उपकार - समझदार समृद्धि सम्पन्न होना, समझदार समृद्धिपूर्वक जीने देना और जीना।

21. उपासना - उपाय पूर्वक वांछित वस्तु का अध्ययन स्वीकृति प्राप्ति प्रमाण।

22. ऐषणा - ऐषणाओं (पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा) का प्रगटन।

**क**

23. कर्म - उत्पादन कर्म (आहार-आवास-अलंकार) = सामान्याकांक्षा, (दूरदर्शन-दूरश्रवण-दूरगमन) = महत्वाकांक्षा संबंधी यन्त्र, उपकरणों का निर्माण।

24. कार्य योजना - योजना को क्रियान्वयन करना।

कार्य व्यवहार - मानव के साथ व्यवहार, जड़ प्रकृति के साथ उत्पादन के लिए कार्य।

25. कर्माभ्यास - प्राकृतिक ऐश्वर्य पर उपयोगिता मूल्य - कला मूल्य को स्थापित करने का क्रियाकलाप में पारंगत होना।

26. कामोन्माद - यौन विचार में लिप्त विवश मानव।

**ख**

27. खनिज - ठोस धरती में से वांछित वस्तु को खोदकर निकलने वाली वस्तु।

**ग**

28. गति - स्थानांतरण परिवर्तन, त्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

**च**

29. चेतना विकास - जीव चेतना से मानव चेतना श्रेष्ठ, मानव चेतना से देव चेतना श्रेष्ठतर, देव चेतना से दिव्य चेतना श्रेष्ठतम।

30. चैतन्य - गठन पूर्ण परमाणु, चैतन्य इकाई, जीवन।

31. चिंतन - इच्छाशक्ति में, से, के लिए परिमार्जन अनुभव प्रमाण मूलक सहज प्रगटन क्रिया।

**ज**

32. जीवन ज्ञान - गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता को समझना समझाना।

33. जीवन वस्तु - जीने की आशा विचार इच्छा ऋतंभरा अनुभव सहज प्रमाण प्रस्तुत होना।

34. जड़ - पदार्थ और प्राणावस्था सहज क्रियाकलाप, जो जितना लंबा-चौड़ा-ऊँचा रहता है वह उतने ही विस्तार में क्रियाशील रहना।

35. जगत - भौतिक रासायनिक संसार।

36. जीवावस्था - जीने की आशा सहित अनेक वंश के रूप में वर्तमान।

37. जागृति सहज मानव परंपरा - समझदारी सहज सर्वतोमुखी समाधान के रूप में प्रमाणित करने का परंपरा। शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा, संयम, उत्पादन-कार्य, विनिमय-कोष, स्वास्थ्य विधि से प्रमाण।

38. जीवन मूल्य - सुख, शांति, संतोष, आनंद।

39. जिम्मेदारी - कार्य-व्यवहार योजना में अनुभव सहज वैभव को परिणित करना।

**द**

40. देव पद चक्र - मानव चेतना सहज प्रवृत्ति में गुणात्मक विकास रूप में देव चेतना में, और देव चेतना ह्रास होकर मानव चेतना में परिवर्तित होना।

41. दिव्य पद - दिव्य चेतना उपकार प्रधान विधि नित्य वर्तमान आचरणपूर्णता उपकार प्रवृत्ति सहज प्रमाण।

42. दर्शन - स्थिति गति (रूप, गुण, स्वभाव, धर्म समेत स्वीकृति) मूल्यांकन वर्तमान प्रमाण।

43. दृश्य - व्यापक वस्तु में, से, के लिए अविभाज्य रूप में होना।

44. दृष्टा - दृश्य स्थिति, वस्तु स्थिति, वस्तुगत सत्य को समझना समझाना।

45. दर्शन ज्ञान - स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य सहज समझ स्वीकृति प्रमाण।

46. दीक्षा - समझने समझाने के लिए निश्चित विधि स्वीकृति और निष्ठा।

**ध**

47. धरती - पदार्थावस्था के अणुओं से रचित वृहद् रचना जिस पर प्राण, जीव व ज्ञानावस्था प्रकट हो सके।

**न**

48. नश्वरत्व - परिणाम परिवर्तनशीलता सहज परंपरा।

49. नित्य वैभव - हर अवस्था और पद अपने यथास्थिति सहज परंपरा में वैभव एवं नित्य वर्तमान।

50. नियति क्रम - पदार्थावस्था से प्राणावस्था, प्राणावस्था से जीवावस्था, जीवावस्था से ज्ञानावस्था सहज प्रगटन परंपरा विधि से त्व सहित व्यवस्था है।

51. नियति विधि - पदार्थ, प्राण, जीव, ज्ञानावस्था का निश्चित आचरण।

52. नित्य - निरंतर, सदा-सदा।

53. नियंत्रण - त्व सहित व्यवस्था - समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

54. नियम - आचरण।

55. न्याय - संबंध-मूल्य-मूल्यांकन-उभय तृप्ति व निरंतरता।

**प**

56. परिणाम - परमाणु में परिणाम परमाणु में अंश संख्या घटना-बढऩा।

57. प्रमाण - परंपरा रूप में प्रकट होते रहना। प्रकटन की निरंतरता।

58. प्रकृत्ति - पहले से ही होने में प्रमाण और होने का सूत्र व्याख्या सम्पन्नता।

59. परमाणु - ज्यादा कम से मुक्त त्व सहित व्यवस्था। समग्र व्यवस्था में भागीदारी- उपयोगिता-पूरकता सहज मूल इकाई-जड़ प्रकृति के रूप में।

60. प्राणकोश - प्राण सूत्र - रचना तत्व - पुष्टि तत्व का संयुक्त रूप में रचित रचना और श्वसन-प्रश्वसन सहित रचना विधि सहज रचना प्रवृत्ति सम्पन्न इकाई।

61. पदार्थावस्था - पद भेद से अर्थ भेद प्रगट करने वाला।

62. प्राण पद चक्र - पदार्थावस्था से प्राणावस्था। प्राणावस्था से पदार्थावस्था में परिणितीयाँ।

63. प्रलोभन - शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गंध इंद्रियों के अनुकूल के प्रति विवश होना।

64. प्रणेता - प्रेरणा पाने का स्त्रोत देने वाला। परिपूर्ण रूप में स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य के रूप में स्पष्ट करना।

**फ**

65. फल - योजना के क्रियान्वयन से जो उपलब्धियाँ स्पष्ट हुई।

**ब**

66. ब्रह्म - व्यापक वस्तु का नाम।

67. बंधन - भ्रम, अतिव्याप्ति, अनाव्याप्ति, अव्याप्ति दोष।

**भ**

68. भागीदारी - फल-परिणाम को स्वीकारने के लिए किया गया क्रियाकलाप।

69. भय - जीव चेतना वश संबंधों में विश्वास नहीं हो पाना और प्रमाणित नहीं हो पाना, अपेक्षा बना रहना।

70. भोगोन्माद - शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध इंद्रियों में अनुकूलता करने में प्रवृत्ति और विवशता।

71. भ्रांतिपद - जीवों के समान जीते हुए मानव का भ्रमित मानव पद में होना एवं भ्रमित मानव पद से पुनः जीव चेतना पद में होने का चक्र, जीवावस्था से भ्रांत मानव रूप में होना और भ्रांत मानव जीव रूप में होने की आवर्तन क्रिया।

72. भूखा परमाणु - तृप्त परमाणु में जितने संख्यात्मक अंशों का रहना है उससे कम रहना।

73. भौतिक वस्तु - परमाणु अणु रचित स्वरूप में वर्तमान।

**म**

74. मानव - मनाकार को साकार करने वाला मनः स्वस्थता को प्रमाणित करने वाला।

75. मानवीयता पूर्ण आचरण - मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहज प्रमाण परंपरा।

76. मध्यस्थ दर्शन - होने में, से, के लिए निरंतरता सहज सूत्र व्याख्या।

77. मोक्ष - भ्रम मुक्ति, जागृति।

78. मानव मूल्य - धीरता दया

वीरता कृपा

उदारता करुणा।

79. मूल्य शिक्षा - जीवन मूल्य - मानव मूल्य - स्थापित मूल्य - शिष्ट मूल्य - उपयोगिता मूल्य - कला मूल्यों का कर्माभ्यास व्यवहाराभ्यास कराने वाला शिक्षा कार्यक्रम।

**य**, **र**

80. योजना - योग संयोग से वांछित उपलब्धि के लिए निर्णय करना।

81. रहस्य - होने का एहसास होते हुए समझ ना हो पाना, स्पष्ट ना हो पाना।

82. रासायनिक वस्तु - यौगिक क्रियापूर्वक भौतिक आचरण से भिन्न आचरण में वर्तमान होना (जैसे पानी = एक जलाने वाला, एक जलने वाला योग होने से प्यास बुझाने वाली वस्तु)।

83. राष्ट्र - धरती सहज अखण्ड सूत्र व्याख्या।

84. राष्ट्रीयता - अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या।

85. राष्ट्रीय चरित्र - जागृत मानव परंपरा सहज रूप में धरती पर अखण्ड समाज रूप में समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व प्रमाण परंपरा रूप में वैभवित होना।

86. रचना - धरती जैसे बड़े रचना में ही संपूर्ण प्रकार से हरियाली जंगल-झाड़ी, पौधे-वनस्पतियाँ, औषधियाँ बीज-वृक्ष विधि से परंपरा रूप में सम्पन्न क्रियाकलाप और जीव व मानव शरीर रचनाएँ।

87. रसायन तंत्र - धरती पर पानी संयोग होने से पानी में क्षार और अम्ल का संयोग से पुष्टि तत्व, रचना तत्व प्रगट। इसी से उपजा हुआ अनेक रसायन तत्व का संयुक्त कार्यकलाप।

88. राक्षस मानव - जीव चेतना क्रम में क्रूरता पूर्वक जीने वाला।

**ल**

89. लाभोन्माद - कम देकर ज्यादा लेने का दुष्ट प्रवृत्ति और कार्य।

**व**

90. विचार - क्रियान्वयन में तर्क संगत निश्चयनों की स्वीकृति।

91. वाद - विश्लेषण कारण गुण सम्मत युक्त गणितात्मक विधि से प्रमाण और वर्तमान।

92. वर्ण - जो जिस अवस्था की चेतना विधि से सम्पन्न है वही उसका वर्ण (जीव चेतना-मानव चेतना-देव चेतना-दिव्य चेतना)।

93. विकल्प - परंपरा सहज गति में प्राप्त समस्याओं का समाधान।

94. व्यापक - सर्वत्र विद्यमान - जड़ चैतन्य प्रकृत्ति में, से, के लिए प्राप्त सत्ता। जड़ प्रकृति में साम्य ऊर्जा सम्पन्नता और चैतन्य प्रकृति में संवेदनशीलता और संज्ञानीयता।

95. वर्तमान - वर्तते रहना। स्थिति गति रूप में होते रहना।

96. व्यवहाराभ्यास - संबंधों के साथ समाधान, समृद्धि पूर्वक मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहित जीने का अभ्यास।

97. विद्वता - स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य सहज अनुभव प्रमाण। ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता वर्तमान प्रमाण।

98. वस्तु - वास्तविकता प्रगट रहना (होना रहना, होने रहने की महिमा उपयोगिता-पूरकता सहज प्रमाण)।

99. व्यवहारवाद - संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभयतृप्ति, स्वधन, स्वनारी, स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार, तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा संबंधी तर्क प्रयोजन सहित क्रियान्वयन के लिए आवश्यक अध्ययन और वार्तालाप।

100. वस्तु स्थिति सत्य - देश काल दिशा।

वस्तु गत सत्य - रूप, गुण, स्वभाव, धर्म।

**स**

101. संबंध - (i) शरीर संबंध (ii) मानव संबंध (iii) शिक्षा संबंध

(iv) व्यवस्था संबंध (v) उत्पादन संबंध (vi) विनिमय संबंध

(vii) नैसर्गिक संबंध

102. स्थिति सत्य - सत्ता में संपृक्त प्रकृति।

103. समझदारी - ज्ञान, विवेक, विज्ञान।

104. समर्पण - लेने की इच्छा से मुक्त प्रदान क्रिया।

105. सभ्यता - विधि व्यवस्था में भागीदारी, व्यवस्था के अर्थ में सूत्र व्याख्या।

106. संस्कृति - पूर्णता के अर्थ में किया गया क्रियाकलाप, कार्य व्यवहार, अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा प्रकाशन।

107. समृद्धि - परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन।

108. समाधान - समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी, समझदारी के अनुरूप फल परिणाम समझदारी सम्पन्न होना।

109. स्थापित मूल्य - i. विश्वास ii. सम्मान iii. स्नेह

iv. कृतज्ञता v. गौरव vi. श्रद्धा

vii. ममता viii. वात्सल्य ix. प्रेम।

110. संपृक्त - व्यापक पारगामी पारदर्शी सत्ता में जड़-चैतन्य प्रकृति डूबा-भीगा-घिरा। पूर्णता के अर्थ में, संपूर्णता के अर्थ में होना।

पूर्णता - गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता।

संपूर्णता = इकाई + वातावरण है।

111. सार्वभौम व्याख्या - दशसोपानीय परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था जिसमें बिना धन व्यय के जन प्रतिनिधि सुलभ होना। सभी प्रतिनिधि समझदारी, समृद्धि से सम्पन्न होना। समझदारी सम्पन्न समृद्धि सहित परिवार का प्रतिनिधि होना एवं मानवीय शिक्षा संस्कार, न्याय सुरक्षा संस्कार, उत्पादन कार्य संस्कार, विनिमय कार्य संस्कार, स्वास्थ्य संयम संस्कार, कार्य में भागीदारी सहज परिवार प्रतिनिधि निर्वाचित परंपरा रूप में वर्तमान होना।

112. सहअस्तित्ववाद - सत्ता में सम्पृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति सहज नित्य प्रभाव गतिविधि वर्तमान।

113. सत्यापन - स्वयं में, से, के लिए यथास्थिति सहज वर्णन।

114. संयम - समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी का प्रमाण परंपरा।

115. समाधि - ‘स्व’ होने की स्वीकृति व आशा, विचार, इच्छा चुप होने का दृष्टा होने रूप में स्वीकृति।

116. साधना - साध्य के लिए किये गए प्रयास सहज क्रियाकलाप।

117. सत्य - सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति = व्यापक रूपी सत्ता वस्तु में संपृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य।

118. संतुलन - पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था, ज्ञानावस्था में परस्पर पूरकता, उपयोगिता।

119. सहअस्तित्व - सत्ता में संपृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति।

120. सहअस्तित्व में विकास क्रम - परमाणु में अनेक अंशों का प्रस्थापन, विस्थापन होना।

121. सहअस्तित्व में विकास - परमाणु में गठनपूर्णता।

122. सहअस्तित्व में जागृति क्रम - शरीर व जीवन सहित जीता हुआ मानव।

123. सहअस्तित्व में जागृति - सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति सहज ज्ञानावस्था में गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता सहज प्रमाण परंपरा है।

124. सहअस्तित्व में जागृति सहज निरंतरता -

· मानव परंपरा में क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता सहज निरंतरता।

· समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण एवं उसकी निरंतरता।

· अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या उसकी निरंतरता।

**श, श्र**

125. शास्त्र - कायिक-मानसिक-वाचिक, कृत-कारित-अनुमोदित भेदों में एक सूत्रात्मकता (एक से अधिक कडिय़ाँ)।

126. शिक्षा-संस्कार - ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता।

127. शिक्षण - तकनीकी, उत्पादन कार्य के लिए आवश्यक कारीगरी का अभ्यास।

128. श्रम - शरीर और जीवन के संयुक्त रूप में जीता हुआ मानव कुशलता, निपुणता, पाण्डित्य पूर्वक उपयोगिता मूल्य, कला मूल्य को प्राकृतिक ऐश्वर्य पर स्थापित करना।

**ज्ञ**

129. ज्ञान - सहअस्तित्व रूपी ज्ञान, जीवन ज्ञान व आचरण ज्ञान।

130. ज्ञाता - जीवन समझ में आना, प्रमाणित होना।

131. ज्ञानावस्था - जीव चेतना से श्रेष्ठ मानव चेतना

मानव चेतना से श्रेष्ठतर देव चेतना

देव चेतना से श्रेष्ठतम दिव्य चेतना सहज प्रमाण परंपरा है।

**तृ**

132. तृप्त परमाणु - (गठनपूर्ण परमाणु) - परिणाम का अमरत्व सम्पन्न क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता के लिए तत्पर होने वाला जीवन रूपी परमाणु।

**॥ नित्यम यातु शुभोदयम्॥**

अनुक्रमणिका

**अध्याय पृष्ठ संख्या**

प्रस्तावना

1. पूर्ववर्ती विचार परंपरा, संविधानों की मान्यता प्रक्रिया एवं समीक्षा 1

The preceding tradition of thought, the process of assumptions in constitutions, and their Critique

2. मानवीय संविधान परिचय एवं परिभाषा खण्ड 5

3. सहअस्तित्व सूत्र व्याख्या 15

4. संविधान, विधान, विधि, न्याय, आचरण सूत्र व्यवस्था, स्वराज्य 20

5. जागृत मानव 33

6. मौलिक अधिकार 43

7. व्यवस्था 66

8. ग्राम/मोहल्ला व्यवस्था 109

9. कार्यक्रम सत्यापन घोषणा 130

10. स्वराज्य व्यवस्था 146

11. हर व्यक्ति में परीक्षण सूत्र 153

12. मानव चेतना सहज आचरण सूत्र 161

Code of Conduct conforming to humane consciousness

**प्रस्तावना**

हर नर-नारी मानवीयतापूर्ण आचरण में मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहज निर्वाह सहित मूल्याँकन पूर्वक सम्पूर्ण आयाम, कोण, परिप्रेक्ष्य और दिशा सम्पूर्ण देशकाल में समाधान समृद्धि पूर्वक सुरक्षित होने रहने, अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में प्रमाणित होने, करने-कराने-करने हेतु सहमत होने के लिए यह न्याय सम्मत, समाधान सहज, सहअस्तित्व सहज परम सत्य पूर्ण आचार संहिता मानव में, से, के लिये अर्पित है।

**- ए. नागराज**

श्री भजनाश्रम, श्री नर्मदांचल

अमरकंटक, जिला-अनूपपुर (म.प्र.)

**प्रस्तावना में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा**

1) मानव :-

1. मानव चेतनापूर्वक मनाकार को साकार करने वाला, मन:स्वस्थता प्रमाणित करने वाला है।

2. हर मानव जड़-चैतन्य का संयुक्त साकार रूप है।

3. सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन जागृति क्रम, रासायनिक और भौतिक रचना-विरचना का दृष्टा है। हर समझदार मानव धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा पूर्वक है।

2) मानवत्व :-

1. मानवीय स्वभाव सर्वतोमुखी समाधान सहज अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा और प्रकाशन।

2. मानवीय मूल्यों, चरित्र, नैतिकता को जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने की क्रिया।

3. सहअस्तित्व में जागृत मानव अनुभव मूलक पद्धति से विचार शैली और जीने की कला सहज प्रमाण।

4. हर नर-नारी व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में स्वावलंबी, विचार में समाधानित, अनुभव में प्रमाणिकता को अभिव्यक्त, संप्रेषित, प्रमाणित करने की क्रिया।

3) मानवीयता पूर्ण :-

1. जागृत मानव अपने गुण, स्वभाव, धर्म सहज समझदारी सहित सहअस्तित्व में, से, के लिए प्रमाण।

2. ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता सहित कार्य, व्यवहार, व्यवस्था में भागीदारी।

4) मूल्य :-

1. मौलिकता; मानवत्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी मानव में ही प्रगट होना।

2. प्रत्येक इकाई में निहित मौलिकता।

3. जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य, वस्तु मूल्य (30 कुल मूल्य) उपयोगिता एवं कला की सिद्ध मात्रा, उत्पादित वस्तु मूल्य, स्थापित संबंधों में निहित स्थापित मूल्य, जिसका अनुभव में, से, के लिए अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा से प्रकाशित होने वाले शिष्ट मूल्य।

5) चरित्र :-

स्वधन, स्वनारी-स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार विन्यास।

6) नैतिकता :-

तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग, सुरक्षा एवं संसाधनों का उत्पादन।

7) सहज :-

1. स्वभाव गति के रूप में।

2. यथास्थिति के रूप में।

8) सहित :-

स्वभाव गति सहित, गुण सहित, स्वभाव-धर्म सहित, अवस्था भेदों सहित।

9) निर्वाह :-

जागृत मानव परस्परता में स्थापित मूल्यों का अनुभवपूर्ण व्यवहार करना।

10) मूल्यांकन :-

दृष्टापद एवं समझदारी सहज विधि से मानव स्वयं का और अन्य का गुण, स्वभाव, धर्म सहअस्तित्व सहज उपयोगिता पूरकता के आधार पर मूल्यांकन तथा मानवेत्तर प्रकृति सहज वस्तुओं का मात्रा और गति के आधार पर मात्रा और गुणों का आंकलन।

11) सम्पूर्ण अस्तित्व :-

1. सत्ता में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति सम्पूर्ण अस्तित्व।

2. रूप, गुण, स्वभाव, धर्म सम्पन्न अविभाज्य वर्तमान रूप में इकाई सम्पूर्ण, हर वस्तु अपना आकार-आयतन-घन के रूप में वातावरण सहित सम्पूर्ण और गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता ।

12) आयाम :-

रूप, गुण, स्वभाव, धर्म।

13) कोण :-

मानव परंपरा में ही जीव चेतना, मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना सहज दृष्टिकोण-प्रमाण वर्तमान। प्रत्येक एक अनेक कोण सम्पन्न।

14) परिप्रेक्ष्य :-

1. व्यक्ति, परिवार, राष्ट्र, अखण्ड समाज एवं दशसोपानीय सार्वभौम व्यवस्था।

2. व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, अन्तर्राष्ट्र।

15) दिशा :-

1. ह्रास-विकास। हर कोण अपने में दिशा।

2. परस्पर इकाईयों अथवा ध्रुवों के आधार पर दृष्ट होने वाली कोणों को दिया गया नामकरण स्थिति-गति सहित दिशा।

3. विकास की ओर गति।

4. गन्तव्य की ओर गति।

16) देश :-

1. रचना विस्तार, रचना सहज अवधि व विस्तार।

2. धरती स्वयं में सीमित रचना विस्तार क्षेत्र।

17) काल :-

क्रिया की अवधि।

18) सुरक्षित :-

रूप, गुण, स्वभाव, धर्म सहज वर्तमान पूरकता सदुपयोग निरंतरता।

19) अखण्ड :-

प्रत्येक पद स्थिति-गति में एकात्मकता, एकरूपता, सामरस्यता।

20) अखण्ड समाज :-

1. सहअस्तित्व में समाधान, समृद्धि, अभय सम्पन्न क्रियापूर्णता व आचरणपूर्णता सहित सहअस्तित्व सहज परंपरा।

2. धार्मिक (सामाजिक), आर्थिक, राजनीतिक क्रिया का अविभाज्य रूप में मानव परंपरा।

3. मानव जाति में एक समान होने का ज्ञान, स्वीकृति व प्रमाण परंपरा।

21) सार्वभौम :-

अस्तित्व सहज, विकास सहज, जीवन सहज, जीवन जागृति सहज, रासायनिक और भौतिक रचना सहज प्रक्रिया एवं निरंतरता।

22) व्यवस्था :-

1. विश्वास पूर्वक अस्तित्व में वर्तमान होने में दृढ़ता व निश्चयता का अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन।

2. सर्वतोमुखी समाधान पूर्वक मानवत्व सहज अभिव्यक्ति - सम्प्रेषणा को प्रमाणित करना।

3. समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी पूर्वक विधिवत् समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में, से, के लिए प्रमाणित होना।

23) प्रमाण :-

जागृत मानव अपने कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित विधियों से अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन में समाधान रूप में व्यक्त होना।

24) प्रमाणित होना :-

प्रमाणित होने के रूप में, करने के रूप में, कराने के रूप में और करने के लिए सहमत होने के रूप में।

25) न्याय :-

1. मानवीयता के पोषण, संवर्धन एवं मूल्यांकन के लिए सम्पादित क्रियाकलाप।

2. संबंधों व मूल्यों की पहचान व निर्वाह क्रिया।

26) समाधान :-

1. समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी सहज फल-परिणाम समझदारी के अनुरूप होना।

2. समझदारी पूर्ण होना।

3. जानना, मानना, पहचानना व निर्वाह करने की क्रिया।

4. क्यों और कैसे का उत्तर।

5. समस्याओं का निराकरण, विवेक सम्मत विज्ञान, विज्ञान सम्मत विवेकपूर्ण प्रणाली से संपन्न करने की क्रिया।

27) सत्य :-

1. सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति रूप में सहअस्तित्व नित्य वर्तमान।

2. जो तीनों कालों में एक सा भासमान, विद्यमान एवं अनुभव गम्य है । यही सत्ता पारगामी, पारदर्शी है, यही परस्परता में अच्छी दूरी है ।

3. मानव परंपरा में स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य रूप में सहअस्तित्व नित्य वर्तमान होना अनुभवमूलक विधि से समझ में आता है।

4. अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन-जागृति, रासायनिक-भौतिक रचना-विरचना के प्रति प्रामाणिकता का नित्य वर्तमान।

5. व्यापक वस्तु तीनों कालों में एक सा विद्यमान, भासमान और सुखप्रद रूप में स्थिति पूर्ण है। इसी में सम्पूर्ण रासायनिक, भौतिक क्रिया श्रम, गति, परिणाम परंपरा रूप में; निर्भ्रमता अथवा क्रियापूर्णता व आचरणपूर्णता में जागृति पूर्ण वैभव परंपरा रूप में वर्तमान होना है। मौलिकता है।

28) आचरण :-

1. स्वधन, स्वनारी-स्वपुरूष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार विन्यास

2. संबंधों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति, संतुलन

3. तन, मन, धन रूपी अर्थ की सुरक्षा और सदुपयोग

4. मूल्य, चरित्र, नैतिकता का अविभाज्य वर्तमान रूप में किया गया संपूर्ण कार्य, व्यवहार, विचार विन्यास

29) आचरण संहिता :-

मानव में, से, के लिए अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी सहज आचरण सूत्र व्याख्या (व्यवहारिक)।

30) तात्विक परिभाषा :-

सहअस्तित्व में विकासक्रम, विकास, जागृतिक्रम, जागृति विधि से निरंतरता स्पष्ट होने में, से, के लिए किया गया क्रियाकलाप।

31) बौद्धिक परिभाषा :-

तर्कसंगत विधि से प्रयोजन स्पष्ट होने में, से, के लिए किये गये कार्यकलाप।

32) व्यवहारिक परिभाषा :-

कायिक - वाचिक - मानसिक और कृत - कारित - अनुमोदित भेदों से मानवत्व स्पष्ट होने में, से, के लिए किया गया व्यवहार-कार्य।

भाग – एक

Part-1

पूर्ववर्ती विचार परंपरा, संविधानों की मान्यता प्रक्रिया एवं समीक्षा

The preceding (historical) tradition of thought, the process of assumptions in constitutions, and their critique

1.1 पूर्ववर्ती मान्यतायें

The preceding (historical) assumptions

क) रहस्यमय ईश्वर कल्याण तथा मोक्ष कारक, जीव जगत का कर्ता-धर्ता, परम और सर्वव्यापी है।

The mysterious God provides relief and *moksha*, is in the doer-protector role for the living world, ultimate and omnipresent.

ख) ईश्वर को मानते हुए ईश्वर को जानना संभव नहीं हुआ। फलत: अध्ययनगम्य न होने के कारण प्रश्न चिन्ह बने रहे।

Although belief in God continued, humans were not successful in understanding God. Thus, questions remained because of un-studiablility.

ग) रहस्यमय ईश्वर वाणी, महापुरुषों का वाणी अथवा आकाशवाणी के नाम पर प्रस्तुत पावन वचनों वाले वाङ्गमय, सर्वोपरि ग्रंथ मान लिए गए। फलस्वरूप, वे संविधान के आधार बने अथवा उन्हें संविधान मान लिया गया। ऐसी रहस्यमय ईश्वरवाणी, आकाशवाणी आदि को विभिन्न देश काल में विभिन्न समुदायों ने उल्लेख किया। फलत: परस्पर (विरोधी, विरोधाभासी) ईश्वरवाणी में प्रश्न चिन्ह बना रहा और मानवकुल सोचते ही रहा।

The literature containing the sacred verses spoken by the mysterious God, or by great men, or plain divine communications, were assumed to be supreme scriptures. Consequently, constitutions derived inspiration from them, or such scriptures themselves were taken as constitutions. Several sects in various countries and times have mentioned all this. However, questions persisted due to multiple (mutually contradictory or dichotomous) statements in such sacred verses by God, and humankind kept on pondering.

घ) ईश्वर प्रतिनिधि, राजगुरू, राजा, देवदूत अथवा ईश्वर का अवतार संदेश वाहक गलती नहीं करते हैं, ये सब विशेष हैं, ऐसा मान लिया गया। इनको शत्रुनाशक, दु:खहारक, सर्व सौभाग्यदायी मान लिया गया। मानने का तरीका भी विभिन्न समुदायों में विभिन्न प्रकार से रहा। विभिन्न समुदायों में विभिन्न प्रकार से पनपी हुई मान्यता एवं आचरण (रूढी) एक दूसरे के बीच दीवार बनता गया। इनके नाम से पाई गई वाणियों, कहे गए वचनों को वाङ्गमय के रूप में पुनीत माना, इससे वह संविधान का आधार हुआ। ऐसी मान्यताएं समुदायगत सीमा में स्वीकार हुइं। अन्य समुदायों में अस्वीकार हुइं। इस प्रकार अंतर्विरोध और प्रश्न चिन्ह बना।

It was strongly believed that apostles, *gurus* to the king, kings, messengers of God or incarnations of God do not make any mistakes, and that they are distinguished/ extraordinary. They were taken as destroyers of enemies, saviours and magnanimous. Beliefs were noticeably divergent in different sects. These divergent beliefs and customs (rituals) flourishing in different sects resulted in mutual hostilities. The words and verses believed to be said by them were considered sacrosanct, due to which the constitutions were based on them. Such beliefs got accepted in their respective sects, while they got rejected by others. This is how contradictions and questions got raised.

ङ) ईश्वर अवतारों को समुदायों ने विशेष मान लिया। तत्कालीन जन मानस उन्हें इस प्रकार से स्वीकारे हुए है कि सामान्य लोगों से जो परेशानी दूर नहीं हो पाई उसे (उन सभी असाध्य संकटों को) दूर कर दिया अथवा उन मानवों ने दूर कर दिया। ऐसे मानव को विभिन्न समुदायों ने विभिन्न संकटों के दूर होने के आधार पर उन्हें अवतार मान लिया। इस विधि से भी विभिन्न समुदायों में विभिन्न अवतारों को मानना और उनके प्रति दृढ़ता अथवा हठवादिता को स्थापित कर लेना और अन्य के प्रति शंका, विरोध, द्रोह, विद्रोह, घृणा, उपेक्षा, शोषण और युद्ध करने के क्रम में चले आए।

Incarnations of God were believed to be extraordinary by respective sects. Contemporary masses accepted them with the rationale that if some problem remains unsolved by common people, such problems were solved by the grace of such great men. On the basis of solving unsolvable or long-lasting problems, various sects believed such men to be incarnations. In this manner, different sects started believing in different incarnations with rigidity, while doubting, rejecting, hating, ignoring, suppressing and contesting others.

अवतारों, ईश्वर प्रतिनिधि अथवा महापुरुषों के नाम से जो कुछ भी वचन वाङ्गमय उपदेश प्राप्त हुआ है उसे उन-उन समुदायों ने संविधान मान लिया अथवा संविधान का आधार मान लिया। उल्लेखनीय बात यह है कि मूलत: सभी समुदाय अपने अपने संविधान को परम मानते हैं, साथ ही इसे ईश्वर वचन मानते हैं।

Whatever verses, literature or sermons were received from the incarnations, apostles and great men, respective sects assumed them to be constitutions, or the basis of constitutions. It is worth highlighting that basically all sects believe their own respective constitutions to be the ultimate, and believe it to be divine communication.

इसे हम स्पष्ट रूप में आज भी देख सकते हैं।

It can be clearly observed even today.

1.2 पूर्ववर्ती आधार

Historical basis

क) आदिकाल से मानव, विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में जूझता हुआ, एक दूसरे को अथवा एक परिवार दूसरे परिवार को पहचानने के लिए नस्ल को आधार मान लिया। यह अधिकतर मुख मुद्रा पर मान लिया गया। जिससे अनेक समुदायों का अंतर्विरोध सहित पहचान हुआ।

Since ancient times, struggling to survive in diverse natural and geographical conditions, humans assumed ethnicity to be the basis for recognising each other or each other’s families. Mostly, this assumption depended on facial or physical appearance. This is how various sects came into being with inherent contradictions.

ख) पुन: विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों के आधार पर ही मानव शरीर का रंग गोरा, काला, भूरा आदि नामों से स्वीकारा गया। यह प्रधानत: चमड़े की रस क्रिया और भौगोलिक परिस्थितियों के संयोग से और वंशानुषंगीय विधि से होना पाया जाता है। इसी के आधार पर परस्पर पहचान निर्भर हुआ। इससे तीव्रतम अंतर्विरोध सहित अनेक समस्या और प्रश्न चिन्ह बनता ही गया। अपने परायों की दीवाल और दृढ़ हुई।

Further, it was only on the basis of geographical conditions that the human body was also accepted as white, black, brown etc. This mainly occurred due to a combination of factors of chemical reactions in skin and geographical conditions, as well as by way of heredity. Mutual recognition depended on this. This gave rise to more and more contradictions, problems and question marks. The wall of ‘us and them’ strengthened further.

ग) पूजा-पाठ, प्रार्थना, अभ्यास, आराधना व साधनाओं के आधार पर समुदायों को पहचानने का प्रयास किया गया। जिसमें अनेक मत, संप्रदाय, पंथ परंपराएं देखने को मिलीं। जाति, रंग, नस्ल, परंपराएं पहले से ही रही। इस प्रकार और भी समुदायों का उदय हुआ जिसमें अंतर्विरोध और सुदृढ़ हुआ। प्रश्न चिन्हों की संख्या बढ़ी। ये सब अपने अपने आचरण परंपरा को दृढ़ता का रूप देने गए। इन सभी रूढ़ियो को अपने-अपने समुदाय सीमा में स्वीकार किया गया। इनके आदतों की विशेषताएँ, हरेक मोड़ मुद्दे में टकराव एवं प्रश्न चिन्ह को बनाता गया। यह सब धार्मिक, राजनैतिक स्थिति की सामान्य समीक्षा रही।

Attempts were made to recognise sects on the basis of worship, prayers, practices and idolisation giving rise to tradition of multiple faiths, sects and creeds. Castes, colours and ethnicities were already there. In this manner, more sects emerged, strengthening the inherent contradictions. Number of question marks also increased. All this kept on strengthening the respective traditions of faith. All the rituals were accepted within the boundaries of respective sects. Peculiarities of their customs and habits kept on generating confrontations and question marks on all possible points. All this has been the usual critique of the religious and political landscape.

घ) धन के आधार पर गरीबी-अमीरी के असमानता अथवा अधिक विपन्नता को दूर करने के आधार पर आर्थिक राजनीति को प्रयोग किया गया और इसे प्रभावशील बनाने की विभिन्न देशकाल में कोशिशें की गई, अर्थात् आर्थिक असमानता और सांस्कृतिक विषमताओं को दूर करने के लिए अथक प्रयत्न किया गया। उल्लेखनीय बात यह है कि ऐसे भरपूर प्रयत्नों के उपरांत भी धार्मिक राजनीति पर्यन्त झेले गए सभी विभिन्न समुदाय चेतना यथावत् बना हुआ देखा जाता है, और इसी के साथ आर्थिक विषमता के अनगिनत प्रश्न उलझते ही गए। इस प्रकार आर्थिक राजनीति धन के आधार पर ही मानव को दास बनाने के कार्य में व्यस्त हो गयी।

Economic policies based on money were used to remove the inequality between rich and poor, or extreme scarcities, and attempts were made at different places and times to make it effective. In other words, untiring efforts were made to remove economic inequality and cultural disparities. It is worth highlighting that despite such extensive efforts, sectarian mindset continued to prevail as it is in sects which were subjected to the religio-political efforts. Along with this, all questions pertaining to economic disparity became even more complicated. In this manner, economic policies ended up subjugating humans on the basis of money.

1.3 पूर्ववर्ती विधि

Methods adapted in history

क) समर और दण्डनीति केन्द्रित शासन सर्वोपरि विधि माना गया और लोक रुचि का प्रोत्साहन कल्पना के आधार पर अनेक कार्यक्रम, विभिन्न राज राष्ट्रों में प्रस्तुत किए गये जिनकी कार्य शैलियों को साम, दाम, भेद, दण्ड के रूप में देखा गया। इन्हीं के सहारे पद, भोग लिप्सा एवं संग्रह-सुविधा सहित द्रोह-विद्रोह-शोषण-युद्ध के रूप में एक दूसरे के समक्ष परस्पर समुदायों ने अपने को प्रस्तुत किया। यह भी परिलक्षित हुआ कि प्रत्येक समुदाय अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए किसी भी अनीति को नीति की पोषाक पहना कर उपयोग करते आया। प्रत्येक शासन उन उन समुदाय की जनता को सुख-शांति और यथास्थिति को संरक्षण करने का आश्वासन देते हुए, विश्वास दिलाते हुए असफल हो चुके या होने वाले हैं। अर्थात् संपूर्ण राज्य, राष्ट्र अपनी सीमाओं में अथवा भूखण्ड में निवास करने वाले मानव समुदाय में अंतर्विरोध को तथा पड़ोसी देशों के साथ अंतर्विरोध को दूर करने में समर्थ नहीं रहे, आश्वासन अवश्य ही देते रहे।

Wars and punishment centred rule was assumed to be the best method; and encouraged by public interest and imagination, various strategies were devised by different states and countries, which were implemented in the form of persuasion, temptation, punishment and division. Using these, sects dealt with each other by way of oppression, revolution, exploitation & wars accompanied by status, craving for sensory pleasures and accumulation-comforts. It has also been seen that for the sake of survival, each and every sect has used, and even justified, all unethical policies and presented them as ethical policies. All rulers, in the process of giving assurances of happiness & peace to their subscribers, and for maintaining (protecting) the status quo, have either failed or will certainly fail. In other words, all states and nations have been unsuccessful in removing the contradictions within their residents, as well as the contradictions with the neighbouring states or nations, although they have not hesitated in giving assurances.

ख) शक्ति केन्द्रित शासन प्रणाली में दण्ड प्रक्रिया यंत्रणा, अर्थदण्ड और प्राणदण्ड के रूपों में होना देखा गया। सभी शासन प्रणालियों को सदा से ही भय और प्रलोभन के चक्र में घूमते हुए, पलते हुए देखा गया। विभिन्न समुदायों ने अपने अपने आचरणों को श्रेष्ठ माना; साथ ही वे अन्य लोगों के साथ अंतर्विरोध के साथ द्रोह, विद्रोह, शोषण और युद्ध से प्रभाावित रहे आए। फलस्वरूप मानव समुदाय की परस्परता में अंतर्विरोध रहा और प्रत्येक समुदाय में भी अंतर्विरोध प्रश्न चिन्ह बनकर खड़े रहा।

In all forms of power centric rule, the process of punishment has been seen in the form of torture, financial penalty and capital punishment. All forms of rule have seen to be operating and flourishing in the cycle of fear and temptation. All sects assumed their own respective conducts to be the best, and confronted others with contradictions along with offence, revolt, exploitation and wars. Consequently, inherent inter-sectarian contradictions continued in human tradition, while intra-sectarian contradictions and questions also remained as it is.

1.4 पूर्ववर्ती दर्शन

Historical philosophies

क) रहस्यमूलक ईश्वर केन्द्रित चिंतन ज्ञान बनाम आदर्शवाद। इसी के साथ आगम और निगम प्रबंध मानव परंपरा में स्थापित हुआ है।

Idealism is another name for mystery-based God-centred thought. Along with this, *aagam* and *nigam* systems got established in human tradition.

ख) अस्थिरता-अनिश्चयता मूलक तर्क सम्मत वस्तु केन्द्रित चिंतन ज्ञान बनाम विज्ञान। इसके समर्थन में तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी प्रयोग विधियाँ स्पष्ट हो चुकी है।

Science is another name for instability-uncertainty based logical object-centred thought. Technological and industrial methods are now available in its support.

1.5 पूर्ववर्ती विचारों के रूप में

Various forms of historical thoughts

क) द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद।

ख) संघर्षात्मक जनवाद।

ग) रहस्यात्मक अध्यात्मवाद। अधिदैवीवाद व अधिभौतिकवाद।

Struggle-centred materialism

Conflict-centred conversations

Mystery-centred spiritualism

1.6 पूर्ववर्ती शास्त्रों के रूप में

Form of disciplines in history

क) लाभोन्मादी अर्थशास्त्र।

ख) भोगोन्मादी समाजशास्त्र।

ग) कामोन्मादी मनोविज्ञान।

Profit-obsessed economics

Consumption-obsessed sociology

Sex-obsessed psychology

1.7 पूर्ववर्ती योजनाएँ

Historical programs

क) धर्मगद्दियों में पापियों को तारना।

For seats of religion, emancipation of sinners.

ख) स्वार्थियों को परमार्थी बनाना।

Conversion of the selfish to benevolent.

ग) अज्ञानियों को ज्ञानी बनाना।

Conversion of the ignorant to knowledgable /scholars.

घ) राजगद्दियों में सामुदायिक विकास योजना, कार्य योजना।

For seats of power, plans and action plans for sectarian development.

ङ) ग्राम विकास, खंड क्षेत्र विकास, सर्वजन सुविधा के लिए रोजगार योजना, कार्य योजनाएँ हैं।

For village development, block area development, and facilities for the general public, plans for employment and work to everyone.

च) रोजगार योजनाएँ स्वावलंबन के उद्देश्य से स्थापित हुई हैं। जिससे आर्थिक विषमता दूर होगी, ऐसी अभीप्सा समाई हुई है। आदर्शों को ध्यान में रखते हुए सभी समुदायों का उत्थान, सुविधा भोग, अति भोग, बहुभोग में रुचि निर्मित करने का प्रचार तंत्र सहित कार्यक्रमों को देखा गया है। फलस्वरूप गलती और अपराध बढ़े जबकि कामना है परस्पर भाईचारा में सुखपूर्वक रहे। इसके लिए मानव जीव चेतना से मानव चेतना में संक्रमित होना ही एकमात्र उपाय है। मानव कुल में सार्वभौम व्यवस्था, अखण्ड समाज में भागीदारी पूर्वक समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व के प्रति जागृति और प्रवृत्ति सहज होना उपाय है।

Employment schemes were established with an aim to achieve self-reliance. Removal of economic disparity is the inherent aspiration in this. It has been seen that media in all sects worked on programs to enhance interest in comforts, enjoyment and hedonism to make progress, while keeping the ideals in mind. Consequently, mistakes and crimes increased while the basic desire was that everyone may live with happiness and fearlessness. Transcendence from animal consciousness to humane consciousness is the only remedy (cure) for this. Being aware of and having the tendency of resolution, prosperity, fearlessness & coexistence by way of participation in undivided society & universal system, is the cure.

भाग – दो

मानवीय संविधान परिचय

Part - 2

Introduction to humane constitution

2.1 विकल्पात्मक अवधारणा

Alternative centred conception

1. सत्ता में संपृक्त प्रकृति, अस्तित्व सर्वस्व, नित्य वर्तमान है।

Nature saturated in Omnipotence, the whole existence, is ever present.

2. अस्तित्व ही सहअस्तित्व के रूप में नित्य वर्तमान है। इसका मूल रूप सत्ता में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति ही है। यह न तो घटता है और न बढ़ता है। हम मानव जीव जगत का उत्पत्ति- उद्भव, विभव, प्रलय के चक्कर में फंसे है जबकि नियति क्रम से पदार्थ संसार में जितने प्रकार के परमाणुओं आवश्यक रहता है उतने से समृद्ध होने के उपरान्त यौगिक विधि पूर्वक वन - वनस्पतियों का रचना, जीव शरीर, मानव शरीर रचना व परंपरा के आधार पर चारों अवस्थाएं एक-दूसरे के साथ पूरकता उपयोगिता विधि से प्रगटन सहित परंपरा स्पष्ट है।

Existence itself is ever-present as coexistence. Insentient and sentient nature saturated in Omnipotence, is its basic form. Existence does not decrease, nor does it increase. We humans are trying to figure out (grappling with) the secrets of emergence - creation, sustainment & dissolution; whereas it is clear that after the availability of all the atoms by way of destiny which are needed in the material world, emergence of the four orders by way of mutual complementariness and usefulness based on formation and tradition of vegetation, animal bodies and human bodies by yogic method, takes place.

3. सहअस्तित्व में प्रत्येक एक अपने ‘त्व’ सहित व्यवस्था है और समग्र व्यवस्था में भागीदारी निर्वाह करते हुए पूरकता उपयोगिता विधि से होना देखने को मिलता है। देखने का मतलब समझने से है। यह भ्रमित मानव के अतिरिक्त संपूर्ण प्रकृति यथा जीव, वनस्पति तथा पदार्थ रूपों में स्पष्ट है। प्रत्येक मानव भी व्यवस्था में होना-रहना चाहता है एवं समग्र व्यवस्था में भागीदारी प्रमाणित करने के लिए उत्सुक है। यह जागृत परंपरा में ही सफल होता है ना कि जीव चेतना में।

Each unit in coexistence is a system in itself with its -ness, and is seen to be participating in the overall system by way of complementarity and usefulness. ‘Is seen’ here means ‘is understood’. Except the deluded humans, this (complementarity and usefulness) is clear in the whole nature, e.g., material order, plant order and animal order. All humans also want to be and remain in the system, and are eager to evidence their participation in the overall system. This becomes successful only in the awakened tradition, and not in animal consciousness.

4. प्रत्येक मानव जीवन और शरीर के संयुक्त साकार रूप में वैभव व परंपरा में है ही।

All humans are in natural grandeur and tradition of combined tangible form of jeevan and body.

5. जानना-मानना ही समझदारी, पहचानना-निर्वाह करना ही ईमानदारी है। ईमानदारी पूर्वक जिम्मेदारी भागीदारी सम्पन्न होता है। यह जीवन सहज वैभव है। जीने की कला के रूप में अखण्ड समाज और सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी निर्वाह करना ही मानव चेतना मूलक विधि है, आचरण है।

Knowing-believing itself is understanding, recognising-fulfilling itself is honesty, Responsibility and participation is accomplished by way of honesty. This is the grandeur of *jeevan*. Participation in the undivided society, universal system in one’s living is the way of humane consciousness and conduct.

6. मानव जाति एक, कर्म (उत्पादन रूप में) अनेक।

Human race is one, actions (in the form of production) are many.

7. मानव धर्म (सर्वतोमुखी समाधान सार्वभौम व्यवस्था व सुख रूप में) एक, व्यक्तिवाद समुदायवाद के रूप में अनेक।

Human *dharma* is one in the form of comprehensive resolution, universal system, and happiness, and many in individual and sectarian forms.

8. ईश्वर सत्ता सहज रूप में (व्यापक, पारगामी, पारदर्शी रूप में) एक, देवी-देवता अनेक।

One in the form of Omnipotence (as Omnipresence, permeability, transparence), gods-goddesses are many.

9. अखण्ड राष्ट्र रूप में एक, राज्य अनेक।

One in the form of undivided nations, and states are many.

2.2 मानवीय संविधान

परिचय

Humane constitution

Introduction

विधि विधान का संयुक्त रूप में संविधान विकसित चेतना सहज पारंगताधिकार ही विधि है।

समझदारी = विधि

आचरण = विधान

Combined form of method and law is the constitution, and expertise in developed consciousness is the method.

Understanding = method

Conduct = law

मानवीयता सहज साक्ष्य रूप में पूर्णता, स्वराज्य, स्वतंत्रता और उसकी निरंतरता को जानने, मानने, पहचानने व निर्वाह करने, कराने और करने योग्य मूल्य, चरित्र, नैतिकता रूपी विधान।

Law is - Values, character and ethics enabling the knowing, believing, recognising & fulfilling (fulfilling, encouraging to fulfil, and agreeing to fulfil) of completeness, self-governance, independence and their continuity, in the form of living models of humaneness.

1. मानवीयता सहज जागृति व जागृति पूर्णता ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था पूर्वक परंपरा के रूप में अर्थात् पीढ़ी से पीढ़ी के रूप में निरंतरता को प्रमाणित करता है। यह करना, कराना, करने के लिए सहमत होना मानव में, से, के लिए मौलिक विधान है।

Awakening and awakening completeness itself evidences the undivided society, universal system in the form of tradition (continuity from generation to generation). To do it, encourage it and agree to do it, is the fundamental law in, by and for humans.

2. मानव परिभाषा के रूप में “मनाकार को सामान्य आकाँक्षा व महत्वाकाँक्षा संबंधी वस्तुओं और उपकरणों के रूप में, तन मन धन सहित, श्रम नियोजन पूर्वक साकार करने वाला, मन:स्वस्थता अर्थात् सुख, शांति, संतोष, आनंद सहज प्रमाण सहित परंपरा है।” इसे प्रमाणित करना, कराना, करने के लिए सहमत होना मानव परंपरा में, से, के लिए मौलिक विधान है।

By definition, humans are who ‘materialise the ideas pertaining to the things and equipments of basic aspirations and higher aspirations by way of deployment of body, mind & wealth, and evidence of mental well-being e.g., happiness, peace, contentment & bliss, and the tradition thereof’. To evidence it, encourage it and agree to evidence it, is the fundamental law in, by and for human tradition.

3. मानव अपनी परिभाषा के अनुरूप बौद्धिक समाधान, भौतिक समृद्धि सहित अभय, सहअस्तित्व में अनुभव सहज स्रोत व प्रमाण है। यह मौलिक विधान है।

As per their definition, humans are the sources and evidence of intellectual resolution, material prosperity along with fearlessness and realisation in coexistence. This is a fundamental law.

4. मानवीयतापूर्ण आचरण जो स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार, संबंधों सहज पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्याँकन स्वीकृति, उभयतृप्ति व संतुलन, तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा के रूप में ही मानवीयता सहज व्याख्या है। यह मानव परंपरा में मौलिक विधान है।

Human conduct (which is in the form of righteous wealth, righteous man-woman relationship, kindness in work & behaviour; recognition, fulfilment of values, acceptance & evaluation, mutual happiness and balance in relationships; and right utilisation and security of the resources of body, mind \* wealth) is indeed the elaboration of humaneness. This is a fundamental law in human tradition.

5. “मानवीयता पूर्ण आचरण सहजता, मानव में स्वभाव गति है।” मानवीयतापूर्ण आचरण मूल्य, चरित्र, नैतिकता का अविभाज्य अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा व प्रकाशन है। यह मौलिक विधान है।

‘Spontaneity in humane conduct is the natural motion of humans’. Humane conduct is the integral expression, communication & manifestation of values, character & ethics. This is a fundamental law.

6. “जागृति मानव सहज स्वीकृति है।” मानव सहज कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता का तृप्ति बिंदु स्वानुशासन है। यह परम जागृति के रूप में प्रमाणित होता है। यह मानव परंपरा में मौलिक विधान है।

‘Awakening is naturally acceptable to humans’. Self-discipline is the point of satisfaction of imagination & free-will in, of and for humans. This is evidenced in the form of awakening completeness. This is a fundamental law in human tradition.

7. “सार्वभौम व्यवस्था व अखण्ड समाज, मानव सहज वैभव है।” मानव सहज कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता का तृप्ति बिंदु दश सोपानीय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रमाणित होता है। यह मौलिक विधान है।

‘Universal system and undivided society is the grandeur of humans’. Point of satisfaction of imagination & free-will in, of and for humans is evidenced as participation in the ten-tier family based self-governance system. This is a fundamental law.

8. “मानवीय लक्ष्य परम जागृति के रूप में सार्वभौम है।” मानवीयतापूर्ण अभिव्यक्ति, प्रकाशन सहज सम्प्रेषणाएँ, संपूर्ण आयाम, कोण, दिशा, परिप्रेक्ष्यों में समाधान, समृद्धि, अभय व सहअस्तित्व में अनुभव रूपी वैभव को प्रमाणित करता है। यह मौलिक विधान है।

‘Awakening completeness is the universal human goal’. Humane communications of expressions & manifestations evidence the grandeur of resolution, prosperity, fearlessness & realisation in coexistence in all dimensions, angles, directions & areas. This is a fundamental law.

9. “जागृत मानव बहुआयामी अभिव्यक्ति है।” मानव सहज परंपरा में अनुसंधान, अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन मानवीयता पूर्ण अध्ययन, शिक्षा व संस्कार, आचरण व व्यवहार, व्यवस्था, संस्कृति-सभ्यता और संविधान ही सहज प्रमाण है। यही मौलिक विधान है।

‘Awakened humans are expressive in multiple dimensions’. Research, existence based human centred contemplation, humane study, education & *sanskar*, conduct & behaviour, system, culture-civility and constitution in human tradition are the evidences. This is a fundamental law.

**नित्यम् यातु शुभोदयम्!**

**May goodness arise forever!**

2.3 परिभाषा खंड

Definitions

**1)** **अखण्ड समाज** = जागृत मानव परंपरा

1. सहअस्तित्व में समाधान, समृद्धि, अभय सम्पन्न क्रिया व आचरण पूर्णता सहज परंपरा।

2. धार्मिक (सामाजिक), आर्थिक, राज्यनीतिक क्रिया अविभाज्य रूप में जागृत मानव परंपरा।

**Undivided society** = Awakened human tradition

1. Tradition of activity of resolution, prosperity, fearlessness in coexistence and conduct completeness.
2. Awakened human tradition as the integral form of religious (social), economic, political activity.

**2)** **आयाम** = प्रत्येक एक में चार आयाम - रूप, गुण, स्वभाव, धर्म।

मानव में चार आयाम – उत्पादन, व्यवहार, विचार, अनुभव।

**Dimensions** = Four dimensions in each unit - Form, attributes, intrinsic nature, *dharma*.

Four dimensions in humans - production, behaviour, intellect, realisation.

**3)** **काल** = क्रिया की अवधि।

**Time** = Duration of activity

**4)** **कोण (दृष्टिकोण)** = जीव चेतना, मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के आधार पर दृष्टिकोण। निश्चित बिन्दु से अनंत कोण।

**Angle (perspective)** = Perspective based on animal consciousness, humane consciousness, godly consciousness, divine consciousness.

Infinite angles from any point.

**5)** **चरित्र**

1. स्वधन, स्वनारी-स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार।

2. स्वयं में विश्वास चरितार्थतापूर्वक, श्रेष्ठता का सम्मान करने चरितार्थतापूर्वक, प्रतिभा में विश्वास चरितार्थतापूर्वक, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन चरितार्थतापूर्वक, व्यवहार में सामाजिक रहते हुए व्यवसाय में स्वावलंबी रहने में चरितार्थतापूर्वक प्रमाण।

प्रतिभा = ज्ञान, विवेक, विज्ञान

व्यक्तित्व = मानवीयता, देव मानवीयता, दिव्य मानवीयता सहज रूप में।

**Character**

1. Righteous wealth, righteous man-woman relationship, kindness in work & behaviour.
2. Manifest evidence of self-confidence, respect for excellence, balance in talent and personality, self-sufficient in profession while remaining sociable in behaviour.

Talent = knowledge, wisdom, science

Personality = Natural humaneness, godly humaneness, divine humaneness.

**6)** **जागृत मानव**

1. मानव चेतना सहज मूल्य, चरित्र, नैतिकता।

2. त्व सहित मानवीयतापूर्ण आचरण समेत व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

3. अतिव्यवाप्ति, अनाव्याप्ति, अव्याप्ति दोषों से मुक्ति।

4. क्रियापूर्णता अर्थात् सर्वतोमुखी समाधान परंपरा के रूप में वैभव और आचरणपूर्णता अर्थात् अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सहज परंपरा में भागीदारी सहित वैभव।

**Awakened human**

1. Values, character & ethics in, of & for humane consciousness.
2. Systemised in oneself with humane conduct and -ness, participation in the overall system.
3. Liberation from the flaws of over-evaluation, under-evaluation, mis-evaluation.
4. Activity completeness (grandeur in the form of tradition of comprehensive resolution) and conduct completeness (grandeur of the tradition of undivided society, universal system).

**7)** **जागृति**

1. क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता (सजगता)।

2. भ्रम से मुक्ति।

3. भ्रममुक्त जीवन, जागृति परम सहज प्रकाशन।

**Character**

1. Righteous wealth, righteous man-woman relationship, kindness in work & behaviour.
2. Manifest evidence of self-confidence, respect for excellence, balance in talent and personality

**8)** **दिशा**

1. ह्रास-विकास।

2. परस्पर इकाईयों अथवा ध्रुवों के आधार पर दृष्ट होने वाले कोणों को दिया गया नामकरण स्थिति, गति।

3. जागृति की ओर गति (क्रियापूर्णता)।

4. गन्तव्य में गति (आचरण पूर्णता)।

**Direction**

1. Righteous wealth, righteous man-woman relationship, kindness in work & behaviour.
2. Manifest evidence of self-confidence, respect for excellence, balance in talent and personality.

**9)** **देश**

1. रचना सहज अवधि = विस्तार।

2. धरती स्वयं में सीमित रचना।

**Place**

1. Boundary of an entity = Expanse.
2. Earth in itself is a bound entity.

**10)** **पूर्णता**

1. परमाणु में गठनपूर्णता, जीवन में क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता = जीवन जागृति।

2. अमरत्व, विश्राम, गंतव्य = समाधान = विश्राम।

**Completeness**

1. Constitution-completeness in atom, activity-completeness in *jeevan*, conduct-completeness = awakening of *jeevan*.
2. Immortality, tranquillity, destination = resolution = tranquillity.

**11)** **प्रभुसत्ता**

1. प्रबुद्धतापूर्ण सत्ता।

2. समझदारी सहित व्यवस्था।

3. प्रबुद्धतापूर्ण शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा, आचरण-व्यवहार, उत्पादन, विनिमय, स्वास्थ्य-संयम व्यवस्था रूपी सत्ता (परंपरा)।

4. प्रामाणिकता व समाधान पूर्ण विचार, समाधान व न्यायपूर्ण व्यवहार, न्याय व नियम पूर्ण आचरण, नियम व नियंत्रणपूर्ण उत्पादन और उपयोगिता सहित पूरक विनिमय क्रियाओं को करने, कराने और करने के लिए सहमत होने की प्रक्रिया।

**Sovereignty**

1. Omnipotence full of enlightenment.
2. Harmony (system) with understanding.
3. Omnipotence (tradition) in the form of systems of education-*sanskar*, justice-security, conduct-behaviour, production, exchange, health-*sanyam* full of enlightenment.
4. Authenticity & thoughts of justice, resolution & behaviour justice, justice and conduct as per law, production as per law and regulation, and the process of engaging in doing, encouraging and agreeing to do the exchange activities with usefulness and complementariness.

**12)** **प्रबुद्धता (मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना में पारंगत)**

1. ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता।

2. सतर्कता एवं सजगता, निपुणता, कुशलता एवं पाण्डित्य पूर्ण व्यक्तित्व सहज प्रमाण।

3. मानव में निपुणता, कुशलता, पाण्डित्यपूर्ण कार्य-व्यवहार विन्यास ही नियम पूर्ण व्यवसाय, न्यायपूर्ण व्यवहार, समाधान पूर्ण विचार, प्रामाणिकता पूर्ण अनुभूतियों की अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा व प्रकाशन क्रिया।

**Enlightenment**

1. Being accomplished with knowledge, wisdom and science.
2. Evidence of personality full of watchfulness and wakefulness, skills, proficiency and mastery.
3. Work and behaviour of skills, proficiency and mastery is indeed the expression, communication and manifestation activity of production as per law, behaviour of justice, thoughts of resolution, and realisation full of authenticity.

**13)** **विधान प्रबुद्धता में**

1. प्रबुद्धता ही विधि सूत्र है। मानव में प्रबुद्धता, परिवार में संप्रभुता (न्याय व समाधान सहज प्रमाण) एवं अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में प्रभुसत्ता अर्थात् प्रबुद्धता पूर्ण सत्ता प्रमाण है।

2. विधि सहज धारणा अर्थात् समझदारी पूर्वक किया गया व्यवहार, व्यवसाय, आचरण और सुगम बनाने की प्रक्रिया।

**Law as per enlightenment**

1. Enlightenment itself is the maxim of method (linkage to method). Evidence of enlightenment in the individual, autonomy in family (evidence of justice and resolution), and sovereignty in undivided society, universal system (Omnipotence full of enlightenment).
2. Making the concept of reality more understandable; or making the process of behaviour, production & conduct done by way of understanding, more understandable.

**14)** **विधि**

1. मानवीय संस्कृति-सभ्यता सहज नियम सहज आचरण सूत्र व्याख्या।

2. नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य सहज अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन ही मानवीय संस्कृति सहज आचरण-संहिता।

3. मानवीयता पूर्ण व्यवहार, आचरण, उत्पादन, विनिमय, मानवीय शिक्षा संस्कार, तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षात्मक सूत्र और व्याख्या। विकास और जागृति, सतर्कता, सजगता, गुणात्मक विकास सहज प्रमाण में जीवन जागृति व जागृतिपूर्णता ही आचरणपूर्णता सहज सूत्र और व्याख्या है।

4. पूर्णता और उसकी निरंतरता के अर्थ में नियम, न्याय, धर्म और सत्य में अनुभव सहज जागृत मानव परंपरा में ही सूत्र और व्याख्या सम्मत प्रामाणिकता पूर्ण प्रक्रिया का प्रावधान।

**Method**

1. Maxims and elaboration of the code of conduct and laws of humane culture & civility.
2. Expression, communication & manifestation of law, regulation, balance, justice, *dharma* & truth is indeed the code of conduct of, by and for humane culture.
3. Maxims and elaboration of humane behaviour, conduct, production, exchange, education-*sanskar*, and of right utilisation and security of resources of body, mind & wealth. Awakening of *jeevan* and awakening completeness in evidence of development & awakening, watchfulness, wakefulness, qualitative progress, is indeed the maxim and elaboration of conduct completeness.
4. Provision of the process of authenticity in accordance with maxims & elaboration in awakened (law, justice, *dharma*, and realisation in truth) human tradition for completeness and its continuity.

**15)** **व्यवस्था**

1. अनुभव-व्यवहार-प्रयोग प्रमाण सहित परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी।

2. वर्तमान में मानवत्व अर्थात् मानवीय आचरण, संस्कृति-सभ्यता, विधि-व्यवस्था सम्मत व्यवहार कार्य परंपरा।

3. विधि के अर्थ में नीति सहज निर्वाह परंपरा ही व्यवहार गति में स्थायित्व व निरंतरता और वर्तमान में विश्वास परंपरा।

**System**

1. Participation in the family-based self-governance system along with evidence of realisation, behaviour & experimentation..
2. Present tradition of behaviour & work in accordance with humane conduct, culture-civility and method-system.
3. Tradition of fulfilling as per ethics, with method in mind, is the stability in behaviour, and tradition of trust in the present.

**16)** **व्यवहार**

1. मानव और मानवेत्तर प्रकृति सहज परस्परता में निहित संबंध व मूल्यों का नियम, नियंत्रण एवं संतुलन पूर्वक निर्वाह।

2. मानव की परस्परता में निहित मूल्यों का निर्वाह।

3. एक से अधिक मानव एकत्रित होने पर या होने के लिए किया गया आदान-प्रदान।

4. संबंधों में निहित स्थापित मूल्यों में अनुभव सहित शिष्टतापूर्ण पद्धति से सम्प्रेषणा, व्यवसाय मूल्य पूरकता के अर्थ में उत्पादन, उपयोग, सदुपयोग एवं वितरण।

**Behaviour**

1. Fulfilling of the human-human and human-nature relationship & values (by way of law, regulation & balance).
2. Fulfilling of values in the mutuality of humans.
3. Reciprocity upon, or for, togetherness of more than one person.
4. Production, use, right-use & distribution for object value & complementariness; communication in civic manner, along with realisation of inherent established values in relationships.

**17)** **व्यक्ति**

1. व्यक्तित्व अर्थात् मानवीयतापूर्ण आचरण सहज अर्थ से किया गया आहार-विहार-व्यवहार सम्पन्न मानव।

2. मानव चेतना सम्पन्न आहार, विहार, व्यवहार, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन सहज प्रमाण सम्पन्न समझदार व्यक्ति होने का प्रमाण, जागृति सम्पन्न मानव।

**Person /individual**

1. A human being accomplished with personality (food, lifestyle & behaviour done by and for humane conduct).
2. Food, lifestyle & behaviour accomplished with humane consciousness; accomplishment of evidence of balance and personality; evidence of being a wise person; an awakened human being.

**18)** **न्याय**

1. मानवीयता में, से, के लिए पोषण, संवर्धन व्यवहार में प्रमाण एवं मूल्यांकन क्रियाकलाप।

2. संबंधों में निहित मूल्यों सहज पहचान व निर्वाह सहज क्रिया।

**Justice**

1. Activity of evaluation, and evidence in behaviour, of nurturing & enhancing in, of and for humaneness.
2. Activity of recognising and fulfilling values inherent in relationships.

**19)** **नैतिकता**

1. नीति-त्रय का अनुसरण।

2. तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा।

**Ethics**

1. Abiding by the policy-trio.
2. Right utilisation and security of resources in the form of body, mind & wealth.

**20)** **नियम**

1. क्रियापूर्णता सहज आचरण सहित नियंत्रण संतुलित क्रियाकलाप।

2. इकाइयों में, से, के लिए नियंत्रण क्रिया।

**Law**

1. Regulated and balanced activity along with conduct in, of and for activity completeness.
2. Regulation activity in, of and for units.

**21)** **नियंत्रण** = मानव की परस्परता में न्यायपूर्ण व्यवहार।

**Regulation** = Behaviour of justice in the mutuality of humans.

**22)** **मानव**

1. मनाकार को साकार करने वाला, मन:स्वस्थता के लिए आशावादी व प्रमाणित करने वाला।

2. जड़-चैतन्य का संयुक्त साकार रूप।

3. अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन जागृति, रासायनिक और भौतिक रचना-विचरना का दृष्टा एवं जागृति सहज प्रमाण।

**A human being**

1. The one who materialises ideas, hopeful of mental well-being and having the potential to evidence it.
2. Combined form of insentient and sentient.
3. Perceiver of existence, development, *jeevan*, awakening of *jeevan*, formation-deformation of the physico-chemical world; and evidence of awakening.

**23)** **मूल्य**

1. मौलिकता (मानव में ही प्रगट होना आवश्यक)।

2. प्रत्येक इकाई में निहित मौलिकता। (मानव ही पहचानता है)।

3. जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य, वस्तु मूल्य (30 कुल मूल्य)। उपयोगिता एवं कला की सिद्ध मात्रा = उत्पादित वस्तु मूल्य, स्थापित संबंधों में निहित स्थापित मूल्य, जिसका अनुभव में, से, के लिए अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा से प्रकाशित होने वाला शिष्ट मूल्य।

**Values**

1. Uniqueness (essentially is demonstrated only in humans).
2. Uniqueness inherent in each unit (is recognised only by humans).
3. *Jeevan* values, human values, established values, civic values, object values (total 30 values). Quantity of usefulness and aesthetics = value of the produced goods. Established values are inherent in established relationships, and civic values are observed through expression & communication in, of and for their realisation.

**24)** **मानवीय आचरण**

1. स्वधन, स्वनारी-स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार विन्यास।

2. संबंधों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह मूल्यांकन एवं उभयतृप्ति।

3. तन, मन, धन रूपी अर्थ की सुरक्षा और सदुपयोग।

4. मूल्य, चरित्र, नैतिकता का अविभाज्य वर्तमान रूप में किया गया संपूर्ण कार्य, व्यवहार, विचार विन्यास।

**Humane conduct**

1. Rightfully earned wealth, rightful man-woman relationship, kindness in work & behaviour.
2. Recognition of relationships, fulfilling of values, evaluation and mutual happiness.
3. Security and right use of the resources of body, mind & wealth.
4. All work, behaviour & thinking done as the cumulative effect of values, character & ethics.

**25)** **मानवीय मूल्य** = जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य।

**Humane values** = *Jeevan* values, human values, established values, civic values.

**26)** **राज्य -** परिवारमूलकस्वराज्यव्यवस्थामें भागीदारी

1. सहअस्तित्व सहज मानवत्व सहित व्यवस्था में वैभव।

2. मानव परंपरा में परिवार मूलक स्वराज्य, स्वानुशासन रूपी स्वतंत्रता सहज वैभव परंपरा।

**State** = Participation in the family based self governance system.

1. Grandeur in the humane, co-existential system.
2. Tradition of grandeur of independence in the form of family based self-governance, self-discipline in human tradition.

**27)** **राष्ट्र**

1. दृष्टापद सहज जागृति पूर्ण मानव परंपरा ही अखण्ड राष्ट्र चेतना, व्यवस्था सहज प्रमाण।

2. मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान का प्रभाव सहज आचरण परंपरा। धरती अखण्ड होना-रहना स्पष्ट है।

3. मानव, मानव संस्कृति एवं सभ्यता में निरंतरता सहित, उसके संरक्षण, संवर्धनकारी विधि व्यवस्था सहज अक्षुण्णता सहित परंपरा।

**Nation**

1. Fully awakened human tradition is indeed the evidence of undivided national consciousness and system.
2. Tradition of conduct produced (induced) by the constitution in the form of humane code of conduct. Earth is, and remains, undivisible, is clear..
3. Continuity of humans, human culture and civility, and along with that, uninterrupted tradition of methods & systems for protecting & enriching the same.

**28)** **राष्ट्रीय चरित्र** - मानव चेतना सहज समझदारी (संज्ञानीयता) में नियंत्रित संवेदना सहज प्रमाण परंपरा।

1. दश सोपानीय व्यवस्था क्रम में हर नर-नारी में, से, के लिए सत्यबोध सहज ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता सहज आचरण सहित परिवार व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना।

2. मानवीय शिक्षा-संस्कार सहित परिवार मूलक स्वराज्य-व्यवस्था में भागीदारी सहज स्वतंत्रता वैभव सहित नित्य वर्तमान में, से, के लिए आचरण।

**National character** - Tradition of evidence of sensations being regulated in and by understanding of humane consciousness (cognisance).

1. On course to the ten-tier system, participation of & by all humans (males & females) in the family system as well as in the overall system based on conduct accomplished with knowledge, wisdom & science of truth.
2. Conduct in, of & for the eternal presence of grandeur of independence with participation in the family based self governance system with humane education-*sanskar*.

**29)** **राष्ट्रीयता**

1. न्याय प्रदायी क्षमता, योग्यता, पात्रता सहित कार्य-व्यवहार सहित सहअस्तित्व सहज प्रमाण परंपरा।

2. मानवीयतापूर्ण आचरण, व्यवहार, विचार का वर्तमान और उसकी परंपरा ज्ञान, विवेक, विज्ञान सहित किया गया दायित्व व कर्त्तव्य निर्वाह।

**Nationality**

1. Tradition of evidence in & of coexistence along with potential, ability & receptivity for doing justice in work & behaviour.
2. Presence & tradition of humane conduct, behaviour & thoughts; fulfilling duties and responsibilities with knowledge, wisdom & science.

**30)** **स्वतंत्रता**

1. जागृतमानव स्वयं स्फूर्त विधि से संस्कृति-सभ्यता, विधि-व्यवस्था में भागीदारी।

2. पूर्णता सहज निरंतरता, मानवीय संस्कृति-सभ्यता, विधि-व्यवस्था सहज अक्षुण्णता एवं परंपरा।

3. प्रामाणिकता व समाधान पूर्ण अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा व प्रकाशन क्रिया सहज परंपरा।

4. स्वानुशासन पूर्ण पद्धति, प्रणाली, नीति पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार-विचार विन्यास परंपरा।

**Independence**

1. Awakened human being; spontaneous participation in culture & civility, law & system.
2. Continuity of completeness; tradition & intactness of humane culture & civility, law & system.
3. Authenticity; tradition of activities of expression, communication & manifestation of resolution.
4. Tradition of work & behaviour done in self-disciplined manner and by way of ethics.

**31)** **स्वराज्य**

1. जागृत मानव परिवार मूलक समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज वैभव।

2. मानवीय शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा, विनिमय-कोष, उत्पादन-कार्य, स्वास्थ्य-संयम सुलभता का अविभाज्य वर्तमान और उसकी परंपरा।

3. मानव चेतना सम्पन्न मानव परंपरा में मानवीय शिक्षा-संस्कार, स्वास्थ्य-संयम, न्याय-सुरक्षा, उत्पादन में सुनिश्चित दिशा और निपुणता, कुशलता, पांडित्य सहित उत्पादित वस्तु व विनिमय कोष, व्यवस्थाओं का अविभाज्य वर्तमान और उसकी परंपरा वैभव है।

**Self-governance**

1. Awakened human being; resolution & prosperity in the family; grandeur of fearlessness & coexistence.
2. Uninterrupted presence of availability of humane education-*sanskar*, justice-security, exchange-reserve, production-work & health-*sanyam*, and its tradition.
3. Clear direction in human tradition accomplished with humane consciousness humane education-*sanskar*, health-*sanyam*, justice-security & production; and uninterrupted presence of produced goods & exchange-reserve systems along with skills, proficiency & mastery, and the grand tradition thereof.

**32)** **समृद्धि**

1. परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन।

2. अभाव का अभाव।

3. समाधान समृद्धि सम्पन्नता - समझदारी से समाधान, श्रम से समृद्धि।

**Prosperity**

1. Production of goods more than needs of the family.
2. Lack of lacking.
3. Accomplished with resolution & prosperity - resolution from understanding, prosperity from physical work.

**33)** **संप्रभुता**

1. न्याय प्रदायी क्षमता, योग्यता, पात्रता व सत्यबोध सहित नियम, नियंत्रण, संतुलनपूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार।

2. प्रबुद्धता सहित स्वयं स्फूर्त विधि पूर्वक परिवार व्यवस्था सहज रूप में अभिव्यक्ति, त्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदार होने की सम्प्रेषणा, प्रकाशन।

**Autonomy**

1. Work & behaviour done by way of law, regulation & balance, along with truth and potential, ability & receptivity for doing justice.
2. Spontaneous expression in the family system, along with enlightenment; communication & manifestation of self-organisation with -ness and participation in the overall system.

**34)** **समाधान**

1. समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी एवं फल-परिणाम समझदारी के अनुरूप होना।

2. समझदारी पूर्ण होना-प्रमाणित होना।

3. जानना, मानना, पहचानना व निर्वाह करने की क्रिया; क्यों और कैसे का उत्तर ही समस्याओं का निराकरण, विवेक सम्मत विज्ञान, विज्ञान सम्मत विवेकपूर्ण प्रणाली से संपन्न करने की क्रिया।

**Resolution**

1. Understanding, honesty, responsibility & participation; results and consequences as per the understanding.
2. Being with complete understanding; being an evidence.
3. Activity of knowing, believing, recognising & fulfilling; answer to why and how being the solution of all problems; activity of accomplishing the state of - science aligned with wisdom and wisdom aligned with science.

**35)** **सहअस्तित्व**

1. व्यापक वस्तु में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति।

2. परस्परता में निर्विरोध सामरस्यता समाधान।

3. अनंत इकाई रूपी प्रकृति में परस्परता और विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति पूर्ण परंपरा में ही अस्तित्व में परस्पर इकाईयों में उपयोगिता-पूरकता व उदात्तीकरण क्रिया और उसकी संतुलित परंपरा त्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी स्पष्ट है। यही सहअस्तित्व सहज अनन्त इकाईयों में गुणात्मक विकास, यथास्थिति, पूरकता, उपयोगिता, उदात्तीकरण सूत्र व्याख्या है।

4. सहअस्तित्व में ही अनंत इकाईयाँ परस्परता में विकास क्रम, विकास, पूरकता, उदात्तीकरण सूत्र और व्याख्या।

**Coexistence**

1. Insentient & sentient nature saturated in Omnipresence.
2. Conflict-less harmoniousness, resolution in mutuality.
3. It is clear that - usefulness & complementariness mutually in the units in existence is indeed the development progression and mutuality in nature in the form of countless units, development, awakening progression & awakened tradition. It is also clear that its balanced tradition is in the form of self-organisation with -ness and participation in the overall system. This indeed is the maxim and elaboration of qualitative progress, actual state, complementariness, usefulness & evolution in the countless units in existence.
4. Maxims & elaboration of development progression, development, complementariness & evolution in the coexistence itself.

**36)** **सत्य**

1. सहअस्तित्व नित्य वर्तमान - सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति सदा (नित्य) प्रमाण व प्रभाव वर्तमान।

2. सत्ता तीनों कालों में एक सा भासमान, विद्यमान एवं अनुभव गम्य है। यही साम्य ऊर्जा है।

3. मानव परंपरा में स्थिति सत्य, वस्तुस्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य परंपरा रूप में नित्य वर्तमान होना अनुभवमूलक विधि से समझ में आता है।

अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन जागृति, रासायनिक-भौतिक रचना-विरचना के प्रति अनुभव प्रामाणिकता, नियति में, से, के लिए नित्य वर्तमान।

तीनों कालों में एक सा विद्यमान, भासमान, सुखप्रद, ऊर्जा सम्पन्न और जड़ चैतन्य प्रकृति में क्रिया श्रम, गति, परिणाम और अमरत्व, विश्राम, गन्तव्य, परंपरा में निर्भ्रमता अथवा जागृति पूर्ण परंपरा सहज वर्तमान।

**Truth**

1. Coexistence is ever present - insentient & sentient nature saturated in Omnipotence is eternally evident and prevalent.
2. Omnipotence is uniformly perceivable, present and realisable at all times (past, present & future). This itself is equilibrium energy.
3. Eternal presence of absolute truth, evident truth & manifested truth in the form of tradition in human tradition, is understood by way of realisation rooted method.

Ever presence of existence, development, *jeevan*, awakening in *jeevan*, realisation of formation-deformation of the physico-chemical world - in, by & for authenticity and destiny.

Uniformly present, perceivable, blissful, energyful at all times (past, present & future); activity in insentient & sentient nature, effort, motion, result and immortality, tranquillity, end of delusion in tradition, and presence of awakened tradition.

**37)** **संतुलन**

1. स्वभाव गति प्रतिष्ठा।

2. स्वतृप्ति पूर्वक स्वभाव गति का प्रकाशन।

3. मानव परंपरा में स्वत्व स्वतंत्रता अधिकार का सदुपयोग, सुरक्षात्मक क्रिया।

**Balance**

1. Eminence of natural functioning.
2. Manifestation of natural functioning by way of self-satisfaction.
3. Activity of right-use & security of the right of self-ness and independence in human tradition.

**38)** **संस्कृति**

1. पूर्णता के अर्थ में किया गया कृतियाँ।

2. क्रियापूर्णता - आचरणपूर्णता सहज परंपरा।

3. मानवीयता पूर्ण आचरण परंपरा।

**Culture**

1. Actions done for completeness.
2. Tradition of activity-completeness and conduct-completeness.
3. Tradition of humane conduct.

**39)** **सभ्यता**

1. समझदारी सहित व्यवस्था में अभ्यस्तता का प्रतिबद्ध होने का प्रस्तुति।

2. सहअस्तित्व जो सामाजिकता (समाधान) एवं समृद्धि का योगफल है।

3. मानवीयता पूर्ण आहार, विहार, व्यवहार।

4. अखण्ड समाज और सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी।

**Civility**

1. Declaration for being committed to practise in the system (with understanding).
2. Coexistence, which is the sum of sociality (resolution) and prosperity.
3. Humane food, lifestyle & behaviour.
4. Participation in the undivided society and universal system.

भाग – तीन

Part - 3

सहअस्तित्व सूत्र व्याख्या

Maxims and description of coexistence

1. व्यापक सत्ता में सम्पृक्त अनन्त ईकाइयाँ जड़-चैतन्य रूप में नित्य वर्तमान।

Eternal presence of the infinite number of sentient-insentient units saturated in the omnipresent Omnipotent.

2. सत्ता व्यापक, पारगामी, पारदर्शी है। प्रकृति रूपी ईकाइयाँ अनन्त हैं, प्रत्येक एक रूप, गुण, स्वभाव, धर्म सम्पन्न त्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज वर्तमान है।

Omnipotence is omnipresent, permeative and transparent. Number of units in nature is infinite; the presence of each unit is with orderliness with its form, attributes, intrinsic nature & *dharma*, and with its participation in the overall orderliness.

3. व्यापक सत्ता में सम्पूर्ण प्रकृति डूबी, भीगी, घिरी हुई नित्य वर्तमान है, अविभाज्य है।

The whole nature is eternally present as submerged, soaked & surrounded in, and inseparable from, the omnipresent Omnipotent

4. प्रकृति चार अवस्था में इसी पृथ्वी पर स्पष्टतया विद्यमान है।

Four orders in nature are explicitly present on Earth.

5. सहअस्तित्व नित्य प्रभावी है।

Coexistence is eternally effective.

6. (1) पदार्थावस्था में सभी प्रकार के खनिज

All minerals belong to the material order

(2) प्राणावस्था में सभी प्रकार के अन्न व वनस्पतियाँ

All types of food and vegetation belong to the plant order

(3) जीवावस्था में अनेक अण्डज-पिण्डज, जीव संसार

Various oviparous and viviparous species, and the whole animal world belong to the animal order

(4) ज्ञानावस्था में मानव।

Humans belong to the plant order.

7. जागृत मानव परंपरा में मानव मानवत्व सहित व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी सम्पन्न होता है। यही मानव में, से, के लिए उपयोगिता पूरकता सहज सूत्र है।

Start of translation

8. तीनों अवस्था में प्रत्येक एक अपने ‘त्व’ सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करते हुए स्पष्ट है। इसको समझने के लिए ‘अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन’ बनाम ‘मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)’ प्रकाशित है। इन सूचनाओं के आधार पर अध्ययन करने अनुभव करने की स्थिति में मानव समझदार होता है।

9. नित्य वैभव ही सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति चार अवस्था में है। व्यापक वस्तु ही सत्ता, जागृत मानव परंपरा में व्यवस्था सहज प्रमाण ही प्रबुद्धता, संप्रभुता, प्रभुसत्ता है क्योंकि संज्ञानीयतापूर्वक संवेदनायें नियंत्रित होते हैं।

10. हर नर नारी में, से, के लिये प्रबुद्धता, संप्रभुता, प्रभुसत्ता में, से, के लिये स्वत्व स्वतंत्रता अधिकार समान है। हर नर नारी प्रबुद्धता संपन्न होने का मौलिक अधिकार है। यही वर्तमान में विधि है। विधि-विधान पूर्वक दश सोपानीय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था है।

प्रबुद्धता-संप्रभुता-प्रभुसत्ता सहज आचरण सूत्र व्याख्या

**परिभाषा** :- प्रत्येक सूत्र शब्द के साथ शाश्वत, नित्य, अखण्ड, सार्वभौम दृष्टि सहित स्थिर, निश्चय सहज वैभव वर्तमान स्पष्ट होने में, से, के लिए है।

3.1 प्रबुद्धता

1. ज्ञान, विवेक, विज्ञान संपन्नता सहज प्रमाण कार्य-व्यवहार व्यवस्था में भागीदारी।

2. समझदारी, ईमानदारी सम्पन्नता सहित जिम्मेदारी व भागीदारी।

3.2 संप्रभुता

1. प्रबुद्धता सहित अखण्ड राष्ट्र समाज सूत्र व्याख्या में पारंगत प्रमाण। यही समझदारी है।

2. ईमानदारी सम्पन्नता जिम्मेदारी-भागीदारी के रूप में स्पष्ट होना।

3.3 प्रभुसत्ता

1. अखण्ड समाज एवं राष्ट्र-राष्ट्रीयता सहित दश सोपानीय स्वराज्य व्यवस्था मानवत्व रूप में प्रबुद्धता संप्रभुता सहित सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी।

2. समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी के रूप में प्रमाण परंपरा। यही प्रबुद्धता पूर्ण सत्ता है।

3.4 राष्ट्र

धरती अखण्ड होने के अर्थ में धरती पर ही चारों अवस्थाओं का वैभव, धरती पर मानव अखण्ड समाज राष्ट्र के अर्थ में होना रहना नित्य वैभव।

**स्पष्टीकरण** - जागृत मानव अखण्डता सहज सूत्र व्याख्या सहित प्रमाण है। बहु प्रकार की विभिन्न वंश के रूप में जीव-परंपरायें, प्राणावस्था में अन्न-वन वनस्पतियों की परंपराएँ बीज-वृक्ष विधि सहज रूप में, भौतिक रूप में खनिज वस्तुओं की परंपरा परिणाम के आधार पर एवं संतोषजनक संतुलन में शीतोष्ण-वर्षामान परंपरा सहज वैभव है।

3.5 राष्ट्रीयता

1. जागृत मानव परंपरा ही मानवीयतापूर्ण आचरण परंपरा।

2. ‘त्व’ (मानवीयता सहज निश्चित आचरण) सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

**स्पष्टीकरण** – रासायनिक भौतिक क्रियाकलाप और मानवेत्तर जीव संसार नियम, नियंत्रण, संतुलन पूर्वक ‘त्व’ सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में पूरकता-उपयोगिता विधि से भागीदारी करता हुआ स्पष्ट है, जिसकी गवाही तीनों अवस्था में है। तीनों अवस्थायें सहअस्तित्व में वैभवित होने के उपरान्त ही मानव शरीर रचना सहित जीवन के संयुक्त रूप में मानव का प्रकटन इस धरती पर हुआ है। आज उक्त तीनों अवस्थायें पूरक विधि से संतुलित रहते हुए प्रवर्तनशील है। यही मानव व मानवत्व सहित अखण्ड समाज व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज वर्तमान होना, राष्ट्रीयता अर्थात् धरती वैभवित रहने का सूत्र व्याख्या व स्वरूप में वर्तमान होना आवश्यक है। भौतिक-रासायनिक ईकाइयाँ और सभी प्रकार के जीव अपने-अपने ‘त्व’ सहित व्यवस्था के रूप में वर्तमान है। ‘स्व’ होने के रूप में ‘त्व’ रहने (प्रमाणित) के रूप में वर्तमान आचरण रूप में प्रमाण और नियम सहित वर्तमान है।

3.6 अनुभव

1. अनुक्रम सहज अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन सहअस्तित्व में, से, के लिए प्रमाण वर्तमान।

2. सहअस्तित्व में अनुक्रम सहज विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति सहज प्रमाण परंपरा एवं निरंतरता की स्वीकृति।

3. अनुक्रम विधि में तद्रूप क्रिया, तदाकार प्रमाण ही अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा प्रकाशन।

तदाकार = सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण स्वरूप में मानव स्वयं प्रमाणित होना जागृति है।

तद्रूप = ज्ञान अनुभव सम्पन्नता ही दृष्टा पद है और अन्य को बोध करने के रूप में प्रमाण।

3.7 अनुक्रम

1. सहअस्तित्व में, से, के लिए क्रम, प्रमाण क्रिया।

2. विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति और सहअस्तित्व सम्पूर्ण स्थिति, गति और क्रिया है। यही अनुक्रम व अनुभव है।

**स्पष्टीकरण** - हर मानव (हर नर-नारी) सहअस्तित्व में, से, के लिए अनुभव पूर्वक प्रमाण है। इसलिए हर मानव में सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण सहज एक रूपता का होना अनुक्रम है। यही प्रमाणिकता, प्रमाण है। सहअस्तित्व में एकाकारता ही अनुभव सहज बोध प्रमाण व संकल्प वर्तमान है।

सहअस्तित्व सहज अनुक्रम से परस्परता पूर्वक पूरक होने की स्वीकृति ही चित्त-वृत्ति में न्याय साक्षात्कार है। यही चित्रण, तुलन, विश्लेषण सहज सूत्र है। यही आस्वादन-चयन पूर्वक कार्य-व्यवहार व व्यवस्था में प्रमाण है। जिसका दृष्टा अथवा जानने, मानने, पहचान सहित निर्वाह करने वाला मानव ही है। मानव अपने में शरीर एवं जीवन सहित संयुक्त रूप में है। चारों अवस्था सहज परस्परता में मानव जागृत होने का प्रमाण ही मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी ही राष्ट्रीयता है अर्थात् चारों अवस्था में परस्पर पूरकता उपयोगिता सहज प्रमाण वर्तमान ही राष्ट्रीयता है।

3.8 राष्ट्रीय चरित्र

धरती अपने में अखण्ड व धरती पर मानव जाति अखण्ड समाज रूप में मानव का उद्देश्य सुख रूप में मानव संस्कृति-सभ्यता, अखण्ड समाज में सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी जागृति सहज प्रमाण हो यह हर मानव में प्रमाणित होना ही अखण्ड मानव समाज होने के अर्थ में परंपरा प्रमाण है।

**स्पष्टीकरण** - मूल्य, चरित्र, नैतिकता के संयुक्त रूप में मानव जागृत होने का प्रमाण मानवीयता पूर्ण आचरण है,जिसमें स्वधन, स्वनारी-स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार, विचार व्यवस्था है। राष्ट्रीयता अखण्ड समाज के अर्थ में, राज्य परिवार मूलक स्वराज्य वैभव के रूप में सार्वभौम है। मानव में, से, के लिए मूल्य, चरित्र व नैतिकता पूर्वक संपूर्ण मूल्य स्पष्ट होता है। जब मौलिक रूप में मानव आचरण में स्पष्ट होता है तब मानवीय मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहज रूप में पहचान होता है और तब नैतिकता, चरित्र व मूल्य प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होना पाया जाता है।

3.9 अखण्ड राष्ट्र व्यवस्था

परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था व व्यवस्था में भागीदारी करना, कराना, करने के लिए सहमत होना।

3.10 संविधान

1. क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता के अर्थ में पारंगत प्रमाण परंपरा होना रहना।

2. प्रबुद्धता, संप्रभुता, प्रभुसत्ता सहज आचरण सूत्र व्याख्या परंपरा सहज रूप में होना रहना।

3. नियम-नियंत्रण-संतुलन, न्याय-धर्म-सत्य पूर्ण व्यवस्था सहज मानव परंपरा का होना रहना।

3.11 विधान

1. स्थिति क्रम में संविधान, गति क्रम में विधान, पूर्णता के अर्थ में आचरण।

2. ‘त्व’ सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

3. जागृति सहज प्रमाण सम्पन्न परंपरा।

3.12 पूर्णता

1. परमाणु में गठनपूर्णता ही चैतन्य इकाई जीवन (जीवन पद); जीवन में क्रियापूर्णता व आचरणपूर्णता (केवल जागृत मानव परंपरा में प्रमाण)।

2. जीवन घटना व शरीर रचनाक्रम नियति सहज प्रकटन।

3. जागृत मानव सहज अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा।

**स्पष्टीकरण** – जीव परंपरा में जीवन जीव चेतना को (चार विषयों के साथ में) विभिन्न वंश परंपरा के रूप में प्रकाशित किया है।

जागृत मानव परंपरा में ही संज्ञानीयता में नियंत्रित संवेदना, मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज प्रमाण परंपरा है।

जागृत मानव में ही संज्ञानीयता पूर्वक संवेदनायें नियंत्रित रहती है। यही स्व नियंत्रित आचरण सहज कार्य-व्यवहार ही संविधान पूर्णता के अर्थ में विधान है।

3.13 सहअस्तित्व

संग्रह, शोषण के स्थान पर उपयोगिता-पूरकता, अव्यवस्था के स्थान पर व्यवस्था, संग्रह के स्थान पर समृद्धि के लिये प्रेरणा है। अब तक प्रत्येक शक्ति केन्द्रित शासन संविधान व्यवस्थाओं में संग्रह, शोषण विधि से मानवीयता फलीभूत नहीं हो पायी। उपयोगिता-पूरकता, समृद्धि व समाधान सहित व्यवस्था सहअस्तित्व में ही फलीभूत होता है। अब तक नस्ल, रंग, जाति, संप्रदाय, वर्ग, धर्म कहलाने वाले मत-मतान्तर अथवा मतभेदों से भरे हुये धर्म, पंथ, भाषा या देश के आधार पर ‘त्व’ सहित मानव को पहचाना नहीं जा सका है। जिसकी आवश्यकता है।

मानवत्व सहित मानव स्वयं व्यवस्था है यही सर्वतोमुखी समाधान, सुख, परम सौन्दर्य शुभ और मानव धर्म है। अस्तित्व स्वयं किसी के लिये बाधा नहीं होता है। अस्तित्व में मानवीयतापूर्ण विधि से किसी की बाधा अथवा हस्तक्षेप कभी नहीं होता है। अस्तित्व निरंतर सामरस्यता है, इसलिए अस्तित्व ही परम सत्य है। अस्तित्व में कोई ऐसी चीज नहीं है जो पैदा होती हो अथवा जो है वह मिट जाती हो। यह दोनों क्रियायें अस्तित्व में नहीं है। अस्तित्व में मात्रात्मक परिणाम गुणात्मक परिवर्तन की परंपरा है, यह विकास क्रम में दृष्टव्य है। विकास व जागृति मानव में प्रमाणित होना स्पष्ट है। “अस्तित्व न घटता है न बढ़ता है।”

भाग – चार

Part - 4

संविधान, विधान, विधि, न्याय, आचरण सूत्र व्यवस्था व स्वराज्य स्वतंत्रता

4.1 संविधान

क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता के अर्थ में अनुभव प्रमाण व्यवहार-कार्य रूप में संविधान है।

समझदारी के रूप में अनुभव प्रमाण मूलक शिक्षा संस्कार परंपरा सहज प्रावधान ही संविधान का प्रमुख भाग है।

हर नर-नारी में, से, के लिए समझदारी सम्पन्न होने का अधिकार सहज मानवीय शिक्षा सहज प्रावधान फलस्वरूप मानव चेतना सहज प्रतिष्ठा सहित देव चेतना, दिव्य चेतना सहज प्रमाण ही संस्कार और यही संविधान।

**स्पष्टीकरण**

संविधान क्रियापूर्णता, सर्वतोमुखी समाधान, अभ्युदय, आचरणपूर्णता अर्थात् अनुभवमूलक विधि सहज अभ्युदय, नि:श्रेयस, भ्रममुक्ति के अर्थ में सुनिश्चित सूत्र व्याख्या है। संविधान पूर्णता के अर्थ में सुनिश्चित आचरण व्यवस्था सहज सूत्र-व्याख्या है।

सहअस्तित्व में ही भौतिक-रासायनिक व जीवन क्रियायें चार अवस्था में वर्तमान है। सहअस्तित्व नित्य प्रभावी है। व्यापक वस्तु में ही सभी एक-एक वस्तुएं अविभाज्य, संपृक्त रूप में नित्य वर्तमान है। यही पदार्थ, प्राण, जीव तथा ज्ञानावस्था रूप में इसी धरती पर विद्यमान है।

प्रत्येक एक अपने ‘त्व’ सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी करता हुआ वर्तमान है। विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति सहज अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा व प्रकाशन है।

**अभ्युदय** = सर्वतोमुखी समाधान, क्रियापूर्णता सहज प्रमाण परंपरा।

**नि:श्रेयस** = सर्वतोमुखी समाधान सहित लोकेषणा से भी मुक्ति, जागृति पूर्वक आचरणपूर्णता प्रमाण प्रवृत्ति अर्थात् उपकार प्रवृत्ति ही है।

**पूर्णता** = गठनपूर्णता अर्थात् चैतन्य इकाई (जीवन क्रिया)। जीवन और शरीर का संयुक्त रूप में मानव, जीवंत मानव में, से, के लिये संज्ञानीयता ही क्रियापूर्णता और आचरणपूर्णता सहज प्रमाण ही जागृतिपूर्ण मानव परंपरा है।

4.2 विधान

1. मानव लक्ष्य समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व परंपरा के अर्थ में आचरण (मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहित) सूत्र व्याख्या सहज परंपरा।

2. अखण्ड समाज ही दश सोपानीय सार्वभौम व्यवस्था सहज व्याख्या।

3. मानव लक्ष्य सफल होना ही जीवन मूल्य प्रमाणित होना।

**विधि** = जीवन मूल्य सुख, शांति, संतोष, आनंद के अर्थ में, मानव लक्ष्य समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाण के रूप में मानव परंपरा में, से, के लिए स्थिति-गति सूत्र व्याख्या, अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था सहज प्रमाण परंपरा।

**व्यवस्था** = विश्वास (संबंधों में मूल्य निर्वाह), सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्नता सहित अखण्ड समाज सार्वभौम सूत्र व्याख्या सहज परंपरा।

**स्पष्टीकरण** - व्यवस्था ही जागृत परंपरा है। वर्तमान में सभी संबंधों कार्य-व्यवहार में विश्वस्त, भविष्य क्रम में स्वीकार किया गया कार्य-व्यवहार स्थिति-गति सहज संस्कृति-सभ्यता में, से, के लिए आश्वस्त रहना व्यवस्था है। विगत का स्मरण, वर्तमान में विश्वास, जागृति सहज प्रमाण, भविष्य की योजनाओं में आश्वस्त रहना व्यवस्था है।

विधान

**तात्विक** = मानव लक्ष्य सहज समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाण परंपरा के अर्थ में आचरण सूत्र व्याख्या रूपी प्रमाण वर्तमान है।

**बौद्धिक** = जीवन लक्ष्य के अर्थ में मानव लक्ष्य को प्रमाणित करने का कार्य व्यवहार व्याख्या।

**व्यवहारिक** = मानव लक्ष्य को व्यवस्था क्रम में प्रमाणित करने का कार्यक्रम आचरण गति (दश सोपानीय स्वराज्य व्यवस्था)।

4.3 विधि

**तात्विक** = जीवन लक्ष्य अर्थात् सुख, शांति, संतोष, आनंद अर्थ में, मानव लक्ष्य यथा समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में, से, के लिए अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सहज प्रमाण के रूप में है।

**बौद्धिक** = जीवन जागृति प्रमाण सहज परंपरा के रूप में सर्व सुलभ होना ही सर्व शुभ है।

**व्यवहारिक** = जागृत मानव परंपरा में, से, के लिए कायिक, वाचिक, मानसिक व कृत, कारित, अनुमोदित भेदों से परंपरा प्रमाणित होना ही है।

4.4 न्याय

**न्याय** = मानव सम्बंधों में मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, परस्पर उभय तृप्ति, संतुलन।

**तात्विक** = समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व के अर्थ में अध्ययन, उत्पादन, कार्य-व्यवहार करना।

**बौद्धिक** = संबंधों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह करने का संकल्प, मूल्यांकन स्वीकृति, उभय तृप्ति सहज स्वीकृति।

**व्यवहारिक** = परिवार संबंधों का निर्वाह, परिवार व्यवस्था का निर्वाह, समाधान-समृद्धि प्रमाण सहित सार्वभौम व्यवस्था सहज परंपरा।

4.5 व्यवस्था

**तात्विक** = सहअस्तित्व में अनुभव सहज विश्वास पूर्वक वर्तमान में दृढ़ता व निश्चयता पूर्वक अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन।

**बौद्धिक** = सर्वतोमुखी समाधान पूर्वक मानवत्व सहज अभिव्यक्ति-सम्प्रेषणा को प्रमाणित करना।

**व्यवहारिक** = समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी पूर्वक विधिवत् समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में, से, के लिए प्रमाणित होना, रहना, करना, कराना, करने के लिए सहमत होना।

4.6 स्वराज्य

· मानवत्व सहित सुनिश्चित आचरण सार्वभौमता के अर्थ में वैभव,

· मानवत्व रूपी आचरण सहित व्यवस्था सहज वैभव,

· स्वयं में विश्वास सहज वैभव,

· श्रेष्ठता का सम्मान सहज वैभव,

· प्रतिभा सहज वैभव,

· सर्वतोमुखी समाधान संपन्न व्यक्तित्व सहज वैभव,

· मानवीयता पूर्ण आहार-विहार-व्यवहार में स्पष्टता सहज वैभव, (व्यक्तित्व)

· परिवार में आवश्यकता से अधिक उत्पादन ही स्वावलम्बन समृद्धि सहज वैभव,

· परिवार में समाधान समृद्धिपूर्वक अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन सहज वैभव,

· ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता सहित अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में, से, के लिए स्वयंस्फूर्त अर्थात् समझदारी का ही वैभव फलस्वरूप दश सोपानीय स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी करना ही वैभव है।

**समझदारी ईमानदारी जिम्मेदारी, भागीदारी**

अस्तित्व मूलक मानव विवेक सम्मत विज्ञान, संबंध सहज पहचान,

केन्द्रित चिंतन ही अस्तित्व विज्ञान सम्मत विवेक, मूल्यों का निश्चयन

दर्शन ज्ञान, जीवन लक्ष्य सहित लक्ष्यगामी दिशा और सहित निर्वाह और

जीवन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण मानव लक्ष्य में विश्वास मूल्यांकन करने में

आचरण ज्ञान सम्पन्नता में विश्वास तृप्ति, संतुलन विश्वास

स्वयं में विश्वास (समझदारी) स्वयं स्फूर्त है

स्वयं स्फूर्त विधि से भागीदारी करना ही वैभव है।

4.6 (1) राष्ट्र

राष्ट्र अपनी सम्पूर्णता में चारों अवस्था व पदों में यथा स्थिति उपयोगिता-पूरकता विधि सहज वैभव है।

**तात्विक** = अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था का संयुक्त स्थिति गति ही राष्ट्र है।

**बौद्धिक** = जागृत मानव परंपरा, मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान सर्वसुलभ होना, वर्तमान रहना है।

**व्यवहारिक** = अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्व-वाद-शास्त्र एवं विगत से प्राप्त मानवोपयोगी उत्पादन कार्यों में प्रयुक्त होने का सम्पूर्ण तकनीकी समेत शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा, उत्पादन-कार्य, विनिमय-कोष और स्वास्थ्य-संयम सहित अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था रूप में परंपरा का होना-रहना।

4.6 (2) प्रबुद्धता

**तात्विक** = जागृति पूर्वक वर्तमान में प्रमाण सहित रहना, करना-कराना-करने के लिए सहमत रहना, आगत में, से, के लिए सार्थक योजना सम्पन्न रहना और विगत स्मरण में सार्थकता के सूत्रों को वर्तमान में संयोजित प्रमाणित किए रहना।

**बौद्धिक** = जागृति पूर्वक अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में, से, के लिए परंपरा में कार्य-व्यवहार करना प्रेरणा स्रोत होना।

**व्यवहारिक** = जागृति सहज विधि से नियम, नियंत्रण, संतुलन, सहित सर्वतोमुखी समाधान रूपी मानव धर्म, सहअस्तित्व रूपी परम सत्य बोध व अनुभव मूलक प्रणाली से प्रमाणित रहना।

4.6 (3) संप्रभुता

**तात्विक** = मानवीयता, देव मानवीयता व दिव्य मानवीयता सहज प्रमाण परंपरा।

**बौद्धिक** = पूर्णता के अर्थ में पारंगत होना प्रबुद्धता का सहज प्रमाण, ‘चेतना-त्रय’ प्रमाण परंपरा वर्तमान।

**व्यवहारिक** = अखण्डता सार्वभौमता का सूत्र व्याख्या रूपी प्रमाण परंपरा।

4.6(4) प्रभुसत्ता

**तात्विक** = प्रबुद्धता नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य पूर्ण सत्ता ज्ञान विवेक विज्ञान सहज परंपरा सूत्र व्यख्या।

**बौद्धिक** = प्रबुद्धता पूर्वक सहज निरंतर प्रमाण सहज सत्ता में जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने का क्रिया।

**व्यवहारिक** = प्रबुद्धता पूर्ण मानव परंपरा ही पीढ़ी से पीढ़ी में शिक्षा-दीक्षा संस्कार रुप में सत्ता = अखण्डता सार्वभौमता रुपी वैभव परंपरा।

प्रभुसत्ता सहज निरंतरता ही जागृत मानव चेतना सहज परंपरा है। शिक्षा-संस्कार, उत्पादन-कार्य, न्याय- सुरक्षा, स्वास्थ्य-संयम, विनिमय -कोष कार्य ही जागृत मानव परंपरा है।

4.6 (5) राष्ट्रीयता

**तात्विक** = अखण्ड समाज के अर्थ में सार्वभौम व्यवस्था सहज परंपरा।

**बौद्धिक** = मानवीयतापूर्ण शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा सुलभता।

**व्यवहारिक** = सर्व मानव में, से, के लिए मानवीयता पूर्ण आचरण व्यवस्था सहज प्रमाण परंपरा।

मानव परंपरा में सर्व शुभ कार्य व्यवहार और व्यवस्था क्रम ही सर्व शुभ रूपी समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण सुलभता है। राष्ट्र का प्रमाण वर्तमान में सर्वतोमुखी समाधान और निरंतरता ही राष्ट्रीयता है। मानवत्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

4.6 (6) राष्ट्रीय-चरित्र

· मानवीय शिक्षा-संस्कार सुलभता प्रमाण परंपरा,

· न्याय-सुरक्षा सुलभता प्रमाण परंपरा,

· उत्पादन-कार्य सुलभता प्रमाण परंपरा,

· विनिमय-कोष सुलभता प्रमाण परंपरा,

· स्वास्थ्य-संयम सुलभता प्रमाण परंपरा,

· मानवीयता पूर्व आचरण सुलभता प्रमाण परंपरा,

· परस्पर निश्चित संबंधों, निश्चित मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन सुलभता प्रमाण परंपरा,

· परस्पर तृप्ति समाधान, समृद्धि, वर्तमान में विश्वास (अभय), सहअस्तित्व में प्रमाण सहज परंपरा,

· नैसर्गिक और ऋतु संतुलन सुलभता में भागीदारी परंपरा राष्ट्रीय चरित्र है। जागृत मानव परंपरा में सार्वभौम व्यवस्था सहज विधि से मानव प्राकृतिक संतुलन सहित सूत्र व्याख्या का जिम्मेदार है।

4.6 (7) मूल्य

1. जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य, भौतिक रासायनिक रूपी वस्तु मूल्य सहज यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता पूर्वक उपयोगिता पूरकता रूप में वैभव।

2. मौलिकता सहज कार्य-व्यवहार व निरंतरता

· पदार्थावस्था में परिणामानुषंगीय यथास्थिति पूरकता व उपयोगिता है।

· प्राणावस्था में बीजानुषंगीय यथास्थिति पूरकता व उपयोगितायें हैं।

· जीवावस्था में वंशानुषंगीय विधि से यथास्थिति पूरकता व उपयोगितायें अध्ययन गम्य है।

· ज्ञानावस्था में मानव संस्कारानुषंगीय एवं संज्ञानीयता में नियंत्रित संवेदनायें तथा संस्कार समझदारी विधि से यथास्थिति पूरकता, उपयोगिता प्रमाणित होने की व्यवस्था एवं आवश्यकता समझ में होना-रहना है।

मानव परंपरा में हर नर-नारी समझ के आधार पर प्रवर्तनशील है।

सहअस्तित्व में अनुभव मूलक विधि से मूल्यों की अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा और प्रकाशन है। जागृत मानव परंपरा में मूल्यों का वर्तमान प्रमाण स्वाभाविक है। यह शिक्षा संस्कार विधि से सर्व सुलभ होगा।

**जीवन मूल्य** = सुख, शांति, संतोष, आनंद सहज अभिव्यक्ति

**मानव मूल्य** = धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणा सहज प्रमाण

**स्थापित मूल्य** = कृतज्ञता, गौरव, श्रद्धा, प्रेम, विश्वास, वात्सल्य, ममता, सम्मान, स्नेह

**शिष्ट मूल्य** = सौम्यता, सरलता, पूज्यता, अनन्यता, सौजन्यता, उदारता, सहजता, अरहस्यता (स्पष्टता), निष्ठा सहज निर्वाह

**वस्तु मूल्य** = उपयोगिता, कला

4.6 (8) जीवन मूल्य मौलिकता

मानव लक्ष्य - जीवन मूल्य संयुक्त रूप से मानव परंपरा सहज वैभव

समाधान पूर्वक - सुख

समाधान, समृद्धि पूर्वक - सुख, शान्ति

समाधान, समृद्धि, अभय (वर्तमान में विश्वास) पूर्वक - सुख, शान्ति, संतोष

समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाण पूर्वक - सुख, शान्ति, संतोष, आनंद

4.6 (9) स्वयं में विश्वास

1. सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान, विवेक, विज्ञान में विश्वास,

सहअस्तित्व में विकास क्रम विधि सहज ज्ञान में विश्वास,

गठनपूर्ण परमाणु के रूप में जीवन व जागृत जीवन क्रिया में विश्वास,

जीवों में जीवनीक्रम में वंशानुषंगीय होने में विश्वास,

भ्रमित मानव जीवन जागृति क्रम में होने में स्पष्ट,

जीवन में, से, के लिए जागृति स्वत्व-स्वतंत्रता-अधिकार सहज वैभव होने में विश्वास,

शरीर व जीवन संयुक्त रूप में मानव शाकाहारी होने में विश्वास,

2. स्वयं में विश्वास,

फलस्वरूप श्रेष्ठता का सम्मान में विश्वास,

प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन में विश्वास,

व्यवहार में सामाजिक होने में विश्वास,

उत्पादन कार्य रूपी व्यवसाय में स्वावलम्बन सहज विश्वास होना ही स्थिति, मौलिकता को प्रमाणित करना ही जागृति है, हर नर-नारी जागृति को स्वीकारता है।

4.6 (10) मूल्यों सहज प्रमाण परंपरा

संबंधों में मानवत्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज प्रयोजन के आधार पर पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति व संतुलन रूप में ही न्याय सुलभ होना ही सुनिश्चित बिन्दु है।

**चरित्र** = स्वधन, स्वनारी-स्वपुरूष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार करना, कराना, करने के लिए सहमत होना।

**नैतिकता** = तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा करना।

मानवीयता पूर्ण आचरण में मूल्य, चरित्र, नैतिकता अविभाज्य रूप से वर्तमान रहता है। यह जागृत मानव में ही प्रमाणित होता है।

हर नर-नारी में-से-के लिये मानवीयता पूर्ण आचरण स्वीकार होना स्वाभाविक है आवश्यक है।

4.6 (11) मानव

मानवत्व सहज सूत्र व्याख्या रूप में वर्तमान परंपरा

**तात्विक** = मानवीयता पूर्ण आचरण सहित वर्तमान होने वाला, समाधान, समृद्धि समेत सुख, शान्ति पूर्वक प्रमाणित होने वाला।

**बौद्धिक** = मनाकार को साकार करने वाला मन:स्वस्थता को प्रमाणित करने वाला है।

**व्यवहारिक** = मनाकार को साकार करने के क्रम में सामान्य व महत्वाकाँक्षावादी वस्तुओं का उत्पादन करने वाला। मन:स्वस्थता सहज सर्वतोमुखी समाधान रूप में प्रमाणित करने वाला जागृत मानव है, अन्यथा भ्रमित, जागृति क्रम में गण्य मानव है।

**मानवीयता सहज सूत्र व्याख्या के रूप में -**

1. समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी सहित ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता सहित अखण्ड समाज व सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में परंपरा के रूप में प्रमाणित रहना।

2. प्राकृतिक संतुलन को वन, खनिज संतुलन रूप ऋतु संतुलन में नियंत्रित करना, हर मानव में, से, के लिये समाधान समृद्धि को प्रमाणित करना।

अखण्ड समाज सहज सार्वभौम व्यवस्था पूर्वक दश सोपानीय व्यवस्था विधि से प्रमाणित करना। सार्वभौम शुभ ही समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाण है।

समझदारी = ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता सूत्र व्याख्या है।

4.6 (12) मानवीयतापूर्ण प्रवृत्ति

**मानवीयतापूर्ण प्रवृत्ति** = पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा

**पुत्रेषणा** = जन-बल कामना प्रवृत्ति

**वित्तेषणा** = धन-बल (समृद्धि) कामना प्रवृत्ति

**लोकेषणा** = यश-बल कामना सहित सार्थकता, स्व वैभव उपकार सहज पहचान प्रस्तुत करने के रूप में अखण्डता, सार्वभौमता सूत्र व्याख्या को सहजता से स्पष्ट करना, कराना, करने के लिए सहमत होना।

अखण्ड समाज सूत्र में जीने, संबंधों को पहचानने, संबोधित करने, मूल्यों का निर्वाह करने में, से, के लिये प्रमाण परंपरा है।

उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनों के अर्थ में व उत्पादित वस्तुओं का नियोजन सामाजिकता के अर्थ में है।

स्व वैभव सहज पहचान प्रस्तुत करने रूप में सहजता, स्पष्टता है। जागृत मानव स्वभाव ही सहज है।

**(क)** **मानवीय स्वभाव**

**धीरता** = न्याय पूर्वक, न्याय प्रदायी प्रमाण सहित जीने में दृढ़ता सहज परंपरा।

**वीरता** = न्याय पूर्वक जीना, अन्य को न्याय सुलभ करना, कराना।

**उदारता** = तन, मन, धन को परिवार संबंधी व्यवस्था में उपयोग, अखण्ड समाज में सदुपयोग, सार्वभौम व्यवस्था में प्रयोजित करना।

**दया** = पात्रता के अनुरूप वस्तु सुलभ कराना, समाधान समृद्धि के अर्थ में विश्वास स्थापित कराना।

**कृपा** = वस्तु है पर उसके अनुरूप पात्रता नहीं है, उनमें पात्रता स्थापित कराना।

**करूणा** = क्षमता अर्हता हो, योग्यता-पात्रता न हो ऐसी स्थिति में योग्यता-पात्रता को स्थापित करना।

**(ख)** **मानवीय दृष्टि**

मानवीय दृष्टि न्याय, धर्म, सत्य सहज विधि से परिभाषित व्यवहार व्यवस्था में सार्थक है, व्यवहृत है।

**न्याय** = परिवार संबंध, अखण्ड समाज संबंध, सार्वभौम व्यवस्था सम्बन्धो में मूल्य निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति संतुलन में भागीदारी।

**धर्म (समाधान)** = जागृत मानव परिवार में समाधान-समृद्धि सहज अखण्ड समाज सूत्र, सार्वभौम व्यवस्था में प्राकृतिक संतुलन में-से-के लिये संबंधों की पहचान व निर्वाह परंपरा के रूप में मौलिकता की निरंतरता, मूल्यांकन, परस्परता में तृप्ति संतुलन अर्थात् समाधान प्रमाण वर्तमान = सुख।

**सत्य** = न्याय व समाधान प्रमाणित होना ही सहअस्तित्व रूपी परम सत्य में अनुभव प्रमाण। यही मानव संचेतना है।

4.6 (13) मानव संचेतना-चेतना

**संचेतना =**

1. पूर्णता के अर्थ में अपेक्षा समझ प्रमाण ही संचेतना, समझ पूर्णता सहज प्रमाण परंपरा ही चेतना, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता के अर्थ में वर्तमान, जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना ही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना है।

2. संज्ञानीयता में संवेदनाये नियंत्रित रहना ही प्रमाण - संज्ञानीयता अर्थात् जानने मानने की सम्पूर्ण वस्तुयें सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व ही है।

सहअस्तित्व में ही जीवन क्रियाकलाप, शारीरिक रचना-विरचना, रासायनिक क्रियाकलाप, भौतिक क्रियाकलाप, शरीर व जीवन का संयुक्त क्रियाकलाप के रूप में मानव क्रियाकलाप है। यही जागृति है। इसको समझना ही जागृति है। सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में मानव ही संज्ञान सम्पन्न अथवा मानव चेतना ही संज्ञानीयता है।

4.6 (14) जीवन बल व शक्ति

**जागृत जीवन में-**

| **नाम** | **बल क्रिया** | **शक्ति क्रिया** | **नाम** |
| --- | --- | --- | --- |
| आत्मा में | सहअस्तित्व सहज अनुभव | प्रामाणिकता | ही प्रमाण |
| बुद्धि में | अनुभव प्रमाण  बोध | प्रमाणित करना  (संकल्प) | ही ऋतंभरा |
| चित्त में | चिंतन  न्याय धर्म सत्य | चित्रण | ही शुभेच्छा  ही सर्वशुभ |
| वृत्ति में | तुलन  न्याय, धर्म, सत्य | विश्लेषण  सर्वशुभ सम्पन्न | विचार  ही नित्य शुभ |
| मन में | मूल्यों का  आस्वादन | चयन  (प्रमाणित करने का) | आशा |
| यही जीवन व यही जागृत परंपरा का प्रमाण है। | प्रत्यावर्तन में सुख शांति संतोष आनंद सहअस्तित्व में परावर्तन में समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व प्रमाण | परावर्तन मानव परंपरा में ही अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा प्रकाशन विधि से प्रमाण | शरीर समृद्धि पूर्ण मेधस तंत्र ज्ञान वाही क्रिया वाही प्रमाण है। |

परावर्तन-प्रत्यावर्तन क्रम से परंपरा में प्रमाण, कार्य व्यवहार, फल-परिणाम, मूल्यांकन और नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म (समाधान), सत्य रूपी महिमाओं के अनुरूप अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा प्रकाशन निरंतरता सर्वमानव में समान स्वत्व है। यही परस्पर अर्पण-समर्पण विधि से स्वतंत्रता अधिकार है। मानव लक्ष्य प्रमाण सहित जीवन मूल्य जागृति सहज प्रमाण परंपरा है। अखण्डता व सार्वभौमता सहज परंपरा वैभव है।

4.7 स्वतंत्रता

ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता पूर्वक अखण्डता सार्वभौमता सूत्र व्याख्या स्वयं स्फूर्त होना ही सार्थक स्वतंत्रता है। यह जागृति सहज वैभव है।

4.7 (1) अखण्ड समाज

**अखण्ड समाज** = मानव जाति में एक, धर्म एक होने का ज्ञान, स्वीकृति व प्रमाण परंपरा ही मानवीय संस्कृति सभ्यता है। अखण्ड समाज के अर्थ में सार्वभौम व्यवस्था का प्रमाण परंपरा ही राष्ट्रीयता है।

4.7 (2) सहअस्तित्व

सहअस्तित्व ही नित्य प्रमाण वर्तमान है।

**सहअस्तित्व** = सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति चार अवस्था व पदों में विद्यमान वर्तमान है।

**नित्य प्रमाण** = सामाजिक अखण्डता, व्यवस्था सहज सार्वभौमता।

**वर्तमान** = चारों अवस्थाओं व पदों में संतुलन पूरकता-उपयोगिता सहज वर्तमान है।

सहअस्तित्व सदा वैभव सहज प्रमाण सदा वर्तमान रूप में होना, मानव परंपरा में सदा प्रमाण होना, समझ सम्पन्नता सहित परंपरा ही वर्तमान होना वैभव है।

सहअस्तित्व में भौतिक, रासायनिक व जीवन क्रिया दृष्टव्य है, वर्तमान है। दृष्टा मानव है।

सहअस्तित्व में विकास क्रम, विकास, जागृतिक्रम, जागृति नित्य वर्तमान सहज होना दृष्टव्य है।

सहअस्तित्व ही नित्य वैभव है, क्योंकि व्यापक में एक-एक वस्तुओं का सम्पृक्त वर्तमान अविभाज्य रूप में होना रहता ही है। व्यापक वस्तु सर्व देशकाल में यथावत है।

व्यापक में ही सभी एक-एक वस्तुओं की परस्परता और निश्चित अच्छी दूरियाँ स्पष्ट है। व्यापक में प्रकृति न हो ऐसा कोई काल नहीं। व्यापक न हो ऐसा कोई देश काल नहीं है।

सहअस्तित्व नित्य प्रभावी है। व्यापक वस्तु में सम्पूर्ण एक-एक वस्तुएं परस्परता में ही पहचान है। एक दूसरे की पहचान ही संबंध और व्यवस्था का आधार है।

4.7 (3) राज्य

राज्य वैभव सहज रूप में हर अवस्था, हर पद, स्थिति गति के रूप में सहअस्तित्व में ही विद्यमान है। मानव जागृति पूर्वक अखण्डता सार्वभौमता सहज परंपरा के रूप में होना राज्य है।

पदार्थावस्था, प्राणावस्था में प्रत्येक विकास क्रम यथास्थिति सहज विधि से पूरकता-उपयोगिता पूर्वक वैभव है।

उपर्युक्त दोनों अवस्थायें समृद्ध रहने के उपरान्त ही जीवावस्था का उदय होता है। जीवावस्था में वंश परंपरा के रूप में प्रत्येक एक अपनी यथास्थिति उपयोगिता को प्रमाणित किये रहते हैं और वैभवित रहते हैं।

उक्त तीनों अवस्थायें समृद्धि सम्पन्न रहने के अनन्तर ही ज्ञानावस्था का उदय होना स्वाभाविक रहा। मानव मानवत्व सहित व्यवस्था होता है। यही मानव सहज वैभव है, मानव समझदारी पूर्वक ही अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना सहज है।

4.7 (4) स्वराज्य

स्वराज्य ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता सहित अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में, से, के लिये स्वयं स्फूर्त अर्थात् समझदारी के ही फलस्वरूप भागीदारी करना ही है।

**स्वराज्य** =

**समझदारी ईमानदारी जिम्मेदारी (भागीदारी)**

अस्तित्व मूलक विवेक सम्मत संबंध सहज

मानव केन्द्रित चिंतन विज्ञान, विज्ञान सम्मत पहचान,

ही अस्तित्व दर्शन ज्ञान, विवेक, लक्ष्यगामी दिशा मूल्यों सहज निश्चयन

जीवन लक्ष्य सहित ज्ञान, और मानव लक्ष्य में सहित निर्वाह

मानवीयतापूर्ण आचरण विश्वास और मूल्यांकन

ज्ञान संपन्नता में विश्वास करने में विश्वास

स्वयं में विश्वास (समझदारी) स्वयं स्फूर्त है

स्वयं स्फूर्त विधि से भागीदारी करना ही वैभव है।

वैभव परंपरा ही स्वराज्य है।

[88q88\

भाग – पाँच

जागृत मानव

5.1 जागृत मानव

नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, सर्वतोमुखी समाधान, सहअस्तित्व रूपी परम सत्य में, से, के लिए अर्थात् जागृति पूर्वक मानव मन:स्वस्थता का प्रमाण और मनाकार को अर्थात् आवास, आहार, अलंकार, दूरश्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन संबंधी वस्तुओं, यंत्रों-उपकरणों के रूप में साकार करता है। मन:स्वस्थता ही मानव त्व है।

जागृत मानव ही मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करता है।

जागृत मानव ही निश्चित फल परिणाम के लिए निश्चित कर्म, कार्यक्रम, व्यवहार करता है एवं निश्चित फलों का उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनों के अर्थ में अर्पित करने प्रस्तुत रहता है।

5.2 जागृत मानव परिवार प्रवृत्ति

प्रत्येक जागृत मानव परिवार में एक दूसरे को संबंधों के अर्थ में संबोधन कार्य, कर्त्तव्य, दायित्व, मूल्यों का निर्वाह, परिवार सहज प्रमाण सहित समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में अपना पहचान प्रस्तुत किए रहते हैं। ऐसे एक दूसरे के सभी प्रकार के पहचानों को प्रमाण सहित सत्यापित करते हैं।

परिवार जनों के रूप में संबोधन व्यवहार होना अपनत्व का पहला चरण है। इनमें सामंजस्य, संगीत रूप में एक दूसरे को समझते हुए जीना ही परिवार वैभव ही स्वराज्य सहज स्वरूप लोकव्यापीकरण विधि से दश सोपानीय वैभव है।

धन उत्पादित वस्तुओं के रूप में, मन जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने के रूप में है। तन स्वस्थ शरीर के रूप में है।

संस्कार, क्रियापूर्णता अर्थात् सर्वतोमुखी समाधान और परंपरा सहज निरंतरता से तथा आचरणपूर्णता अर्थात् सहअस्तित्व में, से, के लिए अनुभव प्रमाण परंपरा से है, यही जागृति है।

जागृत मानव प्रवृत्तियाँ (स्वभाव)

जन-धन-यश बल का सार्थक रूप परिवार रूप में ही दश सोपान में स्पष्ट होता है। हर जागृत मानव सहज पहचान दश सोपानीय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में होती है यथा समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व अर्थात् चारों अवस्थाओं के साथ जागृत मानव नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य सहज विधि से निर्वाह करता है।

- परिवार संबंध मूल्यों के आधार पर

- उत्पादन संबंध उपयोगिता व कला श्रम मूल्यों के आधार पर

- व्यवस्था संबंध समाधान, समृद्धि व न्याय के आधार पर

- शिक्षा संबंध सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि, ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता के आधार पर

- स्वास्थ्य संबंध आहार, विहार, औषधि, संयत व्यवहार के आधार पर

- प्रकृति संबंध नियम, नियंत्रण, संतुलन, उपयोगिता, पूरकता के आधार पर

- समझदारी का संबंध सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व के आधार पर

- न्याय, संबंधों मूल्य निर्वाह के आधार पर

- विनिमय संबंध उपयोगिता पूरकतावादी दृष्टि व श्रम मूल्य के आधार पर

- मानव संबंध अखण्डता सार्वभौमता के आधार पर

- मानव लक्ष्य सहज प्रमाण में, से, के लिए सभी संबंध है

- ज्ञान, विवेक एवं विज्ञान सहित मानव लक्ष्य के लिए कार्य व्यवहार सहज निश्चयन शिक्षा-दीक्षा संस्कार में, से, के लिए है। विधि से सर्वशुभ प्रवृत्तियाँ हैं।

5.3 जागृत मानव में, से, के लिए स्वभाव (स्वयं स्फूर्त मूल्य)

**धीरता** = न्याय में दृढ़ता – न्याय प्रदायी योग्यता है।

**वीरता** = न्याय निर्वाह सहित लोकव्यापीकरण में निष्ठा

**उदारता** = स्वयं जैसे और अधिक श्रेष्ठता में, से, के लिए किये गये तन-मन-धन का अर्पण-सेवा)-समर्पण

अर्पण का तात्पर्य तन व धन से की गई सेवा, तन-मन-धन से किया गया उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशीलता समर्पण है।

**दया** = पात्रता के अनुरूप वस्तु को उपलब्ध करना

**कृपा** = वस्तु के अनुरूप पात्रता को स्थापित करना

**करुणा** = पात्रता, योग्यता को स्थापित करना

5.4 जागृत मानव दृष्टि

संबंध निर्वाह = न्याय, सत्य सहज वैभव समाधान निरंतरता

**न्याय** = संबंधों में जागृति सहज प्रमाण सहित पहचानना, मूल्यों का निर्वाह करना, मूल्यांकन करना, उभयतृप्ति एवं संतुलन प्रमाणित होना

**धर्म** = सर्वतोमुखी समाधान पूर्वक दश सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी

क्यों और कैसे के उत्तर को हर दृष्टिकोण, परिप्रेक्ष्य, आयाम से जानना, मानना फलत: हर स्थिति में समाधान प्रस्तुत करना, यही अभ्युदय है। यही सर्वतोमुखी समाधान है।

**सत्य** = सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में ज्ञान, विवेक, विज्ञान पूर्वक पहचानना निर्वाह करना।

- जागृत मानव में धर्म सार्थक होता है।

- मानव सुख धर्मी है।

- जागृत मानव सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्न होता है।

समाधान = सुख, समस्या = दु:ख

5.5 जागृत-मानव

जागृत मानव सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति रूपी सहअस्तित्व में ज्ञान, विवेक, विज्ञान सहित पूर्णता अभ्युदय के अर्थ में नियंत्रित संचेतना सम्पन्न रहता है। जागृत मानव विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति और उसकी निरंतरता का ज्ञाता, दृष्टा, कर्ता होता है। संचेतना का स्वरूप संज्ञानीयता पूर्वक नियंत्रित संवेदनाओं सहित वैभव है।

जागृत मानव ही व्यापक सत्ता में सम्पृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति को सहअस्तित्व के रूप में जानता, मानता, पहचानता और निर्वाह करता है।

न्याय, धर्म (सर्वतोमुखी समाधान) और सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य रूपी सहअस्तित्व परम सत्य जागृत मानव में, से, के लिए प्रमाण है।

जागृत मानव सहअस्तित्व में ही विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति परम का ज्ञाता, दृष्टा, कर्ता, भोक्ता होता है, यह समाधान है।

5.6 मानव

“जीवन बल व शक्तियाँ अक्षय है” जिस से जागृत मानव जानता, मानता, पहचानता और निर्वाह करता है।

हर मानव जीवन व शरीर का संयुक्त रूप में परंपरा (पीढ़ी से पीढ़ी के रूप में) में विद्यमान है।

शरीर गर्भाशय में भौतिक-रासायनिक द्रव्यों से रचित रहता है। जीवन गठनपूर्ण परमाणु चैतन्य पद में जागृति पूर्वक वैभव है।

जीवन इकाई, विकसित परमाणु, जीवन पद में गठनपूर्ण घटना के आधार पर अणु बंधन, भार बंधन से मुक्त, आशा विचार इच्छा बंधन युक्त है। जीवन जब जागृत हो जाता है तब जीवन अमर वस्तु के रूप में स्वीकृत होता है और जीवन शक्ति व बल अक्षय होना समझ में आता है।

5.7 जागृत जीवन क्रियायें :-

**अक्षय बल अक्षय शक्तियाँ**

सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में आत्म शक्ति प्रमाणिकता में प्रमाण,

अनुभव होता है। प्रमाणित करने के लिए संकल्प शक्ति

बुद्धि शक्ति में,

आत्मा में अनुभव बल, चित्रण क्रिया चित्त शक्ति में,

अनुभव बोध प्रमाणित चित्रण करने में

बुद्धि में बोध न्याय-धर्म-सत्य भाषा भाव (अर्थ) समेत चित्रण है।

सहज स्वीकार बुद्धि बल में होता चित्रण जिसमें भाव भंगिमा

है। चित्त में चिंतन रूप में स्पष्ट मुद्रा अंगहार समाया रहता है।

होता है। वृत्ति में तुलन क्रिया में प्रमाणीकरण विधि-विधानों

न्याय-धर्म-सत्य का स्पष्ट होना का विश्लेषण करना ही

विश्लेषण सम्पन्न होता है। विचार है।

न्याय-धर्म-सत्य सम्मत मूल्यों प्रमाणित होने के लिए निश्चित

का आस्वादन मन में सम्पन्न होता है। विचारों के अनुसार संबंधों का

यह सदा-सदा होता है। चयन क्रिया कर पाने की

इसलिए यही जागृति सहज आशा में, से, के लिए किया

मनोबल अक्षय है। जाना स्पष्ट है।

जागृत मानव परंपरा में अनुभव प्रमाणों को प्रमाणित करने में जीवन जागृत रहता है। कल्पनाशीलता जागृति के अनुरूप कार्य करता है अर्थात् प्रमाणों के बोध सहित बुद्धि में संकल्प, संकल्प के अनुरूप चिंतन-चित्रण कार्य चित्त में सम्पन्न होता है। फलत: चित्रण के अनुसार तुलन-विश्लेषण होता है। पुनश्च प्रमाणों के आधार पर आस्वादन पूर्वक चयन क्रिया मन में सम्पन्न होती है। यही जागृति के अनुसार होने वाले परावर्तन प्रकाशन है।

आस्वादनायें प्रमाणों के प्रकाश में प्रकाशित होने के फलस्वरूप तृप्त, सन्तुष्ट समाधान के रूप में परावर्तन सहज है यही जागृत जीवन का फलन है।

**जागृत मानव परंपरा में -**

मानव लक्ष्य जीवन मूल्य सुख + शांति + संतोष + आनंद

समाधन (हर नर नारी में)

+

समृद्धि (हर समझदार परिवार में)

+

अभय (अखण्ड समाज में)

+

सहअस्तित्व (सार्वभौम व्यवस्था में)

अनुभव प्रमाण, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी है।

5.8 जागृत मानव परंपरा

जागृत मानव परंपरा में ही सार्वभौम लक्ष्य सहज दिशा प्रमाणित है। यह जीवन मूल्य रुपी सुख, शांति, संतोष, आनंद और मानव लक्ष्य रूपी समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण विधि से प्रमाणित होता है। जीवन व शरीर के संयुक्त रूप में हर मानव जागृति सहज प्रमाण है अथवा जागृत होना चाहता है। इसी प्रकार हर मानव समझदार है अथवा समझदार होना चाहता है। यह मौलिक अधिकार है क्योंकि मानव ही समझने वाला और होने के रूप में सहअस्तित्व ही है।

**5.8 (1) सार्वभौम** = ज्ञान, विवेक, विज्ञान रूप में मूल अवधारणा अनुभवमूलक विधि से प्रमाण सम्पन्न होना।

**5.8 (2) सार्वभौमतापूर्ण** = सर्वमानव स्वीकृत या स्वीकारने योग्य या सर्वमानव सुखी होना।

**5.8 (3) जीवन** = गठनपूर्ण परमाणु अथवा चैतन्य इकाई।

**5.8 (4) जागृत जीवन** = मानव परंपरा में जागृति सहज प्रमाणों को व्यक्त करने अनुभव मूलक विधि सहित प्रमाण पूर्वक, बोध साक्षात्कार सहित तुलन-विश्लेषण, आस्वादन-चयन समेत व्यवहार में, प्रयोगों में और व्यवस्था में प्रमाणित होना ही जागृत परंपरा है। जागृत परंपरा में ही दश सोपानीय व्यवस्था प्रमाणित होती है।

**5.8 (5) सार्वभौम लक्ष्य** = जीवन लक्ष्य, सर्वमानव लक्ष्य, विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति लक्ष्य यही समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण।

**5.8 (6) जीवन लक्ष्य (मूल्य)** = सुख (मनःस्वस्थता)

मानव में सुखी होने की अपेक्षा स्वीकृत है। मानव सुख धर्मी है।

हर मानव जीवन व शरीर का संयुक्त रूप है। मानव लक्ष्य समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व है।

समाधान प्रमाण = सुख

समृद्धि प्रमाण = शांति

अभय प्रमाण = संतोष

सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण = आनंद

**5.8 (7) मानव धर्म अखण्ड समाज नीति** = तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा मौलिक अधिकार स्वत्व स्वतंत्रता सहज वैभव है।

**5.8 (8) जागृत मानव सहज मौलिकता**

1. समझदारी

2. ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता प्रमाण वर्तमान

**ज्ञान** = सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान व मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान सहज स्वत्व समुच्चय मानवीयतापूर्ण मौलिकता ज्ञान ही है। यही जागृति है।

**विवेक** = मानव लक्ष्य, जीवन मूल्य सुनिश्चित करना।

**विज्ञान** = मानव लक्ष्य के लिये दिशा निर्धारण करना व कार्य व्यवहार में प्रमाणित करना।

मौलिकता समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण को कार्य-व्यवहार-व्यवस्था में प्रमाणित करना मौलिक अधिकार है।

मौलिक अधिकार को प्रमाणित करने के लिए स्वयं स्फूर्त विधि से प्रवृत्त रहना स्वतंत्रता है।

अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना मौलिक अधिकार है। यह स्वयं स्फूर्त विधि से प्रमाणित होता है। यह स्वतंत्रता, जागृति सहज प्रमाण है।

दश सोपानीय सार्वभौम व्यवस्था पाँच स्थितियों में स्पष्ट है। ये पाँच स्थितियाँ हैं -

(1) व्यक्ति (2) परिवार (3) समाज (4) राष्ट्र (5) विश्व (अन्तर्राष्ट्र)

**5.8 (9) मानवीय शिक्षा-संस्कार प्रकाशन परंपरा**

**मानवीय** **शिक्षा** = शिष्टता अर्थात् अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित विश्व दृष्टिकोण सम्पन्न अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा।

**संस्कार** = समझदारी सहित ईमानदारी, जिम्मेदारी व भागीदारी में स्वतंत्रता।

हर जागृत मानव ही ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता पूर्वक मानव लक्ष्य को सुनिश्चित करता है और जिम्मेदारी, भागीदारी सहित अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या के रूप में कार्य-व्यवहार में प्रमाणित होता है यही स्वत्व, स्वतन्त्रता, अधिकार है।

**स्वत्व** = समझदारी सम्पन्नता और अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा।

**स्वतंत्रता** = स्वयं स्फूर्त विधि से समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी में, से, के लिये प्रमाण परंपरा।

हर जागृत मानव समझदारी सहित मानवत्व रूपी अधिकार को प्रमाणित करने में स्वतंत्र है।

**अधिकार** = समझदारी सहज समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व को वर्तमान में प्रमाणित करना, कराना, करने के लिए सहमत होना।

**स्वराज्य** = मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी परंपरा।

स्वराज्य अर्थात् मानवत्व सहित दस सोपान में सार्वभौम व्यवस्था के रूप में समाधान, समृद्धि , अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण परंपरा है।

**स्वतंत्रता** = स्वयं स्फूर्त विधि से सर्वतोमुखी समाधान में, से, के लिये प्रमाण वर्तमान।

**5.8 (10) जीवन जागृति**

1. समझदारी, ईमानदारी सहज प्रमाण ही भागीदारी रूप में।

2. सर्वतोमुखी समाधान सहित मानव लक्ष्य, जीवन लक्ष्य को वर्तमान में प्रमाणित करना, कराना, करने के लिए सहमत होना।

5.9 जागृत मानव सहज आचार संहिता रूपी सूत्र व्याख्या

**प्रारूप -**

मानवीय आचरण-संपन्नता सहित सम्बन्धो का निर्वाह समेत अखण्ड राष्ट्र समाज व्यवस्था में भागीदारी करना।

**सूत्र-फलन में -**

1. हर समझदार परिवार में समाधान-समृद्धि प्रमाणित होना।

2. अखण्ड राष्ट्र समाज व्यवस्था में समाधान, समृद्धि, अभय (वर्तमान में विश्वास) सहअस्तित्व प्रमाणित होना।

दश सोपानीय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था विधि क्रम में समाधान, समृद्धि , अभय, सहअस्तित्व सहज वर्तमान परंपरा ही व्याख्या है। संबंधों का पहचान, मूल्यों का निर्वाह ही विधि-व्यवस्था है। यह प्रत्येक नर- नारी का मौलिक अधिकार है।

अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन ही मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद सूत्र व्याख्या है। इसमें पारंगत होना प्रत्येक नर-नारी का मौलिक अधिकार है।

मानवीय शिक्षा-दीक्षा संस्कार, मानवीय आचरण सूत्र व्याख्या रूपी संविधान, अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था, मानवत्व सहित मानवीय व्यवस्था में भागीदारी प्रत्येक नर-नारी का मौलिक अधिकार है।

**सार्वभौम** = सर्व मानव द्वारा स्वीकृत अथवा स्वीकार करने योग्य सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में मूल अवधारणा सम्पन्न होना यह प्रत्येक नर-नारी का मौलिक अधिकार है।

**अवधारणा** = अवगत (पारंगत) होने, रहने में स्वीकृति और निष्ठान्वित, निष्ठा कारक होना यह प्रत्येक नर-नारी का मौलिक अधिकार है।

हर नर-नारी जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने योग्य क्षमता सम्पन्न है क्योंकि हर मानव में, से, के लिए कल्पनाशीलता कर्म स्वतंत्रता विद्यमान है। इसे सार्थक रूप देना प्रत्येक नर-नारी का मौलिक अधिकार है।

5.10 जागृत मानव परंपरा में चरितार्थ प्रमाणित - संबंध व मूल्य

जीवन मूल्य = मानव धर्म = मानव लक्ष्य = समझदारी

**जागृत मानव लक्ष्य** = सुख-सर्वतोमुखी समाधान, शांति-समृद्धि, संतोष-अभय, आनंद-सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण सम्पन्नता यह प्रत्येक नर-नारी का मौलिक अधिकार है।

जागृत मानव परंपरा वैभव क्रम में मूल्याँकन सहज वर्तमान है।

सहअस्तित्व पूर्ण मानसिकता पूर्वक मूल्याँकन सार्थक होता है। जागृत मानव मूल्याँकन करता है, सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्न मानव ही मूल्याँकन करेगा।

मानवीयता पूर्ण आचरण अर्थात् मूल्य, चरित्र, नैतिकता पूर्वक समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व मानव में, से, के लिए आचरण पूर्वक प्रमाणित होता है।

जागृत मानव ही अपने आचरण, कार्य-व्यवहार, फल-परिणाम से ही समाधान, समृद्धि, सुख, शांति परंपरा वर्तमान होना, रहना सहज है।

जागृत मानव परंपरा में चरितार्थ संबंध, मूल्य, मूल्यों का निर्वाह और मूल्याँकन प्रमाण सम्बन्धो में होता है। हर जागृत मानव प्रमाणित करता है। समस्त मूल्य जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य, उत्पादित वस्तु मूल्य (प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन पूर्वक उपयोगिता व कला मूल्य स्थापना अर्थात् उत्पादन) अर्थात् श्रम नियोजन पूर्वक वस्तु मूल्य उपयोगिता-कला के रूप में है।

**प्राकृतिक वैभव** = सहअस्तित्व में पूरकता, उपयोगिता।

सहअस्तित्व नित्य प्रभावी है इसलिए प्राकृतिक ऐश्वर्य का मूल्य शून्य है।

प्रकृति ही धरती, हवा, पानी, पहाड़, समुद्र, नदी, नाला, जंगल, जीव, जानवर वस्तुएं हर मानव के सम्मुख दृश्य रूप में है।

5.11 सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व

जागृत मानव में, से, के लिए सत्ता में सम्पृक्त जड़ चैतन्यात्मक प्रकृति रूप में और परमाणु में विकास क्रम में रासायनिक-भौतिक, ठोस, तरल, विरल व रासायनिक वैभव का प्राण कोषा, उनमें निहित रचना विधि सहित विविध रचनायें।

जीव शरीर एवं मानव शरीर भी प्राण कोषाओं से रचित होना, शरीर एवं जीवन संबंध सहअस्तित्व सहज वर्तमान संबंध में सहअस्तित्व नित्य प्रभावी होना स्पष्ट है।

5.12 जागृत मानव

हर जागृत मानव मनाकार को परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन के रूप में साकार करने वाला, सर्वतोमुखी समाधान रूप में मन:स्वस्थता (अभ्युदय) सहज प्रमाण प्रस्तुत करता है।

**अभ्युदय**

1. सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्न मानव परंपरा।

2. मानवीयता पूर्ण आचरण वैभव मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहित परिवार व्यवस्था, दश सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था सहज परंपरा ही जागृत मानव परंपरा है।

**राष्ट्रीय व्यवस्था** = परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था दस सोपान में जागृत मानव में, से, के लिए परंपरा है। यही मानव, देव मानव, दिव्यमानव चेतना सहज वैभव है।

**राष्ट्र** = चारों अवस्था सहित सहअस्तित्व में, से, के लिए परंपरा है।

**राष्ट्रीयता** = नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, समाधान, सहअस्तित्व रूपी परम सत्य में, से, के लिए प्रमाण सहज वैभव जागृति।

**जागृति** = सहअस्तित्व में, से, के लिए जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना।

**राष्ट्रीय चरित्र** = मानवीयता पूर्ण आचरण सहित अखण्ड राष्ट्र समाज व्यवस्था सहज प्रमाण ही सार्वभौमता है।

[88q88\

भाग – छः

मौलिक अधिकार

**परिचय संकेत**

मानव चेतना सहज वैभव में, से, के लिए मानवीयतापूर्ण शिक्षा-दीक्षा शिक्षण पूर्वक परंपरा सहज मौलिक अधिकार फलन के रुप में जागृत मानव परंपरा है। यह शिक्षा-संस्कार परंपरा में पूर्णता सहज अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा प्रकाशन है।

**मौलिक अधिकार**

1. हर नर-नारी अध्ययन, शोध, अनुभव पूर्वक ज्ञान, विवेक, विज्ञान में पारंगत होना रहना मौलिक अधिकार है। निपुणता कुशलता पाण्डित्य पूर्वक स्वेच्छा से कर्माभ्यास सहित प्रमाणित होना मौलिक अधिकार है।

2. ज्ञान, विवेक, विज्ञान विधि से जिम्मेदारियों का निर्वाह मौलिक अधिकार है।

3. न्याय पूर्वक कार्य-व्यवहार सम्पन्न करना मौलिक अधिकार है।

4. परिवार में समाधान, समृद्धि को प्रमाणित करना मौलिक अधिकार है।

5. सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना मौलिक अधिकार है।

6. समाधान पूर्वक निर्णय लेना मौलिक अधिकार है।

7. तन, मन, धन रूपी अर्थ को संरक्षित रखना, उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनशीलता सहज प्रवृत्ति प्रक्रिया मौलिक अधिकार है।

8. जागृत मानव लक्ष्य (समाधान, समृद्धि ,अभय, सहअस्तित्व) को प्रमाणित करना, कराना, करने के लिए सहमत होना मौलिक अधिकार है।

9. जागृत होने का मौलिक अधिकार मानवीयतापूर्ण शिक्षा-दीक्षा संस्कार एवं शिक्षण विधि पूर्वक सर्वसुलभ होने में भागीदारी करना मौलिक अधिकार है।

10. जागृत होने रहने करने का मौलिक अधिकार शिक्षा-संस्कार शिक्षण परंपरा सहज कार्यक्रम, इसमें हर नर-नारी प्रबुद्धता सहज प्रमाण रूप में भागीदारी करना भी मौलिक अधिकार है।

11. जागृत मानव ही सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान पूर्वक मानव लक्ष्य, अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था सहित नियति सहज लक्ष्य ,‘त्व’ सहित व्यवस्था, सहअस्तित्व लक्ष्य रूपी जागृति सहज प्रमाणों सहित प्रमाणित होना करना मौलिक अधिकार है।

जागृत मानव में, से, के लिए मौलिक अधिकार गवाहित होता है और आवश्यक, उपयोगी, पूरक रूप में उपकारी होना-रहना मौलिक अधिकार है।

**कर्त्तव्य सहज अधिकार**

हर नर-नारी जागृति सहज प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन को प्रमाणित करना सर्वमानव सहज मौलिक अधिकार सहित कर्त्तव्य है।

**जागृत मानव प्रतिभा - (ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता)**

1. स्वयं में विश्वास

2. श्रेष्ठता सहज सम्मान में विश्वास

3. ज्ञान-विवेक-विज्ञान रूपी प्रतिभा में विश्वास

4. मानवीयता पूर्ण आहार-विहार-व्यवहार रूपी व्यक्तित्व में विश्वास

5. व्यवहार में अखण्ड सामाजिक होने में विश्वास

6. उत्पादन कार्य रूपी व्यवस्था में परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने में विश्वास

उपरोक्त सभी का अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन हर नर-नारी में, से, के लिए मौलिक कर्त्तव्य व अधिकार है।

6.1 स्वतंत्रता का अधिकार

**स्वतंत्रता**

1. जीवन मूल्य सुख, शांति, संतोष, आनंद सहज वैभव को सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व रूपी परम सत्य में प्रमाणित होने, करने, कराने एवं सहमत कराने में हर नर-नारी स्वतंत्र हैं। यह मौलिक अधिकार है।

2. मानव सहज बहुआयामी समझदारी को प्रमाणित करने में हर जागृत नर-नारी स्वतंत्र है। यह मौलिक अधिकार है।

3. मानवीयता पूर्ण परंपरा पाँच आयामी व्यवस्था में भागीदारी करने में हर जागृत नर-नारी स्वतंत्र है। यह मौलिक अधिकार है।

4. हर जागृत नर-नारी को तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा करने की स्वतंत्रता है। यह मौलिक अधिकार है।

5. हर जागृत नर-नारी मानवत्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने की स्वतंत्रता है। यह मौलिक अधिकार है।

6.2 स्वत्व का अधिकार

**स्वत्व**

1. ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता सहित परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन जागृत मानव में, से, के लिए स्वत्वता है। यह मौलिक अधिकार है।

2. हर जागृत नर-नारी में, से, के लिये नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य सहज रूप में स्वत्व है। यह मौलिक अधिकार है।

3. हर जागृत नर-नारी में, से, के लिये सहअस्तित्व रूपी सत्य, सर्वतोमुखी समाधान रूपी मानव धर्म सूत्र-व्याख्या, संबंध व मूल्य चरित्र नैतिकता सहज निर्वाह रूपी न्याय स्वत्व है। यह मौलिक अधिकार है।

**स्वत्व में विश्वास**

· सहअस्तित्व सहज अस्तित्व में विश्वास

· सहअस्तित्व नित्य वर्तमान होने में विश्वास

· जानने, मानने में विश्वास

· विकास क्रम में विश्वास

· विकास सहज जीवन में विश्वास

· जीवन जागृति में विश्वास

यही स्वयं में विश्वास, यही अनुभव मूलक अभिव्यक्ति है। ये सब मौलिक अधिकार है।

सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान में विश्वास, जीवन सहज स्वरूप ज्ञान में विश्वास, जीवन क्रिया, लक्ष्य ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान में विश्वास आधारभूत क्रिया है।

जानना, मानना अनुभवमूलक सोच विचार सहित पहचानना, निर्वाह करना प्रमाण है। यह मौलिक अधिकार है।

मानव लक्ष्य सुलभता के लिये दिशा की सुनिश्चितता ही समाधान, समाधान ही सुख, सुख ही मानव धर्म, मानव धर्म ही मानव कुल वैभव, मानव कुल वैभव ही अखण्ड समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था, अखण्ड समाज व सार्वभौम व्यवस्था परंपरा ही जागृत मानव परंपरा है। यह मौलिक अधिकार है।

जागृत परंपरा ही मानवीयता पूर्ण परंपरा है। यही सार्वभौम परंपरा है। यही सर्व शुभ परंपरा मौलिक अधिकार है।

**स्वत्व स्वतंत्रता**

जागृत मानव में, से, के लिए स्वत्व स्वतंत्रता सहज वैभव है। वैभव अपने स्वरूप एवं स्थिति में स्वत्व और गति में स्वतंत्रता है। स्वत्व के रूप में स्वतंत्र जिम्मेदारी, भागीदारी है और स्वतंत्रता रूप में प्रमाण परंपरा है।

जागृत मानव में समझदारी और ईमानदारी स्वत्व के रूप में और जिम्मेदारी, भागीदारी स्वतंत्रता सहज रूप में प्रमाण और परंपरा है।

जागृति मानव में जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य एवं वस्त मूल्य में, से, के लिए स्वतंत्र है।

मानव चेतना मूलक शिक्षा मूल्य सहित उपयोगिता-कला मूल्य नियोजन में श्रम मूल्य स्वतंत्रता है।

6.3 न्याय सुरक्षा का अधिकार

**न्याय-सुरक्षा**

**तात्विक** = नियति क्रम अर्थात् नियम, नियंत्रण, संतुलन में जागृति पूर्वक आचरण न्याय सुरक्षा है।

नियति क्रम – नियम नियंत्रण संतुलन

में जागृति में जागृति में जागृति

प्राकृतिक, प्राकृतिक, संतुलन वन, खनिज, ऋतु संतुलन,

बौद्धिक, सामाजिक रोगोपचार, भ्रम धरती में पदार्थ, प्राण, जीव,

रुप में सदा समाया का उन्मूलन ज्ञान अवस्थाओं में

समाधान व समाधान संतुलन समाधान

**बौद्धिक** = जागृति सहज प्रमाण परंपरा ही न्याय सुरक्षा है।

**व्यवहारिक** = ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार, परिवार व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज रूप में न्याय सुरक्षा है।

6.4 स्वास्थ्य संयम का अधिकार

**स्वास्थ्य-संयम**

**तात्विक** = स्वस्थ शरीर अर्थात् मानव परंपरा में मन:स्वस्थता, समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी समेत जीवन ही ज्ञान, विवेक, विज्ञान पूर्वक अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा को मानव परंपरा में प्रमाणित करने योग्य शरीर एवं क्रियाकलाप।

**बौद्धिक** = स्वास्थ्य-संयम अर्थात् संज्ञानीयता पूर्वक संवेदनायें नियंत्रित रहती है।

**व्यवहारिक** = स्वास्थ्य-संयम अर्थात् अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करने योग्य शरीर एवं क्रियाकलाप।

6.5 मानवीय शिक्षा-संस्कार का अधिकार

**तात्विक अर्थ में मानवीय शिक्षा** = अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन सहज, ‘मध्यस्थ दर्शन’ सहअस्तित्ववादी विधि पूर्वक चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन।

**बौद्धिक अर्थ में मानवीय शिक्षा** = ज्ञान, विवेक, विज्ञान सहज शिक्षा संस्कार परंपरा।

**व्यवहारिक अर्थ में मानवीय शिक्षा** = अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करने में प्रतिबद्धता पूर्ण शिक्षा।

**तात्विक अर्थ में संस्कार** = जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य एवं शिष्ट मूल्य का धारक-वाहकता।

**बौद्धिक अर्थ में संस्कार** = शिक्षा संस्कारों में पारंगत रहना, करना और कराने के लिए सहमत रहना।

**व्यवहारिक अर्थ में संस्कार** = हर उत्सवों में मानव लक्ष्य, जीवन मूल्य संगत विधि से व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी की दृढ़ता व स्वीकृति को संप्रेषित, प्रकाशित करना, कराना, करने के लिए सहमति होना, जिसमें गीत, संगीत, वाद्य, नृत्य, साहित्य, कला वैभव समाहित रहना।

सार्वभौम व्यवस्था विधि से ही मानवीय शिक्षा-संस्कार का लोकव्यापीकरण होता है। यही मौलिक अधिकार का स्त्रोत है।

मानवीयतापूर्ण परंपरा, दश सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी यह सब मौलिक अधिकार है।

**6.5 (1) पर्यावरण सुरक्षा**

धरती के वातावरण अर्थात् वायु मंडल को पवित्र रखने, धरती को पवित्र, ऋतु संतुलन सुरक्षित रखने, वन खनिज को संतुलित बनाये रखने में प्रमाणित होना यह मौलिक अधिकार है।

सर्व मानव मानवीयता पूर्ण आचरण सम्पन्न रहना ही समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व परंपरा के रूप में वर्तमान प्रमाण मौलिक अधिकार है।

**6.5 (2) मानवीय व्यवसाय**

हर नर-नारी स्वयं में व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी क्रम में परिवार मूलक स्वराज्य, राज्य वैभव, आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना यही समृद्धि का सहज सूत्र है। यह मौलिक अधिकार है।

उत्पादन मूल्य श्रम नियोजन होने के आधार पर उपयोगिता सुंदरता मूल्य को श्रम मूल्य के रूप में निश्चयन करना मौलिक अधिकार है।

मानवीयतापूर्ण व्यवहार मौलिक अधिकार है।

**6.5 (3) मानवीय व्यवहार**

हर जागृत मानव मनाकार को साकार करने मन:स्वस्थता को प्रमाणित करने के क्रम में दश सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी करना यह मौलिक अधिकार है।

मानव संबंध व मूल्यों का निर्वाह व मूल्यांकन पूर्वक परस्पर तृप्त रहना मौलिक अधिकार है।

मानवेत्तर प्रकृति यथा पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था का संबंध का निर्वाह करना, संतुलन सहित नियम, नियंत्रण को प्रमाणित करना, जिसके लिए उत्पादन यथा -

**सामान्य आकाँक्षा संबंधी वस्तुऐं महत्वाकाँक्षी संबंधी वस्तुऐं**

आहार, आवास, अलंकार दूरगमन, दूर श्रवण, दूरदर्शन

संबंधी वस्तुऐं व उपकरण संबन्धी उपकरण व वस्तुऐं

उक्त दोनों प्रकार के वस्तुओं के उत्पादन में भागीदारी यह मौलिक अधिकार है।

पूर्णता के अर्थ में अनुबंध प्रमाण, संकल्प, प्रतिज्ञा, स्वीकृतियों, सहित आचरण, संबंध निर्वाह में मौलिक अधिकार है।

**6.5 (4) पूर्णता**

क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता रूपी जागृति सहज अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन यह मौलिक अधिकार है।

**6.5 (5) संबंध प्रयोजन**

| 1. माता-पिता | पोषण एवं संरक्षण सहज प्रयोजनों को जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना मौलिक अधिकार है। |
| --- | --- |
| 2. भाई-बहन | अभ्युदय के अर्थ में मूल्य निर्वाह करना मौलिक अधिकार है। |
| 3. पुत्र-पुत्री | अभ्युदय नि:श्रेयस के अर्थ में संबंध निर्वाह करना मौलिक अधिकार है। |
| 4. पति-पत्नी | परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी करने के अर्थ में संबंध निर्वाह करना मौलिक अधिकार है। |
| 5. गुरु-शिष्य | जीवन जागृति के अर्थ में, ज्ञान, विवेक, विज्ञान सहज पारंगत प्रमाणिकता के अर्थ में संबंध निर्वाह निरंतरता मौलिक अधिकार है। |
| 6. साथी-सहयोगी | कर्त्तव्य दायित्वों को निष्ठापूर्वक निर्वाह करने के अर्थ में संबंधों का निर्वाह करना मौलिक अधिकार है। |
| 7. मित्र-मित्र | अभ्युदय, सर्वतोमुखी समाधान सहज प्रामाणिकता सहित अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करने के अर्थ में संबंध निर्वाह करना मौलिक अधिकार है। |

सभी संबंधों को पूरकता-उपयोगिता सहज प्रयोजनों के अर्थ में जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना मौलिक अधिकार है।

**संबंध सहज पहचान -**

· पोषण प्रधान संरक्षण के रूप में माता का दायित्व-कर्तव्य के रूप में प्रमाण।

· संरक्षण प्रधान पोषण रूप में पिता का दायित्व-कर्त्तव्य प्रमाण मौलिक अधिकार है।

**पोषण-संरक्षण** = शरीर पोषण, स्वास्थ्य संरक्षण, संस्कारों का पोषण-संरक्षण, भाषा का पोषण-संरक्षण, स्वच्छता का पोषण-संरक्षण, परिवार व्यवस्था का पोषण-संरक्षण। व्यवहार-व्यवस्था का पोषण-संरक्षण, ज्ञान, विवेक, विज्ञान सहज सूत्र व्याख्या रुप में अखण्डता सार्वभौमता वैभव का पोषण संरक्षण परंपरा के रुप में होना।

**उत्सव** = जन्मदिन उत्सव, नामकरण उत्सव, विद्यारम्भ उत्सव, स्नातक उत्सव, विवाह उत्सव, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर कालोत्सव यह मौलिक अधिकार है।

**स्नातक** = सनातन कालीन सत्य सहज वैभव में समझ को प्रमाणित करने हेतु सत्यापन।

6.5 (6) मानवीय संस्कार (मौलिकता) मानव चेतना सहज

**अनुभव-प्रमाण**

1. माना हुआ को जानना एवं जाना हुआ को मानना।

2. जानना-मानना, समझदारी-ईमानदारी, ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्नता सहज प्रमाण वर्तमान।

मानव होने का, प्रयोजनों को, सहअस्तित्व होने का, चार अवस्था होने का, चार पद होने का, सामाजिक अखण्डता सहज, व्यवस्था सहज, सार्वभौमता सहज, उपयोगिता सहज, पूरकता सहज, प्रयोजनों को जानना-मानना सहज अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन जागृति है। जागृति के आधार पर परस्परता में पहचानना, निर्वाह करना सहज है।

1. नाम = पहचानने संबोधन करने के अर्थ में।

2. जाति = मानव जाति के अर्थ में अखण्ड समाज।

3. धर्म = सुख-शांति के अर्थ में समाधान, समृद्धि एवं सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में वर्तमान सहज प्रमाण।

4. कर्म = परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन के रूप में (समृद्धि)।

5. शिक्षा = ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्मत कार्य व्यवहार पूर्वक जिम्मेदारी भागीदारी के रूप में मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी स्पष्ट होना।

6. विवाह = समाधान, समृद्धि पूर्वक मानवीयता पूर्ण आचरण सहित अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी, एक पत्नी, एक पति के रूप में निर्वाह करने की प्रतिज्ञा संकल्प व निष्ठा के अर्थ में मौलिक अधिकार है।

**6.5 (7) भाषा-विधि**

| भाषा :- | भास = परम सत्य रूपी सहअस्तित्व कल्पना में होना, वाचन व श्रवण भाषा के अर्थ रूप में सत्य स्वीकार होना। |
| --- | --- |
| आभास :- | भाषा सहित अर्थ कल्पना अस्तित्व में वस्तु रूप में स्वीकार होना, अर्थ संगति होने के लिए तर्क का प्रयोग होना, अर्थ वस्तु के रूप में अस्तित्व में स्पष्ट तथा स्वीकार होना फलस्वरूप तर्क संगत होना। |
| प्रतीति :- | तर्क संगत विधि से सहअस्तित्व में वस्तु बोध होना। अर्थ अस्तित्व में वस्तु के रूप में समझ में आना ही प्रतीति है। फलत: बोध व अनुभव पूर्वक प्रमाण, बोध, चिंतन प्रणाली से अभिव्यक्ति होना सहज है। |
| तर्क :- | अपेक्षा एवं संभावना के बीच सेतु।  तात्विकता प्रमाण समाधान, आवश्यकता, उपयोगिता, प्रयोजनशीलता के आधार पर सार्थक होता है। सम्पूर्ण संभावनाएं यथार्थता, सत्यता, वास्तविकता सहज प्रमाण है। अध्ययन पूर्वक स्पष्ट है। |

**6.5 (8) भाषा-विधि** = कारण, गुण, गणित

**कारण** = सहअस्तित्व विधि सहित स्थितिपूर्ण सत्ता में संपृक्त प्रकृति सहज डूबा, भीगा, घिरा स्पष्ट होना।

**गुण** = उपयोगिता-पूरकता विधि से वस्तु-प्रभाव व फल-परिणाम स्पष्ट होना।

**गणित** = वस्तु मूलक गणना विधि जोड़ने-घटाने के रूप में स्पष्टता।

स्पष्ट होने का तात्पर्य तर्क समाधान संगत विधि सम्पन्नता पूर्वक समझ पाना और समझा पाने से है और जीने देने एवं जीने के रुप में प्रमाण वर्तमान। जीना अनुभव मूलक मानसिकता सहित कायिक-वाचिक-मानसिक, कृत-कारित-अनुमोदित रुप में।

व्यापक वस्तु में संपूर्ण एक-एक चार अवस्था व चार पदों में स्पष्ट होना भाषा सहज अर्थ है, यह मौलिक अधिकार है।

**6.5 (9) साहित्य**

**साहित्य** = यथार्थता-वास्तविकता-सत्यता को प्रयोजनों के अर्थ में कलात्मक विधि से स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त भाषा।

**प्रयोजन** = हर नर-नारी मानवत्व व्यवस्था एवं समग्र व्यवस्था में पूरकता, नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य सहज प्रमाण परंपरा है।

**निबंध** = निश्चित अर्थ में किया गया एक से अधिक अनुच्छेद रचना।

**प्रबंध** = निश्चित समाधानवादी प्रयोजनों का सूत्र व्याख्या सहज वाङ्गमय।

वास्तविकता, सत्यता को, यथार्थता को इंगित कराने के लिए प्रयुक्त भाव, भंगिमा, मुद्रा, अंगहार सहित भाषा सहज सम्प्रेषण सार्थक होता है। यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता को स्पष्ट करने के लिए निर्मित वातावरण व परिस्थितियाँ भाषाकरण का स्रोत उत्प्रेरणा है।

**चित्र कला** = किसी पृष्ठ भूमि पर किया गया चित्रण।

**मूर्ति-कला, शिल्प** = सभी ओर से निश्चित आकृति के रूप में मिट्टी, पत्थर और धातुओं से की गई रचना।

**कविता-संगीत-साहित्य** = सर्वतोमुखी समाधान के लिए सुरीली शैली से प्रस्तुत सुरीली शब्द रचना व वाक्य अनुच्छेदों की रचना।

**गद्य साहित्य** = शब्द व वाक्य रचनायें सच्चाई, यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता सहज न्याय संबंध, समाधान श्रवण करने वालों को इंगित कराना।

**6.5 (10) शास्त्र**

1. जागृत मानव परंपरा में स्वानुशासित होने-रहने में, से, के लिए हर परिवार समाधान, समृद्धि, अभय पूर्वक वर्तमान में विश्वास, सहअस्तित्व प्रमाण सहज न्याय-समाधान रूप में जीने का अध्ययन सहज प्रमाण।

2. सहअस्तित्व सहज सामाजिक अखण्डता सहित सार्वभौम व्यवस्था का अध्ययन व भागीदारी सहज रूप में आचरण।

3. जागृत मानव परंपरा में जागृत मानसिकता प्रवृत्ति, अखण्ड सामाजिक संबंध मूल्य, मूल्यांकन, परस्परता में (उभयता में) तृप्ति, समाधान सहज निरंतरता का अध्ययन आचरण प्रमाण।

4. सार्वभौम व्यवस्था क्रम में तन-मन-धन रूपी अर्थ इनमें अविभाज्यता, वस्तु रूपी धनोपार्जन, विनिमय, उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजन सहज सुनिश्चितता का अध्ययन सहज क्रियान्वयन।

**6.5 (11) वाद-विचार**

**वाद-विचार** = वाद-संवाद, आख्यान, व्याख्यान, उपदेश, भाषण, चर्चायें, भाव अर्थात् मूल्य सहज प्रयोजन तर्क संगत विधि से समाधान मानसिकता का अध्ययन, अभिव्यक्ति है।

**चर्चा** = चिंतन पूर्वक प्रयोजनों का स्पष्ट होना।

**भाषण** = मौलिकता, मूल्य, प्रयोजन सहज रूप में संप्रेषित होना।

**व्याख्या** = व्यवहार व व्यवस्था में प्रमाणित होने के अर्थ में स्पष्ट होना।

**आख्यान** = आवश्यकता-अनिवार्यता स्पष्ट होना।

**संवाद** = पूर्णता अर्थात् गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता के अर्थ में है एवं तर्क विधि से समाधान सुलभ होना है।

**वाद** = वास्तविकता पूर्वक समाधान सहज निष्कर्ष पूर्ण अध्ययन सुलभ रूप में प्रस्तुत करना।

**विचार** = विधिवत् प्रयोजन के अर्थ में विवेचना, विश्लेषण करना, स्पष्ट करना, स्पष्ट होना।

मानव लक्ष्य को प्रमाणित करना ही जागृत मानव परंपरा में विचार प्रयोजन है।

**विवेचना** = विधिवत् प्रयोजन व लक्ष्य आवश्यकता उपयोगिता-पुरकता सहज स्पष्टीकरण।

**भाषा विधि प्रयोजन** = भाषा सहज अर्थ में अस्तित्व में सहअस्तित्व, पद, अवस्था बोध होना।

**पद अवस्था बोध**

प्राणपद पदार्थावस्था वस्तु-बोध

भ्रांतिपद प्राणावस्था क्रिया-बोध

देवपद जीवावस्था स्थिति-बोध

दिव्यपद ज्ञानावस्था गति-बोध

परिणाम-बोध

फल प्रयोजन-बोध

मानव में, से, के लिए जागृति-बोध

**बोध** = अध्ययनपूर्वक अनुभवगामी क्रम में बोध, अनुभव मूलक विधि से प्रमाण बोध, अनुभव प्रमाण बोध सहअस्तित्व सहज अनुभव प्रमाणों को व्यवहार व प्रयोगों में प्रमाणित करना ही ज्ञान-विवेक-विज्ञान है।

**अनुभव** = जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने की संयुक्त क्रिया और जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह पूर्वक कार्य-व्यवहार-व्यवस्था में भागीदारी प्रमाणित होने की क्रिया हैं।

**6.5 (12) इतिहास**

1. विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति सहज परंपरा।

2. सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति सहज भौतिक, रासायनिक जीवन क्रियाकलाप।

3. मानव परंपरा में, से, के लिए जागृति सहज वैभव सर्वशुभ रूप में समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाण परंपरा।

4. सर्व शुभ, नित्य शुभ सहज वैभव सार्वभौम व्यवस्था परंपरा में, से, के लिए है।

5. सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व सहज वैभव रूप में प्रमाण परंपरा है। यही इतिहास का आधार है।

**इस धरती पर मानव पीढ़ी से पीढ़ी परंपरा में घटित प्रवृत्ति नियति क्रम का आंकलन सहित जागृति सहज परंपरा आवश्यक है।**

जंगल युग से शिला युग

शिला युग से धातु युग

धातु युग से ग्राम-कबीला युग

ग्राम-कबीला युग से राज शासन एवं धर्म शासन युग

राज शासन एवं धर्म शासन युग से लोकतंत्र युग प्रधान रूप में। यह शक्ति केन्द्रित शासन युग रहा।

**रहस्य मूलक आदर्शवाद में अस्थिरता-अनिश्चयता मूलक भौतिकवाद में**

भक्ति विरक्ति का प्रेरणा, रहस्यमय संग्रह सुविधा का प्रेरणा

स्वर्ग मोक्ष के रूप में आश्वासन इसका इसका तृप्ति बिन्दु नहीं मिलना

प्रमाण रिक्त रहा, रहस्यमय देव कृपा से प्रयोग क्रम में धरती बीमार

स्वर्ग, रहस्यमय ईश कृपा, वेद कृपा, होना रहा।

गुरु कृपा से मुक्ति का आश्वासन रहा।

प्रेरणा विधि रहस्यमय रहा।

राज युग से गणतंत्र विधि से जनप्रतिनिधियों का सहमति से शासन, सभी देश, राज, राष्ट्र के संविधान, व्यक्ति समुदाय चेतना से ग्रसित एवं शक्ति केन्द्रित शासन के रूप में है, जिसका विकल्प अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिंतन, ज्ञान, विवेक, विज्ञान रूप में मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) शास्त्र, अखण्डता सार्वभौमता के अर्थ में प्रस्तुत है। यह प्रस्तुति रहस्य, भ्रम, अपराध मुक्ति के अर्थ में है ।

**6.5 (13) जागृत मानव परंपरा का सहज वैभव**

1. मानव चेतना विधि से मानवत्व सहज परिवार व्यवस्था से व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी से है।

2. मनाकार को साकार करने एवं मन:स्वस्थता का प्रमाण से है।

3. खनिज, वन, वन्य जीव को संतुलित बनाये रखते हुए और घरेलू जीवों को पालते हुए कृषि के आधार पर आहार, वन-खनिज के आधार पर आवास, इन्हीं आधार पर अलंकार, वस्तुओं का उत्पादन या निर्माण और उपयोग से है। प्रौद्योगिकी विधि से दूरश्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन संबंधी सुविधा प्राप्त करना।

4. कृषि व पशु पालन के आधार पर आहार संबंधी वस्तुओं से संपन्न होने से है। ग्राम, शिल्प, वन, खनिज के आधार पर आवास, अलंकार संबंधी वस्तुओं से सम्पन्न होने से है।

5. जागृत मानव के नृत्य : अंगहार, भंगिमा, मुद्रा भेद से भाव-भाषा प्रकाशन।

**नृत्य** = मानव चेतना सहज प्रयोजन के अर्थ में नाट्य, गीत-संगीत, भाषा, भाव = मूल्य = मौलिकता = समाधान = सुख = मानवापेक्षा भाव-भंगिमा, मुद्रा-अंगहार सहज संयुक्त अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन व्यवहारिक है।

सुख, शान्ति, सन्तोष व आनंद सहज सम्प्रेषणायें आप्लावन सहज स्वीकृति में सार्थक होता है। सर्वतोमुखी समाधान ही सुख, समाधान-समृद्धि ही शान्ति, समाधान-समृद्धि-अभय ही संतोष, समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व प्रमाण ही आनंद है। यही सर्वशुभ सूत्र है। यही सार्थक नृत्य भावों का आधार है।सर्वशुभ में स्वशुभ समाया है।

**भाव** = मौलिकता, मूल्य, मूल्य सम्प्रेषणा।

**भंगिमा** = मूल्य में तदाकार-तद्रूपता भाषा विहिन मुखमुद्रा।

**मुद्रा** = शरीर में मूल्य प्रभावी झलक, इसके अनुकूल मुद्रा अंगहार जिससे मूल्य व मूल्य सम्प्रेषणा दर्शकों में स्वीकृत व प्रभावी होना ही प्रयोजन है।

**श्रवण** = श्रेष्ठता, सहजता को सुनने की क्रिया यह मौलिक अधिकार है।

**मौलिकता** = जीव चेतना से मानव चेतना श्रेष्ठ, मानव चेतना से देव चेतना श्रेष्ठतर, देव चेतना से दिव्य चेतना श्रेष्ठतम होना स्पष्ट होना।

**6.5 (14) शिक्षा-संस्कार व्यवस्था**

शिक्षा = शिष्टता पूर्ण दृष्टि का उदय होना मूल्य, चरित्र, नैतिकता स्पष्ट एवं प्रमाणित होना।

**शिष्टता**

1. समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी सहज प्रमाण होना।

2. दृष्टा पद प्रतिष्ठा का जागृति सहज प्रमाण होना।

3. मानवीयता पूर्ण आचरण सहज प्रमाण होना।

**संस्कार**

1. जीवन जागृति एवं विधि स्वीकृति होना।

2. सहअस्तित्व नियति सहज विधि स्वीकार होना।

3. अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था रूप में सम्पूर्ण विधि स्वीकार होना, प्रमाणित होना।

**व्यवस्था** = उपयोगिता-पूरकता सहज मानवीयता पूर्ण आचरण वैभव को दश सोपानीय व्यवस्था में, से, के लिये प्रमाणित करने का कार्यक्रम में भागीदारी करना।

**उद्देश्य** = मानव लक्ष्य, जीवन मूल्य मानव परंपरा में प्रमाणित रहना, करना, कराना, करने के लिए सहमत होना।

**6.5 (15)** **शिक्षा-संस्कार व्याख्या स्वरूप**

**शिक्षा में वस्तु** = सहअस्तित्व सहज ज्ञान, विवेक, विज्ञान सहित कायिक, वाचिक, मानसिक व कृत, कारित, अनुमोदित प्रमाण।

**शिक्षक और अभिभावक** = सहअस्तित्व दर्शन बोध ज्ञान प्रमाण, जीवन ज्ञान बोध प्रमाण सम्पन्न होना, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान प्रमाण होना रहना।

**विवेक** = मानव लक्ष्य, जीवन मूल्य बोध अनुभव प्रमाण।

**विज्ञान** = मानव लक्ष्य में, से, के लिए सुनिश्चित दिशा, व्यवहार व कर्माभ्यास नियम बोध अनुभव प्रमाण परंपरा में, से, के लिए सहज सुलभ होना।

शिक्षा वस्तु सहज ज्ञान, विवेक, विज्ञान सहज विधि से सिद्धांतों का धारक-वाहक शिक्षक-अभिभावक होना रहना है।

**शिक्षा** = अभिभावक-शिक्षकों के साथ विद्यार्थियों को अभ्युदय के अर्थ में सहमत सहित रूप में प्रमाणित रहना।

**शिक्षक** = पूर्णतया समझदार, ईमानदार, जिम्मेदार, भागीदार रहना शिक्षा प्रणाली सहज वैभव है। जागृति स्रोत व वर्तमान में प्रमाण रूप में होना वैभव है।

**अभिभावक** = अभ्युदय को भावी पीढ़ी में आवश्यकता अपेक्षा सहित स्वयं की उपयोगिता-पूरकता को प्रमाणित करने वाला अभिभावक है।

**विद्यार्थी** = भ्रम मुक्ति व समझदारी के लिए साक्षरता, भाषा व अध्ययन मानवीयता पूर्ण आचरण में पारंगत होने के लिए, करने के लिए, अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी सहित मानव लक्ष्य को साकार करने के लिए आशा, अपेक्षा, आवश्यकता व जिज्ञासु होना है।

6.6 मानवीय संस्कृति सभ्यता का अधिकार

**अनुभव मूलक अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा**

संबंध-मूल्य निर्वाह परंपरा

मूल्यांकन-उभयतृप्ति निर्वाह परंपरा

व्यवस्था सहज निर्वाह परंपरा

दायित्व निर्वाह परंपरा इन्हें कलात्मक विधि

कर्त्तव्य सहज निर्वाह परंपरा से प्रस्तुत करना

पूर्णता के अर्थ में किया गया निर्वाह परंपरा

जागृतिपूर्वक जीने की कला व कृतियों के रूप में निर्वाह परंपरा

क्रियापूर्णता, मानव मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहित सर्वतोमुखी समाधान प्रमाण के रूप में वर्तमान होना रहना ही है।

जागृत मानव जीने का प्रमाण परंपरा ही मानव संस्कृति सभ्यता सहज मौलिक अधिकार है।

**6.6 (1) कला**

**कला** = श्रेष्ठता सहज उपयोगिता पूरकतावादी भाषा, भाव (मूल्य सम्प्रेषण) भंगिमा, मुद्रा, अंगहार प्रकाशन

**भाषा** = सत्य भास होना प्रकाशन एवं सम्प्रेषणा सहज अर्थ में।

मौलिकता (चारों अवस्था व पदों का) सहज, रूप-गुण-स्वभाव-धर्मात्मक मौलिकता, चारों अवस्था व पदों की मौलिकता, अखण्डता, सार्वभौमता सहज प्रकाशन मौलिक अधिकार है।

**भास** = सहअस्तित्व समझ में होने का संभावना सहज सूचना।

**आभास** = समझ स्वीकार होने का संभावना।

**प्रतीति** = चिंतन, साक्षात्कार समझ की अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा।

**अनुभूति** = प्रमाण बोध अनुक्रम एवं क्रम ही चारों अवस्था व पदों में निहित धर्म, स्वभाव सहज अभिव्यक्ति।

**6.6 (2) जागृत मानव परंपरा में प्रमाण सहज वैभव परंपरा है**

ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता सहित ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी समेत परंपरा ही जागृत मानव परंपरा है।

**ज्ञान** = सहअस्तित्व सहज दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान सम्पन्नता (पारंगत प्रमाण)

**विवेक** = जीवन मूल्य, मानव लक्ष्य में पारंगत प्रमाण

**विज्ञान** = काल, क्रिया, निर्णय में पारंगत प्रमाण

मानवीयता पूर्ण आचरण जागृत मानव परंपरा है। मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान, मानवीय व्यवस्था, दश सोपानीय सार्वभौम व्यवस्था, अखण्ड समाज राष्ट्र के अर्थ में मानवीय व्यवस्था, मानवीय शिक्षा संस्कार परंपरा सहज परंपरा ही जागृत मानव परंपरा है। यह मौलिक अधिकार है।

**मानव और नैसर्गिक संबंध** = संबंध पूर्णता के अर्थ में अनुबंध

**पूर्णता** = क्रियापूर्णता, अखण्ड समाज के अर्थ में आचरणपूर्णता सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी सहज स्वीकृति आचरण, कार्य, व्यवहार, विचार, ज्ञान, विवेक, विज्ञान सहज प्रमाण परंपरा।

**6.6 (3) जागृत मानव परंपरा में ही नैसर्गिक संबंधों का निर्वाह होता है।**

1. मानवेत्तर प्रकृति यथा जीवावस्था, प्राणावस्था, पदार्थावस्था सहज वैभव के साथ उपयोगिता-पूरकता सहित संतुलन को प्रमाणित करना।

2. मानवेत्तर प्रकृति में संतुलन बनाये रखना।

3. ऋतु संतुलन के आधार पर वन खनिज का संरक्षण करना।

4. सम्पूर्ण वन वनस्पतियां बीज-वृक्ष विधि से आवर्तनशील है, इसे सुरक्षित रखना।

5. खनिज व वनस्पतियों के संतुलन को बनाये रखना व सुरक्षा करना।

6. धरती के वातावरण व पर्यावरण को संतुलित पवित्र बनाये रखना।

**6.6 (4) मानवेत्तर प्रकृति का संबंध निर्वाह मौलिक अधिकार है**

1. धरती पर अन्न, वन, वनस्पतियों, वन्य प्राणियों और जीवों का संबंध एवं वन ही इनके आवास स्थली के रूप में धरती पर वर्तमान है। मानव सहज वैभव होने का आधार भी धरती है, इसलिए इसका संतुलन आवश्यक है। धरती अपने शून्याकर्षण स्थिति-गति स्वरूप में संतुलित होने के आधार पर ही प्राणावस्था के सम्पूर्ण प्रकार की वनस्पतियाँ, जीव-संसार और ज्ञानावस्था में मानव का होना पाया जाता है। इनमें संतुलन बनाये रखना जागृति है। यह विज्ञान विधा का महत्वपूर्ण दायित्व है।

2. हवा के साथ मानव का संबंध बना ही है। प्राण वायु अर्थात् मानव तथा जीव-संसार जिस प्रकार के हवा के कारण सांस ले पाते हैं , इसकी प्रचुरता-पवित्रता को बनाये रखना मानव कुल का कर्त्तव्य है।

3. पानी के साथ मानव संबंध सदा से बना ही रहता है। इस धरती पर पानी समृद्ध होने के उपरान्त ही प्राणावस्था, जीव अवस्था और ज्ञानावस्था में मानव सहज प्रकट होना पाया जाता है। अतएव पानी की प्रचुरता एवं पवित्रता को सुरक्षित बनाये रखना आवश्यक है।

4. जीव संसार की सुरक्षा व नियंत्रण, संतुलन मानव परंपरा के लिए अनिवार्य कर्त्तव्य है।

**नियम-त्रय पालन मौलिक अधिकार है।**

प्राकृतिक नियम

बौद्धिक नियम

सामाजिक नियम

**6.6 (5) प्राकृतिक नियम**

खनिज वनस्पति, जीव-संसार इसी धरती में संतुलित रहने के उपरान्त ही मानव का उदय व परंपरा प्रस्तुत है। मानव ज्ञानावस्था में होने के कारण इनमें संतुलन वैभव को बनाये रखना ही समाधान (सुख) है।

**6.6 (6) बौद्धिक नियम**

समृद्धि, स्नेह, समझदारी (समाधान), सरलता, वर्तमान में विश्वासवादी एव विश्वासकारी ज्ञान, विज्ञान, विवेक सम्मत मानसिकता विचार का प्रमाण।

**6.6 (7) सामाजिक नियम**

स्वधन, स्वनारी, स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार का प्रमाण परंपरा।

**जागृत मानव सहज अभिव्यक्ति-सम्प्रेषणा**

अभ्युदय के अर्थ में व्यक्त रहना।

सर्वतोमुखी समाधान सहज प्रमाण परंपरा के रूप में वर्तमान रहना।

ज्ञान, विज्ञान, विवेक सम्पन्नता का प्रमाण और प्रमाण सहज परंपरा, परंपरा ही पीढ़ी से पीढ़ी अखण्ड समाज परंपरा, सार्वभौम व्यवस्था परंपरा, स्वतंत्रता स्वराज्य सहज परंपरा, मानवीयता पूर्ण आचरण परंपरा, मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान परंपरा, दश सोपानीय सार्वभौम व्यवस्था परंपरा ही जागृत मानव सहज अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा प्रकाशन है।

6.7 आहार विहार का अधिकार

मानवीय आहार मानव शरीर-रचना के आधार पर निश्चित होता है।

1. अस्तित्व में जीव शरीर, मानव शरीर रचनायें गर्भाशय में होना पाया जाता है। यह पिण्डज संसार का वैभव है। शाकाहारी शरीर का अध्ययन करने से पता चलता है कि शाकाहारी जीव और मानव ओंठ के सहारे पानी पीते हैं जबकि मांसाहारी जीव जीभ से पानी पीते हैं।

2. मांसाहारी जीवों के पैरों के नाखून व दाँत पैने होते हैं। जबकि शाकाहारी जीवों और मानव के पैरों और हाथों के नख और दाँत उतने पैने नहीं होते।

3. मांसाहारी शरीर में आंते लम्बाई में छोटी होती है। शाकाहारी की आंते लम्बी होती है।

4. मांसाहारी और शाकाहारी जीवों का निश्चित आचरण देखने को मिलता है जैसा बाघ और गाय। इनका आचरण निश्चित रहता है। मानव का अध्ययन से पता चलता है कि दोनों प्रकार का आहार करते हुए भी मानव का आचरण सुनिश्चित नहीं होता। अतएव मानवत्व सहित मानवीयता पूर्ण आचरण ही आधारभूत सूत्र व सहअस्तित्व सहज प्रमाण रूप में व्याख्या है। मानव नियति विधि से शाकाहारी है। यह मौलिक अधिकार है।

**मानवीय-विहार**

**विहार** = मानवीयता पूर्ण आचरण में विश्वास सहज उत्सव को हर्षोल्लास के रूप में प्रकाशित करना।

**हर्ष** = हृदय स्पर्शी प्रसन्नता।

**प्रसन्नता** = प्रयोजन सहित समाधान सम्पन्न मानसिकता का प्रकाशन।

**प्रमोद** = प्रयोजनों के अर्थ में खुशी का प्रकाशन।

**आमोद** = आवश्यकता उपयोगिता पूरकता में सफलता सहज उत्सव प्रकाशन।

**उल्लास** = समाधान, समृद्धि सहज उत्सव उन्नति का प्रकाशन।

**विनोद** = परस्पर ज्ञान, विवेक, विज्ञान सहज समानता का परीक्षण-निरीक्षण प्रसन्नता सहज प्रकाशन स्वीकृति रूप में।

**व्यवहार** = मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना।

**विन्यास** = विविध परिस्थितियों में न्याय-निर्वाह वैभव।

यह मौलिक अधिकार है।

6.8 अधिकार (परिवार समूह सभा का अधिकार)

**(1)**

(1.1) सभा गठन सहज अधिकार।

(1.2) गठन में कार्यरत सदस्यों सहज संबंधों को पहचानने का अधिकार।

(1.3) आयु के अनुसार संबोधनाधिकार।

(1.4) बहन-भाई, चाचा-चाची नाम से संबोधन अधिकार।

(1.5) गांव मोहल्ले में रहने वाले सभी परिवार मानव लक्ष्य को प्रमाणित करने में प्रोत्साहित करने का अधिकार।

(1.6) मानवत्व में, से, के लिए मार्गदर्शन देने व पाने का अधिकार, परिवार न्याय को बनाये रखने में मार्गदर्शन करने, पाने का अधिकार।

(1.7) परिवार समूह सभा में कार्यरत हर सदस्य दस परिवार जनों के लिए सर्वशुभ मार्गदर्शन का अधिकार।

(1.8) सर्वशुभ रूपी समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में जागृति सहज प्रमाण के अर्थ में मार्गदर्शन का अधिकार हर समझदार परिवार एवं परिवार समूह सभा में रहेगा।

(1.9) दस परिवार समूह सभाओं की गतिविधियों को परस्पर परीक्षण-निरीक्षण करने का अधिकार रहेगा।

**(2)**

**ग्राम मोहल्ला सभा का अधिकार**

(2.1) ग्राम मोहल्ले में जल आपूर्ति करने का अधिकार।

(2.2) बहती पानी को रोकने का अधिकार।

(2.3) ग्राम में वृक्षारोपण का अधिकार।

(2.4) वन समृद्धि करण का अधिकार।

(2.5) वनौषधियों को संरक्षित समृद्ध करने का अधिकार।

(2.6) वनौषधियों का उपयोग करने का अधिकार।

(2.7) वनोपज वनौषधियों को संग्रहित करने का अधिकार।

(2.8) पर्यावरण में प्रदूषण मुक्ति के लिए भागीदारी करने का अधिकार।

**(3)**

(3.1) ग्राम में समीचीन रोगों का निवारणाधिकार।

(3.2) ग्राम में सभी के स्वस्थ रहने के आवश्यकीय सभी उपायों को अपनाने का अधिकार।

(3.3) वन एवं वनौषधियों के संवर्धन करने का अधिकार।

(3.4) हर परिवार को शिक्षा संस्कार विधि से स्वस्थ रहने की विधियों से सम्पन्न करने का अधिकार।

**(4)**

(4.1) अपने-अपने गाँव में हस्त कला में सब को परांगत बनाने का अधिकार।

(4.2) ग्राम शिल्प कार्यों में ग्राम वासियों को पारंगत बनाने का अधिकार।

(4.3) ग्राम की आवश्यकतानुसार ग्राम वासियों को कुटीर उद्योग में पारंगत बनाने का अधिकार।

(4.4) ग्राम वासियों को कुटीर एवं ग्रामोद्योग में पारंगत बनाने का अधिकार।

(4.5) ग्राम में ग्रामोद्योगों को स्थापित करने का अधिकार।

**(5)**

(5.1) ग्रामों में प्रत्येक नर-नारी को साक्षरता सहित समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी सहित व्यवस्था में भागीदारी का समानाधिकार को जागृत बनाये रखने का अधिकार।

(5.2) मानवीयतापूर्ण शिक्षा-संस्कार एवं उत्पादन के लिए कारीगरी प्रशिक्षण का ग्राम व्यापीकरण करने का अधिकार।

(5.3) जागृति का मूल्यांकन करने का अधिकार।

(5.4) समाधान समृद्धि में समानाधिकार का मूल्यांकन करने का अधिकार।

(5.5) संबंध व मूल्य निर्वाह में समान अधिकार।

(5.6) समझदारी सहित शिष्टतापूर्वक व्यवहार करने में समान अधिकार।

(5.7) मानव चेतना सहज संस्कारपूर्वक समझदार होने का अधिकार।

(5.8) न्याय प्रदायी क्षमता सम्पन्न होने का अधिकार।

(5.9) समृद्धि सम्पन्न होने का अधिकार।

(5.10) मानवीय संस्कृति सभ्यता पूर्वक प्रमाणित होने का समान अधिकार।

**(6)**

(6.1) कृषि कार्य में बीज स्वायत्तता का अधिकार।

(6.2) कृषि कार्य में उर्वरक स्वायत्तता का अधिकार।

(6.3) कृषि कार्य में कीटनाशक कार्य प्रणाली में स्वायत्तता का अधिकार।

(6.4) कृषि कार्य में जल स्वायत्तता का अधिकार।

(6.5) कृषि कार्य में बीज गुणन कार्य का अधिकार।

(6.6) बीज गुणन कार्य में ज्ञानार्जन प्रयोग का अधिकार। ग्राम मोहल्ला में ऊर्जा संतुलन के अधिकार।

**(7)**

(7.1) मानवीयता पूर्ण आचरण करने का अधिकार।

(7.2) ज्ञान, विवेक, विज्ञान पूर्ण विधि से सामाजिक अखण्डता व्यवस्था सहज सार्वभौमता के अर्थ में सोच, विचार, निर्णय सहित कर्त्तव्य-दायित्व पालन पूर्वक व्यवहार करने का अधिकार।

(7.3) अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिंतन में अनुभव प्रमाण सहज आधार पर शोध कार्य का अधिकार।

(7.4) आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने का अधिकार।

(7.5) न्याय पूर्वक जीने का अधिकार।

(7.6) समाधान पूर्वक जीने का अधिकार।

(7.7) सहअस्तित्व में जीने रहने का अधिकार।

(7.8) मानव लक्ष्य, जीवन मूल्य को प्रमाणित करने का अधिकार रहेगा।

(7.9) ग्राम परिवार सभा अपने वैभव को प्रमाणित करने के लिए समितियों का मनोनयन पूर्वक गठित करने का अधिकार।

**(8)**

(8.1) परिवार ग्राम मोहल्ला परिवार सभा से मनोनीत समितियों व सभाओं में कार्य व भागीदारी करता हुआ हर नर-नारी में, से, के लिए मानवत्व सहज समान अधिकार है।

**ग्राम मोहल्ला में हर मानव में मौलिक अधिकारों का वैभव**

**परिवार मूलक स्वराज्य कार्य व्यवस्था स्वरूप**

**स्वरूप**

मानवीय शिक्षा संस्कार सुलभता, न्याय सुरक्षा सुलभता, उत्पादन कार्य सुलभता, विनिमय कोष सुलभता, स्वास्थ्य संयम सुलभता, यही सार्वभौम व्यवस्था स्वरूप अखण्ड समाज के अर्थ में ही सार्थक होता है।

**व्यवस्था**

उपयोगिता-पूरकता सहज मानवीयता पूर्ण आचरण वैभव को दश सोपानीय व्यवस्था में, से, के लिए प्रमाणित करने का कार्यक्रम-

1. जागृति पूर्वक वर्तमान में विश्वास, भविष्य में आवश्यकता को प्रमाणित करना व्यवस्था है।

2. हर नर-नारी में, से, के लिये मानवीयता पूर्ण आचरण ही समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी है। यह दश सोपानीय स्वराज्य व्यवस्था में, से, के लिए अभिव्यक्ति है।

**स्वराज्य** = अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था परंपरा के रूप में वैभव यही सर्वशुभ कार्यक्रम है। जागृत मानव परंपरा सहज वैभव।

**परिवार मूलक** = परिवार मूलक सूत्र व्याख्या के आधार पर व्यवस्था वैभव यह मौलिक अधिकार है।

6.9 उद्देश्य-दायित्व-कर्त्तव्य

मानव का कर्त्तव्य जागृति के पश्चात प्रारंभ होता है। हर नर-नारी जागृति सम्पन्न होने का स्त्रोत शिक्षा-संस्कार कार्य परंपरा है। जागृत मानव होने से ही कर्त्तव्य दायित्व सार्थक होता है। जो देश काल परिस्थिति के आधार पर तय होता है। मूलत: मौलिक अधिकार जागृत मानव का कर्त्तव्य है जो स्वयं के प्रति, परिवार के प्रति, समाज के प्रति, समग्र व्यवस्था के प्रति वरीयता सहित भागीदारी पूर्वक सार्थक होता है।

**हर नर-नारी जागृति सहज प्रतिभा और व्यक्तित्व को प्रमाणित करना सर्वमानव सहज मौलिक अधिकार सहित दायित्व कर्त्तव्य है।**

1. सभा में भागीदारी हर नर-नारी करने में समानता मानव लक्ष्य सर्व सुलभ होना और होने में, से, के लिए सभी सदस्य समान रूप में दायी है।

2. हर परिवार में हर सदस्य समझदार, ईमानदार, जिम्मेदार, भागीदार होना, रहने का उद्देश्य व सफल बनाने का दायित्व समान है।

3. सहअस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान पूर्वक व्यवस्था गति को बनाये रखने का दायित्व समान है।

4. सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्नता से ही परिवार से विश्व परिवार में प्रमाणित होना ईमानदारी व दायित्व है।

5. मानवीयता पूर्ण आचरण प्रवृत्ति जिम्मेदारी का दायित्व होना समान है।

6. अखण्ड समाज के अर्थ में दश सोपानीय सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी का दायित्व समान है।

7. मानव लक्ष्य परंपरा में प्रमाणित होने का दायित्व समान है।

8. मानवीय शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा, उत्पादन-कार्य सुलभता, विनिमय-कोष सुलभता, स्वास्थ्य-संयम सुलभता, यही प्रधानत: कार्य सहज उद्देश्य-दायित्व-कर्त्तव्य है। इनमें समानाधिकार है।

भाग – सात (Part - 7)

व्यवस्था (System)

**दश सोपानीय व्यवस्था :-**

वर्तमान में हर नर-नारी में जागृति सहज प्रमाण, हर परिवार में समाधान, समृद्धि सहज प्रमाण, परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी सहज प्रमाण सहज अधिकार।

Ten-tier system :-

Evidence in the present - of awakening in all humans (males & females), of resolution & prosperity in all families, and of right of participation in the family based self governance system.

**व्यवस्था स्वरूप :-**

(चित्र अगले पृष्ठ पर)

System design :-

(diagram on next page)

**व्यवस्था प्रक्रिया :-**

दस समझदार सदस्यों का परिवार सभा प्रक्रिया क्रम, परिवार प्रतिनिधि निर्वाचन विधि सहज (जन प्रतिनिधि) प्रणाली हर परिवार में से एक सदस्य का निर्वाचन पद्धति दस सदस्यीय परिवार समूह सभा में, से, के लिए होगा।

System structure :-

Structure of family council of ten wise members, mechanism of family representation (representative) by way of election, one member from each family in, by & for ten-membered family cluster council by way of election.

**व्यवस्था का क्रम :-**

दस समझदार मानव

1. परिवार सभा

2. परिवार समूह सभा

3. ग्राम/मोहल्ला परिवार सभा

4. ग्राम/मोहल्ला समूह परिवार सभा

5. क्षेत्र परिवार सभा

6. मंडल परिवार सभा

7. मंडल समूह परिवार सभा

8. मुख्य राज्य परिवार सभा

9. प्रधान राज्य परिवार सभा

10. विश्व राज्य परिवार सभा

Steps of the system :-

Ten wise persons

1. Family council
2. Family cluster council
3. Village family council
4. Village cluster family council
5. Area family council
6. Block family council
7. Block cluster family council
8. District family council
9. State family council
10. World family council

**परिवार वैभव का क्रम :-**

1. परिवार वैभव समाधान समृद्धि

2. परिवार समूह वैभव समाधान समृद्धि

3. ग्राम परिवार वैभव समाधान समृद्धि

4. ग्राम समूह परिवार वैभव समाधान समृद्धि

5. क्षेत्र परिवार वैभव समाधान समृद्धि

6. मंडल परिवार वैभव समाधान समृद्धि अभय

7. मंडल समूह परिवार वैभव समाधान समृद्धि अभय

8. मुख्य राज्य परिवार वैभव समाधान समृद्धि अभय

9. प्रधान राज्य परिवार वैभव समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व सहज वैभव

10. विश्व राज्य परिवार वैभव समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व पूर्ण परंपरा सहज वैभव

Steps of the family grandeur :-

1. Family grandeur - resolution, prosperity
2. Family cluster grandeur - resolution, prosperity
3. Village family grandeur - resolution, prosperity
4. Village cluster family grandeur - resolution, prosperity
5. Area family grandeur - resolution, prosperity
6. Block family grandeur - resolution, prosperity, fearlessness
7. Block cluster family grandeur - resolution, prosperity, fearlessness
8. District family grandeur - resolution, prosperity, fearlessness
9. State family grandeur - grandeur of resolution, prosperity, fearlessness, coexistence
10. World family grandeur - grandeur of resolution, prosperity, fearlessness, coexistence

**परिवार सभा का स्वरूप :-**

Design of family council :-

दस समझदार मानव जिसमें हर नर-नारी सहअस्तित्व सहज समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी में समानता, जिसका अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन करने में समान अधिकार सम्पन्न परिवार है।

A family comprises ten wise persons in which all males & females are equal in understanding of coexistence, honesty, responsibility & participation, being equally competent in expression, communication & manifestation.

शिक्षा संस्कार कार्य व्यवस्था, न्याय सुरक्षा कार्य व्यवस्था, परस्परता में उत्पादन कार्य व्यवस्था, आवश्यकता से अधिक उत्पादन कार्य व्यवस्था, विनिमय कार्य व्यवस्था (श्रममूल्य के आधार पर लेन-देन रूप में विनिमय कार्य व्यवस्था), स्वास्थ्य संयम कार्य व्यवस्था सहज समान कर्त्तव्य दायित्व अधिकार रहेगा।

There will be equal duty, responsibility & rights towards education-*sanskar* system, justice-security-system, production-work system in mutuality, system of producing more than the needs, exchange system (exchange based on labour value) and health-*sanyam* system

अस्तित्व में इकाइयों के होने का प्रमाण सर्वतोमुखी प्रतिबिम्ब है। परस्पर पहचान ही प्रक्रिया प्रमाण है।

All-round reflection is the evidence of the presence of units in existence. Mutual recognition is the process and evidence.

परस्परता में पहचान कार्य-व्यवहार का आधार है एवं प्रेरणा सहित कर्त्तव्य व दायित्व सूत्र व्याख्या है। पूरकता उपयोगिता सहज प्रमाण है।

Mutual recognition is the basis of work & behaviour, and is the maxim & elaboration of duty & responsibility along with inspiration. It is also the evidence of complementarity and usefulness.

नेत्रों में सहअस्तित्व सहज प्रतिबिंब आंशिक रूप समायी है। जबकि हर नर−नारी में पूरा समझना अध्ययन विधि से सहज है। सहअस्तित्व चार अवस्था व पदों में होना रहना समझ में आता है ।

Eyes grasp only the partial reflection of coexistence. Full understanding (of coexistence) is possible for all humans, males & females, only by way of study. Coexistence is, and remains, in four orders and four realms, is the understanding one reaches.

**व्यवस्था के कार्यक्रम (समितियाँ)**

1. शिक्षा-संस्कार कार्य-व्यवस्था समिति

2. सार्वभौम न्याय-सुरक्षा कार्य-व्यवस्था समिति

3. उत्पादन-कार्य-व्यवस्था समिति

4. विनिमय-कोष कार्य-व्यवस्था समिति

5. स्वास्थ्य-संयम कार्य-व्यवस्था समिति

Programs of the system (committees)

1. Education-*sanskar* committee
2. Justice-security committee
3. Production-work committee
4. Exchange-reserve committee
5. Health-*sanyam* committee

**7.1 शिक्षा-संस्कार कार्य व्यवस्था समिति**

**शिक्षा में वस्तु स्वरूप :-** सहअस्तित्व सहज अर्थ में भौतिक रासायनिक एवं जीवन क्रियाकलापों का अध्ययन सर्वसुलभ होना है - विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति में ही यथास्थिति गति सहित परस्परता में उपयोगिता-पूरकता विधि सहित सिद्धांत, अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन (नजरिया) सहज अध्ययन बोध, अनुभव प्रमाण मूलक अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन प्रबुद्ध परंपरा।

**Education-sanskar (working) committee**

**Content of education :-** Study of physico-chemical and *jeevan* activities as per coexistence, to be available to everyone - Principle with method of complementariness and usefulness in actual state & motion in only mutuality in development progression, development, awakening progression & awakening; study & *bodh* of existence based human centred contemplation (perspective); tradition of enlightenment in expression, communication & manifestation rooted in realisation & evidence.

**संस्कार स्वरूप :-** जागृति, जागृति सहज प्रमाण, जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह रूप में प्रमाण होना, रहना परंपरा है। समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी को अखण्ड समाज सहज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी प्रमाण। प्राकृतिक, बौद्धिक, सामाजिक नियमों का पालन करते हुए मानव लक्ष्य को साकार करने के रूप में प्रमाण।

**Content of *sanskar* :-** Tradition of becoming, and its continuity, of awakening and its evidence, and evidence in the form of knowing, believing, recognising & fulfilling. Evidence of understanding, honesty, responsibility & participation as participation in undivided society, universal system. Evidence in the form of materialisation of human goal abiding by the natural, intellectual & social laws.

**7.1 (1) उद्देश्य -**

**व्यवहारिक उद्देश्य**

**Objective -**

**Practical objective**

**मूल उद्देश्य :-** सम्पूर्ण मानव मानवत्व सहित व्यवस्था में होना-रहना और समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज प्रमाण परंपरा के रूप में होना-रहना। मन:स्वस्थता पूर्वक मनाकार को साकार करना-रहना।

**Main objective :-** All humans achieving, and remaining in, the state of orderliness (harmony) with humaneness; and evidence of participation in the overall orderliness (harmony) becoming a tradition. Materialising of ideas (and the continuity thereof) by way of mental well-being.

**फलस्वरूप :-** जीवन मूल्य और मानव लक्ष्य परंपरा प्रमाण के रूप में प्रमाणित होना, साथ ही साथ विकास विधि से ऊर्जा संतुलन एवं पर्यावरण संतुलन, पदार्थ, प्राण, जीव और ज्ञान अवस्था में संतुलन पूरकता-उपयोगिता सिद्धांत परंपरा के रूप में प्रमाणित होना-रहना है। यही सर्वकालीन सार्थक उद्देश्य है।

मूल उद्देश्य को प्रमाणित करने के क्रम में न्याय, उत्पादन, विनिमय सुलभता, सार्वभौम व्यवस्था विधि में समाहित रहता है। साथ में शिक्षा-संस्कार सुलभता, स्वास्थ्य संयम सुलभता समाहित रहेगा ही। इस विधि से जागृत मानव परंपरा की संभावना आवश्यकता सहज रुप में समीचीन है।

**Result :-** *Jeevan* values and human goal needs to be evidenced in the form of tradition of evidence. Along with this, energy balance and environmental balance, balance in the four orders, principle of complementariness & usefulness needs to be evidenced as part of development, in the form of tradition. This indeed is the universal meaningful objective.

While evidencing the main objective, accessibility to justice, production & exchange remains included in the universal system. Accessibility to education-*sanskar*, health-*sanyam* shall also remain included. In this manner, the possibility and need of awakened human tradition is never far off.

**मानव लक्ष्य :-** समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में प्रमाण परंपरा है। यही अनुभव सहज प्रमाण है।

**Human goal :-** Tradition of evidence is in resolution, prosperity, fearlessness & coexistence. This is the evidence of realisation.

**अनुभव प्रणाली मानवीय शिक्षा सहज उद्देश्य में निहित है :-**

भ्रम से निर्भ्रमता, जीव चेतना से मानव चेतना, अजागृति से जागृति, समस्या से समाधान, समुदाय से अखण्ड समाज, समुदाय राज्य से सार्वभौम राज्य, असत्य से सत्य, अन्याय से न्याय, अव्यवस्था से व्यवस्था, असंतुलन से संतुलन, आवेशित गति से स्वभाव गति, अभाव से भाव, अज्ञान से ज्ञान, विवेक, विज्ञान, विखण्डता से अखण्डता, विपन्नता से सम्पन्नता, संकीर्णता से विशालता, पराधीनता से स्वतंत्रता, भय से अभय, असत्य से सत्य चेतना में परिवर्तन, भोग मानसिकता से उपयोगी सदुपयोगी प्रयोजनशील मानसिकता, व्यापार लाभोन्मादी मानसिकता से लाभ-हानि मुक्त विनिमय प्रवृत्ति, मानव चेतना सहज समझदारी में पारंगत प्रमाण परंपरा ही मानव परंपरा है। यही जीव चेतना के स्थान पर मानव चेतना है। यह चेतना विकास मूल्य शिक्षा संस्कार से सार्थक होता है।

प्रलोभन भय के स्थान पर यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता सहज मौलिक, मौलिकता, जागृत मानव में न्याय, धर्म, सत्य सहज पहचान वर्तमान में विश्वास।

**Method of realisation is inherent in the objective of humane education :-** Transformation from delusion to delusion-lessness, from animal consciousness to human consciousness, from unawakened to awakening, from sects to undivided society, from sectarian state to universal state, from untruth to truth, from injustice to justice, from chaos to system, from imbalance to balance, from agitated motion to natural motion, from lacking to being, from ignorance to knowledge, wisdom & science, from divisions to unity, from deficiency to abundance, from narrowness to vastness, from dependence to independence, from fear to fearless, from untruth to truth, from mindset of consumption to the mindset of use, right-use & purpose, from mindset of profit-obsession to preference for exchange devoid of profit & loss - the tradition of evidence with expertise in understanding of humane consciousness, is indeed the humane tradition. This itself is the progress from animal consciousness to humane consciousness. This is actualised by consciousness development value education-*sanskar*.

Essence of actuality, reality & truth in place of temptation & fear; recognition of justice, *dharma* & truth in awakened humans; trust in the present.

**7.1 (2) मानसिकता** :- अनुभव मूलक प्रामाणिकता सहज प्रवृत्ति।

1) वर्चस्व जागृति सहज मानसिकता पूर्वक मूल्यांकन = संबंधों का निर्वाह करना समझदारी में, से, के लिए प्रमाण।

2) ज्ञान, विवेक, विज्ञान ही समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी व आचरण में श्रेष्ठता का सम्मान प्रतिष्ठा।

3) प्रतिभा अनुभव मूलक प्रमाणों को प्रमाणित करने की गति।

4) आहार-विहार-व्यवहार के आधार पर व्यक्तित्व।

5) व्यवहार में सामाजिक, अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या के रूप में आचरण।

6) व्यवसाय (उत्पादन कार्य) में स्वावलम्बन सम्पूर्ण वर्चस्व है।

**Mindset** :- Preference for authenticity rooted in realisation.

1. Prevalence of evaluation by way of mindset of awakening = fulfilling of relationships; evidence in, of and for understanding.
2. Knowledge, wisdom & science itself is understanding, honesty, responsibility & participation, and respect for excellence in conduct.
3. Personality based on food, lifestyle & behaviour.
4. Sociable in behaviour, conduct as maxims and elaboration of undivided society.
5. Self-reliance in profession (production work) prevails.

इस तरह सदा हर नर-नारी मूल्यांकन करने में समर्थ रहेंगे ही। ऐसी अर्हता मानवीय शिक्षा परंपरा में, से, के लिए सम्पन्न व सार्थक होता है।

हर नर-नारियों में, से, के लिए मूल्यांकन का आधार उपरोक्त बिन्दु है।

In this manner, ability to do evaluation shall always be inherent in all humans, males & females. Such qualification is accomplished and actualised in, by and for the tradition of humane education.

Above points are the basis of evaluation in, by and for all humans, males & females.

**मूल्यांकन का उद्देश्य :-** व्यवहार में सामाजिक, परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन में स्वावलम्बन पूर्वक समृद्धि सहित सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी के अर्थ में है।

**Objective of evaluation :-** is for participation in the universal system with sociability in behaviour, and prosperity by way of self-reliance in production of goods more than needed.

**7.1 (3) मानवीय-शिक्षा संस्कार पाठ्यक्रम में गुणात्मक परिवर्तन सूत्र**

**Maxims of qualitative changes in the content of humane education-*sanskar***

**सम्पूर्ण आयाम**

1) सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व स्थिर, विकास एवं जागृति निश्चित है सिद्धान्त का अध्ययन विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति सहज बोध सुलभ होने का अध्ययन है।

2) सहअस्तित्व में भौतिक-रासायनिक और जीवन पद, जीवनी क्रम, जीवन जागृति क्रम, जीवन जागृति व निरंतरता सहज अध्ययन उपयोगिता-पूरकता सिद्धान्त जैसे तथ्यों के सभी आयामों के प्रधान मुद्दों को निम्नानुसार विकल्प रूप में सकारात्मक विधि से जागृति सहज सूत्रों को पहचाना गया है।

**Overall dimensions**

1. Study of the principle ‘Existence in the form of coexistence is steady, and development & awakening are certain’ is the study of *bodh* of development progression, development, awakening progression & awakening.
2. Study of all aspects of realities like physico-chemical and *jeevan* planes, living-world progression, awakening progression in *jeevan*, awakening in *jeevan* and its continuity, principle of usefulness and complementariness, have been identified as maxims of awakening in a positive way in the form of an alternative, as mentioned below.

**प्रचलित (विषय) :- जागृति के लिए वस्तु**

**Conventional subjects Content for awakening**

1. विज्ञान के साथ - चैतन्य पक्ष का अध्ययन

Along with science - study of the sentient aspect

2. मनोविज्ञान शास्त्र के साथ - संस्कार (अनुभव मूलक-प्रमाण) पक्ष का अध्ययन

Along with psychology - study of *sanskar* aspect (evidence rooted in

realisation)

3. दर्शन शास्त्र के साथ - क्रिया पक्ष (अनुभव प्रमाण) का अध्ययन

Along with philosophy - study of the activity aspect (evidence of realisation)

4. अर्थशास्त्र के साथ - प्राकृतिक एवं वैकृतिक ऐश्वर्य का (ग्राम स्वराज्य विधि

से) सदुपयोग व सुरक्षात्मक पक्ष का अध्ययन

Along with economy - study of right-use and security aspects of natural

and human-made opulence (by way of village

self-governance)

5. राजनीति शास्त्र के साथ - मानवीयता का संरक्षण एवं संवर्धनात्मक

विधि व्यवस्था नीति पक्ष का अध्ययन

Along with politics - study of system and policy aspects for

protection and enrichment of humaneness

6. समाजशास्त्र के साथ - मानवीय संस्कृति अखण्ड समाज तथा

सभ्यता पक्ष का अध्ययन

Along with sociology - study of humane culture & civility and undivided

society aspects

7. भूगोल, इतिहास के साथ - मानव तथा मानवीयता पक्ष का अध्ययन

With geography, history - study of humans and humane aspects

8. साहित्य के साथ - तात्विकता का अर्थात् सहअस्तित्व रूपी परम सत्य

का अध्ययन

Along with literature - study of truth (ultimate truth in the form of

coexistence)

उक्त सभी आयामों के विस्तृत अध्ययन हेतु ‘मध्यस्थ दर्शन – सहअस्तित्ववाद’ शास्त्र के रूप में प्रस्तावित है। यही जागृत चेतन परंपरा के लिए स्रोत है क्योंकि सहअस्तित्व नित्य वर्तमान और प्रभावी है।

For detailed study of all the above-mentioned aspects, literature is proposed in the form of Madhyasth Darshan - Co-existentialism. This indeed is the source for awakened human tradition. Coexistence is eternally present and effective.

**7.1 (4) मानवीय शिक्षा**

1) **कितना समझना -** सहअस्तित्व में, से, के लिए सम्पूर्ण समझ, सहअस्तित्व चार पद, चार अवस्था के रूप में समझना प्रमाणित कराना ही जागृत अथवा समझदार परंपरा है।

2)  **क्या समझना (जीना) -** जीवन एवं जीवन मूल्य, मानव लक्ष्य प्रमाण सहज अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा में, से, के लिए मानवीयतापूर्ण आचरण सहित व्यवस्था में जीना।

3) **कब तक समझना -** जागृत मानव परंपरा सहज रूप में प्रतिष्ठित, परंपरा होते तक, इसके अनन्तर निरंतरता है ही होना रहना। इस प्रकार मानव परंपरा रूप में, से, के लिए निरंतर समझदारी होते ही रहना यही निरंतरता है। पीढ़ी से पीढ़ी में।

**Humane education**

1. **How much to understand -** Complete understanding in, of & for coexistence, to understand and evidence coexistence as four planes and four orders, in itself is awakened tradition, or the tradition of understanding.
2. **What to understand (for including in one’s living) -** To live in orderliness along with humane conduct in, of & for expression & communication of evidence of j*eevan*, *jeevan* values & human goal.
3. **For how long to keep on understanding -** Till the time one is part of awakened human tradition, till the time awakened human tradition is established, and continuity of the tradition thereafter. In this manner, continuity means - continuous understanding in, of & for human tradition, from generation to generation.

**मैं क्या हूँ -**

मैं मानव हूँ।

**Who am I -** I am a human.

**कैसा हूँ -**

मैं जीवन व शरीर का संयुक्त रूप हूँ। शरीर मानव परंपरा सहज प्रजनन विधि की देन है। जीवन सहअस्तित्व में गठनपूर्ण परमाणु चैतन्य इकाई है।

**What is my true form -**

I am the combined form of *jeevan* and body. Body, in human tradition, is formed by way of reproduction. *Jeevan* is a constitutionally complete unit in coexistence.

**क्या चाहता हूँ -**

सुख, समाधान, समृद्धि सम्पन्न रहना चाहता हूँ।

**What do I want -**

I want to remain happy, resolved and prosperous.

**क्या होना चाहता हूँ -**

जागृत होना-रहना चाहता हूँ।

**What do I want to become -**

I want to become and remain awakened.

**7.2 सार्वभौम न्याय सुरक्षा व्यवस्था समिति**

**Universal justice-security (working) committee**

सर्वमानव स्वीकृति स्थिति व विधि जो अखण्ड समाज रूप में सार्वभौमता पूर्ण व्यवस्था सहज प्रमाण है।

State and law acceptable to all humans which is evidence of the universal system in the form of undivided society.

· सार्वभौमता मानव सहज जागृति है। चारों अवस्थाओं के साथ समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी पूर्वक जीना सार्वभौमता है।

Awakening of humans is referred to as universality. Living with the four orders with understanding, honesty, responsibility & participation, is referred to as universality.

· जागृत चेतना ही मानव चेतना है यह सार्वभौम है।

Awakened consciousness itself is humane consciousness. It is universal.

· जागृत चेतना ही मानव परंपरा में ज्ञान, विवेक, विज्ञान सहज विधि से जिम्मेदारी, भागीदारी के रूप में स्पष्ट है।

It is clear that awakened consciousness itself is in the form of responsibility & participation in human tradition by way of knowledge, wisdom & science.

· सार्वभौमतापूर्ण व्यवस्था परंपरा ही मानव सहज वैभव है।

System and tradition of universality is indeed the grandeur of humans.

· मानवीयता पूर्ण परंपरा ही जागृत परंपरा है, जिसमें -

Tradition full of humaneness is the awakened tradition indeed, in which -

मानवीयतापूर्ण व्यवहार-कार्य, शिक्षा-संस्कार ज्ञान-विवेक-विज्ञान गति पूर्वक नित्य वैभव है।

Motion by way of humane work & behaviour, education-*sanskar*, and knowledge, wisdom & science leads to eternal grandeur.

मानवीयतापूर्ण व्यवस्था दश सोपानीय गति में नित्य वैभव है।

Eternal grandeur lies in humane systems (by way of the ten-tier system).

मानवीयतापूर्ण संविधान सहअस्तित्व सहज गति प्रतिष्ठा है।

Humane constitution is the eminence of motion in, of & for coexistence.

मानवीयतापूर्ण आचरण मूल्यांकन परस्परता में संविधान की धारक-वाहकता है।

Safety of the constitution is in mutually humane conduct and evaluation.

मानवीयतापूर्ण संस्कृति समाज गति में स्पष्ट होता है।

Humane culture becomes clear in societal functioning.

मानवीयतापूर्ण सभ्यता व्यवस्था गति में स्पष्ट है।

Humane civility becomes clear in the functioning of the system.

**7.2 (1) न्याय**

संबंधों सहज अनुबंध मूल्य निर्वाह करने में प्रतिज्ञा उपयोगिता-पूरकता विधि से पहचान, मूल्यों का निर्वाह फलस्वरूप मानव संबंधों में परस्पर तृप्ति, मानवेत्तर प्रकृति सहज संबंधों में संतुलन, अखण्ड समाज दश सोपानीय व्यवस्था, सार्वभौम - सर्व मानव स्वीकृत अथवा स्वीकृति योग्य है।

**Justice**

Agreement (bond) in, of & for relationship (bond), commitment for fulfilling of values, recognition by way of usefulness & complementariness, fulfilling of values leading to mutual satisfaction in human-human relationships, balance in relation to rest of nature, undivided society, ten-tier system - is universally acceptable to, or worth accepting by, all humans.

**सहअस्तित्व संबंध**

भौतिक, रासायनिक, जागृत-जीवन क्रिया का संबंध पूर्वक मानव संबंध सार्थक प्रयोजन सहज स्थिति गति है।

**Co-existential relationships**

State-motion of the meaning & purpose of human relationships is in accordance with the relationship with physico-chemical and awakened *jeevan* activities.

**7.2 (2) सुरक्षा**

जागृत मानव सहज तन-मन-धन रुपी अर्थ का सदुपयोग विधि से ही सुरक्षा प्रमाणित होता है। हर नर-नारी जागृति पूर्वक अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या परंपरा में होना सार्वभौम न्याय सुरक्षा है।

**Security**

Security is evidenced only by way of the right use of body, mind & wealth by awakened humans. Undivided society, universal system (and maxims & elaboration) in tradition by way of all humans, males & females, being in the state of awakening, is the universal justice & security.

**7.2 (3) न्याय-सुरक्षा सार्थकता मूल्यांकन-विधि**

**Meaningfulness of justice-security and way of evaluation**

1) सहअस्तित्व में हर मानव जागृति सहज वर्तमान ही ज्ञान सम्मत इच्छा-क्रिया व व्यवहार प्रमाण न्याय सुरक्षा है।

All humans present are awakened, and evidence of all desires, actions and behaviour in accordance with knowledge, is justice-security.

2) सहअस्तित्व में जागृति सहज प्रमाण परंपरा ही संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, परस्पर तृप्ति संतुलन न्याय सुरक्षा है।

Tradition of evidence of awakening in coexistence itself is relationships, values, balance in mutual happiness and (this is) justice-security.

3) सहअस्तित्व में, से, के लिए विकास क्रम, भौतिक-रासायनिक क्रिया, जीवन क्रियाकलाप, जीवनी क्रम जागृति क्रम, जीव चेतनावश भ्रमित मानव क्रिया, जागृति मानव चेतना सहज मानव व्यवहार कार्य को समझने के उपरान्त ही दृष्टा पद प्रमाणित होता है।

Perceiver plane is evidenced only after the understanding - of development progression, physico-chemical activity, *jeevan* activity, living-world progression, awakening progression, deluded human activity (due to animal consciousness), and humane work & work (in awakened human consciousness) - in, of & for coexistence.

4)

सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान

जीवन ज्ञान सम्पूर्ण ज्ञान

मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान

Knowledge of holistic view of existence (as coexistence), knowledge of *jeevan* and knowledge of humane conduct, is the complete knowledge.

अनुभव मूलक विधि से अभ्युदय के अर्थ में प्रमाणित होना ही सत्य प्रमाण है। यही विवेक-विज्ञान सम्मत विधि से सर्वतोमुखी समाधान ही मानव धर्म का प्रमाण, अखण्ड समाज सूत्र के अर्थ में सार्वभौम व्यवस्था सहज परंपरा ही संबंध, मूल्य, मूल्यांकन विधि से न्याय सुरक्षा प्रमाणित होता है। यही जागृत परंपरा का वैभव है।

To be evidence for enlightenment by realisation rooted method is indeed the truth evidence. This itself is the evidence of human *dharma* and comprehensive resolution in accordance with wisdom & science. Justice-security, and tradition of the universal system for maxims of undivided society, is evidenced by way of relationships, values & evaluation. This indeed is the grandeur of awakened tradition.

**7.2 (4) न्याय-सुरक्षा**

**Justice-security**

1) जागृत मानव परंपरा में ही सर्वतोमुखी न्याय सुरक्षा प्रमाणित होता है। सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में न्याय जागृति सहज नित्य वर्तमान है। यही जागृत होने, ज्ञान शक्ति संपन्न होने का प्रमाण और सार्वभौम व्यवस्था में प्रमाणित होने का सूत्र, दृष्टा पद प्रतिष्ठा पीढ़ी से पीढ़ी में होना परंपरा है।

Comprehensive justice-security is evidenced only in awakened human tradition. Justice & awakening is accessible & ever present in existence (in the form of coexistence). This indeed is the evidence of awakening, and of accomplishment with the power of knowledge, as well as to be the evidence of maxims of the universal system. Perceiver plane establishment, from generation to generation, is the tradition.

2) दृष्टा पद में जागृत मानव ही है। दृष्टा पद में समझदारी (ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता) जागृति दृष्टा पद सहज प्रमाण परंपरा है।

Only the awakened humans are in the perceiver plane. Understanding in perceiver plane (accomplishment in knowledge, wisdom & science) is the tradition of evidence of awakening & perceiver plane.

3) दृष्टा पद में ही मानव में, से, के लिए सम्पूर्ण पदार्थावस्था मृदा, पाषाण, मणि, धातुएं परिणामानुगामी विधि से यथा स्थिति में पूरकता-उपयोगिता उदात्तीकरण क्रियाकलाप में दृष्टव्य है।

It is only in the perceiver plane that all the material order (soils, rocks, gems, metals) activities are obvious as useful, complementary & evolutionary to & for humans in their current states by way of constitution-conformity.

4) सम्पूर्ण प्राणावस्था में क्रियाकलाप यौगिक विधि सहित रसायन द्रव्य, प्राणसूत्र रचना विधि सम्पन्नता, प्राण कोशा से उन प्रजातियों के रूप में बीज-वृक्ष विधि से परंपरा सम्पन्न रचनायें होना दृष्टव्य है।

All activities in the plant order are obvious as traditions of formations of their respective varieties (by *yogic* and chemical method, accomplishment in genetic codes & biological cells) by seed-tree-seed way.

5) सम्पूर्ण जीव-संसार अनेक प्रजातियों के रूप में सप्त धातु से सम्पन्न शरीर रचना और समृद्ध मेधस सम्पन्नता युक्त शरीर रचना और जीने की आशा सहित जीवन का संयुक्त रूप में होना दृष्टव्य है। जिन जीवों में मानव संकेत ग्रहण होता है यह जीवन का पहचान है।

All the species in animal order are obvious as the combined form of physical bodies comprising seven-*dhatu* and a developed brain along with *jeevan* having a hope to live. Whether or not an animal recognises the signals from humans, is the test of whether it has *jeevan* or not.

सम्पूर्ण मानव ज्ञान सम्पन्नता में होना हर जागृत मानव में, से, के लिये दृष्टव्य-ज्ञातव्य कर्त्तव्य बोध होना पाया जाता है। फलस्वरूप न्याय व सुरक्षा सर्वसुलभ होता है।

*Bodh* of the need for all humans to be accomplished in knowledge is the obvious and known duty in, of & for all awakened humans. Consequently, justice-security is available to everyone.

**न्याय-सुरक्षा**

**Justice-security**

1) पूर्ण जागृति सम्पन्न मानव सर्वदेश व काल में सम्पूर्ण आयाम, कोण, परिप्रेक्ष्यों में न्याय-सुरक्षा, कार्य-व्यवहार, सोच विचार करता, कराता है, करने के लिए सहमत रहता है।

Fully awakened humans do, get-done and endorse work, behaviour & thinking of justice-security in all dimensions, angles & areas at all times & places.

2) जागृति के अनन्तर ही हर नर-नारी में, से, के लिए न्याय सुरक्षा सहज आवश्यकता सहअस्तित्व विधि से स्वीकृत रहता है, व्यवहार में प्रमाणित होता है।

Necessity of justice-security by way of coexistence remains acceptable to all humans, males & females, in the state of awakening, and is evidenced in behaviour.

3) जागृत मानव लक्ष्य के साथ संपूर्ण आवश्यकतायें आवश्यकता से अधिक संभावनाएं सूत्रित रहना पाया जाता है। यह शिक्षा विधि से हर मानव समझना सहज है।

Awakened humans are able to mobilise (organise, arrange) all that is needed for the goal, and possibility of more than that. It is understandable by all humans by way of education.

4) अनुभव मूलक विधि से जागृति प्रमाणित होती है। समझ में, से, के लिये अनुभव होता है। समझ अध्ययन विधि से बोध गम्य होता है। सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन बोध, जीवन बोध, दृष्टा रूप में मानवीयता पूर्ण आचरण बोध पूर्वक अनुभव सहित प्रमाणित होने की प्रवृत्तिवश अनुभव होना प्रमाणित होता है। फलस्वरूप मानव लक्ष्य, जीवन मूल्य सार्थक होता है। इससे मानव लक्ष्य परंपरा में प्रमाणित होना परम आवश्यकता, स्वयं स्फूर्त विधि से अखण्ड समाज सहज कार्यक्रम परंपरा प्रमाणित होता है। यही जागृत मानव परंपरा है। फलस्वरूप न्याय-सुरक्षा फलित होता है।

Awakening is evidenced by the realisation-rooted method. Realisation is in, by & for understanding. Understanding is attained by way of study. For evidencing realisation, one must have the tendency to be the evidence by way of *bodh* (of holistic view of coexistence, of *jeevan*, and of humane conduct) and realisation. Consequently, human goal and *jeevan* goal is actualised. From this, evidence of human goal in tradition emerges as an absolute necessity and programs in, of & for undivided society emerge spontaneously. This is indeed the awakened human tradition. This results in justice-security.

**न्याय-सुरक्षा**

**Justice-security**

1) हर मानव जागृति पूर्वक जीने के क्रम में न्याय प्रमाणित होता ही है। ऐसे नर-नारियों की परस्परता में न्याय-सुरक्षा सुरक्षित रहता है क्योंकि मानवीयतापूर्ण आचरण जागृति का प्रमाण है जिसके फलन में न्याय-सुरक्षा वर्तमान रूप में सफल होता है।

Whenever a person is on course to living with awakening, justice is evidenced. Justice-security remains safe with such persons, males or females. It is so because humane conduct is the evidence of awakening resulting in justice-security in practical living.

2) जागृत मानव में, से, के लिए सहअस्तित्व प्रमाणित होना और ‘जीवन’ ही दृष्टा पद में होने का साक्ष्य सदा बना रहता है। यही जागृति है।

Existence is coexistence, and ‘*jeevan’* is in the perceiver plane - this truth remains firmly & forever established in, by & for an awakened human. This itself is awakening.

'जीवन’ जागृति पूर्वक दृष्टा पद प्रतिष्ठा होता है।

Establishment in the perceiver plane occurs by way of awakening in *‘jeevan*’.

हर जागृत नर-नारी न्याय-सुरक्षा कार्य में भागीदारी करने का प्रमाण ही परंपरा सहज सूत्र है।

Evidence of participation of every awakened human, male or female, in justice-security work is the maxim of tradition.

जागृत मानव सहज कार्य-व्यवहार व्याख्या ही सर्वतोमुखी समाधान प्रमाण और वर्तमान परंपरा है।

Elaboration of the work-behaviour of awakened humans is the evidence of comprehensive resolution and the current tradition.

जागृत मानव परंपरा ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था, विधि-विधान नीति सहज स्थिति गति है।

Awakened human tradition is indeed the state-motion of undivided society, universal system, method, law and ethics.

“समुदाय समाज नहीं, समाज समुदाय नहीं ”

(हर समुदाय दूसरे समुदाय से मतभेद-बैर-विरोध पूर्वक ही समुदाय अपने में पहचान है।)

‘Sect is not society, and society is not sect’

(All sects maintain their own identities based on disagreements, enmity & opposition with other sects)

अखण्ड समाज व्यवस्था में भागीदारी ही सार्वभौमता और न्याय सुरक्षा है।

Participation in the undivided society-system itself is universality and justice-security.

**न्याय-सुरक्षा**

**Justice-security**

1) सर्व मानव, चारों अवस्थाओं की परस्परता में होना दृष्टव्य है। यही सहअस्तित्व सहज नित्य प्रभावी, प्रमाण व वर्तमान है।

It is obvious that humans are inseparable from the four orders of nature. This indeed is the evidence of coexistence being eternally effective and present.

2) हर अवस्था में वैभव रत हर एक-एक अपने ‘त्व’ व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहित उपयोगिता, पूरकता, उदात्तीकरण सहज प्रमाण व वर्तमान है।

Each unit in these orders is self-organised with their -ness and participating in the overall system, and is evidence of usefulness, complementariness & evolution, and present.

3) सहअस्तित्व में पदार्थावस्था परिणामानुषंगीय यथास्थिति सहज क्रिया के रूप में, प्राणावस्था बीजानुषंगीय विधि से यथास्थिति में होना, जीवावस्था सहज वैभव वंशानुषंगीय विधि रूप में होना और ज्ञानावस्था में मानव, मानव चेतना मूल्य शिक्षा संस्कारानुषंगीय व्यवस्था अर्थात् ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्नता पूर्वक व्यवस्था सहज प्रमाण व वर्तमान है। अस्तु, जागृति पूर्वक अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था यही समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रमाणित होता है। मानव परंपरा में 'न्याय’ सदा-सदा समीचीन है।

In coexistence, material order in the form of activity as per constitution conformance, units of plant order in their respective states by way of seed conformance, units of animal order in their respective states by way of species conformance, and humans in the knowledge order by way of *sanskar* conformity along with consciousness development value education, and knowledge, wisdom & science - are present and are evidence of the system. Therefore, by way of awakening, the undivided society & universal system itself gets evidenced as participation in the overall system. ‘Justice’ is always and forever in close proximity in human tradition.

**7.2 (5) न्याय का स्वरूप**

**The true form of justice**

मानव संबंधों में निहित मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, परस्परता में समाधान, समृद्धि, अभय (वर्तमान में विश्वास), सहअस्तित्व सहज आचरण प्रमाण और निरंतरता ही वैभव न्याय सहज स्वरूप है।

Fulfilment of values & evaluation in human relationships, mutual resolution, prosperity, fearlessness (trust in present), conduct of coexistence - their evidence and continuity is the true form and grandeur of justice.

मानवेत्तर अर्थात् जीव, वनस्पति, पदार्थ संसार के साथ नियम-नियंत्रण पूर्वक संतुलन और निरंतरता ही नित्य वैभव स्वरूप है।

Balance (by way of law & regulation) and continuity with the rest of nature (material order, plant order, animal order) is the true form of eternal grandeur.

अखण्ड समाज व सार्वभौम व्यवस्था सूत्रित व्याख्यायित रहना न्याय का स्वरूप है।

Continuity of maxims and elaboration of undivided society and universal system, is the true form of justice.

समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी व भागीदारी सहज परंपरा न्याय सहज स्वरूप है।

Tradition of understanding, honesty, responsibility & participation is the true form of justice.

**7.2 (6) आचरण में न्याय**

**मानवीयता पूर्ण आचरण**

**Justice in conduct**

**Humane conduct**

**पुत्र-पुत्री का माता-पिता के साथ विश्वास निर्वाह निरंतरता :-**

गौरव, कृतज्ञता, प्रेम, सरलता, सौम्यता, अनन्यता भावपूर्वक वस्तु व सेवा अर्पण-समर्पण रूप में

**Continuity of fulfilment of trust of children with parents :-**

In the form of offering & dedicating objects & help with feelings of glory, gratitude, love, simplicity, humility & non-dualness.

**माता-पिता का पुत्र-पुत्री के साथ विश्वास निर्वाह निरंतरता :-**

ममता, वात्सल्य, प्रेम, उदारता, सहजता, अनन्यता भावपूर्वक वस्तु व सेवा अर्पण-समर्पण रूप में

**Continuity of fulfilment of trust of parents with children :-**

In the form of offering & dedicating objects & help with feelings of care, guidance, love, generosity, spontaneity & non-dualness.

**गुरु शिष्य के साथ विश्वास निर्वाह निरंतरता :-**

प्रेम, वात्सल्य, ममता, अनन्यता, सहजता, उदारता भावपूर्वक प्रबोधन प्रक्रिया सहित वस्तु व सेवा अर्पण-समर्पण रूप में

**Continuity of fulfilment of trust of teacher with student :-**

In the form of offering & dedicating objects & help with feelings of love, guidance, care, non-dualness, spontaneity & generosity.

**शिष्य गुरु के साथ विश्वास निर्वाह निरंतरता :-**

गौरव, कृतज्ञता, प्रेम, सरलता, सौजन्यता, अनन्यता भावपूर्वक जिज्ञासा सहित वस्तु व सेवा अर्पण-समर्पण रूप में

**Continuity of fulfilment of trust of student with teacher :-**

In the form of offering & dedicating objects & help with feelings of glory, gratitude, love, simplicity, courteousness (or humility) & non-duality.

**बहन-भाई, भाई-बहन के साथ विश्वास निर्वाह निरंतरता :-**

सम्मान, गौरव, कृतज्ञता, प्रेम, सौहार्द्रता, सरलता, सौजन्यता, अनन्यता भावपूर्वक वस्तु व सेवा अर्पण-समर्पण रूप में

**Continuity of fulfilment of trust of brothers & sisters (siblings) with each other :-**

In the form of offering & dedicating objects & help with feelings of respect, glory, gratitude, love, cordiality, simplicity, courteousness (or, humility) & non-duality.

**मित्र मित्र के साथ विश्वास निर्वाह निरंतरता :-**

स्नेह, प्रेम, सम्मान, निष्ठा, अनन्यता, सौहार्द्रता भावपूर्वक वस्तु व सेवा अर्पण-समर्पण रूप में

**Continuity of fulfilment trust of of friends with each other :-**

In the form of offering & dedicating objects & help with feelings of affection, love, respect, dedication, non-duality & cordiality.

**साथी सहयोगी के साथ विश्वास निर्वाह निरंतरता :-**

स्नेह, सौजन्यता, निष्ठापूर्वक वस्तु व सेवा प्रदान रूप में

**Continuity of fulfilment of trust of guide with associate :-**

In the form of providing objects & help with feelings of affection, courteousness & dedication.

**सहयोगी साथी के साथ विश्वास निर्वाह निरंतरता :-**

गौरव, सम्मान, कृतज्ञता, सौहार्द्रता, सौम्यता, सरलता भावपूर्वक सेवा अर्पण-समर्पण रूप में

**Continuity of fulfilment of trust of associate with guide :-**

In the form of offering & dedicating objects & help with feelings of glory, respect, gratitude, simplicity, cordiality & humility.

**पति पत्नी के साथ विश्वास निर्वाह निरंतरता :-**

स्नेह, गौरव, सम्मान, प्रेम, निष्ठा, सौहार्द्रता, अनन्यता पूर्वक सद् चरित्रता सहित वस्तु व सेवा अर्पण-समर्पण रूप में

**Continuity of fulfilment of trust of husband with wife :-**

In the form of offering & dedicating objects & help with feelings of affection, glory, respect, love, dedication, simplicity, cordiality & non-duality, along with righteous character.

**पत्नी पति के साथ विश्वास निर्वाह निरंतरता :-**

स्नेह, गौरव, सम्मान, प्रेम, निष्ठा, सौहार्द्रता, अनन्यता पूर्वक सद् चरित्रता सहित वस्तु व सेवा अर्पण-समर्पण रूप में

**Continuity of fulfilment of trust of wife with husband :-**

In the form of offering & dedicating objects & help with feelings of affection, glory, respect, love, dedication, simplicity, cordiality & non-duality, along with righteous character.

ये सभी स्वयं स्फूर्त विधि से व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में है।

All these are in the form of inherent harmony, and participation in the overall system.

उक्त संबंधों के सदृश्य मामा, चाचा, भाई, मित्र और मामी, चाची, बहन, सहेली के रूप में पहचान संबोधन दूर-दूर तक अथवा इस धरती के सम्पूर्ण मानव पर्यंन्त संबोधन सहज है। यह सामाजिक अखण्डता सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में सार्थक है।

Recognition of and greetings in relationships similar (or equivalent) to the above-mentioned relationships (e.g., uncles, aunts, nephews, niece, grand parents) exist naturally for all humans, living anywhere on Earth. It is meaningful for the undivided society & universal system.

संबंधों की पहचान के साथ ही निर्वाह प्रवृत्ति उदय होती है।

Tendency for fulfilment arises as soon as a relationship is recognised (accepted).

**7.2 (7) आचरण-व्यवहार-कार्य**

**Conduct-behaviour-work**

मानवीयता पूर्ण आचरण ही सम्पूर्ण विधाओं में न्याय सहज स्रोत है।

Humane conduct is indeed the source of justice in all dimensions.

जागृत मानव ही मानवीयता पूर्ण आचरण में, से, के लिए प्रमाण है।

An awakened human is indeed the evidence in, of & for humane conduct.

परंपरा सहज परस्परता में हर नर-नारी प्रमाण होना पाया जाता है।

Ø सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन - ज्ञान (अनुभव)

Ø चैतन्य इकाई रूपी जीवन - ज्ञान (अनुभव)

Ø मानवीयता पूर्ण आचरण सहज - ज्ञान (अनुभव)

In interactions in humane tradition, all humans, males or females, are in the form of evidence.

Holistic view of existence as coexistence - knowledge (realisation)

*Jeevan* as the sentient entity - knowledge (realisation)

Humane conduct - knowledge (realisation)

Ø मानव लक्ष्य, जीवन मूल्य सहज विवेचना रूपी - विवेक

लक्ष्य को प्रमाणित करने तर्क संगत दिशा निश्चयन रूपी - विज्ञान सम्पन्नता सहित

जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य - संबंधों सहित

मानव परम्परा

वस्तु मूल्य को नियम-नियंत्रण-संतुलन विधि पूर्वक - संबंधों में प्रमाणित कायिक,

जीव, प्राण, पदार्थ वैभव को संतुलित बनाए रखते हुए वाचिक, मानसिक विधि से

स्थापित करना करना, कराना, करने के

लिए सहमत होना है।

Wisdom - is in the form of reasoning for the human goal & *jeevan* values.

Science - is in the form of logical determination of direction for evidencing the goal.

Human tradition along with relationships - is in the form of *jeevan* values, human values,

established values & civic values.

Doing, getting-done & endorsing for evidencing in relationships - is in the form of

establishment of the object value (the grandeur of animal order, plant order & material order, while maintaining their balance) by way of law, regulation & balance.

सम्पूर्ण तर्क नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, समाधान, सत्य सहज अध्ययन, अनुभव, प्रमाण वर्तमान में, से, के लिए कारण, गुण, गणित विधि से भाषा प्रयोग।

All the logic is - use of language by causal, qualitative & quantitative method in, by and for law, regulation, balance, justice, *dharma*, resolution, study of truth, realisation & evidence in the present.

**7.2 (8) व्यवहार में न्याय**

**Justice in behaviour**

मानवीयता पूर्ण आचरण पूर्वक कार्य-व्यवहार में हर जागृत मानव प्रमाण है। हर जागृत मानव परस्पर संबंधों की पहचान सहित व्यवहार करता है।

Every awakened human being, doing humane work & behaviour, is an evidence. Every awakened human being, does behaviour depending on recognition of mutual relationships.

1) संबंधों में पहचान व निर्वाह निरंतरता - न्याय है।

Continuity of recognising & fulfilling in relationships, is justice.

2) संबंधों में निहित मूल्य निर्वाह निरंतरता - न्याय है।

Continuity of fulfilling inherent values in relationships, is justice.

3) संबंधों में मूल्य सहज पहचान, निर्वाह निरंतरता सहित मूल्यांकन, - न्याय है।

परस्परता में मानवत्व सहज सिद्धांत स्वीकृति, अनुभूति, तृप्ति सहज निरंतरता - न्याय है।

Continuity of evaluation along with recognising & fulfilling in relationships, is justice.

Continuity (in mutuality) of acceptance, realisation & satisfaction in principles of humaneness, is justice.

4) हर मानव सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान संपन्न होना रहना - न्याय है।

To be, and remain, accomplished in knowledge of the holistic view of existence (as coexistence), is justice.

5) जागृत परंपरा पीढ़ी से पीढ़ी में सुलभ होना - न्याय है।

Awakened tradition becoming available from generation to generation, is justice.

6) पीढ़ी से पीढ़ी में मानवीयता पूर्ण आचरण सुलभ होना - न्याय है।

Humane conduct becoming available from generation to generation, is justice.

7) सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व ज्ञान सर्वसुलभ होना - न्याय है।

Knowledge of existence (as coexistence) becoming universally available, is justice.

8) परंपरा में जीवन ज्ञान सुलभ होना - न्याय है।

Knowledge of *jeevan* becoming available in tradition, is justice.

9) मानव परंपरा में अखण्ड समाज ज्ञान सुलभ होना, सार्वभौम व्यवस्था ज्ञान सुलभ होना - न्याय है।

Knowledge of undivided society and of the universal system becoming available in human tradition, is justice.

10) मानव परंपरा में सार्वभौम व्यवस्था ज्ञान सर्वसुलभ होना - न्याय है।

Knowledge of the universal system becoming universally available in human tradition, is justice.

11) चेतना विकास मूल्य शिक्षा रूप में परंपरा में मानवीय शिक्षा संस्कार सुलभ होना - न्याय है।

Humane education-*sanskar* in the form of consciousness development becoming available in tradition, is justice.

12) परंपरा में सुरक्षा सुलभ होना - न्याय है।

Security becoming available in tradition, is justice.

13) परंपरा में तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग व मूल्यांकन सुलभ होना - न्याय है।

Right use and evaluation of resources (body, mind & wealth) becoming available in tradition, is justice.

14) परंपरा में हर परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन सुलभ होना - न्याय है।

Production more than what each family needs, becoming available in tradition, is justice.

15) परंपरा में श्रम मूल्य के आधार पर विनिमय सुलभ होना - न्याय है।

Exchange on the basis of labour value, becoming available in tradition, is justice.

**व्यवहार परंपरा में न्याय**

**Justice in behaviour tradition**

1. परंपरा में यथार्थता सुलभ रहना न्याय है।

Actuality remaining available in tradition, is justice.

2. परंपरा में वास्तविकता सुलभ रहना न्याय है।

Reality remaining available in tradition, is justice.

3. परंपरा में सत्यता सुलभ रहना न्याय है।

Truth remaining available in tradition, is justice.

4. परंपरा में स्थिति सत्य बोध सुलभ रहना न्याय है।

Ultimate truth remaining available in tradition, is justice.

5. परंपरा में वस्तुगत सत्य बोध सुलभ रहना न्याय है।

Evident truth remaining available in tradition, is justice.

6. परंपरा में सहअस्तित्व सहज प्रमाण सुलभ रहना न्याय है।

Evidence of coexistence remaining available in tradition, is justice.

7. परंपरा में सहअस्तित्व में विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति बोध सुलभ रहना न्याय है।

*Bodh* of development progression, development, awakening progression and awakening remaining available in tradition, is justice.

8. परंपरा में जीवन सहज प्रयोजन, शरीर सहज आवश्यकता स्पष्ट रहना न्याय है।

Purpose of *jeevan*, and of the needs of the human body, remaining clear in tradition, is justice.

9. परंपरा में जागृत मानव स्वभाव सुलभ रहना न्याय है।

Intrinsic human nature remaining available in tradition, is justice.

10. परंपरा में सर्वतोमुखी समाधान सुलभ रहना न्याय है।

Comprehensive resolution remaining available in tradition, is justice.

11. परंपरा में समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सुलभ व प्रमाणित रहना न्याय है।

Evidence of resolution, prosperity, fearlessness and coexistence remaining available in tradition, is justice.

12. परंपरा में जागृति सहज अखण्ड समाज सहज अर्थ में सार्वभौम व्यवस्था प्रमाणित रहना न्याय है।

Evidence of the universal system for undivided society, and for awakening, remaining available in tradition, is justice.

13. परंपरा में स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार सहज स्वराज्य प्रमाणित रहना न्याय है।

Evidence of self-governance for humaneness, independence and rights remaining available in tradition, is justice.

14. परंपरा में परिवार मूलक स्वराज्य वैभव सुलभ रहना न्याय है।

Grandeur of family based self-governance remaining available in tradition, is justice.

15. परंपरा में जागृति सहज वैभव सुलभ रहना न्याय है।

Grandeur of awakening remaining available in tradition, is justice.

16. परंपरा में मानवत्व प्रमाण रूप में वर्तमान रहना न्याय है।

Humaneness in the form of evidence remaining present in tradition, is justice.

17. परंपरा में परिवारों में स्वास्थ्य-संयम सुलभता रहना न्याय है।

Health-*sanyam* in families remaining available in tradition, is justice.

18. परंपरा में मानवीयता पूर्ण आचरण, जागृति पूर्वक व्यवहार किया जाना ही न्याय है।

Tradition of doing humane conduct, and behaviour based on awakening, itself is justice.

19. परंपरा में अनुभव मूलक, शिक्षा-दीक्षा, दीक्षान्त (परंपरागत), विवाहोत्सव कार्यक्रम न्याय और स्वतंत्रता है।

Programs of realisation-based education-investiture, convocations and wedding ceremonies in tradition, is justice.

20. परंपरा में विवाहोत्सव में परस्पर जागृत होने रहने का सत्यापन सहज प्रमाण, व्यवस्था में जीने का संकल्प सहित दाम्पत्य स्वीकृति न्याय है।

Evidence of authentication (promise) of achieving mutual awakening in wedding celebrations, and acceptance of married life with determination of orderly living, is justice.

21. परंपरा में ऋतु-काल-संतुलन उत्सव न्याय है।

Climate and weather balance, and celebrations thereof - these remaining available in tradition, is justice.

22. परंपरा में मानव संस्कृति-सभ्यता, विधि-व्यवस्था और व्यवस्था सहज आयोजनोत्सव न्याय है।

Humane culture & civilisation, law & system, and celebration of programs related to orderliness - these remaining available in tradition, is justice.

**7.2 (9) उत्पादन कार्य में न्याय**

**Justice in production work**

हर परिवार में आवश्यकता से अधिक तादात में उत्पादन, उत्पादन का स्रोत मानव द्वारा मानवेत्तर प्रकृति में संतुलन जिसकी पूरकता, उपयोगिता, उदात्तीकरण प्रणाली वर्तमान रहे, इन तथ्यों पर जागृत रहते हुए उत्पादन कार्य में हर परिवार का स्वावलम्बी रहना आवश्यक है। आवश्यकता से अधिक उत्पादन सहज प्रमाण भी न्याय है।

Production (in each family) of goods in quantities more than needed, the source of production is from maintenance of balance (by humans) in the rest of nature, whose complementariness, usefulness and evolution procedures need to be guarded - it is essential for each family to be self-reliant while being aware of these facts. Evidence of production more than the needs, is also justice.

हर परिवार में सामान्य व महत्वाकाँक्षा संबंधी वस्तुओं की आवश्यकता निर्धारित होती है। इसी क्रम में दश सोपानीय आवश्यकतायें व्यवस्था में आवश्यकतायें उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनशीलता स्पष्ट हो जाती है। यह न्याय है।

Need of goods of common-aspirations and special-aspirations is determined in each family. On this course, the use, right-use and purpose of goods becomes clear in the ten-tier system. This is justice.

1. शरीर पोषण-संरक्षण व समाज गति के लिये आवश्यकीय वस्तुओं का उत्पादन करना न्याय है।

Production of goods for nurturing & protecting the human body, and for societal functioning, is justice.

2. हर परिवार द्वारा आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना न्याय है।

Production (by each family) of goods more than needed, is justice.

3. कृषि-पशुपालन रत परिवार में पानी उपचार का संरक्षण एवं फसल का उपचार (फसल संरक्षण), बीज खाद स्वायत्तता का होना न्याय है।

Water conservation, crop conservation, and autonomy in seeds & fertilisers by families engaged in agriculture, is justice.

4. कृषि-पशुपालन कार्यरत हर परिवार अपने से उत्पादित वस्तुओं का श्रम नियोजन व उपयोगिता के आधार पर मूल्यांकन करना व विनिमय करना न्याय है।

Evaluation & exchange of their produced goods on the basis of labour value & usefulness by a family engaged in agriculture & animal husbandry, is justice.

5. जागृत मानव परिवार में ही स्वायत्तता, स्वतंत्रता, समाधान सहित आवश्यकता से अधिक उत्पादन रूप में स्वावलम्बन समृद्धि सहज रुप में प्रमाणित होना न्याय है।

Evidence of prosperity & self-reliance in the form of production goods more than needed along with autonomy, independence & resolution occurs only in an awakened family. This itself is justice.

6. कृषि-पशुपालन के साथ हस्त कला, ग्राम शिल्प, कुटीर उद्योग, ग्रामोद्योग ऊर्जा संतुलन मानवीयता पूर्ण कला साहित्य सर्जन-सम्प्रेषणा में अधिकार सम्पन्नता न्याय है।

Being an authority in creation and communication of humane art & literature, handicrafts, village crafts, cottage industries, energy balance along with agriculture & animal husbandry, is justice.

7. समझदारी सहित कृषि-पशुपालन पूर्वक समाधान, समृद्धि का प्रमाण होना न्याय है।

Evidence of resolution & prosperity by way of agriculture & animal husbandry along with understanding, is justice.

8. कृषि-पशुपालन रत हर परिवार जन का निपुणता-कुशलता-पांडित्य सम्पन्न रहना न्याय है।

Accomplishment of skills, proficiency & mastery by every member of a family engaged in agriculture & animal husbandry, is justice.

9. कृषि-पशुपालन रत हर परिवार परंपरा को मूल्यांकन में समानता को बनाये रखना न्याय है।

Maintaining equality in evaluation by every family engaged in agriculture & animal husbandry, is justice.

10. सामान्य व महत्वाकाँक्षी उत्पादन सेवा रत हर नर-नारी अपने श्रम मूल्य का मूल्यांकन करना न्याय है।

Ability to do proper evaluation of their own labour value in all humans, males & females, engaged in the production sector or service sector for common aspirations and special aspirations.

11. मूल्यांकन परिवार से परिवार समूह, परिवार समूह से ग्राम मोहल्ला, ग्राम मोहल्ला से विश्व परिवार तक समन्वय, संतुलन प्रमाण न्याय है।

Evidence of evaluation, coordination and balance in family to family-cluster, family-cluster to village and eventually to the world family, is justice.

**उत्पादन कार्य में न्याय**

**Justice in production work**

1. सभी ग्राम परिवार में, से, के लिए आवश्यकता में, से, के लिए सामान्य आकाँक्षा संबंधी वस्तुओं को आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना और औषधि संबंधी जड़ी बूटियों को उपजाना न्याय है।

Production of more goods (of common aspirations) than the needs, in, by & for all village families, and growing herbs & herbal medicines, is justice.

2. उत्पादित वस्तुओं का मूल्यांकन ग्राम मोहल्ला-व्यापी समन्वित रूप में होना न्याय है।

Evaluation of produced goods across the villages in a synergistic manner, is justice.

3. परिवार में किया गया मूल्यांकन परिवार समूह में समन्वित होना न्याय है।(T-1 to 2)

Evaluation done in the family, becoming synergistic in the family-cluster, is justice.

4. सभी समन्वित मूल्यांकन ग्राम परिवार सभा में समन्वित होना न्याय है।(T3)

All such evaluation being in synergy with village family council, is justice.

5. समन्वित मूल्यांकन सम्पन्न हर ग्राम, ग्राम समूह सभा के साथ समन्वित होना न्याय है।(3 to 4)

All village councils accomplished with proper evaluation, remaining synergetic with the village-cluster council, is justice.

6. हर ग्राम समूह सभा मूल्यांकन विधा से समन्वित रहते हुए क्षेत्र सभा में समन्वित रहना न्याय है। (4 to 5)

Village-cluster councils accomplished with proper evaluation, remaining synergetic with the area family council, is justice.

7. हर क्षेत्र परिवार सभा में मूल्यांकन विधा से समन्वित रहते हुए मंडल परिवार सभा में समन्वित रहना न्याय है।(5 to 6)

Area family councils accomplished with proper evaluation, remaining synergetic with the block family council, is justice.

8. समन्वित मूल्यांकन सम्पन्न हर मंडल परिवार सभा, मंडल समूह सभा के साथ समन्वित रहना न्याय है।(6 to 7)

Block councils accomplished with proper evaluation, remaining synergetic with the block-cluster family council, is justice.

9. मुख्य राज्य सभा मूल्यांकन सहित मंडल सभा परिवार सभा के साथ समन्वित रहना न्याय है।(7 to 8)

Block-cluster councils accomplished with proper evaluation, remaining synergetic with the district family council, is justice.

10. समन्वित मूल्यांकन सम्पन्न मुख्य राज्य सभायें, प्रधान राज्य परिवार सभा के साथ समन्वित रहना न्याय है। (8 to 9)

District councils accomplished with proper evaluation, remaining synergetic with the state family council, is justice.

11. समन्वित मूल्यांकन सम्पन्न सभी प्रधान राज्य सभायें विश्व राज्य सभा के साथ समन्वित रहना न्याय है।(9 to 10)

State councils accomplished with proper evaluation, remaining synergetic with the world family council, is justice.

12. विश्व परिवार सभा सहज मूल्यांकन दसों सोपानों के साथ समन्वित रहना न्याय है। (10 to all)

Evaluation of & by the world family council remaining synergetic with all the ten tiers, is justice.

**उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजन न्याय (मूल्यांकन)**

**Justice (evaluation) in use, right-use and purpose**

परिवार में उपयोग, सार्वभौम दश सोपानीय अखण्ड समाज में सदुपयोग, व्यवस्था में प्रयोजन है।

Use is in the family, right utilisation is in the ten-tier undivided society, and purpose is in the universal system.

1. वस्तुओं का सदुपयोग करना, कराना, करने के लिए सहमत होना न्याय है।

To do right utilisation of goods, to ensure right utilisation of goods, and to concur (or endorse) their right utilisation, is justice.

2. वस्तुओं का आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना, कराना, करने के लिए सहमत होना न्याय है।

To produce goods more than needed, to ensure such production, and to concur (or endorse) such production, is justice.

3. उत्पादन सुगमता के लिए शोध पूर्वक प्रमाणित करना न्याय है।

To produce evidence of ease of production by way of research, is justice.

4. उत्पादन में गति व गुणवत्ता में वृद्धि को प्रमाणित करना न्याय है।

To produce evidence of increase in production and improvement in quality of goods, is justice.

5. जागृत मानव परिवार में आवश्यकतायें सीमित होना न्याय है।

The needs being limited in an awakened family, is justice.

6. वस्तुओं का उपयोग शरीर पोषण-संरक्षण के अर्थ में न्याय है।

Use of goods for nurturing and protecting the human body, is justice.

7. वस्तुओं का सदुपयोग अखण्ड समाज के अर्थ में मानवीयता पूर्ण संस्कृति-सभ्यता सहज गति के रूप में होना न्याय है।

Righteous utilisation of goods for undivided society, and for humane culture & civilisation, is justice.

8. वस्तुओं का प्रयोजन सार्वभौम दश सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी के अर्थ में नियोजन है। यह प्रमाणित होना न्याय है।

Purpose of goods is for deployment for participation in the universal ten-tier system. This becoming evident, is justice.

9. हर जागृत मानव परिवार में ही उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनीयता विधि पूर्वक समृद्धि का प्रमाण है। यह न्याय है।

Evidence of prosperity is in each awakened family by way of use, right-use & purpose. This is justice.

**7.2 (10) संस्कृति-संस्कार में न्याय**

**Justice in culture & *sanskar***

- अखण्ड समाज के अर्थ में मूल्यों को प्रमाणित करना न्याय है।

To produce evidence of values for undivided society, is justice.

- सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी मूल्यों का प्रमाण न्याय है।

Participation in the universal system, and evidence of values, is justice.

- मानवीयतापूर्ण आचरण मूल्यों का प्रमाण न्याय है।

Evidence of values and humane conduct, is justice.

- गठनपूर्णता सहज जीवन क्रियापूर्णता के अर्थ में कायिक-वाचिक-मानसिक, कृत-कारित-अनुमोदित विधियों से की गई सम्पूर्ण कृतियाँ, मानव संस्कृति-सभ्यता सहज रुप में न्याय है।

All actions done by ways of physical, verbal, mental, doing, delegating, endorsing for activity completeness of jeevan (which is constitution-completeness), is justice in the form of humane culture and civilisation.

1. सहअस्तित्व विधि से मानवत्व सहित जीना संस्कृति न्याय है।

Living with humaneness by co-existential method, is justice of culture.

2. अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या रूप में जीना सभ्यता सहज न्याय है।

Living in accordance with definition and description of undivided society, is justice of civility.

3. स्वयं में ज्ञान, विवेक, विज्ञान रूप में व्यवस्था सहज विधि से जीना न्याय है।

Living in accordance with the system and regulation of knowledge, wisdom & science in oneself, is justice of civility.

4. सहअस्तित्व सहज यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता को जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना के रूप में जीना न्याय है।

Living in accordance with actuality, reality & truth of coexistence, and knowing, believing, recognising & fulfilling as such, is justice.

5. सर्वतोमुखी समाधान सूत्र व्याख्या में जीना न्याय है।

Living in accordance with definition and elaboration of comprehensive resolution, is justice.

6. मानवीयता पूर्ण सूत्र व्याख्या में जीना न्याय है।

Living in accordance with definition and elaboration of humaneness, is justice.

7. दश सोपानीय व्यवस्था सूत्र व्याख्या में जीना न्याय है।

Living in accordance with definition and elaboration of the ten-tier system, is justice.

8. समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सूत्र व्याख्या में जीना न्याय है।

Living in accordance with definition and elaboration of resolution, prosperity, fearlessness & coexistence, is justice.

9. स्वयं में विश्वास सूत्र व्याख्या में जीना न्याय है।

Living in accordance with definition and elaboration of self-confidence, is justice.

10. श्रेष्ठता का सम्मान सूत्र व्याख्या में जीना न्याय है।

Living in accordance with definition and elaboration of respect for excellence, is justice.

11. प्रतिभा सहज सूत्र व्याख्या में जीना न्याय है।

Living in accordance with definition and elaboration of talent, is justice.

12. मानवीयता पूर्ण व्यक्तित्व सहज सूत्र व्याख्या में जीना न्याय है।

Living in accordance with definition and elaboration of humane personality, is justice.

13. मूल्य, चरित्र, नैतिकता सूत्र व्याख्या में जीना न्याय है।

Living in accordance with definition and elaboration of values, character & ethics, is justice.

14. आवश्यकता से अधिक उत्पादन कार्य का नियम, नियंत्रण, संतुलन सूत्र व्याख्या में जीना न्याय है।

Living in accordance with definition and elaboration of law, regulation & balance of production more than the needs, is justice.

15. जागृति सहज प्रमाण में, से, के लिये समाधानात्मक सूत्र व्याख्या के रूप जीना न्याय है।

Living in accordance with definition and elaboration of resolution in, of & for evidence of awakening, is justice.

16. संस्कृति सभ्यता को, सभ्यता विधि को, विधि व्यवस्था को, व्यवस्था संस्कृति को अनुप्राणित करता हुआ सूत्र व्याख्या के रूप में जीना न्याय है।

Living in accordance with definition and elaboration of culture inspiring civilisation, civilisation inspiring law, law inspiring system, and system inspiring culture, is justice.

17. मानवीय चेतना सहज शिक्षा से अनुप्राणित शिक्षा-दीक्षा, शिक्षा-दीक्षा से संविधान, संविधान से व्यवस्था, व्यवस्था से आचरण सूत्र व्याख्या रूप में जीना न्याय है।

Living in accordance with definition and elaboration of education-investiture inspired by education of humane consciousness, constitution inspired by education-investiture, system inspired by constitution, and conduct inspired by system, is justice.

18. हर नर-नारी समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी सहज सूत्र व्याख्या के रूप में जीना न्याय है।

All humans, males and females, living in accordance with definition and elaboration of understanding, honesty, responsibility & participation, is justice.

**7.2 (11) विनिमय में न्याय**

**Justice in Exchange**

**तात्विक रूप में परिभाषा विनिमय :-** नियम, नियंत्रण, संतुलन पूर्वक उत्पादित वस्तुओं का उपयोगिता-पूरकता विधि से आदान-प्रदान समाधान एवं न्याय है।

**Existential definition of Exchange :-** Exchange, by way of usefulness & complementariness, of the goods produced by way of law, regulation & balance, is resolution and justice.

**बौद्धिक रूप में परिभाषा विनिमय :-** विकास व जागृति संगत उपयोगिता पूरकता सहज निरंतरता में, से, के लिए नियम, नियंत्रण, संतुलन विधि से उत्पादित वस्तुओं का श्रम मूल्य के आधार पर आदान-प्रदान समाधान एवं न्याय है।

**Academic definition of Exchange :- :-** Exchange, on the basis of labour value, of the goods produced by way of law, regulation & balance - in, by & for continuity of usefulness & complementariness aligned with progress & awakening - is resolution and justice.

**व्यवहारिक रूप में परिभाषा विनिमय :-** श्रम नियोजन, उपयोगिता प्रमाण, मूल्यांकन उपयोगिता के आधार पर श्रम मूल्य का आदान-प्रदान समाधान एवं न्याय है।

**Practical definition of Exchange :-** Exchange of labour value - on the basis of deployment of labour, evidence of usefulness, evaluation and usefulness - is resolution and justice.

**प्रणाली :-** दश सोपानीय व्यवस्था में श्रम मूल्य का मूल्यांकन सामान्यीकरण परंपरा समाधान एवं न्याय है।

**Procedure /Mechanism :-** Tradition of simplified (uncomplicated) evaluation of labour value in the ten-tier system, is resolution and justice.

**पद्धति :-** विनिमय-कोष परंपरा एवं कोषों के परस्परता में समन्वयता समाधान एवं न्याय है।

**Path :-** Synergy between the tradition of exchange-reserve, and reserves, is resolution and justice.

**नीति :-** दश सोपानीय परिवार सभा में समन्वयता पूर्ण निश्चय आचरण परंपरा समाधान एवं न्याय है।

**Policy :-** Synergetic tradition of definite conduct in the ten-tier family council, is resolution and justice.

**प्रयोजन :-** लाभ-हानि मुक्त विनिमय और प्रत्येक परिवार में समृद्धि सहज प्रमाण, ज्यादा-कम से मुक्ति समाधान एवं न्याय है। समृद्धि ज्यादा-कम से मुक्ति है।

**Purpose :-** Exchange free from profit or loss and evidence of prosperity and state of liberation from ‘more’ or ‘less’ in each family, is resolution and justice. Prosperity is the state of liberation from ‘more’ or ‘less’.

**विनिमय में न्याय**

**Justice in Exchange**

1. हर जागृत मानव परिवार सहज आवश्यकता की पहचान न्याय है।

Recognition, in each awakened family of needs, is justice.

2. हर जागृत मानव परिवार में सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना न्याय है।

Production, in each awakened family, of more than needs, is justice.

3. जागृत मानव परिवार में उत्पादित वस्तुओं का मूल्यांकन (श्रम+उपयोगिता = वस्तु मूल्य) करना न्याय है।

To do evaluation (labour+usefulness = object value), in an awakened family, of the goods produced, is justice.

4. जागृत मानव परिवार में उत्पादित वस्तुओं का श्रम, उपयोगिता के आधार पर विनिमय करना न्याय है।

Exchange of goods, in each awakened family, on the basis of labour and usefulness, is justice.

5. श्रमशीलता को निपुणता-कुशलता-पांडित्य के रूप में स्वीकार करना न्याय है।

Accepting labour as skills, proficiency and mastery, is justice.

6. निपुणता-कुशलता पूर्वक श्रम नियोजन की स्वीकृति पाण्डित्य सहज विधि से मूल्यांकन करना न्याय है।

Acceptance of deployment of labour by way of skills & proficiency, and doing evaluation by way of mastery, is justice.

7. पांडित्य पूर्वक किया गया मूल्यांकन होने की स्वीकृति व प्रक्रिया न्याय है।

Acceptance and process of evaluation done by way of mastery, is justice.

8. मूल्यांकन पूर्वक समाधानित रहने का प्रमाण न्याय है।

Remaining resolved by way of evaluation, is justice.

9. सामान्य आकाँक्षा संबंधी वस्तुओं को आवश्यकता से अधिक पाकर समृद्धि का, महत्वाकाँक्षा संबंधी वस्तुओं को आवश्यकता के अनुरूप पाकर समाज गति में सदुपयोग सहज प्रमाण रूप में सत्यापन करना न्याय है।

Truthful declaration of evidence of prosperity (by having more than needed goods of common aspirations), and of righteous utilisation towards societal functioning (of goods of special aspirations by having them in required quantities) is justice.

**7.2 (12) स्वावलंबन आत्मनिर्भरता (समाधान) में न्याय**

**Justice in self-reliance (resolution) and occupation**

1. हर मानव जागृत परंपरा में अनुभव व अनुभव सहज प्रमाण क्रिया के रूप में प्रतिष्ठा है।

All humans in the awakened tradition are established in realisation and evidence of realisation.

2. अनुभव ही प्रमाण परम है। यही समाधान है।

Realisation is the ultimate evidence. This itself is resolution.

3. अनुभव मूलक विधि से ही आत्मनिर्भरता सहज सूत्र व्यवस्था स्पष्ट है।

Maxims and elaboration of reliance become clear only by the realisation rooted method.

4. सहअस्तित्व में अनुभव होना जागृत मानव परंपरा में समाधान वैभव है।

Becoming realised in coexistence is the grandeur of resolution in awakened human tradition.

5. अनुभव पूर्वक ही हर नर-नारी समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी करना प्रमाण है। यही आत्मनिर्भरता है। यही न्याय है।

Understanding, honesty, responsibility & participation is evidenced in humans, males and females, only by way of realisation. This itself is self-reliance. This itself is justice.

6. समझदारी के आधार पर विवेक सम्मत विज्ञान, विज्ञान सम्मत विवेक पूर्वक हर नर-नारी समाधान सम्पन्न होते हैं। तभी उत्पादन से स्वावलम्बन न्याय है।

Resolution is attained by all humans, males and females, based on understanding, by way of wisdom aligned with science, and science aligned with wisdom. This self-reliance in production is justice.

7. समाधान पूर्वक ही हर आयाम, कोण, दिशा, परिप्रेक्ष्य में सफलता सहित निर्णय लिया जाता है। यह आत्मनिर्भरता न्याय है।

Decisions leading to success are taken only by way of resolution in all dimensions, angles, directions & areas. This self-reliance is justice.

8. सहअस्तित्व, समृद्धि, अभयता पूर्वक जीने के लिये समाधान पूर्वक निर्णय लिया जाता है। यह आत्मनिर्भरता न्याय है।

Decisions based on resolution are essential for living by way of coexistence, prosperity & fearlessness. This self-reliance is justice.

9. परिवार व्यवस्था में जीने के लिए हर नर-नारी समाधान पूर्वक निर्णय लेना सहज है। यह आत्मनिर्भरता न्याय है।

It is easy (comfortable) for all humans, males and females to take decisions based on resolution for living in the family system. This self-reliance is justice.

10. हर परिवार अपने सन्तान को आत्मनिर्भर सम्पन्न होने के लिए पोषण-संरक्षण पूर्वक अनुभवगामी प्रेरणा स्रोत है। यह आत्मनिर्भरता न्याय है।

All families, by way of nurture & protection, are sources of inspiration for realisation so as to make their children self-reliant. This self-reliance is justice.

11. आत्मनिर्भरता पूर्वक ही हर नर-नारी मानवीयता पूर्ण आचरण करते हैं। यह आत्मनिर्भरता समाधान व न्याय है।

All humans, males & females, do humane conduct only by way of self-reliance. This self-reliance is resolution and justice.

12. शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा, उत्पादन-कार्य, विनिमय-कोष, स्वास्थ्य-संयम कार्यों को प्रमाणित करना आत्मनिर्भरता न्याय है।

Education-*sanskar*, justice-security, production-work, exchange-reserve, and health-*sanyam* are evidenced only by way of self-reliance. This self-reliance is justice.

13. अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना सर्वतोमुखी समाधान आत्मनिर्भरता न्याय है।

Participation in the undivided society, universal system is comprehensive resolution and self-reliance. This self-reliance is justice.

**7.2 (13) शिक्षा-संस्कार में न्याय**

**Justice in education-sanskar**

**शिक्षा :-** शिष्टता पूर्ण दृष्टि का उदय होना।

**Education :-** Rising of the perspective full of civility.

**शिष्टतापूर्ण दृष्टि :-** अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन रूपी दृष्टि दृष्टा पद प्रतिष्ठा में पारंगत क्रियाशील रहना।

**Perspective full of civility :-** To remain active and expert in eminence of the perceiver plane in the form of existence based human centred contemplation.

**संस्कार :-** ज्ञान, विवेक, विज्ञान सहज स्वीकृति, अनुभव प्रमाण परंपरा, जिसका प्रमाण ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या में पारंगत होना प्रमाण परंपरा है।

***Sanskar* :-** To be expert in maxims and elaboration of the acceptance of knowledge, wisdom & science, and tradition of evidence of realisation (undivided society, universal system are the evidence), is the tradition of evidence.

**परंपरा :-** परंपरा में मानव सहज मानवीयता पीढ़ी से पीढ़ी में अन्तरित होना न्याय है।

**Tradition :-** Transfer of humaneness in tradition, from generation to generation, is justice.

**मानवीयता :-** मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहज संयुक्त अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन परंपरा होना न्याय है।

**Humaneness :-** Tradition of combined expression, communication & manifestation of values, character & ethics, is justice.

1. शिक्षा में मानव का अध्ययन सम्पन्न होना न्याय है।

Inclusion of study of humans in education, is justice.

2. भौतिक-रासायनिक और जीवन वस्तु का अध्ययन होना न्याय है।

Completion of physico-chemical and *jeevan* realities, is justice.

3. सहअस्तित्व में अध्ययन न्याय है।

Completion of study in coexistence, is justice.

4. हर मानव में, से, के लिये आत्मनिर्भर होने योग्य शिक्षा सर्वसुलभ होना न्याय है।

Availability of education for attaining self-reliance in, by & for all humans, is justice.

5. शिक्षा-संस्कार में मानव लक्ष्य, जीवन मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य व वस्तु मूल्य बोध होना न्याय है।

Attaining the *bodh* of human goal, *jeevan* goal, established values, civil values and object values in & by education-*sanskar*, is justice.

6. मानव संस्कृति-सभ्यता, विधि-व्यवस्था बोध होना न्याय है।

Attaining the *bodh* of humane culture, civilisation, law and system, established values, civil values and object values in & by education-*sanskar*, is justice.

**7.2 (14) परिवार में न्याय**

**Justice in the family**

1. परिवार में संबंधों की पहचान सहित मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, परस्परता में तृप्ति न्याय है।

Fulfilment of values, evaluation, and mutual satisfaction along with recognition of relationships in the family, is justice.

2. परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन समृद्धि का प्रमाण न्याय है।

Evidence of production of goods more than needed in the family (prosperity), is justice.

3. समाधान, समृद्धि सम्पन्न व्यवस्था सहज प्रमाण न्याय है।

Evidence of systems endowed (replete) with resolution and prosperity, is justice.

4. जागृत मानव परिवार में समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी सहज एकरूपता सामाजिक अखण्डता सूत्र है। यह समाधान व न्याय है।

Coherence in understanding, honesty, responsibility & participation in awakened families is the key to undivided society. This is resolution and justice.

5. जिम्मेदारी, भागीदारी में निष्ठा सहज प्रमाण न्याय है।

Evidence of dedication in responsibility and participation, is justice.

6. परिवार सहज व्यवस्था परंपरा का प्रमाण न्याय है।

Evidence of tradition of harmony in the family, is justice.

7. जागृत मानव परिवार में, से, के लिये हर एक सदस्य का समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने के लिये निर्वाचित होने योग्य होना न्याय है।

Capability in, of & for each member of an awakened family to be a representative of the family for participation in the overall system, is justice.

8. परिवार सहज व्यवहार व्यवस्था में भागीदारी करने के लिए हर नर-नारी आत्मनिर्भर, स्वतंत्र, स्वयंस्फूर्त उत्साहित रहना न्याय है।

All humans, males and females, always remaining self-reliant, independent, self-motivated and enthusiastic to participate in the family system and behaviour, is justice.

9. परिवार व ग्राम सहज वैभव की पहचान बनाये रखना, आगन्तुकों की पहचान करना न्याय है।

To maintain the identity of the family and village grandeur, and to recognise (welcome) the visitors (new comers), is justice.

**7.2 (15) परिवार-समूह-सभा में न्याय**

**Justice in the family-cluster council**

1. दस जागृत मानव परिवार में से निर्वाचित दस सदस्य के परिवार समूह सभा का गठन न्याय है।

Constitution of the ten-membered family-cluster council from the election of members from ten awakened families, is justice.

2. हर परिवार समूह सभा कार्य कर्त्तव्य रत हर सदस्य आत्मनिर्भर रहना न्याय है।

All working members of the family-cluster council remaining self-reliant, is justice.

3. दस परिवार सहज संस्कृति-सभ्यता, विधि-व्यवस्था संबंधी पहचान किये रहना न्याय है।

Continuous recognition (Being mindful, or aware, or attentive - similar to जागरूक, point 6 below) of culture-civility and law-systems of the ten families, is justice.

4. हर सदस्य दस परिवार में संबंधों की सन्तुष्टि, समाधान, समृद्धि सहज प्रमाणों के प्रति जागृत रहना न्याय है।

Each member remaining awakened towards evidences - of satisfaction in relationships, resolution and prosperity - in the ten families, is justice.

5. कोई आगन्तुक व्यक्ति गाँव-मोहल्ले में होने का परिवार-ग्राम-मोहल्ला समितियों को पहचान कराने का अधिकार न्याय है।

Authority (Prerogative) to introduce the new-comers (visitors) in the village or locality with the family or village committees, is justice.

6. हर सदस्य दसों परिवार के लोगों का समस्त उत्पादन-विनिमय कार्य में जागरूक-पूरक रहना न्याय है।

Each member remaining aware of & complementary (helpful, supportive) to all members of the ten families in production & exchange activities, is justice.

7. हर सदस्य सभी परिवारजन का जागृत रहने में ध्यान देना, आवश्यकता के अनुसार पूरक-उपयोगी होना न्याय है।

Each member remaining aware (attentive) of the awakening of all members of the ten families, and remaining complementary (helpful, supportive) as needed, is justice.

8. हर सदस्य का निपुणता-कुशलता-पाण्डित्य में पारंगत रहना न्याय है।

All members remaining experts of skills, proficiency & mastery, is justice.

9. हर परिवार समूह सभा में से एक-एक सदस्य का निर्वाचन ग्राम-मोहल्ला-परिवार सभा गठन के लिये निर्वाचित करना न्याय है।

Election of one member from each family-cluster council for the constitution of village family council, is justice.

**7.2 (16) ग्राम-मोहल्ला परिवार सभा में न्याय**

**Justice in the village council**

1. दस परिवार समूह सभा से निर्वाचित दस सदस्यों की सभा गठित होगी जिसका नाम ग्राम-मोहल्ला परिवार सभा होगा। हर ग्राम-मोहल्ला का नाम रहता ही है। यह समाधान व न्याय है।

Ten members elected from the ten family-cluster families shall constitute a council which shall be called the village family council, and it will be named after the name of the village. This is resolution and justice.

2. ग्राम-मोहल्ला-परिवार सभा के लिये निर्वाचित सभी सदस्य समान स्वत्व, स्वतंत्रता अधिकार सम्पन्न रहेंगे और आत्मनिर्भर रहेंगे। यह न्याय है।

All members elected to the village family council shall be equally accomplished in humaneness, independence and self-reliance. This is justice.

3. आत्मनिर्भरता प्रत्येक जन प्रतिनिधि में समाधान-समृद्धि सम्पन्नता सहित स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता का सम्मान, प्रतिभा व व्यक्तित्व में संतुलन, व्यवहार में सामाजिक, उत्पादन रूपी व्यवसाय में स्वावलम्बी परिवार प्रतिनिधि रहेंगे। यह समाधान व न्याय है।

In each representative, self-reliance is in the form of resolution & prosperity along with self-confidence, respect for excellence, balance in talent & personality, sociality in behaviour, and self-reliance in occupation. These representatives will represent self-reliant families. This is resolution and justice.

4. गांव मोहल्ले में कोई व्यक्ति पहुँचे तो वे पहले से पहचान अथवा चिन्हित अथवा सूचित रहेंगे। इसके अतिरिक्ति जो अपरिचित होंगे उनका परिचय पाने का अधिकार ग्राम-मोहल्ला-परिवार सभा के सभी सदस्यों को होगा। ऐसे लोगों की पहचान प्रमाण प्राप्त करने का अधिकार रहेगा यह न्याय है।

Prior information (including identity) will be available about any known person arriving in the village. If any unknown person arrives in the village, members of the village family council shall have the authority to seek their identity. This is justice.

5. ग्राम सभा अपने स्वविवेक से पाँच समितियों के लिए स्थानीय प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तियों को मनोनीत करेगी। वे सब आत्मनिर्भर परिवार के सदस्य होंगे। ये समितियां शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा, उत्पादन-कार्य , विनिमय-कोष, स्वास्थ्य-संयम कार्य संपादित करेंगे, यह न्याय है।

The village council, in their own wisdom, shall nominate local talented persons in the five committees. All such nominated persons will be members of self-reliant families. These committees will look after the works related to education-*sanskar*, justice-security, production-work, exchange-reserve and health-*sanyam*. This is justice.

6. सभायें समितियों की कार्य प्रणालियों व कर्त्तव्यों का निर्धारण-निर्देशन करेगी। उसे हर समितियाँ स्वीकार पूर्वक कार्य व मूल्यांकन करने तथा निरीक्षण करने के अधिकार से सम्पन्न रहेगी, यह न्याय है।

Councils will guide and help the committees in their way of working and duties. Committees, on their part, will have the authority of execution, as well as to evaluate and review this. This is justice.

**ग्राम-मोहल्ला परिवार सभा में न्याय**

**Justice in the village council**

1. (सभा-गठन) सदस्य :- दस परिवार समूह सभा में से एक-एक व्यक्ति निर्वाचित रहेंगे। ये सभी दस सदस्य आत्मनिर्भर परिवार में से होगें, यह न्याय है।

(Constitution of the council) Membership :- One person each will be elected from the ten family clusters. All these ten members will come from self-reliant families. This is justice.

2. आत्मनिर्भरता का स्वरूप समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में प्रमाण सहज सम्पन्न परिवार है। यह आचरणपूर्वक न्याय है।

Self-reliance is in the form of a family accomplished with evidence of resolution, prosperity, fearlessness & coexistence. This is justice by way of conduct.

3. ग्राम-मोहल्ला नाम पहले से रहता है अथवा नाम रख सकते हैं, यह न्याय है।

Villages and localities already have names; if not, they can be named. This is justice.

4. हर सदस्य मानवीयता पूर्ण आचरण सहज प्रमाण रूप में रहेंगे। यह न्याय है।

All members shall be the embodiment of humane conduct. This is justice.

5. हर सदस्य स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता का सम्मान, प्रतिभा अर्थात् ज्ञान-विवेक-विज्ञान संपन्नता और व्यक्तित्व में संतुलन, व्यवहार में सामाजिक, उत्पादन कार्य रूपी व्यवसाय में स्वावलम्बन संपन्न परिवार प्रतिनिधि होना न्याय है।

All members shall be autonomous humans - i.e. accomplished with self-confidence, respect for excellence, balance in talent (knowledge, wisdom & science) & personality, sociality in behaviour, and self-reliance in occupation - and will represent self-reliant families. This is justice.

1) ज्ञान सम्पन्नता = सहअस्तित्व रूपी अस्तित्वदर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान प्रमाणित होना न्याय है।

Knowledge-endowment = Evidencing of the knowledge of holistic view of coexistence, of knowledge of *jeevan*, and of humane conduct. This is justice.

2) विवेक सम्पन्नता = मानव लक्ष्य सहज स्वीकृति संपन्नता न्याय है।

Wisdom-endowment = Acceptance and accomplishment of human goal, is justice.

3) विज्ञान = मानव लक्ष्य सर्वसुलभ होने में, से, के लिये निश्चित दिशा सहज पारंगत प्रमाण स्पष्ट रहना न्याय है।

Science = Expertise, evidence and clarity of definite direction in, of & for accessibility of human goal to everyone, is justice.

6. सर्व मानव ज्ञानावस्था में गण्य है। अनुभवपूर्वक ज्ञान सम्पन्न रहना प्रमाण के रूप में सर्व शुभ के अर्थ में आवश्यक है यह न्याय है।

All humans belong to the knowledge order. It is essential for universal well-being to be an evidence accomplished in knowledge (by way of realisation). This is justice.

**सभा सदस्यों में अधिकार समानता स्वरूप**

**True form of equality in authority among the council members**

सर्वतोमुखी समाधान समृद्धि प्रमाण सहित पाँचों समिति सहज कार्य गति में घटित समस्या का समाधान प्रस्तुत करने में निर्वाचित सभी दस सदस्यों का समानाधिकार स्वत्व स्वतंत्रता पूर्वक क्रियान्वयन न्याय है।

Involvement and participation by way of equal authority, humaneness & independence along with evidence of comprehensive resolution & prosperity by all the ten elected members in presenting solutions to problems faced by the five committees, is justice.

समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी में पारंगत प्रमाण होने का सत्यापन हर निर्वाचित सदस्य सत्यापित करेगा। परिवार के सभी सदस्य, निर्वाचित सदस्य मानवत्व सहित व्यवस्था सहज प्रमाण, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करने में सक्षम होने का सहजता सहित निर्वाचन किये रहेंगे।

Truthful declaration of expertise & evidence of understanding, honesty, responsibility & participation shall be done by each elected member. All family members, or the elected members, shall do the selection based on evidence of humaneness with systems, and capability to participate in the universal system.

पाँचों आयामों का निरंतर गति प्रयोजन सहज वर्तमान ही स्वराज्य है। यही जागृति सम्पन्न मानव परंपरा है।

Presence of continuous functioning, along with purpose, of all the five dimensions, is self-governance. This indeed is the awakened human tradition.

मानव प्रधानता = समाधान, समृद्धि सहित भागीदारी करना न्याय है।

Priority to humaneness = Participation with resolution & prosperity, is justice.

7. सर्वमानव शुभ में व्यक्ति का स्व शुभ समाया है। यह न्याय है।

Individual well-being is included in universal well-being. This is justice.

8. मानव लक्ष्य सर्व सुलभ होना ही सर्व शुभ है। यही सहज और न्याय है।

Accessibility of the human goal to everyone, is universal well-being. This is natural & justice.

9. सभा के दसों सदस्य सर्व शुभ के अर्थ में प्रवर्तित,कार्यरत प्रमाणित रहेंगे। यह समाधान व न्याय है।

All the ten members of the council shall remain evidence of motivation and engagement for the goal of universal well-being. This is resolution & justice.

**7.2 (17) ग्राम-मोहल्ला परिवार सभा संगठन**

**Constitution of village family council**

1. स्वराज्य सभा गठन प्रक्रिया के मूल में निर्वाचन विधि न्याय है।

Way of election at the root of the process of constitution of the self-governance council, is justice.

2. निर्वाचन पूर्वक दस सदस्यों में अधिकार, स्वत्व, स्वतंत्रता समान है। यह गठन सूत्र है। यह स्वराज्य गति नित्य वर्तमान होना न्याय है।

Authority, humaneness & independence are equal in all the ten elected members. This is the rule of the constitution. Eternal presence of the functioning of this self-governance, is justice.

3. निर्वाचन प्रक्रिया के मूल में सर्वशुभ ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्बद्धता न्याय है।

Universal well-being, and coherence in knowledge, wisdom & science, at the root of the election process, is justice.

4. सदस्यों में स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार, समानता ही गठन गुण सूत्र और वैभव है। यह न्याय है।

Humaneness, independence, authority & equality in the members - this is indeed the key to the quality of constitution, and grandeur. This is justice.

5. हर सदस्य में समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी समान यह गठन गुण सूत्र है, यह न्याय है।

Similar (identical) understanding, honesty, responsibility & participation in & by all the members, is the key to the quality of constitution. This is justice.

6. हर सदस्य में मानवीयता पूर्ण आचरण प्रमाणित रहना गठन गुण सूत्र है। यह न्याय है।

Evidence of humane conduct in all members is the key to the quality of constitution. This is justice.

7. समझदारी, ईमानदारी को ज्ञान-विवेक-विज्ञान स्वत्व सहज रूप में, जिम्मेदारी को स्वतंत्रता सहज रूप में और भागीदारी अधिकार सहज समान रूप में है। यह न्याय है।

Equality in its true form of - understanding & honesty as knowledge, wisdom & science, responsibility as independence, and participation as authority. This is justice.

8. व्यवहार-कार्य में ही भागीदारी, दायित्व-कर्त्तव्यों का निर्वाह का प्रमाण है। यह न्याय है।

Participation in work & behaviour is the evidence of fulfilment of responsibilities & duties. This is justice.

9. मानवीय शिक्षा का प्रयोजन संस्कार मानवीयता में, से, के लिए स्वीकृति को कार्य-व्यवहार में, कार्य-व्यवहार सामाजिक अखण्डता व सार्वभौम व्यवस्था के रूप में प्रमाणित होता है। यह दायित्व हर सदस्यों में समान रहेगा, यही सर्वशुभ है। यही न्याय है।

10. ज्ञान-विवेक-विज्ञान संपन्नता ही स्वत्व, व्यवहार में प्रमाण है। यह न्याय है।

Accomplishment in knowledge, wisdom & science is humaneness, and evidence of behaviour. This is justice.

11. ज्ञान-विवेक-विज्ञान पूर्वक दायित्वों की स्वीकृति निश्चय निर्वाह करने में स्वतंत्रता (स्वयं स्फूर्त होना), दायित्व के साथ कर्त्तव्यों का निर्वाह करना न्याय है।

Spontaneity in independence in ascertaining & fulfilling responsibilities accepted by way of knowledge, wisdom & science, and fulfilling duties along with responsibilities, is justice.

**दायित्व**

**Responsibility**

ग्राम-मोहल्ला परिवार सभा प्रधानत: पाँच विधाओं में प्रमाणित होना प्रमाण वैभव है। यह न्याय है। अन्य सभी विधायें इनमें समायी रहती हैं। यह न्याय है।

Primarily, evidencing the five dimensions in village family council is the grandeur of evidence. This is justice. All other dimensions are contained in these five dimensions. This is justice.

1. मानवीय शिक्षा-संस्कार ग्राम मोहल्ला वासियों को सुलभ हो सके, यह न्याय है।

Availability of humane education-*sanskar* to the village residents, is justice.

2. मानवीय शिक्षा-संस्कार पूर्वक हर मानव सन्तान का स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता का सम्मान, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन, व्यवहार में सामाजिक, उत्पादन में स्वावलंबी होना न्याय है।

Self-confidence, respect for excellence, balance in talent and personality, sociability in behaviour, and self-reliance in profession - in all human offsprings by way of humane education-*sanskar*, is justice.

3. मानवीयतापूर्ण आचरण में पारंगत होना न्याय है।

Adeptness (expertise) in humane conduct, is justice.

4. सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान में पारंगत होना न्याय है।

Adeptness in the knowledge of the holistic view of coexistence, is justice.

5. जीवन सहज क्रियायें जागृति पूर्वक प्रमाणित होना न्याय है।

Evidence of *jeevan*-activities by way of awakening, is justice.

6. भौतिक क्रियाकलाप में पारंगत होना न्याय है।

Adeptness (expertise) in activities of the physical world, is justice.

7. रासायनिक क्रियाकलाप में पारंगत होना न्याय है।

Adeptness (expertise) in activities of the chemical world, is justice.

8. व्यापक वस्तु (सत्ता) में सम्पूर्ण ग्रह गोल, सौर-व्यूह, ग्रह-व्यूह, आकाश-गंगा, चारों अवस्था, चारों पद सम्पृक्त अविभाज्य है - में पारंगत होना न्याय है।

All planets, our solar system, other solar (planetary) systems, galaxies, the four orders, the four planes, all of these are saturated in and inseparable from Omnipresence (Omnipotence) - adeptness in this, is justice.

9. ज्ञानावस्था में मानवीय शिक्षा-संस्कार सम्पन्न मानव को, जीवावस्था में जीने की आशा सम्पन्न जीवों को, प्राणावस्था में रसायन उर्मी, पुष्टि एवं रचना तत्व सहित प्राण कोषाओं से रचित रचना में पौधों के रूप में कार्य-विधियों को, यौगिक विधि से प्रकट रसायन द्रव्यों को, इनके ठोस-तरल-विरलता को, पदार्थावस्था में मृत-पाषाण-मणि-धातु के ठोस व विरल रूप को जानना, मानना, पहचानना व निर्वाह करने में पारंगत होना न्याय है।

Humans (in knowledge order) endowed with humane education-*sanskar*; animals (in knowledge order) endowed with hope to live; activities of plants (in the plant order) in the form of chemical ripple, growth & cellular structures; emergence of chemicals by *yogic* method, their solid-liquid-gas forms, solid & liquid forms of soils, rocks, gems & metal (in material order) - adeptness in knowing, believing, recognising & fulfilment of all this, is justice.

10. मानव, देवमानव देवपद में, दिव्यमानव दिव्यपद में, भ्रान्त मानव और जीवों को जीवनी क्रम में, प्राणावस्था व पदार्थावस्था को प्राणपद में जानना, मानना, पहचानना व निर्वाह करना न्याय है।

Humans & godly-humans in the godly plane, divine humans in the divine plane, deluded humans & animals in the deluded plane, plant order and material order in the physico-chemical plane - adeptness in knowing, believing, recognising & fulfilment of all this, is justice.

**दायित्व**

**Responsibility**

मानवीय शिक्षा स्वीकृति अर्थात् सहअस्तित्व तथ्य को सहज रूप में जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करने के रूप में दायित्व होना न्याय है।

Acceptance of humane education - in other words, the feeling of responsibility of knowing, believing, recognising & fulfilling the true form of coexistence - is justice.

स्वीकृतियाँ जानने व मानने के रूप में, सोच-विचार-निर्णय विवेक-विज्ञान के रूप में, आचरण (कार्य-व्यवहार) मानवीयता के रूप में पहचान-निर्वाह के रूप में, व्यवस्था स्वयं स्फूर्त कर्त्तव्य-दायित्व रूप में, संस्कृति उत्सव के रूप में, स्वीकृतियाँ जागृत समाज परस्पर अर्पण समर्पण के रूप में, सभ्यता व्यवस्था में भागीदारी के रूप में, संविधान आचरण के अर्थ में, व्यवस्था सार्वभौमता (सर्व शुभ व स्वीकृति) के रूप में न्याय है।

Acceptances in the form of knowing & believing, thinking & decisions in the form of wisdom & science, conduct (work & behaviour) in the form of humaneness and recognising & fulfilling, system in the form of spontaneous duties & responsibilities, culture in the form of celebration, acceptances in awakened society in form of offerings & dedication, civility in the form of participation in the system, constitution for conduct, system in the form of universality (universal well-being & acceptance) - is justice.

**7.3 उत्पादन कार्य व्यवस्था समिति**

**Production-work (working) committee**

**उत्पादन :-** उपाय (तकनीकी) सम्पन्नता सहित प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन पूर्वक उपयोगिता व कला मूल्य सम्पन्न सामान्य व महत्वाकाँक्षा संबंधी वस्तुयें मनाकार को साकार करने के लिए निपुणता, कुशलता, पांडित्य सहित उत्पादन है।

**Production :-** is deployment of human labour, and establishment of usefulness value and aesthetic value, on the natural opulence with the help of technology for materialising ideas pertaining to the goods of common-aspirations and special-aspirations by way of skills, proficiency & mastery.

श्रम नियोजन कार्य उपाय (तकनीकी) सहित पदार्थ, प्राण, जीवावस्था पर श्रम नियोजन पूर्वक सामान्य आकाँक्षा व महत्वाकाँक्षा संबंधी वस्तुओं को पाना उत्पादन संबंध, परिवार सहज विधि से है।

Deployment of human labour on the material order, plant order and animal order, with the help of technology, and obtaining goods of common-aspirations and special-aspirations, is production.

**व्यवस्था :-** जागृति सहज विधि से अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी है।

**System :-** is the participation in the undivided society, universal system by way of awakening.

**ऐश्वर्य :-** पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था प्राकृतिक ऐश्वर्य वस्तु के रूप में वैभव है।

**Opulence :-** Material order, plant order and animal order is the grandeur in the form of natural opulence.

**सामान्य आकाँक्षा :-** आहार, आवास, अलंकार संबंधी वस्तुएं है।

**Common-aspirations :-** are the goods pertaining to food, shelter and clothes.

**महत्वाकाँक्षा :-** दूरश्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन संबंधी यंत्र-उपकरण के रुप में है।

**Special-aspirations :-** are in the form of equipment and appliances pertaining to telecommunications and transport.

**उत्पादन का प्रयोजन :-** शरीर पोषण-संरक्षण, समाज गति में, से, के लिए वस्तुओं का उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजन स्पष्ट है।

**Purpose of production :-** Use, righteous-use and purpose of the goods is clearly for nurture & protection of the human body, and for societal functioning.

(प्रतीक मुद्रा - स्वयं में वस्तु का प्रतीक होता है। सिद्ध है कि प्रतीक प्राप्ति नहीं है।)

Representative currency - in itself, represents the goods. It is evident that representation is different from receipt (of the goods).

**आवश्यकता का निश्चयन :-** समझदार मानव परिवार में ही स्पष्ट होता है।

**Ascertainment of the needs :-** becomes clear only in a wise family.

**7.3 (1) उत्पादन-कार्य व्यवस्था**

**Production-work system**

1. उत्पादन कार्य सहज क्रियाकलाप, जागृत मानव परंपरा में, से, के लिए निपुणता, कुशलता, पांडित्य पूर्वक प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन सहज सामान्य व महत्वाकाँक्षा संबंधी वस्तुओं, उपकरणों उपयोगिता व कला मूल्य को प्रमाणित करने के रूप में पहचान होता है।

Activities of production-work in, by & for awakened tradition are recognised as evidencing of usefulness and aesthetic values on goods and appliances of common- and special-aspirations by deployment of human labour on natural opulence by way of skills, proficiency & mastery.

सामान्य आकाँक्षा संबंधी वस्तुओं की आहार, आवास, अलंकार संबंधी वस्तुओं के रूप में पहचान है। कृषि व पशु पालन के लिये आवश्यकीय उपकरणों को अधिकतर कृषक अपने हाथों, पड़ोसियों की सहायता से सम्पन्न कर लेते हैं। यह क्रियाकलाप बैल से हल जोतने के समय तक सम्पन्न होता हुआ स्पष्ट है।

Common-aspirations are recognised as the goods related to foods, shelter & clothing. Most farmers themselves are able to produce the necessary implements needed for agriculture or animal husbandry, or procure them from their neighbours or villages. This was clearly seen till the times oxen were used for ploughing.

जब से ट्रैक्टर से जोत शुरु हुआ है तब से कृषि औजार प्रौद्योगिकीय विधि से तैयार होने लगा, तब उपकरणों के लिए बाजार का आश्रय लेना शुरू किया। यह शनै: शनै: महंगा होता जा रहा है। जिस अनुपात में प्रौद्योगिकीय उपकरणों का दाम बढ़ता जा रहा है उस अनुपात में कृषि उपज का दाम नहीं बढ़ पाया है।

Since the advent of use of tractors for ploughing, production of agricultural implements has been industrialised. Farmers became dependent on the market for their implements. Their price keeps on increasing with time. Increase in selling price of agricultural produce is at a higher rate than increase in price of agricultural implements.

सन् 2000 तक जो परिस्थितियाँ सुविधायें व गति के साथ अर्थात् जल्दी-ज्यादा के अर्थ में मानव प्रवृत्ति उलझने लगा। इसी के साथ पशुपालन विधि से ही रसायन-खाद एवं कीटनाशक दवाइयों से मुक्ति पाना आवश्यक है।

By the circumstances prevailing around the year 2000, as far as comfort and speed is concerned, it is apparent that human actions are driven by the mindset of ‘more’ and ‘fast’. It is also clear that riddance from chemical fertilisers and insecticides can be achieved only by way of animal husbandry.

2. निपुणता, कुशलता, पांडित्य सम्पन्नता सहित श्रम नियोजन के फलन में सामान्य व महत्वाकाँक्षा संबंधी वस्तु व उपकरणों का उत्पादन होना स्पष्ट है। यह मानव की परिभाषा में, से, के लिये मनाकार को साकार करने के सौभाग्य का फलन है, जो सुविधा-संग्रह जैसी प्रवृत्ति रहने के साथ भी सुलभ हुआ है। मनस्वस्थता: सर्वतोमुखी समाधान सर्व सुलभ होने के रूप में मानवीय शिक्षा-संस्कार चेतना विकास मूल्य शिक्षा रूप में सार्वभौम है।

It is clear that production of goods and appliances of common- and special-aspirations takes place as a consequence of human labour combined with accomplishments in skills, proficiency & mastery. It is the result of the serendipity of ‘materialising the ideas’ part in, by & for the definition of humans, which is ingrained in humans in spite of the tendencies of comforts and accumulation. Mental well-being is universal in the form of easy accessibility of comprehensive resolution to everyone by way of humane education, or consciousness development value education.

मानवीय शिक्षा का फलन ही मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान-व्यवस्था व आचरण-मूल्यांकन परंपरा ही अखण्ड समाज सूत्र सहित व्याख्या में पारंगत होना पाण्डित्य है। यही मन:स्वस्थता का प्रमाण है। यही दृष्टा पद प्रतिष्ठा का वैभव व जागृति सहज प्रमाण रूप में सौभाग्य है।

Constitution and systems in the form of code of humane conduct is the result of humane education, and the tradition of conduct & evaluation leads to expertise in maxims and elaboration of undivided society. This itself is mastery. This indeed is the evidence of mental well-being. This itself is the grandeur of establishment in the perceiver plane, and serendipity in the form of evidence of awakening.

उत्पादन के साथ विनिमय अनिवार्य है। आवश्यकता से अधिक उत्पादन विनिमय व्यवस्था का आधार है।

Exchange is essential with production. Production of goods more than needed is the basis of the system.

हर समझदार मानव अपने द्वारा किये गये व्यवहार, उत्पादन व सेवा का मूल्यांकन करे जिसमें परिवार जनों की सहमति होना आवश्यक है। यह परिवार व्यवस्था जिसमें हर नर-नारी मानवत्व सहित व्यवस्था सहज प्रमाण है।

All wise persons shall evaluate the behaviour, production & services done by them wherein concurrence of the family members is necessary. This is the family system where all males & females are evidence of system and humaneness.

द्वितीय स्थिति में एक परिवार समूह सभा (दस परिवारों में ) अपने में मूल्यांकन करेगा जिसमें दस परिवारों में परस्पर सहमति होना आवश्यक रहता है।

In the second scenario, a family-cluster (ten families) will do their evaluation wherein concurrence of all the ten families is necessary.

तीसरी स्थिति में सौ परिवार परस्परता में से किया गया उत्पादन व व्यवहार का मूल्यांकन होना स्वाभाविक रहेगा। इस स्थिति में सौ परिवार की परस्परता में सहमत होना आवश्यक है। हर परिवार के साथ सौ परिवार सहमति परिवार के समान परिवार समूह का, समूह के साथ ग्राम क्रम से विश्व परिवार सभा में से के लिए समायोजन होना स्पष्ट है।

In the third scenario, production and behaviour done by hundred families will be evaluated. Here, mutual concurrence of all the hundred families is necessary. Thus a concurrence is seen from one family to hundred families (village), and in a similar manner, concurrence and coordination becomes clear from village family council all the way in, by & for the world family council.

3. चौथी स्थिति दस गांवों का व्यवहार कार्य व उत्पादन सेवा कार्यों का मूल्यांकन सहज सहमत होना आवश्यक रहेगा।

In the fourth scenario, behaviour, production and services done by ten villages will be evaluated.

ग्राम-मोहल्ला परिवार सभा तक प्रत्येक परिवार का मूल्यांकन, स्वीकृति व सहमति आवश्यक है क्योंकि विश्व परिवार सभा तक सभाओं में मूल्यों का मूल्यांकन में तालमेल एक आवश्यकता है, जिसमें मूल्यांकन में सहमति 'दश सोपानीय व्यवस्था’ स्वीकार और सार्थक हो सके।

Evaluation, acceptance and concurrence of each family is essential until the village family council because consensus in evaluation of values in councils is required all the way till the world family council so that concurrence in evaluation in the ten-tier system becomes acceptable & meaningful.

प्रत्येक और सम्पूर्ण मानव में, से, के लिए मानवत्व सहित व्यवस्था में भागीदारी ही है।

Participation in the system in, by and for each and all humans itself is humaneness.

**मानवीयता पूर्ण आचरण मूल्य, चरित्र, नैतिकता का संयुक्त रूप है –**

**Humane conduct is the combined form of values, character and ethics.**

**मूल्य =** जाग्रत मानव परस्परता में जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्यों का वर्तमान व प्रमाण।

**Values =** Presence and evidence of *jeevan* values, human values, established values and civic values in the mutuality of awakened humans.

**चरित्र =** स्वधन, स्वनारी-स्वपुरूष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार।

**Character =** Rightfully owned wealth, rightful man-woman relationship, and kindness in work & behaviour.

**नैतिकता =** तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा का वर्तमान।

**Ethics =** Security and righteous utilisation of resources (body, mind & wealth).

यह सभी व्यवस्था सहज सोपानों में मूल्यांकन का आधार है। साथ ही वस्तु मूल्य व कला मूल्य की उपयोगिता के आधार पर मूल्यांकन होना ही जागृत मानव परंपरा है। संबंधों का पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्याँकन, परस्परता में तृप्ति होता है।

All these are the basis of evaluation at all tiers of the ten-tier system. Along with this, evaluation on the basis of object values (usefulness value & aesthetic value) is an indication of the awakened human tradition in which recognition of relationships, fulfilling of values, evaluation and mutual happiness is achieved.

4. परिवार में - हस्त कला, ग्राम-शिल्प कला

In the family - Handicrafts, village crafts

परिवार समूह में - कुटीर उद्योग

In the family-cluster - Cottage industries

ग्राम परिवार में - ग्रामोद्योग

In village family - Village industries

ग्राम समूह परिवार में - लघु उद्योग, विकल्प

In village-cluster family - Small-scale industries and their alternatives

क्षेत्र परिवार में - लघु उद्योग, मध्यम कोटि का उद्योग, विकल्प

In the village-area family - Small-scale and medium industries and their alternatives

मंडल परिवार में - मध्यम कोटि का उद्योग व बड़े उद्योग, विकल्प

In the block family - Medium and large industries and their alternatives

मंडल समूह परिवार में - मध्यम व बड़े उद्योग, विकल्प

In block-cluster family - Medium and large industries and their alternatives

मुख्य राज्य परिवार में - बड़े उद्योग, विकल्प

In district family - Large industries and their alternatives

प्रधान राज्य परिवार में - वृहत्तर उद्योग, विकल्प

In state family - Heavy industries and their alternatives

विश्व राज्य परिवार में - परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था विधि से श्रेष्ठता व उपयोगिता

का मूल्यांकन विधि रहेगा। विश्व परिवार सभा न्याय, शिक्षा,

स्वास्थ्य, उत्पादन विनिमय सुलभता में शोधपूर्वक मार्गदर्शन,

उत्पादन में गुणवत्ता का शोध, साथ में चारों अवस्था में संतुलन

सूत्र व्याख्या में पारंगत प्रमाण, मार्गदर्शन कार्य करेगा।

In world family - There will be a method of evaluation of excellence and

usefulness by way of the family based self-governance system.

The world family council shall give guidance in the areas of justice, education, health, production & exchange, research in quality of production, and expertise in maxims & elaboration and evidence of balance in the four orders in nature.

5. हर जागृत मानव परिवार में ग्राम-शिल्प, कृषि, पशुपालन, उत्पादों को उपयोगिता मूल्य के आधार पर निर्धारित करने का अधिकार रहेगा। ऐसा मूल्यांकन परिवार समूह व ग्राम-मोहल्ला परिवार सभा में समाहित सभी परिवार सहज उत्पादों का मूल्यांकन के साथ समन्वित रूप में स्वीकृत और सन्तुष्ट रहेगा।

Each awakened family shall have the authority for evaluating the products of village-crafts, agriculture & animal husbandry on the basis of usefulness value. Such evaluation shall be synergetic to (in consonance with) evaluation of the products produced by all the families included in the family-cluster and village family council, and shall be agreeable and acceptable to all the families.

हर परिवार जन सन्तुष्ट रहने का आधार हर नर-नारी का समझदारी व समाधानित रहना, हर नर-नारी का आवश्यकता से अधिक उत्पादन में भागीदारी करना, मूल्यांकन कार्य में सम्बद्ध रहना है।

All humans, males & females, being wise & resolved, their participation in producing more than the needs, and their involvement in the activity of evaluation, is the basis of satisfaction of each family member.

हर परिवार जन न्यूनतम दस परिवार में (एक परिवार समूह में) किये गये मूल्यांकनों से विदित रहना, अधिकतम देश-धरती में वर्तमान परिवारों का उत्पाद मूल्यांकन से विदित रहने का अधिकार रहेगा।

Each family member shall have the authority (right) to be aware about the evaluations done at least in ten families (a family-cluster) at the minimum, and at most, of evaluation of the products of all the families in the country or on Earth.

हर परिवार समूह सभा में भागीदारी करता हुआ कम से कम दसों सदस्यों को दस परिवार समूह में किये गये उत्पादन व मूल्यांकन गतिविधियों से अवगत रहने का अधिकार रहेगा जिससे ग्राम-मोहल्ला में जितने भी परिवार रहते हैं उनमें देश-धरती के परिवारों को मूल्यांकन-तालमेल के अर्थ में सोचने के लिए प्रेरणा सुलभ रहेगा।

At least the ten persons participating in the family-cluster council shall have the authority (right) to be aware about the production & evaluation activities of at least ten family-clusters (a village) at the minimum. This will inspire the families living in the villages to verify if the evaluations of other families in the country or on Earth match with their own evaluations.

6. सार्वभौम व्यवस्था में जीने में हर जागृत मानव परिवार में, से, के लिए उत्पादित वस्तुओं की उपयोगिता के आधार पर मूल्यांकन करना स्वाभाविक रहेगा क्योंकि जागृति मानव श्रम व मूल्यों का सही मूल्यांकन करता ही है।

Evaluation on the basis of usefulness of the produced goods shall be effortless in, by & for all awakened families living in the universal system because an awakened human naturally does the correct evaluation of human labour and values.

- जागृत मानव ही औसत सामान्य मानव है।

An awakened person is the average, normal person.

- जागृत मानव ही परिवार मानव है।

Only an awakened person is the family person. (or, Family is the abode only of an awakened person.)

- जागृत मानव ही अखण्ड समाज मानव है।

Undivided society is the abode only of an awakened person.

- जागृत मानव ही सार्वभौम व्यवस्था सहज मानव है।

Universal system is the abode only of an awakened person.

जागृत मानव ही परंपरा सहज रूप में वैभव है। दश सोपानीय व्यवस्था क्रम में पीढ़ी से पीढ़ी जागृत होना ही परंपरा है। यही अभ्युदय, सर्वतोमुखी समाधान परंपरा है। इसी विधि से सर्व मानव समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाण सहित सर्व शुभ परंपरा है।

An awakened person indeed is the grandeur in the form of tradition. Awakening from generation to generation itself is tradition in the ten-tier system. This itself is the tradition of enlightenment and comprehensive resolution. This is the way to the tradition of universal well-being with resolution, prosperity, fearlessness & coexistence for everyone.

जागृत मानव परंपरा में ही उत्पादन कार्य व्यवस्था सफल होता है।

System of production work is successful only in the awakened tradition.

7. शरीर पोषण-संरक्षण के साथ जागृति क्रम, जागृति ही शिक्षा-संस्कार कार्यक्रम है, में भागीदारी करना भी प्रयोजन है।

Awakening progression and awakening, along with nurture & protection of the human body, is indeed the education-*sanskar* program. Participating in this program is the purpose.

शिक्षा-संस्कार प्रक्रिया का आरंभ परिवार में ही होना स्वाभाविक है। जागृत मानव परंपरा का यह साक्ष्य है।

The process of education-*sanskar* naturally begins in the family. This is the testimony of awakened human tradition.

जागृत मानव परंपरा में हर परिवार में प्राप्त सन्तान के लिए जागृति सहज समीचीन रहती है। इसी विधि से जागृत मानव परंपरा प्रमाण वर्तमान होना सहज है।

In awakened human tradition, awakening is in close proximity to children in all families. This is how the continuity of evidence of awakened human tradition occurs naturally.

जागृत परंपरा में ही उत्पादन-कार्य व्यवस्था सफल होता है। उत्पादन कार्य निपुणता, कुशलता, पाण्डित्य पूर्वक सर्व देश काल में आकाँक्षा द्वय के अर्थ में सफल होता है।

Production-work system succeeds only in the awakened tradition. Success for aspirations-duo is achieved in production-work at all places & times by way of skills, proficiency & mastery

व्यवस्था-कार्य मूल्यांकन पूर्वक विनिमय संपन्न होता है।

Exchange is accomplished by evaluation of production-work.

ज्ञान, विवेक, विज्ञान संपन्न मानसिकता ही मानव लक्ष्य के अर्थ में मूल्यांकन होना स्वाभाविक रहता है। यह दश सोपानीय व्यवस्था विधि से गठित होना ही सामाजिक अखण्डता व्यवस्था सहज सार्वभौमता सहज प्रमाण है।

Evaluation of the mindset of knowledge, wisdom & science occurs naturally with reference to the human goal. System based on the ten-tier system is the evidence of the undivided society and universal system.

**उत्पादन गुणवत्ता की पहचान शरीर पोषण-संरक्षण के अर्थ में व अखण्ड सार्वभौमता सहज समाज गति के अर्थ में है।**

**Quality of production is recognised with reference to nurture & protection of the human body, as well as to undivided & universal societal functioning.**

**7.3 (2) गुणवत्ता की पहचान**

**Recognition of quality**

आहार की गुणवत्ता शरीर पोषण के रूप में

Quality of food in the form of nurturing the human body

आवास की गुणवत्ता शरीर संरक्षण बनाये रखने में आवश्यक शीत-वात-उष्मा से कम-अधिक

का बचाव रूप में पहचान।

Quality of shelter in the form of protecting the human body from extreme climate

अलंकार शरीर शोभा को व्यवस्था में भागीदारी के अर्थ में पहचान बनाये रखने के रूप

में, शरीर सहज उष्मा को बनाये रखने में पहचान।

In the form of recognition of physical appearance for participation in the system, for maintaining the normal body temperature.

संज्ञानीयता पूर्वक संवेदनाएं नियंत्रित रहने का प्रमाण।

Evidence of sensory regulation by way of cognisance.

औषधि रोग पीड़ा के निवारण करने और बचाव, स्वास्थ्य को संतुलित बनाये रखने के रूप में

पहचान।

Medicines in the form of remedy & protection from disease and pain, for

maintenance of health

दूरसंचार यथा दूरश्रवण, दूरदर्शन व दूरगमन और गतिशील यंत्रों का व्यवस्था व उत्पादन गति संतुलन के अर्थ में उपयोग, सदुपयोग है।

Use and right-use of telecommunications, transport and other electro-mechanical appliances is for systems or for balance in production.

**7.3 (3) उत्पादन - प्रयोजन**

**Purpose of production**

**उत्पादन में सार्थक उद्देश्य :-** शरीर पोषण-संरक्षण, अखण्ड समाज गति में, सार्वभौम व्यवस्था गति में भागीदारी के उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशीलता के अर्थ में

**Meaningful objective in production :-** for use, right-use & purpose of participation in - nurture & protection of the human body, societal functioning, and functioning of universal systems

**आहार औषधियाँ :-** शरीर पोषण-संरक्षण के अर्थ में स्वस्थता को बनाये रखने, निरोगिता के अर्थ में

**Food, medicines :-** for nurture & protection of the human body, for remaining healthy and fit.

**आवास :-** शरीर, आहार, औषधि और पशुओं के संरक्षण के अर्थ में

**Shelter :-** for protection of human bodies, food, medicines & animals.

**अलंकार :-** आह्लाद (प्रसन्नता) पूर्वक मानव संस्कृति-सभ्यता सहज पहचान के अर्थ में वस्त्र, मणि, धातु, पुष्प-पत्रों को सजाना जिसमें अधिक शीत, उष्ण को शरीरानुकूल बनाये रखने व लज्जा की रक्षा के उद्देश्य समाये रहते हैं।

**Clothing :-** happily wearing garments (costumes), gems, metals & flowers befitting the human culture & civilisation, in which the objectives of maintaining the normal body temperature and safeguarding the physical modesty are inherent.

उक्त तीनों सामान्य आकाँक्षायें हैं।

The above three are common-aspirations.

**महत्वाकाँक्षा :-** दूरश्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन के प्रति मानव ने अपने में अपेक्षा अथवा आवश्यकता के रूप में स्वीकारा है। यह धरती पर मानव को उपलब्ध है। ये तीनों महत्वाकाँक्षायें हैं।

दूरसंचार का प्रयोग व्यवस्था गति को बनाये रखने के प्रयोजन से है।

**Special aspirations :-** Humans, in themselves, have accepted telecommunications and transport as their aspirations and needs. These are available to humans on Earth. These are special-aspirations.

The purpose (and use) of telecommunications is for continuity of societal & systemic functioning.

**7.3 (4) जागृति समाधान उत्पादन-विनिमय समृद्धि**

**Awakening, resolution, production, exchange, prosperity**

मानव ने मनाकार को साकार किया है। मन:स्वस्थता को प्रमाणित करना ही मानव चेतना, समझदारी, जागृति है।

Humans have been successful in materialising their ideas. However, evidence of mental well-being is indeed the humane consciousness, wisdom and awakening.

हर जागृत मानव मनाकार को साकार करने मन:स्वस्थता: को परंपरा में प्रमाणित करने समृद्धि का साक्ष्य व व्यवस्था में प्रवृत्त होना पाया जाता है।

Every awakened person is engaged in - materialising the ideas, participating in the system, evidencing mental well-being in tradition, and evidencing prosperity.

सार्वभौम व्यवस्था में ही मानव अपनी जागृति (सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्नता) को समाधान, समृद्धि सम्पन्न परिवार सहज व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रमाणित होता है।

Humans are able to produce evidence of their own awakening (accomplishment of comprehensive resolution) only in the universal system in the form of resolution, prosperity in family, and participation in the overall system.

समाधान ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहज गति है। यही जागृत मानव गति है - हर सोच विचार गति, कार्य संवाद गति व फल परिणाम गति, अखण्डता सम्पन्न गति।

Resolution is the manifestation of knowledge, wisdom and science. This is the manifest aspect of awakened humans - manifestation of thoughts, manifestation of work & dialogs, manifestation of results, and manifestation of accomplishment in undividedness.

मानव लक्ष्य संपन्नता से जीवन मूल्य प्रमाणित होना, जीवन मूल्य सहज प्रमाण रूप में सहज विधि से मानव लक्ष्य साक्षित फलित होता है।

*Jeevan* values are evidenced by accomplishment of human goal, and human goal is accomplished by way of evidence of *jeevan* values.

**1.** **समाधान**

**Resolution**

मानव संस्कृति, पूर्णता के अर्थ में किये जाने वाले कृतियों के रूप में समाधान है।

Human culture in the form of actions for completeness, is resolution.

मानव सभ्यता पूर्वक व्यवस्था में भागीदारी के रूप में समाधान है।

Human civility in the form of participation in systems, is resolution.

मानवीयता पूर्ण आचरण समाधान है।

Humaneness in conduct is resolution.

मानवीय सभ्यता, स्वतंत्रता और परिवार मूलक व्यवस्था में भागीदारी सहज सभ्यता, स्वतंत्रता, स्वराज्य के रूप में सर्वतोमुखी समाधान है।

Civilisation, independence and self-governance as humane civility, independence and participation in the family based system is the true form of comprehensive resolution.

अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिंतन ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहज अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन समाधान है।

Expression, communication & manifestation of knowledge, wisdom & science based on Existence Based Human Centred Contemplation, is resolution.

जागृति पूर्वक किया गया, कराया गया, करने के लिए सहमत समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और भागीदारी समाधान है।

Understanding, honesty, responsibility & participation - done, encouraged & concurred by way of awakening - is resolution.

जीवन जागृति पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार-विचार समाधान है।

Work, behaviour and thinking done by way of awakening, is resolution.

मानव लक्ष्य को प्रमाणित करना समाधान है।

To evidence human goal, is resolution.

जीवन मूल्यों को मानव परंपरा में प्रमाणित करना समाधान है।

To evidence *jeevan* values in human tradition, is resolution.

**2.** **समाधान = सहअस्तित्व सहज समझ।**

**Resolution = Understanding of coexistence**

अस्तित्व स्थिर है, विकास व जागृति निश्चित है।

Existence is stable, and progress & awakening is certain.

सहअस्तित्व में जीवन जीवनीक्रम, जीवन जागृतिक्रम, जीवन जागृति, जागृति सहज निरंतरता सहज समझ समाधान सम्पन्न परंपरा ही जागृत मानव परंपरा है।

The tradition rich with resolution - understanding of *jeevan*, living-world progression, awakening progression in *jeevan*, awakening in *jeevan*, and continuity of awakening, in coexistence - is indeed the awakened human tradition.

1) व्यापक सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति को अध्ययन पूर्वक समझना समाधान है।

Understanding (perceiving), by way of study, the sentient-insentient nature as saturated in omnipresent Omnipotence, is resolution.

2) सत्ता में सम्पृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति को सहअस्तित्व में अविभाज्य व नित्य वर्तमान सहज, वैभव में, से, के लिए अध्ययन पूर्वक समझना समाधान है।

Perceiving, by way of study, the sentient-insentient nature saturated in Omnipotence, as integral part of coexistence and as the eternally present grandeur, is resolution.

3) सहअस्तित्व परम सत्य है, यह समझना समाधान है।

Perceiving the coexistence as the ultimate truth, is resolution.

4) सहअस्तित्व सहज शाश्वतीयता को समझना समाधान है। सहअस्तित्व मुद्दों के रूप में स्थिरता, निश्चयता सहज निरंतरता को समझना समाधान है।

Perceiving the eternality of coexistence, is resolution. Perceiving the everlasting stability & certainty as the salient points of coexistence, is resolution.

5) सहअस्तित्व सहज निरंतर स्थिरता को समझना समाधान।

Perceiving the everlasting stability of coexistence, is resolution.

6) सहअस्तित्व सहज नित्य रूप में विकास को समझना समाधान, विकास सहज चैतन्य इकाई गठनपूर्ण परमाणु में दृष्टा पद प्रतिष्ठा होने का समझ समाधान है।

Perceiving development as perpetual in coexistence, is resolution. Perceiving the potential of being in the perceiver status in the conscious unit (which itself is the developed unit or constitutionally-complete atom), is resolution.

7) नित्य वैभव के रूप में जागृति को समझना समाधान है।

Perceiving awakening as the eternal grandeur, is resolution.

8) जीवन व जागृति को परम प्रयोजन के रूप में समझना समाधान है।

Perceiving the awakening of *jeevan* as the ultimate purpose, is resolution.

9) जीवन ही दृष्टा पद प्रतिष्ठा सम्पन्न होने को अध्ययन अनुभव पूर्वक समझना समाधान है।

Perceiving, by way of study and realisation, *jeevan* as having the potential of being in the perceiver status, is resolution.

10) जीवन ही जागृति पूर्वक मानव परंपरा में प्रमाणित होने को अध्ययन अनुभव पूर्वक समझना समाधान है।

Perceiving, by way of study and realisation, *jeevan* as having the potential of evidencing in human tradition by way of awakening, is resolution.

**3.** **समाधान**

**Resolution**

1) व्यापक सत्ता (साम्य ऊर्जा) में सम्पृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति सहअस्तित्व सहज अस्तित्व अर्थात् सदा-सदा होना और मानव में, से, के लिए स्वीकार होना ही समाधान है।

To understand and accept coexistence as eternal presence of the sentient-insentient nature saturated in omnipresent Omnipotence (equilibrium energy), in, by & for humans, is resolution.

2) सहअस्तित्व सहज समझदारी समाधान है।

Understanding of coexistence, is resolution.

3) सहअस्तित्व में ही जीवन सहज क्रियाकलाप को समझना समाधान है।

To understand *jeevan* activities as the integral part of coexistence, is resolution.

4) सहअस्तित्व में ही जीवनी क्रम, जीवन जागृति क्रम, जागृति और जागृति सहज निरंतरता को मानव परंपरा में समझ होना, मानव परंपरा में ही जागृति प्रमाणित होने की समझ समाधान है।

Understanding in human tradition - of living-world progression, awakening progression in *jeevan*, awakening in *jeevan*, and continuity of awakening, and that evidence of awakening is possible only in human tradition, is resolution.

5) सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति को नित्य वर्तमान सहज सहअस्तित्व रूप में समझना समाधान है।

To understand the sentient-insentient nature saturated in Omnipotence as eternally present coexistence, is resolution.

6) सहअस्तित्व सहज नित्य वर्तमान ही परम सत्य है। यह मानव परंपरा में अर्थात् -

- मानवीय शिक्षा-संस्कार परंपरा,

- मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान परंपरा,

- मानवीयता पूर्ण दश सोपानीय सार्वभौम व्यवस्था परंपरा का समझ सर्वतोमुखी समाधान है।

Eternally present coexistence is the ultimate truth. Its understanding in human tradition - i.e., in humane education-*sanskar* tradition, in tradition of code of humane conduct, and in tradition of humane ten-tier universal systems, is comprehensive resolution.

7) सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्नता ही हर नर-नारियों में, से, के लिए जागृति सहज प्रमाण, वर्तमान और परंपरा है। यह समझना समाधान है।

Understanding of the accomplishment in comprehensive resolution in, by & for all humans, males & females, as the evidence of awakening, and tradition, is resolution.

8) जागृत मानव-परंपरा, निरंतरता और प्रयोजनों को समझना समाधान है।

To understand awakened human tradition, continuity and purposes, is resolution.

9) सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व सहज स्थिरता मानव में ही जागृति सहज सुलभ होने का निश्चयता को समझना समाधान है।

To understand stability of coexistence, and certainty of awakening in humans, is resolution.

**4.** **समाधान**

**Resolution**

1) मानव परंपरा को सार्वभौम व्यवस्था का धारक-वाहक रूप में जागृत मानव को मानवत्व सहित व्यवस्था में पहचानना, समझना, यही समाधान है।

To recognise and understand the human tradition as the bearer-holder (beholder) of the universal system, and the awakened humans in orderliness with humaneness, is resolution.

2) विकास व जागृति को सुनिश्चित रूप में समझना समाधान है।

To understand development and awakening clearly, is resolution.

3) जागृति सहज परंपरा, प्रक्रिया व मूल्यांकन विधि को समझना समाधान है।

To understand the process and tradition of awakening, and way of evaluation, is resolution.

4) जागृत मानव परंपरा में हर मानव दृष्टा पद में होने की समझ समाधान है।

Understanding that all humans in the awakened human tradition are in the perceiver plane, is resolution.

5) सर्व मानव दृष्टा पद में प्रमाणित होने की समझ समाधान है।

Understanding of how all humans can be evidence of the perceiver plane, is resolution.

6) जीवन जागृति सहज प्रतिष्ठा में ही दृष्टा पद को मानव प्रमाणित करता है यह समझ समाधान है।

Humans produce evidence of the perceiver plane only in a state of awakening. This understanding, is resolution.

7) हर मानव दृष्टा पद में समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी को प्रमाणित करता है, यह समझ समाधान है।

Every human in the perceiver plane produces evidence of understanding, honesty, responsibility & participation. This understanding, is resolution.

8) दृष्टा पद में हर मानव मानवत्व को प्रमाणित करता है। यह समझ सहित प्रमाण समाधान है।

Every human in the perceiver plane produces evidence of humaneness. This understanding, along with evidence, is resolution.

9) मानवत्व हर मानव के स्वत्व होने की समझ समाधान है।

Understanding of the fact that humaneness is the self-ness of all humans, is resolution.

**5.** **समाधान**

**Resolution**

1) गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता सहज सर्वतोमुखी वैभव को समझना समाधान है।

To understand the all-round grandeur of completeness-trio (constitution-, activity- & conduct-), is resolution.

2) विकास क्रम में भौतिक-रासायनिक क्रियाकलाप व विकास गठनपूर्ण परमाणु चैतन्य पद में होने, जीवन ही जीवनी क्रम विधि से जीवों का वैभव और जागृतिक्रम, जागृति के रूप में मानव परंपरा में होने की समझ समाधान है।

To understand that (1) development progression includes physico-chemical activities and the development, (2) constitutionally-complete atom is in the sentient status, (3) *jeevan* is the grandeur of the animal order, and (4) human tradition is in awakening-progression and awakening - is resolution.

3) जीवन, भौतिक-रासायनिक और जीवन क्रियाकलापों का जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना वर्तमान में वैभव है। यह समझ समाधान है।

*Jeevan*, physico-chemical and *jeevan* activities - knowing, believing, recognising and participating in them is the concurrent grandeur. To understand this, is resolution.

4) जागृत मानव परंपरा में जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने में प्रमाण होता है। यह समझ में आना समाधान है।

Evidence of knowing, believing, recognising and participating is only in the awakened human tradition. To understand this, is resolution.

5) हर नर-नारी में जागृति सहज अस्तित्व में अनुभव सहज वैभव है, यह मानव परंपरा में समझ होना समाधान है।

Realisation in existence is the grandeur in, of & for all humans, males & females; understanding of this fact in human tradition, is resolution.

6) मानवीयता पूर्ण आचरण समाधान है।

Humane conduct is the manifestation of resolution.

7) मानवीयता पूर्ण व्यवस्था समाधान है।

Humane system is the manifestation of resolution.

8) जागृत मानव संस्कृति समाधान है।

Awakened human culture is resolution.

9) जागृत मानव सभ्यता समाधान है।

Awakened human civility is resolution.

10) जागृत मानव परंपरा में संविधान सर्वतोमुखी समाधान है।

The constitution is the comprehensive resolution in awakened human tradition.

11) जागृत मानव परंपरा में मानवीय शिक्षा संस्कार सर्वतोमुखी समाधान है।

Humane education-*sanskar* is the comprehensive resolution in awakened human tradition.

**6.** **समाधान**

**Resolution**

1) परमाणु अंश भी एक दूसरे को पहचानते हैं। इसका प्रमाण परमाणु के रूप में कार्यरत रहना ही है। यह समझ होना समाधान है।

Even the atomic particles recognise each other. Their remaining active as an atom, is its evidence. To understand this, is resolution.

2) एक परमाणु दूसरे को पहचानते हैं इसका प्रमाण अणुओं के रूप में कार्यरत रहना वर्तमान है। यह समझ होना समाधान है।

Atoms recognise each other. Their remaining active as a molecule, is its evidence. To understand this, is resolution.

3) हर परमाणु या अणु दूसरे को पहचानता है, इसका प्रमाण अणु रचित रचना है, यह समझ में आना समाधान है।

Atoms and molecules recognise each other. Objects made up of molecules are its evidence. To understand this, is resolution.

4) हर ग्रह गोल अणु रचित रचना है। यह समझ में आना समाधान है।

All planets are made up of molecules. To understand this, is resolution.

5) हर ग्रह गोल एक दूसरे को पहचानते हैं। इसका प्रमाण एक दूसरे से निश्चित अच्छी दूरी शून्याकर्षण में व्यवस्था के रूप में होना है। यह समझ में आना समाधान है।

All planets recognise each other. Their being in zero-attraction with each other at a well-defined distance, as a system, is its evidence. To understand this, is resolution.

6) हर ग्रह समूह जो कुछ ग्रह गोल के साथ निश्चित कार्य करते हैं जैसे यह धरती किस प्रकार से कार्य करती है। यह समझ में आना समाधान है।

Each group of planets works in a certain, well-defined manner with reference to other neighbouring planets. For example, Earth also works in a certain, well-defined manner. To understand this, is resolution.

7) प्रत्येक धरती पर विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति प्रकट होने योग्य या प्रकट रहती है यह समझ में आना समाधान है।

There is the possibility of development progression, development, awakening progression and awakening on each planet, or this possibility has already materialised. To understand this, is resolution.

8) हर समृद्ध धरती पर मानव ही जागृति पूर्वक मानव लक्ष्य में सफल होता है। यह समझ में आना समाधान है।

It is only humans on each earth who succeed in achieving the human goal, by way of awakening. To understand this, is resolution.

9) हर धरती पर जागृति प्रमाणित होना, चारों अवस्थायें वैभवित रहना नियति है। यह समझ में आना समाधान है।

Evidence of awakening and grandeur of the four orders on each planet is destined. To understand this, is resolution.

**7.** **समाधान**

**Resolution**

1) जागृत परंपरा सम्पन्न हर धरती पर चारों अवस्थायें पूरकता-उपयोगिता विधि से नित्य वैभव रहता है। यह समझ समाधान है।

There is eternal grandeur by way of usefulness & complementariness of all the four orders on each earth with the awakened tradition. To understand this, is resolution.

2) हर धरती शून्याकर्षण में रहते हुए विकास क्रम ,विकास, जागृति क्रम, जागृति की निरंतरता सहज संभावना समीचीन है। यह समझ होना समाधान है।

Possibility of continuity of development progression, development, awakening progression and awakening is imminent on each planet in the state of zero-attraction. To understand this, is resolution.

3) हर धरती कालान्तर में अपने में पदार्थ अवस्था से - प्राण, जीव एवं ज्ञानावस्था संयुक्त वैभव निरंतर रहने के लिए है। यह समझ में आना समाधान है।

Each earth, with the passage of time, is destined to progress from material order to continuous & combined grandeur of plant order, animal order & knowledge order. To understand this, is resolution.

4) हर धरती पर ज्ञानावस्था में ही स्वतंत्रता, कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता स्वराज्य में संरक्षित रहती है। यह समझ समाधान है।

It is only in the knowledge order that independence, imagination and free-will is protected in self-governance on each earth. To understand this, is resolution.

5) मानव ज्ञानावस्था में होते हुए जब भ्रमवश जीवों सदृश्य जीने को प्रवर्तनशील होता है तब पीडि़त होता है समस्या से प्रताडि़त होता है। इसका निराकरण समझ जागृति पूर्वक सर्वतोमुखी समाधान है।

Humans face miseries and problems when, in spite of being in the knowledge order, they (under delusion) have tendencies to live like animals. Comprehensive resolution by way of understanding and awakening, is its solution.

6) हर मानव अस्तित्व में अनुभवमूलक विधि से सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्न होना समीचीन है।

Becoming accomplished in comprehensive resolution by the realisation-rooted method in existence is imminent for all humans.

7) सहअस्तित्व अनुभवमूलक विधि से हर मानव अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में प्रमाण है। यह सर्वतोमुखी समाधान है।

Each human is an evidence in the undivided society and universal system by the realisation-rooted method in coexistence. This is the manifestation of comprehensive resolution.

8) हर जागृत मानव जीवन लक्ष्य, मानव लक्ष्य को प्रमाणित करता है, यह समाधान है।

Each awakened human produces evidence of *jeevan* goal and human goal. This is the manifestation of resolution.

9) जागृत परंपरा में मानव मानवत्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी करता है। यह सर्वतोमुखी समाधान है।

Humans, in awakened tradition, are orderly in themselves (humaneness) and participate in the overall system. This is the manifestation of comprehensive resolution.

10) हर धरती पर जागृत परंपरा में मानव ही स्वयं संतुलित रहने का दृष्टा है। यह समझ समाधान है।

Only humans in the awakened tradition, on each earth, are perceivers of their own balance. To understand this, is resolution.

11) जागृत परंपरा ही मानव को पीढ़ी से पीढ़ी दृष्टा पद में प्रतिष्ठित करता है। यह समझ समाधान है।

Only the awakened tradition establishes humans, from generation to generation, in the perceiver plane. To understand this, is resolution.

(1) पूरकता (2) उपयोगिता (3) शून्याकर्षण (4) सहअस्तित्व (5) विकास क्रम

(6) विकास (7) जागृति क्रम (8) जागृति और निरंतरता सहज समझ समाधान है।

Understanding of (1) Complementariness (2) Usefulness (3) Zero-attraction

(4) Coexistence (5) Development progression (6) Development

(7) Awakening progression (8) Awakening, and their continuity, is resolution.

**8.** **समाधान**

**Resolution**

1) सहअस्तित्व में जीने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

Thoughts and decisions (determination, conclusions) with perspective of living in coexistence, is resolution.

2) ऋतु संतुलन को धरती में बनाये रखने का सोच-विचार-निर्णय व कार्यक्रम समाधान है।

Thoughts, decisions and programs with perspective of maintaining climate balance on Earth, is resolution.

3) नियम, नियंत्रण, संतुलन पूर्वक जीने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

Thoughts and decisions with perspective of living with law, regulation & balance, is resolution.

4) न्यायपूर्वक जीने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

Thoughts and decisions with perspective of living with justice, is resolution.

5) अखण्ड समाज में भागीदारी का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

Thoughts and decisions with perspective of participating in the undivided society, is resolution.

6) अभयता पूर्वक समृद्धि सहित जीने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

Thoughts and decisions with perspective of living with prosperity & fearlessness, is resolution.

7) पूरकता, उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनीयता सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

Thoughts and decisions with perspective of living with complementariness, utilisation, righteous-utilisation & purposefulness, is resolution.

8) जीवन मूल्य को प्रमाणित करने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

Thoughts and decisions with perspective of evidencing *jeevan* values, is resolution.

9) मानव मूल्यों को प्रमाणित करने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

Thoughts and decisions with perspective of evidencing human values, is resolution.

10) स्थापित, शिष्ट, उपयोगिता, सुन्दरता मूल्यों को मानव परंपरा में प्रमाणित करने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

Thoughts and decisions with perspective of evidencing established values, civic values, artistic values & aesthetic values, is resolution.

11) आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने के लिए सहअस्तित्व सहज ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्मत सोच-विचार सुनिश्चयन समाधान है।

Thoughts and decisions aligned knowledge, wisdom & science of coexistence for producing more than the needs, is resolution.

12) सुख, शांति, संतोष, आनंद सहज सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

Thoughts and decisions of happiness, peace, contentment & bliss, is resolution.

13) सर्वशुभ सर्व सुलभ होने के लिए सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

Thoughts and decisions for universal availability of universal well-being, is resolution.

14) सर्व सुख शांति सर्व सुलभ होने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

Thoughts and decisions for universal availability of happiness, is resolution.

15) स्वशुभ सर्वशुभ में समाहित विधि से किया गया सोच-विचार-निश्चयन समाधान है।

Thoughts and decisions based on the insight ‘one’s own well-being is inherent in universal well-being’, is resolution.

16) अनुभवमूलक विधि से सर्व शुभ सोच-विचार-निश्चयन समाधान है।

Thoughts and decisions of universal well-being based on realisation-rooted method, is resolution.

17) जागृति विधि से जीने का सोच-विचार-निश्चयन समाधान है।

Thoughts and decisions with perspective of living by way of awakening, is resolution.

18) हर नर-नारी में, से, के लिये जीवन समान शरीर में भिन्नता का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

Thoughts and decisions based on the principle that *jeevan* is the same in all males & females while there are differences in the body, is resolution.

19) हर नर-नारी में, से, के लिए जागृति समानता का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

Thoughts and decisions based on the principle that awakening is the same in, by & for all males & females, is resolution.

20) हर मानव में, से, के लिये ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता का अधिकार सहित समान होने के रूप में सोच-विचार-निश्चयन समाधान है।

Thoughts and decisions based on the principle that the potential to be accomplished with knowledge, wisdom & science is equal in, by & for all males & females, is resolution.

**9.** **समाधान**

**Resolution**

1) भौतिक-रासायनिक प्रकृति को यथास्थिति विधि से ‘त्व’ सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में होने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

Thoughts and conclusion that the physico-chemical world, by way of status quo, is orderliness with inherence and participates in the overall orderliness, is resolution.

2) भौतिकता को परिणामानुषंगीय, प्राणावस्था को बीजानुषंगीय परंपरा होने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

Thoughts and conclusion that the material order abides by constitution conformance while the plant order abides by seed conformance, is resolution.

3) जीवावस्था को वंशानुषंगीय परंपरा होने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

Thoughts and conclusion that the animal order abides by species conformance, is resolution.

4) ज्ञानावस्था में मानव को ज्ञाननुषंगीय, यथा समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी पूर्वक परंपरा होने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

Thoughts and conclusions regarding humans in the knowledge order that the human tradition abides by knowledge conformity (i.e., understanding, honesty & responsibility), is resolution.

5) मानव परंपरा को सहअस्तित्व में मानवत्व में प्रमाणित होने वाले ईकाई के रूप में किया गया सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

Thoughts and conclusions that it is the human tradition which evidences humaneness in coexistence, is resolution.

6) मानव परंपरा को दृष्टा पद में होने का सोच-विचार-निर्णय समाधान है।

Thoughts and conclusions that the human tradition is in the perceiver plane, is resolution.

7) मानव परंपरा अनुभवमूलक होने का सोच-विचार-निश्चयन समाधान है।

Thoughts and conclusions that the human tradition is rooted in realisation, is resolution.

8) मानव सहअस्तित्व में अनुभव परंपरा होने का सोच-विचार-निश्चयन समाधान है।

Thoughts and conclusions that humans are the tradition of realisation in coexistence, is resolution.

9) मानव परंपरा सहअस्तित्व सहज जागृति में, से, के लिये विकास क्रम, विकास, जीवन, जीवन जागृति क्रम, जागृति सहज दृष्टा, ज्ञाता, कर्ता भोक्ता होने का सोच-विचार-निश्चयन समाधान है।

Thoughts and conclusions that the humans are the perceiver, knower & enjoyer of development progression, development, awakening progression & awakening in, by & for awakening in coexistence, is resolution.

10) मानव संस्कृति-सभ्यता, विधि-व्यवस्था में संयुक्त वैभव परंपरा होने का सोच-विचार-निश्चयन समाधान है।

Thoughts and conclusions that humans are the grand tradition of the combination of culture-civility and law-system, is resolution.

11) मानव अखण्ड समाज सूत्र के आधार पर अखण्ड राष्ट्र व्यवस्था का सोच-विचार-निश्चयन समाधान है।

Thoughts and conclusions of the undivided nation system based on undivided human society, is resolution.

12) अखण्ड समाज-राष्ट्र-व्यवस्था को दश सोपानीय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था का सोच-विचार-निश्चयन समाधान है।

Thoughts and conclusions of undivided society, nation & system, and the ten-tier family based self-governance system, is resolution.

13) जागृति पूर्वक ही मानव परंपरा होने का सोच-विचार-निश्चयन समाधान है।

Thoughts and conclusions that the awakened tradition materialises only by way of realisation, is resolution.

**10.** **समाधान**

**Resolution**

1) सहअस्तित्व में अनुभवमूलक विधि से जीना समाधान है।

Living in coexistence by the realised-rooted method, is (the manifestation of) resolution.

2) अनुभव प्रमाणों को प्रमाणित करना समाधान है।

Authenticating the evidence of realisation, is resolution.

3) व्यवस्था में जीना समाधान है।

Living in & by the system is (the manifestation of) resolution.

4) व्यवस्था में भागीदारी करना समाधान है।

Participation in the system is the manifestation of resolution.

5) जागृति को प्रमाणित करना समाधान है।

Evidencing the awakening, is resolution.

6) सहअस्तित्व में प्रमाणित होना, रहना, करना समाधान है।

To become evidence, to be evidence, and to produce evidence - in coexistence, is resolution.

7) मानवीय शिक्षा-संस्कार में भागीदारी करना समाधान है।

Participation in humane education-*sanskar* is the manifestation of resolution.

8) न्याय सुरक्षा में भागीदारी करना समाधान है।

Participation in justice-security is the manifestation of resolution.

9) परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना समाधान है।

Production of goods more than needs of the family, is the manifestation of resolution.

10) तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग करना समाधान है।

Righteous utilisation of the resources of body, mind & wealth, is resolution.

11) कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित क्रिया में जागृति (समझदारी) को प्रमाणित करना समाधान है।

Evidencing of awakening (understanding) in physical, verbal, mental, doing, delegating & endorsing activities, is resolution.

12) मानवीयता पूर्ण आचरण को प्रमाणित करना समाधान है।

Evidencing of humane conduct is resolution.

13) मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान का पालन करना समाधान है।

Abiding by the constitution in the form of code of humane conduct, is resolution.

14) स्वास्थ्य-संयम कार्य में भागीदारी करना समाधान है।

Participation in health-*sanyam* activities is the manifestation of resolution.

15) उत्पादित वस्तु की उपयोगिता के आधार पर श्रम मूल्य का विनिमय समाधान है।

Exchange of labour value on the basis of usefulness of the goods produced, is resolution.

16) जन्मदिन उत्सव, नाम-संस्कार उत्सव, शिक्षा-संस्कार उत्सव, विवाह उत्सव, ऋतु-काल व्यवस्था उत्सवों को सुख, समाधान, समृद्धि के अर्थ में सम्पन्न करना समाधान है।

Organising birthday, naming, education-*sanskar*, wedding, and seasonal festivals with the objective of happiness, resolution and prosperity, is the manifestation of resolution.

17) नृत्य, संगीत, साहित्य को मानवीयता व मानवीय व्यवस्था के अर्थ में प्रस्तुत करना समाधान है।

Presenting dance, music & literature for humaneness and humane system, is resolution.

Presenting dance, music & literature with the objective of humaneness and humane system, is resolution.

Presenting dance, music & literature with humaneness and the humane system in mind, is resolution.

18) परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था सहज उत्सवों को दश सोपानीय क्रम में सम्पन्न करना समाधान है।

Organising festivals of family based self-governance systems for the ten-tier system, is resolution.

**11.** **समाधान**

**Resolution**

1) ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता सहज कार्य-व्यवहार करना समाधान है।

Doing work & behaviour based on knowledge, wisdom & science, is resolution.

2) समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी पूर्वक कार्य व्यवहार करना समाधान है।

Doing work & behaviour by way of understanding, honesty, responsibility & participation, is resolution.

3) दश सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी करना, संबंधों को पहचानना, जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य व वस्तु मूल्य सहज निर्वाह करना समाधान है।

Participating in the ten-tier system, recognising the values, and fulfilling *jeevan* values, human values, established values, civic values and object values, is resolution.

4) स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य सहज विधि से किया गया कार्य-व्यवहार समाधान है।

Work & behaviour done by way of absolute truth, manifested truth and evident truth, is resolution.

5) मनाकार को उत्पादन-कार्य से प्रमाणित करना समाधान है।

Evidencing and materialising ideas in production-work, is resolution.

6) मन:स्वस्थता को कार्य-व्यवहार में प्रमाणित करना समाधान है।

Evidencing mental well-being in work & behaviour, is resolution.

7) जागृति पूर्वक परिवार व्यवस्था में, से, के लिए किया गया कार्य-व्यवहार समाधान है।

Work & behaviour done by way of awakening in, by & for the family system, is resolution.

8) जीवन व मानव लक्ष्य के अर्थ में किया गया कार्य-व्यवहार, व्यवस्था में भागीदारी समाधान है।

Work & behaviour done, and participation in the system, for *jeevan* goal and human goal, is resolution.

9) समझदार, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार समाधान है।

Work & behaviour done by way of understanding, honesty, responsibility & participation, is resolution.

10) नियम पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार समाधान है।

Work & behaviour done abiding by law, is resolution.

11) नियंत्रण पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार समाधान है।

Work & behaviour done abiding by regulation, is resolution.

12) संतुलन पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार समाधान है।

Work & behaviour done abiding by balance, is resolution.

13) न्याय पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार समाधान है।

Work & behaviour done based on justice, is resolution.

14) स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य व वस्तुगत सत्य विधि से जीना समाधान है।

Living by way of absolute truth, manifested truth and evident truth, is resolution.

15) सर्वतोमुखी समाधान को प्रमाणित करना सत्य पूर्ण है सर्वतोमुखी समाधान है।

Producing evidence of comprehensive resolution is truthful, is resolution.

16) अस्तित्व में अनुभव मूलक विधि से किया गया कार्य-व्यवहार समाधान है।

Work & behaviour done by realisation-rooted method in coexistence, is resolution.

17) वीरता पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार व्यवस्था सहज प्रमाण एवं समाधान है।

Work & behaviour done with courage, is the evidence of system and resolution.

18) धीरता पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार व्यवस्था सहज प्रमाण एवं समाधान है।

Work & behaviour done with fortitude, is the evidence of system and resolution.

19) उदारता पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार व्यवस्था सहज प्रमाण एवं समाधान है।

Work & behaviour done with generosity, is the evidence of system and resolution.

**12.** **समाधान**

**Resolution**

1) दयापूर्वक, with kindness

2) कृपापूर्वक, with grace

3) करुणापूर्वक, with compassion

4) नाम स्वीकृति को संबोधन अभ्युदय के अर्थ में सार्थक है।

Acceptance of name (greeting, or title of relationship) is meaningful for enlightenment.

5) जाति स्वीकृति (संस्कार) को मानव परिभाषा के अर्थ में सार्थक है।

Acceptance of *sanskar* is meaningful for the definition of humans.

6) धर्म स्वीकृति को सर्वतोमुखी समाधान अखण्ड समाज के अर्थ में सार्थक है।

Acceptance of *dharma* is meaningful for comprehensive resolution and undivided society..

7) शिक्षा पूर्वक स्वीकृति को, समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में पारंगत होने के अर्थ में सार्थक है।

Acceptance by way of education is meaningful for expertise in resolution, prosperity, fearlessness & coexistence.

8) व्यवहार-कार्य स्वीकृति को संबंधों की पहचान आवश्यकता सहित, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, परस्परता में तृप्ति समाधान संतुलन के अर्थ में सार्थक है।

Acceptance of work & behaviour is meaningful for recognition of relationships, fulfilling of values, evaluation, mutual satisfaction, resolution and balance.

9) सर्वशुभ स्वीकृति को अभ्युदय सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण के अर्थ में सार्थक है।

Acceptance of universal well-being is meaningful for the evidence of comprehensive resolution, prosperity, fearlessness & coexistence.

10) स्वशुभ को सर्वशुभ में भागीदारी रहने के रूप में सार्थक है।

One’s own well-being is meaningful in the form of participation in universal well-being.

11) सच्चरित्र रूप के साथ स्वीकृति को संज्ञानीयता में नियंत्रित संवेदना के रूप में सार्थक है।

Acceptance of righteous character with looks (appearance) is meaningful in the form of sensations remaining restrained in cognisance.

12) संज्ञानीयता सहज स्वीकृति को सहअस्तित्व सहज ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहज रूप में सार्थक है।

Acceptance of cognisance is meaningful in the form of knowledge, wisdom & science of coexistence.

13) ज्ञान-विवेक-विज्ञान को सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में अनुभव मूलक विधि से प्रमाणित करने के रूप में सार्थक है।

Acceptance of knowledge, wisdom & science is meaningful in the form of producing evidence in coexistence by the realisation-rooted method.

14) बल के साथ स्वीकृति दयापूर्वक जीने देते हुए जीने के रूप में सार्थक है।

Acceptance of strength is meaningful in the form of letting live and living with kindness.

15) धन के साथ उदारता की स्वीकृति तन-मन पूर्वक सदुपयोग के रूप में सार्थक है।

Acceptance of generosity in wealth is meaningful in the form of righteous utilisation through body & mind.

16) पद के साथ न्याय पूर्वक जीने की स्वीकृति समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व के अर्थ में सार्थक है।

Acceptance of living with justice while holding a position is meaningful in the form of resolution, prosperity, fearlessness & coexistence.

17) बुद्धि के साथ ज्ञान सम्मत विवेक सहज स्वीकृति को मानवीय व्यवस्था, जीवन लक्ष्य को ज्ञान-विज्ञान-सम्मत विधि से सार्थक होने के रूप में समाधान है।

Acceptance of knowledge, wisdom & science along with *buddhi* is meaningful in the form of humane systems and *jeevan* goal by way of knowledge & science.

18) आज्ञापालन स्वीकृति सहयोग, अनुकरण कार्य के अर्थ में सार्थक है।

Acceptance of obedience is meaningful for cooperation and emulation.

19) अनुशासन स्वीकृति को सहयोग, अनुसरण पूर्वक जागृति के अर्थ में सार्थक है।

Acceptance of discipline is meaningful for awakening by way of cooperation and compliance.

20) स्वानुशासन स्वीकृति को जागृति, प्रमाणिकता प्रमाण के अर्थ में समाधान है।

Acceptance of self-discipline is meaningful for awakening, authenticity, evidence and resolution.

**7.4 विनिमय कोष कार्य व्यवस्था**

**Exchange-reserve (working) committee**

**स्वरूप**

**Its practical form**

गाँव में हर तरह का विनिमय “विनिमय-कोष समिति” द्वारा संचालित “ग्राम स्वायत्त विनिमय-कोष” द्वारा किया जायेगा। विनिमय कोष ग्राम स्वराज्य सभा में से अंगभूत कार्यकलाप होगा। इसका अपना कार्य नीति संविधान सम्मत होगा। यह संस्था लाभ-हानि मुक्त व्यवस्था पर कार्य करेगी। इसका मुख्य उद्देश्य गाँव के प्रत्येक परिवार व्यक्ति द्वारा उत्पादित वस्तुओं का विनिमय करना व उनकी आवश्यकता अनुसार वस्तुओं का विनिमय करना होगा। साथ ही यह कोष “उत्पादन कार्य सलाह समिति” व “शिक्षा-संस्कार समिति” के साथ मिलकर कार्य करेगी व श्रम मूल्य आधारित नियम के आधार पर विनिमय में ध्यान देगी।

All types of exchange in the village shall be done by ‘Village autonomous exchange-reserve’, which will be managed by ‘Exchange-reserve committee’. Exchange reserve shall be an integral activity in & of the village self-governance council. Its activities shall be in accordance with ethics and constitution. Working of this institution shall be devoid of profit or loss. Its main objective shall be the exchange of goods produced by each person and family of the village, as well as facilitating exchange of goods as per the needs. Along with this, it will work closely with ‘production advisory committee’ and ‘education-*sanskar* committee’ and focus on exchange based on labour value.

विनिमय कोष की कार्य पद्धति निम्न प्रकार से होगी :-

Working of the Exchange Reserve shall be as follows :-

विनिमय कोष नौकरी की मानसिकता को हटाकर उत्पादन की मानसिकता को लाने के लिए शिक्षा समिति के साथ सहयोग करेगा। वह गाँव में रह रहे सब व्यापारियों को ट्रेडिंग (संग्रह) के स्थान पर उत्पादनीकरण का कार्य के लिए प्रेरणा, ट्रेनिंग देगा। इस तरह लाभ-हानि मुक्त उत्पादन में विनिमय व्यवस्था जो कि श्रम के आदान-प्रदान व आवर्तनशीलता पर होगी, को स्थापित संचालित करने में विनिमय कोष कार्य करेगा।

Exchange Reserve shall cooperate with the education-*sanskar* committee to bring a shift from employee mindset to production mindset. They shall provide inspiration and training to all traders residing in the village for participating in production work instead of trading work. In this manner, the Exchange Reserve shall work for establishing and operationalising the exchange system (in production devoid of profit or loss) based on labour value and cyclicity.

**7.4 (1) कार्य**

**Working**

विनिमय व्यवस्था उत्पादित वस्तु का सुरक्षा पूर्वक विनिमय पद्धति पर आधारित होगी। प्रत्येक व्यक्ति जो स्थानीय सीमावर्ती निवासी है व उत्पादित वस्तुओं का विनिमय करता है और आवश्यकीय वस्तुओं को प्राप्त करता है, वह इस कोष का खातेदार सदस्य होगा। प्रत्येक परिवार का खाता विनिमय कोष में होगा। प्रत्येक परिवार अपनी आवश्यकता से अधिक उत्पादित वस्तुओं को विनिमय कोष को विनिमय के लिए प्रस्तुत करेगा। वस्तु मूल्य श्रम मूल्य के आधार पर तय होगा (निकटस्थ बाजार में जाकर बेचने से जो दाम मिलेंगे उसमें परिवहन मूल्य घटा कर)। जब तक आस-पास स्वराज्य व्यवस्था स्थापित ना हो तब तक निकटस्थ बाजार भाव अघोषित रूप में रहेगा, इस आय-व्यय स्पष्टता का आलेख विनिमय कोष में रहेगा। इस मूल्य को सदस्य के खाते में उसी दिन जमा कर दिया जाएगा। इसी तरह कोष प्रत्येक सदस्य को वस्तुओं का विनिमय करेगा व उनके श्रम मूल्यानुसार, उनके खाते में उतना मूल्य घटा-बढ़ा दिया जायेगा।

Security and exchange of the produced goods shall be the underlying objective of the exchange system. Every person who resides in the local limits and participates in the exchange of goods produced, and fulfils their needs, will be an account holder in this store. Every family shall have an account in this store. Every family shall deposit in the Exchange Store the goods produced by them, which are in excess of their own needs. Exchange value shall be based on labour value (which will be the market price minus the transportation costs). Nearest markets will remain the default till the time the self-governance system is established in neighbouring areas. The Exchange Store shall maintain clear debit and credit entries of the incoming and outgoing goods. Corresponding entries pertaining to the value of the goods shall be entered daily in the members’ accounts. In this manner, the Exchange Store shall exchange the goods for each member, and make entries in their account according to the labour value.

कोष इसी तरह बाहर (शहर व अन्य बाजारों) से वस्तुओं को थोक भाव में खरीदेगा व अपने सदस्यों को उपरोक्त पद्धति से विनिमय करेगा। इसी तरह कोष में गाँव के सदस्यों द्वारा विनिमय के लिए प्रस्तुत वस्तुएँ, जो स्थानीय आवश्यकता से बच जायेगी, उन्हें शहर व अन्य बाजारों में बेचेगा व उनका मूल्य प्राप्त करेगा, और उन-उन के खाते में जमा करेगा। इस क्रय विक्रय से जो कुछ भी अनायास लाभ होगा, उसको गाँव की सामान्य सुविधाओं को सुदृढ़ बनाने के लिए, गांव के विकास के लिए अर्पित किया जावेगा। यह कार्य ग्राम स्वराज्य सभा द्वारा संचालित किया जाएगा। कोष में प्रत्येक सदस्य की न्यूनतम वस्तु हमेशा जमा रहेगी ताकि कोष का कार्य सुचारू रूप से चलाया जा सके। जिसकी राशि नहीं होगी उसे कोष, ब्याज रहित ऋण देगा। जिसे वह सदस्य वस्तु का उत्पादन कर कालान्तर में कोष को लौटा देगा।

In a similar manner, the Store shall make bulk purchases from cities and neighbouring markets, and offer them for exchange to their own members. On the same lines, the surplus goods (after local needs have been met) shall be sold in the cities and neighbouring markets, and the money received shall be deposited in the members’ respective accounts. Any incidental profits from such sale-purchase shall be used for strengthening general village infrastructure and development of the village. Each member shall have continuous minimum deposit of goods in the Store, so that it can function properly. Those who are unable to make such deposits, may get loans which carry interest; and such loans can be repaid in due course of time in the form of goods produced.

यह पद्धति हर ग्राम-मोहल्ला परिवार सभा में समान रूप से वर्तमान रहेगा।

This way of working shall be uniform across villages and localities.

**7.4 (2) दायित्व**

**Responsibility**

जिन सदस्यों ने न्यूनतम से अधिक राशि खाते में रखी है, उनकी सहमति से, विनिमय कार्य के लिए आवश्यकता पड़ने पर, विनिमय कोष, उस राशि का उपयोग करेगा व अन्य राष्ट्रीय कृत बैंक से जो ब्याज मिलता है वह उनको देगा। यह विधि तब तक रहेगी, जब तक बैंक विनिमय प्रणाली अलग-अलग रहेगी।

There may be members whose deposit in the Store is more than the prescribed minimum. If need arises, the Exchange Reserve may use such excess deposits with the concurrence of the respective members, and shall pay them the prevailing interest rate offered by a nationalised bank. This mechanism shall continue until the prevailing banking system and the Exchange Reserve system are both operational.

गाँव से सभी प्रकार की कर वसूली का दायित्व विनिमय कोष का होगा। कर निर्धारण का कार्य ग्राम सभा करेगी।

Responsibility of collecting all taxes from the village shall be with the Exchange Store. Taxes shall be decided by the village council.

उपरोक्त बैंक का गारन्टीदार राष्ट्रीय कृत सहकारी बैंक होगा जो आरंभ से उसे कार्यशील पूंजी व अन्य ऋण देगा, हानि की भरपाई करेगा। विनिमय कोष ही आगे अपने सदस्यों को ऋण देगा वह उत्पादित वस्तुओं के रूप में विनिमय बैंक का ऋण लौटा देगा।

A nationalised cooperative bank shall provide guarantee to the above-mentioned bank who will provide the initial capital, and compensate for any losses should they occur.it will be the Exchange Store who shall provide loans to its members, and the members shall repay by way of the goods produced.

विनिमय कोष शनै:-शनै: सरकारी बैंक से ली गई पूंजी को लौटाता रहेगा। इस तरह सरकारी बैंक के रूपये का ज्यादातर उपयोग होगा।

Exchange Store shall gradually pay back the initial capital provided by the nationalised bank. In this manner, funds available with the nationalised bank shall be optimally utilised.

**7.4 (3) विनिमय कोष कार्य समिति**

**Exchange Store working committee**

आरंभ में ही मानवीय शिक्षा संस्कार सम्पन्न व्यक्ति विनिमय कोष को चलावेंगे। बाद में स्थानीय व्यक्ति जब व्यवहार शिक्षा व व्यवसाय शिक्षा में पारंगत हो जावेंगे तब वह उस बैंक को चलावेंगे।

Right from the beginning, the Exchange Store shall be managed by the persons accomplished in humane education-*sanskar*. Subsequently, when the local residents become accomplished in behavioural education and professional education, the bank shall be run by them (local residents).

सौ परिवार समूह के गाँव के लिए कम से कम तीन व्यक्ति विनिमय कोष को चलावेंगे। इसमें से एक व्यक्ति गाँव में उत्पादित वस्तुओं को अन्य बाजार में बेचेगा व अन्य बाजारों से आवश्यकीय वस्तुओं का क्रय कर विनिमय कोष में लाएगा। दूसरा व्यक्ति लेखा-जोखा व खातों की देख-रेख करेगा। तीसरा व्यक्ति सामान का विनिमय करेगा व उनको भंडार में रखने की व्यवस्था करेगा। आवश्यकता पड़ने पर अन्य व्यक्तियों को भी विनिमय कोष कार्य के लिए सभी मनोनीत पूर्वक नियत करेगा।

There shall be a team of minimum three persons to manage the Exchange Store in a village comprising a hundred families. Out of these three, one person shall be responsible for selling the surplus goods in, and buying the needed goods from, other markets, including transportation logistics. The second person shall be responsible for bookkeeping and accounting. The third person shall look after the exchange and storage of goods. More people may be nominated to participate in the Exchange Store whenever needed.

विनिमय कोष के काम-काज को सुगम बनाने के लिए कम्प्यूटर को प्रयोग में लाया जायेगा। कालान्तर में विनिमय कोष व्यवस्था पूरे राज्य व देश में स्थापित हो जाने पर ग्राम विनिमय कोष क्रम से ग्राम समूह क्षेत्र, मंडल, मण्डल समूह, मुख्य राज्य व प्रधान राज्य के विनिमय कोष समितियों के साथ आदान-प्रदान से जुड़ा रहेगा। “विनिमय कोष” संविधान के अनुसार कार्य करता रहेगा, जिसकी जिम्मेदारी विनिमय कोष समिति की होगी। जो समय-समय पर खातेदार सदस्यों की सामान्य बैठक बुलाकर, उनके सामने प्रतिवेदन प्रस्तुत करेगा। सामान्य बैठक में बहुमत के आधार पर मार्गदर्शन निर्णय प्राप्त करेगा। सभी समितियों का कार्यकलाप सभा पटल में प्रस्तुत रहेगा।

Computers shall be used for ease of working of the exchange reserve. Eventually, when the exchange reserve is established in the whole state and country, the village exchange reserve shall be connected to the village cluster, village area, block, block-cluster, district and state exchange reserve committees on reciprocal basis. ‘Exchange reserve’ shall work in accordance with the constitution, and responsibility for the same shall lie with the exchange reserve committee who shall periodically call public meetings of the account holders and present their performance report. They shall abide by the guidelines provided and decisions taken on the basis of majority. All committees shall present the report of their activities to the gathering (assembled members).

**7.4 (4) मूल्यांकन व्यवस्था**

**The system of evaluation**

विनिमय कोष समिति के कार्य का मूल्यांकन ग्राम सभा करेगी व समय-समय पर उन्हें मार्गदर्शन देगी। कृषि उपज और प्रौद्योगिकी उपज में श्रम मूल्य के आधार पर मूल्यांकन-संतुलन को स्थापित करने वाली व्यवस्था रहेगी।

Working of the exchange reserve committee shall be evaluated by the village council. They shall also provide guidance from time to time. System shall be in place to establish evaluation & balance on the basis of labour value in agricultural produce and industrial production.

**7.5 स्वास्थ्य संयम कार्य व्यवस्था समिति**

**Health-*sanyam* (working) committee**

**ग्राम स्वास्थ्य समिति : कार्य एवं दायित्व**

**Village health committee : Duties and responsibilities**

ग्राम के सभी व्यक्तियों के स्वास्थ्य एवं संयम की जिम्मेदारी ग्राम स्वास्थ्य समिति की होगी। यह समिति शिक्षा संस्कार समिति के साथ मिलकर कार्य करेगी। आवश्यकतानुसार स्वास्थ्य संयम संबंधी पाठ्यक्रम और कार्यक्रम को तैयार कर शिक्षा में सम्मिलित कराएगी। ग्राम में चिकित्सा केन्द्र की व्यवस्था, योगासन, व्यायाम, अखाड़ा, खेल कूद व्यवस्था, स्कूल के अलावा खेल मैदान (स्टेडियम), सांस्कृतिक भवन क्लब आदि व्यवस्था का दायित्व ग्राम स्वास्थ्य समिति का होगा। समिति स्थानीय रूप से उपलब्ध जड़ी-बूटियों द्वारा औषधि बनाने के लिए आवश्यकीय व्यवस्था करेगी। इसके साथ ही पशु चिकित्सा केन्द्र की व्यवस्था का दायित्व भी स्वास्थ्य समिति का होगा। समिति “समन्वित चिकित्सा” (आयुर्वेद, एलोपैथी, होम्योपैथी, यूनानी, योग, प्राकृतिक, मानसिक) के उन्नयन की व्यवस्था करेगी।

Responsibility of health & *sanyam* of all village residents shall be with the health committee. This committee shall work closely with the education-*sanskar* committee. They shall develop curriculum and programs related to health-*sanyam*, and get these included in the education. Along with this, as per the needs, the village health committee shall be responsible for the functioning of the health centre, *yoga*, exercises, gym, sports, stadium, cultural centre, club, etc. in the village. This committee shall implement systems to make medicines from locally available herbal plants. Along with this, responsibility for the veterinary centre shall also be with this committee. This committee shall implement systems for the advancement of ‘all-inclusive health’ (ayurveda, allopathy, homoeopathy, Greek, yoga, natural and mental).

सब ग्राम वासियों को स्वास्थ्य, व्यवहार, आचरण संबंधी मूल्यों का मूल्यांकन, उपयोगिता व प्रयोजन मूलक पद्धति से समिति व्यवस्था प्रदान करेगी। अलंकार, प्रसाधन कार्य, शरीर स्वच्छता, महिलाओं बच्चों को रोग-निरोधी उपाय और सीमित व संतुलित परिवार के रूप में व्यवहृत होने के लिए व्यवस्था प्रदान करेगी। ऐसी जागृति के लिए व्यापक कार्यक्रम को समिति संचालित करेगी। सामान्य रूप में घटित अस्वस्थता को दूर करने के लिए, घरेलू चिकित्सा में प्रत्येक परिवार को अथवा प्रत्येक परिवार में एक व्यक्ति को प्रवीण बनाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाए जाएँगे। घरेलू चिकित्सा से रोग शमन न होने की स्थिति में स्थानीय केन्द्र द्वारा चिकित्सा होगी। वहाँ राहत न मिलने की स्थिति में, निकटवर्ती चिकित्सा केन्द्र में पहुँचाने और चिकित्सा सुलभ कराने की व्यवस्था ग्राम स्वास्थ्य समिति करेगी। चिकित्सा केन्द्र, चिकित्सालय, मातृत्व केन्द्र, प्रसवोत्तर केन्द्र की स्थापना यथा संभव ग्राम समूह परिवार सभा द्वारा किये जावेंगे।

This committee shall establish systems for health, behaviour, evaluation of values related to conduct, by way of usefulness and purposefulness. They shall establish systems for providing clothing, toiletries, personal hygiene, general precautions for females and children, and family planning. This committee shall make elaborate programs for achieving these objectives. They shall run various programs for recovering from minor ailments by imparting knowledge of home-made remedies to each family, or to one person in each family. If the patient doesn’t recover by home medicines, treatment shall be provided at the local health centre. If even that doesn’t provide relief, the village health committee shall make arrangements to take the patient to a bigger health centre, and ensure that the requisite treatment is provided. As far as possible, arrangements for setting up medical centres, hospitals, maternity homes and post-natal care centres shall be made by the village-cluster family councils.

भाग – आठ

ग्राम/मोहल्ला व्यवस्था

Part - 8

Village/locality system

**8.1 स्वरूप व निर्वाचन :-**

**Structure and election :-**

ग्राम का प्रत्येक परिवार दस (10) व्यक्तियों के स्वरूप में गण्य होगा। यदि किसी परिवार में उस से कम व्यक्ति हैं तो वह अपने परिवार के निकटस्थ, अन्य परिवारों से मिलकर, एक परिवार सभा का गठन करेंगे। परिवार का प्रत्येक सदस्य युवा व वयस्क सम्मिलित रुप में परिवार सभा का गठन करेंगे। परिवार सभा के सब सदस्य संयुक्त रुप से एक सम्मति से व्यक्ति को समाधान, समृद्धि सहित उपयोगिता के आधार पर परिवार समूह सभा के लिए निर्वाचित करेंगे जो “सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान” ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्न रहेगा और उत्पादन कार्य में सहायक रहेगा। अखण्ड समाज व्यवस्था सूत्र−व्याख्या में पारंगत रहेगा, वस्तु विद्या में सर्वाधिक पारंगत होंगे।

Each family in the village shall consist of ten (10) persons. If a family has lesser members, they shall constitute a family council in conjunction with some other neighbouring family or families. All members of a family, youth & adults, shall constitute the family council. All members of the family council shall unanimously elect one person among themselves for the family-cluster council, on the basis of resolution, prosperity & usefulness. This person shall be accomplished in knowledge (of holistic view of coexistence, of *jeevan*), wisdom and science, and shall assist in production activities. This person shall have expertise in maxims and elaboration of undivided society, universal system and shall be professionally proficient.

इस प्रकार 10 परिवारों से निर्वाचित दस समझदार सदस्य एक ‘परिवार समूह सभा’ का गठन किया जायेगा। ऐसे प्रत्येक 10 “परिवार समूह सभा” में से एक एक व्यक्ति को, ग्राम सभा के लिए निर्वाचित करेगा। इसी प्रकार 10 परिवार समूहों से निर्वाचित 10 सदस्य एक ग्राम सभा का गठन करेंगे, जिसमें सभी दस सदस्यों का समानाधिकार रहेगा। यह सभा में समझदार परिवार का संयुक्त वैभव रुप में रहेगा। सामान्यत: सौ परिवार मिलकर एक “ग्राम स्वराज्य सभा” गठन करेंगे। जिसमें 10 निर्वाचित सदस्य होंगे। यदि किसी ग्राम में 100 (एक सौ) परिवार से ज्यादा जनसंख्या है तो उसी 10 के गुणांक में उस ग्राम सभा के सदस्य होंगे।

उदाहरण के लिए यदि गाँव की जनसंख्या 2000 (दो हजार) है तो उस “ग्राम सभा” में 20 सदस्य होंगे।

In this manner, ten wise members from ten families shall constitute a ‘family-cluster council’. Each such ten family-cluster councils shall elect a person among themselves for the village council. These ten members (one each from each family-cluster) shall constitute a village council. All these ten members shall have equal authority. This council shall be the combined grandeur of wise families. Generally, a hundred families shall constitute a ‘village self-governance council’ which will have ten elected members. If a village has more than 100 (one hundred) families, this village council shall have a proportional number of members, in multiples of ten.

For example, if the population of a village is 2,000 (two thousand), this village council shall have 20 members.

**8.2 ग्राम सभा से विश्व राज्य सभा का निर्वाचन :-**

**Election from village council to the world council :-**

कालांतर में उपर्युक्त व्यवस्था के अनुसार प्रत्येक ग्राम सभा के निर्वाचित सदस्य अपने दस सदस्यों में से एक सदस्य को, “ग्राम समूह सभा” में, ग्राम समूह सभा के दस सदस्य में से एक को “क्षेत्र सभा के लिए” क्षेत्र सभा के दस सदस्यों में से एक सदस्य “मंडल सभा के लिए”, मंडल सभा के 10 सदस्यों में से एक सदस्य को “मंडल समूह सभा के लिए”, मंडल समूह सभा के दस सदस्यों में से एक सदस्य को “मुख्य राज्यसभा के लिए”, मुख्य राज्य सभा के दस सदस्यों में से एक सदस्य को “प्रधान राज्य सभा के लिए” व प्रधान राज्य सभा के दस सदस्यों में से एक सदस्य को “विश्व राज्य सभा” के लिए निर्वाचित करेंगे। इस प्रकार प्रत्येक स्तर में प्रत्येक व्यक्ति सिर्फ 10 व्यक्तियों का मूल्यांकन कर अगली सभा के लिए सदस्य निर्वाचित करेंगे।

Following the above system, the elected ten members of each village council shall elect one member among themselves for the ‘village cluster council’, one out of ten members of each village-cluster council shall be elected for the ‘village area council’, one out of ten members of each village-are council shall be elected for the ‘block council’, one out of ten members of each block council shall be elected for the ‘block-cluster council’, one out of ten members of each block-cluster council shall be elected for the ‘district council’, one out of ten members of each district council shall be elected for the ‘state council’, and one out of ten members of each state council shall be elected for the ‘world council’. In this manner, at each tier, a person shall evaluate only ten persons so as to elect one for the next tier.

**8.3 निर्वाचित सदस्यों की अर्हता :-**

**Qualification (or eligibility) of the elected members :-**

परिवार से लेकर ग्राम-सभा तक प्रत्येक निर्वाचित सदस्य की अर्हता निम्न होगी :-

Following shall be the eligibility of a member elected for family council and village council :-

1. उसकी आयु कम से कम 18 वर्ष होगी।

Their age shall be minimum 18 years.

2. वह ज्ञान, विवेक, विज्ञान में पारंगत व समाधान, समृद्धि पूर्वक जीता हुआ समझदार परिवार में, से, के लिए होगा। वह जीवन ज्ञान से परिपूर्ण होगा अर्थात् स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता का सम्मान, प्रतिभा एवं व्यक्तित्व में संतुलन सम्पन्न और व्यवसाय में स्वावलंबी व व्यवहार में सामाजिक होगा।

They shall be experts in knowledge, wisdom & science, and shall be in, from & for wise families which are living with resolution & prosperity. They shall be proficient in ‘knowledge of *jeevan*’; in other words, they shall have the merits of self-confidence, respect for excellence, balance in talent & personality, self-reliance in profession and sociability in behaviour.

3. मानवीय आचरण संबंधों का पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति, स्वधन, स्वनारी/स्व पुरुष, दया पूर्ण कार्य-व्यवहार विन्यास तन-मन-धन रुपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा के रूप में वर्तमान में प्रकाशित प्रमाणित होगा।

Such a member shall be evidence and manifestation of humane conduct, recognition of relationships, fulfilling of values, evaluation, mutual satisfaction, righteous ownership of wealth, righteous man-woman relationship, kindness in work & behaviour. Right utilisation and security of the resources of body, mind & wealth shall be clearly visible and evident in their conduct.

**8.4 कार्यक्षेत्र :-**

**Jurisdiction :-**

1. ग्राम सभा का कार्य कम से कम 100 परिवारों के साथ होगा। उसका भू-क्षेत्र ग्राम सीमा तक होगा। ग्राम सीमावर्ती क्षेत्र की समस्त भूमि, वन, वन संपदा, खनिज, जल स्त्रोत व अन्य संपदाएँ ग्राम सभा के अधिकार क्षेत्र में होंगी।

A village council shall work with a minimum 100 families. Its jurisdiction shall be within the geographical boundary of the village. All land, forests, minerals, water resources and other natural resources within the boundary of the village shall be within the jurisdiction of the village council.

2. ग्राम सभा सामान्यत: ग्राम के सभी परिवारों का प्रतिनिधित्व करेंगी। क्योंकि ग्राम प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन सहज फलन में ही हर परिवार अपने में आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना आवश्यक रहेगा।

A village council shall normally represent all the families in a village. It shall be possible for all the families in a village to produce more than their needs only as a result of deployment of labour on the natural resources available in the village.

**8.5 कार्यकाल :-**

**Tenure :-**

ग्राम सभा कम से कम चार वर्ष के लिए निर्वाचित होगी। हर चार वर्ष बाद परिवार व “परिवार समूह सभा” के लिए अपने-अपने प्रतिनिधि को फिर से निर्वाचित करने का अधिकार होगा। हर “परिवार समूह सभा” के दस सदस्यों को ग्राम सभा में फिर से निर्वाचनपूर्वक चुनने का अधिकार होगा।

A village council shall be elected for a minimum tenure of four years. After every four years, a family and family-cluster shall have the prerogative to again elect their representatives. The ten members of the family-cluster council shall also have the prerogative to again elect a representative from among themselves for the village council.

**8.6 कार्यशैली :-**

**Way of working :-**

प्रत्येक ग्राम सभा, “ग्राम स्वराज्य व्यवस्था” को स्थापित करने के लिए निम्न 5 समितियों का गठन ग्राम सभा से मनोनीत सदस्य करेंगे :-

Each village council, with the objective of establishing the ‘village self governance system’, shall constitute the following five councils. These council shall comprise the members nominated by the village council :-

1) मानवीय शिक्षा संस्कार समिति

2) उत्पादन कार्य व सलाहकार समिति

3) वस्तु विनिमय कोष समिति

4) स्वास्थ्य संयम समिति

5) मानवीय न्याय सुरक्षा समिति

Humane education-*sanskar* committee

Production-work and advisory committee

Exchange-storage committee

Health-*sanyam* committee

Humane justice-security committee

उपर्युक्त समितियां ग्राम सभा के मार्ग दर्शन के आधार पर कार्य करेंगी। उपरोक्त समितियां क्रम से ग्राम में शिक्षा संस्कार व्यवस्था, उत्पादन कार्य व्यवस्था, विनिमय कोष व्यवस्था, स्वास्थ्य संयम व्यवस्था व न्याय सुरक्षा व्यवस्था को सर्व सुलभ करेगी। उपरोक्त समिति के सदस्यों का मनोनयन ग्राम सभा करेगी। प्रत्येक मनोनीत सदस्य इन समितियों के लिए अंश कालिक सदस्य होगा एवं वह अपनी समिति का कर्तव्य एवं दायित्वों का निर्वाह अपने निजी व्यवसाय के अलावा करेगा। वयोवृद्ध स्त्री व पुरुष, जो जीवन विद्या व वस्तु विद्या में पारंगत होंगे, उनको समितियों के अंश कालिक व पूर्ण कालिक सदस्य होने का अवसर रहेगा। प्रत्येक समिति का विस्तृत कार्यक्रम अगले खंडों में विस्तार से दिया गया है।

ग्राम स्वराज्य व्यवस्था के लक्ष्य निम्न होंगे :-

These committees shall work as per guidelines of the village council. These committees shall make the education-*sanskar* system, production-work system, exchange-storage system, health-*sanyam* system, and justice-security system available and accessible to everyone. Members of these committees shall be nominated by the village council. Such nominated members shall be working part-time in the committee and will discharge their duties and responsibilities in the committee in addition to their own personal occupations. Elderly males and females, who are proficient in knowledge of *jeevan* and in professional knowledge, shall have the opportunity to be part-time or full-time members of these committees. Detailed programs of each committee are described in the following sections.

The village self-governance system shall have the following goals :-

1. गाँव के प्रत्येक नर-नारी को मानवीय शिक्षा-संस्कार से संपन्न करना।

To accomplish all males & females in the village in humane education-*sanskar.*

2. प्रत्येक नर-नारी को तकनीकी में निपुणता-कुशलता को सजह सुलभ करना।

To make skills & proficiency in technology accessible to all males & females.

3. प्रत्येक नर-नारी को व्यवहार में सामाजिक होने के लिए ज्ञान, विवेक, विज्ञान सहज शिक्षा संस्कार सर्व सुलभ करना जिससे न्याय सुरक्षा प्रमाणित हो।

To make education-*sanskar* of knowledge, wisdom & science universally accessible to all males & females so that they become sociable in behaviour, leading to the evidence of justice-security.

4. प्रत्येक नर-नारी को किसी न किसी उत्पादन कार्य में प्रवृत्त प्रोत्साहित करना।

To encourage all males & females to take interest in some production activity or the other.

5. उत्पादित वस्तुओं को विनिमय-कोष द्वारा लाभ-हानि मुक्त पद्धति से लेन-देन करने की व्यवस्था प्रदान करना और ग्रामवासियों के लिए आवश्यकीय वस्तुओं को उपलब्ध कराना विनिमय कोष कर्त्तव्य रहेगा।

It shall be the duty of exchange-reserve to provide a system free from profit or loss for exchange of the produced goods by the exchange-store, and to make available to the village residents all the goods needed.

6. प्रत्येक नर-नारी को न्याय व सुरक्षा सहज सुलभ कराना। साथ ही सुधारवादी प्रक्रिया से गलती व अपराध प्रवृत्तियों का निराकरण करना।

To make justice & security available to all males and females. Along with this, eradication of the tendencies of doing wrongs or committing crimes by reformative methods.

7. प्रत्येक नर-नारी को अपने स्वास्थ्य के प्रति आश्वस्त रहने का अवधारणापूर्वक संकल्पबद्ध करना, व्यायाम व खेलों के लिए प्रोत्साहित करना, संक्रामक रोग-निरोधी उपायों की उपयोगिता से अवगत कराना। साथ ही हर परिवार में सहज व उपकारी चिकित्सा की व्यवस्था करना।

To make all males & females confident and determined towards their own health by way of understanding, to encourage them for physical exercises and sports, and to make them aware about how to prevent infectious diseases. Along with this, to make provision for natural treatment methods in each family.

8. प्रत्येक नर-नारी में स्वयं के प्रति विश्वास, श्रेष्ठता के प्रति सम्मान, ग्राम जीवन, परिवार-व्यवस्था के प्रति विश्वास व निष्ठा उत्पन्न करना। प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन रहने में निष्ठा स्थापित करना।

To establish in all males & females self-confidence, respect for excellence, confidence and commitment towards village life and family system. To establish commitment towards balance in talent and personality.

9. प्रत्येक नर-नारी/परिवार अपनी आवश्कता से अधिक उत्पादन करे, ऐसा सुनिश्चित उपाय करना।

To take steps to ensure that all males & females / families produce more than their needs.

10. ग्राम के लिए सामान्य सुविधाओं की व्यवस्था करना।

To make arrangements for general village development and infrastructure.

11. व्यक्तित्व व प्रतिभा का संतुलित उदय हो, ऐसा सुनिश्चित उपाय करना। इसके लिए समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी पूर्वक जीने में निष्ठा सम्पन्न करना।

To take steps to ensure balanced development of personality and talent. To establish commitment towards living with understanding, honesty, responsibility & participation.

12. प्रत्येक परिवार में भौतिक समृद्धि व बौद्धिक समाधान साक्षित होने का उपाय करना, समस्त ग्राम वासियों की परस्परता में अभयता व सहअस्तित्व चरितार्थ होने का सभी उपाय करना।

To take steps to ensure evidence of material prosperity and intellectual resolution in each family. To take all possible steps to materialise fearlessness & coexistence among all village residents.

**8.7 ग्राम/मोहल्ला परिवार सभा सदस्यों का कर्तव्य व दायित्व :-**

**Duties & responsibilities of the village/locality council members :-**

1. समझदारी से समाधान एवं श्रम से समृद्धि सिद्धांत पर ग्राम सभा कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करेगा।

The village council shall implement all programs on the principle of ‘resolution through understanding, and prosperity through human labour’.

2. ग्राम सभा पूर्ण रूप से ग्रामवासियों के प्रति उत्तरदायी होगी। साथ ही वह “ग्राम समूह सभा” के प्रेरणा व उनके द्वारा दिए गए सुझावों पर निर्णय लेगी।

The village council shall be fully accountable to the village residents. Along with this, they shall take decisions based on inspiration and suggestions of the ‘village cluster council’.

3. सर्वेक्षण, आंकलन व अध्ययन के आधार पर चिन्हित प्रयोजनार्थ प्रत्येक परिवार के लिए समयबद्ध स्वराज्य व्यवस्था सहज कार्य योजना बनाएगी व क्रियान्वयन के लिए विभिन्न समितियों को आवश्यक निर्देश देगी।

The village council shall prepare relevant and purposeful action plans for time-bound achievement of the self-governance system in each family on the basis of survey, assessment & study; and shall give necessary directions to the concerned committees for implementation.

4. ग्राम की पाँचों समितियों के साथ उनके अपने-अपने लक्ष्य प्राप्त करने में पूर्ण सहयोग देगी व उनके लिए जो भी सुविधायें, तकनीकी ज्ञान, विज्ञान आदि की आवश्यकता होगी उसे उपलब्ध कराएगी।

The village council shall fully support the five committees in the village for achievement of their goals, and shall make all facilities, technical knowledge, guidance, etc. available to them as per their needs.

5. “विनिमय कोष” आवश्यकता के आधार पर राष्ट्रीयकृत बैंक के बीच संयोजन (एजेंसी) का कार्य करेगी।

The village council shall act as an intermediary (agency) between the ‘exchange-storage’ and the nationalised bank, based on the needs of ‘exchange-storage’.

6. पाँचों समितियों के कार्यों का समय-समय पर मूल्यांकन करेगी व उन्हें आवश्यक निर्देश देगी।

The village council shall periodically evaluate the working of the five committees, and give them appropriate directions.

7. सर्वेक्षण, आंकलन, अध्ययन व प्राथमिकताओं के आधार पर ग्राम में सामान्य सुविधाओं की व्यवस्था करेगी। इस दिशा में यदि किसी समिति व अन्य संस्थाओं के सहयोग की आवश्यकता हुई तो उसे प्राप्त करेगी।

The village council shall make arrangements of general facilities and infrastructure in the village on the basis of survey, assessment, study & priorities. If support of any committee or other organisations is required in this regard, they shall ask for and obtain the same.

8. निम्न सामान्य सुविधाओं की व्यवस्था ग्राम सभा द्वारा की जायेगी :-

The village council shall arrange for the following general facilities :-

1) प्रत्येक परिवार के लिए आवास का प्रावधान। इसके लिए स्थानीय व्यक्तियों व वस्तुओं का अधिक से अधिक उपयोग किया जावेगा।

Provision for shelter for each family; for this, local manpower and resources shall be used to the maximum extent.

2) सस्ती शोधन विधि द्वारा शुद्ध व पवित्र पीने के पानी की व्यवस्था।

Provision of clean and safe drinking water by economical treatment methods.

3) जल-मल निकास की व्यवस्था करना एवं कृषि-बगीचा के लिए उपयोग करना।

Provision of drainage and sewer lines, and their usage for agriculture and horticulture.

4) कृषि के साथ पशुपालन आवश्यक होने के कारण “गोबर-गैस प्लांट” द्वारा, गोबर-गैस गाँव में सामूहिक या व्यक्ति-परिवारगत रूप से उपलब्ध कराना। प्राकृतिक गैस उपलब्ध होने की स्थिति में उसका सर्वाधिक उपयोग करने की प्रणाली को विकसित करना।

Animal husbandry is essential with agriculture. Availability of bio-gas to the village residents, collectively or individually, by use of ‘biogas plants’. If biogas is available, implementation of ways to develop the mechanism for its maximum use.

5) गोबर खाद का कंपोस्ट खाद के लिए व्यापक व्यवस्था करना।

To make large scale arrangements for use of animal dung and compost as fertilisers.

6) सौर-ऊर्जा का सर्वाधिक प्रयोग करने की प्रणाली विकसित करना ताकि उसका उपयोग पानी पंप करने, खाना पकाने, वाष्पीकरण, अनाज सुखाने, ठंडा या गर्म करने में किया जा सके, जिससे लकड़ी, कोयला आदि परंपरागत ईधनों को जलाने से रोका जा सके। इसी संदर्भ में पवन चक्की व जल प्रवाह शक्ति की उपयोगिता की संभावना का पता लगाना व क्रियान्वयन करना, बायोडीजल स्थानीय स्रोतों से सम्पन्न करना, विविध विधि से ऊर्जा संतुलन होना।

To develop the mechanism for maximum use of solar energy so that it can be used for water pumping, cooking, evaporation, grain drying, cooling or heating, with an objective to stop the use of burning traditional fuels like wood & coal. In this context, to explore the possibility of using and implementing wind mills and hydroelectric power, to source biodiesel from local resources, and to accomplish energy balance in diverse ways.

7) प्रत्येक घर के साथ शौचालय व सामूहिक शौचालय की व्यवस्था करना। शौचालय से बहते पानी को कृषि उद्यान में उपयोग करना।

To make arrangements for toilets in all houses, as well as public toilets. To use drain and sewer water for agriculture and horticulture.

8) सड़क मार्ग, रेल यातायात व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना व निकट की मंडियों व बाजारों को सड़कों से जोडऩा।

To strengthen road and rail infrastructure, and to provide road connectivity to nearby markets.

9) दूरभाष व दूरसंचार सेवा, डाक घर, बैंक, चिकित्सा आदि की व्यवस्था करना।

To make arrangements for telecommunications, post office, bank, hospitals, etc.

10) ग्राम के लिए पाठशाला, चिकित्सा केन्द्र, विनिमय कोष के लिए भवन, गोदाम, बहुद्देशीय भवन की व्यवस्था करना जो न्याय सभा, संबोधन सभा, सांस्कृतिक सभा, विवाह व मिलन सभा, प्रार्थना सभा, स्वागत सभा व छाया के अंदर खेलने के लिए उपयोगी रहेगा।

To make arrangements for primary school, health centre, building for exchange-store, godown, and a multi-purpose building which will be useful for justice council meetings, public meetings, cultural meetings, wedding ceremonies, prayer meetings, welcome assemblies and indoor sports.

**8.8 समझदार परिवार समूह सभा व परिवार सदस्य के कर्त्तव्य व दायित्व :-**

**Duties & responsibilities of a members of a wise family and family-cluster council :-**

1. परिवार सदस्य, सदस्यों के साथ व्यवहार, आचरण, स्वास्थ्य, उत्पादन व उत्पादन संबंधी साधनों के संदर्भ में स्वयं प्रामाणिक रहते हुए, उनके अनुरूप सभी सदस्यों को होने के लिए प्रेरणा स्रोत बने रहेंगे।

Family members, while remaining authentic with reference to their behaviour with other members, conduct, health, production and resources related to production, shall be sources of inspiration to all members regarding these aspects.

2. परिवार प्रधान, परिवार के सभी सदस्यों का मूल्यांकन करेंगे। परिवार प्रधान का मूल्यांकन, परिवार समूह सभा करेगा। आचरण के लिए मूल्यांकन का आधार स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष व दयापूर्ण कार्य रहेगा।

व्यवहार के मूल्यांकन का आधार मानव व नैसर्गिक संबंधों व उनमें निहित मूल्यों की पहचान व निर्वाह से है।

Head of the family shall do the evaluation of all family members. Evaluation of the head of the family shall be done by the family-cluster council. Righteous wealth, righteous man-woman relationship, and kindness in work & behaviour shall be the basis of evaluation of conduct.

Relationship with humans and rest of the nature, and recognition and fulfilment of values inherent therein, shall be the basis of evaluation of behaviour.

3. परिवार में किसी से गलती होने की स्थिति में सुधारने का कर्त्तव्य परिवार के सभी सदस्यों का होगा। इसमें परिवार प्रधान उभयपक्षीय प्रेरक का कार्य करेगा। उभय पक्ष का तात्पर्य परिवार सदस्य एवं परिवार समूह सदस्य।

Responsibility to reform, in case some family member commits a mistake, shall be with all the family members. In such a situation, the head of the family shall guide the affected members. ‘Affected members’ means members of the family or of family-cluster.

4. परिवार संबंधी समस्त जानकारी, जिसके आधार पर परिवार के सदस्यों को शिक्षा-संस्कार, उत्पादन कार्य आदि में प्रवृत्त व सभी तथ्यों को एकत्रित कर परिवार समूह सभा व ग्राम सभा को उपलब्ध कराने का कर्त्तव्य परिवार प्रधान का होगा। परिवार में यदि कोई व्यक्ति, किसी विशेष योग्यता, हस्तकला, हस्त-शिल्प, कृषि व अन्य तकनीकी या साहित्य-कला में माहिर है, तो यह जानकारी भी ग्राम की संबंधित समिति को उपलब्ध कराएगा।

It shall be the duty of the head of the family to compile all information related to the family members regarding their aptitude in education-*sanskar*, production-work etc., and share the same to the village-cluster council and village council. If some family member has some special skills, talent or aptitude in drawing, handicrafts, agriculture or some other technology, or arts & literature, this information shall also be shared with the concerned village committee.

5. परस्पर परिवारों के विवादों व उत्पन्न कठिनाइयों के निवारण का दायित्व उन परिवार के प्रधानों व परिवार समूह सभा का होगा। परिवार समूह सभा द्वारा विवाद हल न होने की स्थिति में ही विवाद “न्याय सुरक्षा समिति” के पास प्रस्तुत होगा।

Responsibility to resolve any differences or problems arising in or between the families shall be with the respective heads of the families and the family-cluster council. If the family cluster council is unable to resolve it, the matter shall be brought to ‘justice security committee’.

**8.9 ग्राम परिवार सभा की समितियाँ :-**

**Committees of the village family council :-**

**8.9 (1) ग्राम में शिक्षा संस्कार समिति**

**Education-*sanskar* committee in the village**

ग्राम शिक्षा संस्कार व्यवस्था का संचालन “शिक्षा संस्कार समिति” करेगी। शिक्षा संस्कार समिति में कम से कम एक व्यक्ति होगा या आवश्यकतानुसार अधिक हो सकते हैं जिसका निश्चयन ग्राम सभा करेगी।

Village education-*sanskar* system shall be managed by ‘education-*sanskar* committee’. There shall be at least one person in the education-*sanskar* committee, however there may be more if needed. It will be decided by the village council.

**शिक्षा संस्कार समिति के सदस्य की अर्हता :-**

**Qualification (or eligibility) of a member of education-sanskar committee :-**

शिक्षा संस्कार समिति के सदस्यों की अर्हताएँ निम्न प्रकार होंगी:-

Following shall be the eligibility of a member of education-*sanskar* committee :-

1) प्रत्येक सदस्य जीवन-विद्या एवं वस्तु-विद्या ज्ञान, विवेक, विज्ञान में पारंगत रहेगा।

2) वह व्यवहार में सामाजिक व व्यवसाय में स्वावलम्बी होगा।

3) उसमें स्वयं में विश्वास व श्रेष्ठता के प्रति सम्मान करने का प्रमाण रहेगा।

4) प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलित होने का प्रमाण रहेगा।

Each member shall be expert in knowledge (of *jeevan* and in profession), wisdom & science.

They shall be sociable in behaviour and self-reliant in occupation.

They shall be evidence of self-confidence, and respect for excellence.

They shall be evidence of balance in talent and personality.

**शिक्षा संस्कार व्यवस्था के मूल उद्देश्य :-**

**Main objectives of education-*sanskar* system :-**

**प्रत्येक मानव को -**

**To make each person expert in -**

1) व्यवहार में सामाजिक

2) व्यवसाय में स्वावलंबी

3) स्वयं के प्रति विश्वासी

4) श्रेष्ठता के प्रति सम्मान करने में पारंगत, जिससे व्यक्तित्व व प्रतिभा का संतुलन प्रमाणित हो।

Sociability in behaviour

Self-reliance in occupation

Self-confidence

Respect for excellence, which will lead to evidence of balance in personality & talent.

**शिक्षा संस्कार व्यवस्था का स्वरूप :-**

**Practical form of education-*sanskar* system :-**

1) प्रत्येक मानव को व्यवहार शिक्षा में पारंगत बनाना।

To make all humans experts in behavioural education.

2) प्रत्येक को व्यवसाय शिक्षा में पारंगत कर एक से अधिक व्यवसायों में स्थानीय आवश्यकताओं के आधार पर निपुण व कुशल बनाना।

To make everyone expert in professional education, leading to skills & proficiency in more than one profession.

3) प्रत्येक को साक्षर, समझदार बनाना।

To make everyone literate and wise.

4) ग्राम सभा पाठशाला की व्यवस्था स्थानीय आवश्यकतानुसार करेगी।

Primary school in the village shall be set up as per the local needs.

5) आयु वर्ग के आधार पर शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था होगी।

System shall cater to providing education as per the age group.

**शिक्षा की व्यवस्था ग्रामवासियों के लिए निम्नानुसार की जावेगी -**

**System of education for the village residents shall be implemented as below -**

1) बाल शिक्षा।

Primary education

2) बालक जो स्कूल छोड़ दिए हैं व दस वर्ष से अधिक आयु के हैं, ऐसे बच्चों को 30 वर्ष तक के अन्य अशिक्षित व्यक्तियों के साथ व्यवहार शिक्षा व व्यवसाय शिक्षा में पारंगत बनाने की व्यवस्था रहेगी।

System shall facilitate expertise in behavioural education and professional education to school dropouts below the age of 10, as well as to other illiterate persons above the age of 30.

3) 30 वर्ष की आयु से अधिक स्त्री पुरुषों को साक्षर-समझदार बनाकर व्यवहार शिक्षा में पारंगत बनाने की व्यवस्था होगी।

System shall facilitate expertise in behavioural education, by way of literacy and wisdom, to males and females above the age of 30.

4) स्थानीय परिस्थितियों के आधार पर आवश्यकता होने पर स्त्री पुरुषों के लिए अलग शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था होगी।

System shall facilitate separation between males and females during education, depending upon the local circumstances..

5) अनावश्यक, अव्यवहारिक, असामाजिक आदतों को छुड़ाने के लिए अलग से शिक्षा व्यवस्था होगी जो कि “स्वास्थ्य संयम समिति" के साथ मिलकर कार्य करेगी।

There shall be a separate wing in the education system which will facilitate getting rid of unnecessary, immoral & wrong habits. This wing will work in conjunction with the ‘health-*sanyam* committee’.

6) व्यवसाय शिक्षा के लिए “शिक्षा संस्कार समिति” “उत्पादन सलाहकार समिति” एवं “वस्तु विनिमय कोष समिति” के साथ मिलकर कार्य करेगी व सम्मिलित रूप से यह तय करेगी कि ग्राम की वर्तमान व भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर, किस-किस व्यक्ति को, किस-किस उत्पादन की शिक्षा दी जाए। “विनिमय कोष समिति” ऐसे उपायों की जानकारी देगी, जिनकी गाँव के बाहर अच्छी माँग है व जिसे वह अच्छी कीमत पर विनिमय कर सकती है।

Regarding professional education, ‘education-*sanskar* committee’ shall work in conjunction with ‘production advisory committee’ and ‘goods exchange-storage committee’. Keeping in mind the present and future needs of the village, they will decide which village resident needs or deserves professional education in which area. ‘Exchange-storage committee’ shall update on products which are in high demand outside the village for which a good price can be realised.

7) कृषि, पशुपालन, ग्राम शिल्प, कुटीर उद्योग, ग्रामोद्योग व सेवा में जो पहले से पारंगत हैं , उनके द्वारा ही अन्य ग्रामवासियों को पारंगत करने की व्यवस्था की जायेगी।

System shall facilitate imparting the skills of agriculture, animal husbandry, village crafts, cottage industries, village industries and services by those who already have expertise in these, to other village residents.

8) यदि उपरोक्त शिक्षा में कभी उन्नत तकनीकी विज्ञान व प्रौद्योगिकी को समावेश करने की आवश्यकता होगी तो उसको समाविष्ट करने की व्यवस्था रहेगी।

If at some time, elements of higher education or technology need to be included in the regular education, the system will facilitate that.

9) व्यवहार शिक्षा के लिए “शिक्षा संस्कार समिति” “स्वास्थ्य संयम समिति” के साथ मिलकर कार्य करेगी।

‘Education-*sanskar* committee’ shall work in conjunction with ‘health-*sanyam* committee’ for imparting behavioural education.

10) मानवीयता पूर्ण व्यवहार (आचरण) व जीने की कला सिखाना व अर्थ की सुरक्षा तथा सदुपयोगिता के प्रति जागृति उत्पन्न करना ही, व्यवहार शिक्षा का मुख्य कार्य है।

Teaching and educating about the humane conduct and the art of living, and creating awareness about the security and usefulness of resources, is indeed the main role of behavioural education.

रुचि मूलक आवश्यकताओं पर आधारित उत्पादन के स्थान पर मूल्य व लक्ष्य मूलक अर्थात उपयोगिता व प्रयोजनीयता मूलक उत्पादन करने की शिक्षा प्रदान करना। जिससे प्रत्येक नर-नारी में आवश्यकता से अधिक उत्पादन समृद्धि (असंग्रह), अभयता (वर्तमान में विश्वास), सरलता, दया, स्नेह, स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, बौद्धिक समाधान, प्राकृतिक संपत्ति का उसके उत्पादन के अनुपात में सदुपयोग व उसके उत्पादन में सहायक सिद्ध हो ऐसी मानसिकता का विकास करना, व्यवहार शिक्षा में समाविष्ट होगा। इसके लिए शिक्षा के निम्न अवयवों का अध्ययन आवश्यक होगा:-

Imparting education for value-rooted and goal-rooted production (i.e., usefulness- and purpose-rooted production) instead of producing goods for sensory needs. Its inclusion in behavioural education will be helpful to all humans, males & females, in development of the mindset which aids in producing more than their needs, prosperity (non-accumulation), fearlessness (trust in the present), simplicity, kindness, affection, righteous man-woman relationship, and use & right-use of natural resources in proportion to their natural production. Study of the following aspects of education is essential to achieve this :-

1) अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन जागृति व रासायनिक-भौतिक रचना-विरचना के प्रति निर्भ्रम होना (जानना एवं मानना) रहेगा।

Being in the state of non-delusion regarding (knowing and believing about) - existence, development, *jeevan*, awakening in *jeevan*, and physico-chemical compositions & decomposition.

2) मानव, मानव जीवन का स्वरूप, मानव अपने ‘त्व’ सहित (मानवत्व सहित) व्यवस्था है, मानव संचेतना, अक्षय बल व अक्षय शक्ति की पहचान, अमानवीय चेतना से मानवीय चेतना में परिवर्तन व अतिमानवीय दृष्टियों स्वभाव व विषयों का स्पष्टता व ज्ञान सुलभ करना रहेगा।

Providing clarity and knowledge about - humans; true from of human *jeevan*; a human being is in orderliness only with humaneness; humane consciousness; recognition of inexhaustible strength & inexhaustible power; transformation from inhumane consciousness to humane consciousness; and higher-humane perspectives, intrinsic nature and & instincts.

3) मानवीय स्वभाव गति, आवेशित गति की पहचान।

Recognition of humane motion (normal motion), and excited motion.

4) मानव व नैसर्गिक संबंधों की पहचान, संबंधों के निर्वाह में निहित मूल्यों की पहचान व बोध कराने की शिक्षा। “संबंधों के निर्वाह से ही विकास होता है” इसकी शिक्षा सर्वसुलभ करना।

Education of - recognition of relationships with humans and with the rest of nature, recognition & *bodh* of values inherent in fulfilment of relationships. Making the education of ‘Progress occurs only by fulfilling relationships’ universally available & accessible.

5) मूल्य, चरित्र व नैतिकता अविभाज्य वर्तमान है वह क्रम से अनुभव बल, विचार शैली व जीने की कला की अभिव्यक्ति है। इसकी पहचान होना सर्वसुलभ होना रहेगा।

Values, character & ethics are inseparably present, and are the expression of realisation-strength, thoughts and art of living, respectively.

6) रुचि मूलक प्रवृत्तियों के स्थान पर मूल्य मूलक, लक्ष्य मूलक कार्य-व्यवहार, विश्लेषण का स्पष्टीकरण सुलभ रहेगा।

Explanation and analysis of value-based and goal-based work & behaviour shall be available instead of sensory-based tendencies.

7) आवर्तनशील अर्थ चिंतन व व्यवस्था की शिक्षा रहेगा।

Education of cyclic economics and systems shall be available.

8) उपयोगिता पूरकता, उदात्तीकरण सिद्धांत सर्वविदित होने का व्यवस्था रहेगा।

System shall be in place so that the principle of usefulness, complementariness and evolution is known to everyone.

9) न्याय पूर्ण व्यवहार (कर्त्तव्य व दायित्व) सर्वविदित रहेगा।

Behaviour of justice (duty & responsibility) shall be known to everyone.

10) नियम पूर्ण व्यवसाय सहज कर्माभ्यास परंपरा रहेगा।

Tradition and work practice of lawful profession shall be in place.

11) सामान्य आकाँक्षा व महत्वाकाँक्षा संबंधी उत्पादन कार्य में हर नर-नारी पारंगत होने का व्यवस्था रहेगा।

System shall be in place so that all humans, males & females, are proficient in production work related to common-aspirations and special-aspirations.

12) संतुलित आहार पद्धति में प्रत्येक को जागृत करने की शिक्षा।

Education to everyone for awareness related to balanced diet.

13) योगासन व व्यायाम सिखाने की शिक्षा एवं व्यवस्था।

Education and system to facilitate study of *yoga* and exercises.

14) शरीर, घर, आसपास का वातावरण, मोहल्ला व ग्राम में स्वच्छता की आवश्यकता व उसको बनाए रखने का कार्यक्रम।

Programs related to the need and maintenance related to personal hygiene, and domestic, neighbourhood, locality & village cleanliness.

15) शैशव अवस्था में रोग-निरोधी विधियों से हर परिवार में आवश्यक जानकारी और इसमें निष्ठा बनाए रखने की व्यवस्था।

Necessary knowhow in each family, and a system to maintain commitment towards this, for prevention of early-childhood illnesses & diseases.

16) सीमित व संतुलित परिवार के प्रति प्रत्येक व्यक्ति में विश्वास और निष्ठा को व्यवहार रूप देने का कार्यक्रम।

Program for acceptance of, and commitment to, small family; and program to give it a practical shape.

Program for giving practical shape to acceptance of, and commitment to, small family to each individual.

Program for generating confidence and commitment in each individual towards a small family, and to give it a practical shape.

17) स्थानीय रूप से उपजने वाली जड़ी-बूटियों की पहचान और औषधि के रूप में प्रयोग करने में पारंगत बनाने की शिक्षा।

Education for recognition of local herbs and medicinal plants and to make students proficient in their use or conversion to medicines.

कालांतर में “ग्राम शिक्षा संस्कार समिति” क्रम से ग्राम समूह सभा, क्षेत्र सभा, मंडल सभा, मंडल समूह सभा, मुख्य राज्य सभा, प्रधान राज्य सभा व विश्व राज्य सभा की “शिक्षा संस्कार समिति” से जुड़ी रहेगी। अत: विश्व में कहीं भी स्थित कोई जानकारी “ग्राम शिक्षा संस्कार समिति” को उपरोक्त सात स्रोतों से तुरंत उपलब्ध हो सकेगी। पूरी जानकारी का आदान-प्रदान कम्प्यूटर व्यवस्था द्वारा आपस में जुड़ा रहेगा। इसी प्रकार अन्य चारों समितियाँ भी ऊपर तक आपस में जुड़ी रहेगी।

Eventually, the ‘village education-*sanskar* committee’ shall work in conjunction with the ‘education-*sanskar* committee’ of village-cluster, village area, block, block-cluster, district, state and the world. Therefore, any new information anywhere in the world shall be instantaneously available from these seven sources. All information exchange shall take place by means of computer networking. The other four committees shall also be connected to their respective higher tiers in a similar manner.

**8.9 (2) उत्पादन कार्य समिति**

**Production work committee**

ग्राम में हर तरह का उत्पादन व सेवा कार्य “ग्राम उत्पादन सेवा कार्य सलाह समिति” द्वारा संचालित किया जायेगा। यह समिति अन्य समितियों के साथ मिलकर कार्य करेगी। वह समिति गांव के प्रत्येक स्वस्थ स्त्री पुरुष को, किसी न किसी उत्पादन कार्य में लगावेगी। स्थानीय सर्वेक्षण के आधार पर जिसका विस्तृत विवरण सर्वेक्षण प्रक्रिया के अंतर्गत दिया जा चुका है, उत्पादन समिति प्रत्येक व्यक्ति को उसकी वर्तमान अर्हता के आधार पर कोई उत्पादन कार्य करने की सलाह देगी व उनके लिए उस व्यक्ति को आवश्यक प्रशिक्षण व अन्य सुविधाएँ उपलब्ध कराएगी। जो भी उत्पादन कार्य होगा वह मानव की सामान्य आकाँक्षा (आवास, आहार, अलंकार) व महत्वाकाँक्षा (दूरगमन, दूरदर्शन, दूरश्रवण) संबंधी आवश्यकताओं पर आधारित होगा।

All the production and servicing work in the village shall be managed by ‘village production and servicing work advisory committee’. This committee shall work in conjunction with the other committees. This committee shall engage all healthy males & females in the village in some production activity or the other. Based on the local surveys which have already been described in detail, the production committee shall recommend every person to get engaged in some production activity, based on the person’s current capacity or ability. The committee shall also provide the required training and other facilities for the same. All the production work shall be based on human needs of common aspirations (food, shelter & clothing) and special aspirations (transport & telecommunications).

“उत्पादन कार्य सलाह समिति” ग्राम सभा के सहयोग से गाँव की सामान्य सुविधाओं को स्थापित करने में सहयोग देगी व आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराएगी। पर्यावरण सुरक्षा व पर्यावरण के साथ संतुलन एकसूत्रता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाएगी। प्रदूषण से मुक्त उत्पादन कार्य प्रणाली को अपनाया जायेगा।

With the cooperation of the village council, the ‘production work advisory committee’ shall assist in setting up common conveniences in the village, and shall disseminate the essential knowhow. Protection of, and coherence in efforts for balance in, environment shall get the topmost priority. Pollution-free production mechanism shall be adapted.

**8.9 (3) न्याय सुरक्षा समिति**

**Justice security committee**

ग्राम न्याय सुरक्षा समिति :- ग्राम सभा के द्वारा मनोनीत की जायेगी। यह समिति गाँव की सम्पूर्ण व्यवहार कार्य संबंधी विवादों को हल करने के लिए स्वतंत्र होगी व बाह्य हस्तक्षेप से मुक्त रहेगी। न्याय प्रक्रिया का स्वरूप सुधार-प्रणाली पर आधारित रहेगा ताकि ग्राम-न्यायालय में सम्पूर्ण प्रक्रिया मानवीय संचेतनावादी व्यवहार पद्धति पर आधारित होगी। चूंकि प्रत्येक मानव को, मानवीयता पूर्ण पद्धति व प्रणाली व नीति पूर्वक जीने का अधिकार समान है। इसके अनुसार गाँव में मानवीयता पूर्ण आचरण पद्धति, मानवीयता पूर्ण व्यवहार प्रणाली व अर्थ (तन, मन, धन) की सुरक्षात्मक व सदुपयोगात्मक नीति रहेगी। जो भी व्यक्ति इस व्यवस्था की निरंतरता बनाए रखने में असमर्थ रहेगा, वह सुधरने के लिए प्रवृत्त होगा। मानव अज्ञान, अत्याशा और अभाव वश ही गलती, अपराध तथा भय-प्रलोभनवश तन, मन, धन रूपी अर्थ का अपव्यय करता है।

Village justice security committee :- shall be nominated by the village council. This committee shall have authority to resolve all disputes in the village related to behaviour & work, and shall be free from external interference. The process of justice shall be based on reformative approach, and working of the village court shall be based on humane consciousness and behaviour. As all humans have equal right to live in a humane way with ethics, therefore the policy of humane conduct, humane behaviour, and conservation & righteous use of resources (body, mind & wealth) shall be there in the village. Every person who is unable to maintain continuity of this system, shall strive to reform. Humans commit mistakes and crimes only due to ignorance, over-expectation & deprivation; and waste resources (body, mind & wealth) only due to fear or temptation.

यह व्यवहार मानवीयता और सामाजिकता व व्यवस्था सहज गति के लिए सहायक नहीं है। न्याय सुरक्षा समिति, न्याय सुलभता और सुरक्षा कार्य में निष्ठान्वित तथा प्रतिज्ञाबद्ध रहेगी।

Such behaviour is not conducive to humaneness, undividedness & orderliness. Justice security committee shall remain committed and determined to the availability of justice & security

न्याय सुरक्षा समिति मानवीय आचार संहिता के अनुसार न्याय प्रदान करेगी। मानवीय आचार संहिता के अनुसार न्याय व्यवस्था के चार प्रधान आयाम है :- (1) आचरण में न्याय (2) व्यवहार में न्याय (3) उत्पादन में न्याय (4) विनिमय में न्याय।

Justice security committee shall fulfil (satisfy the needs of) justice according to the code of humane conduct. This code has four main dimensions :- (1) justice in conduct (2) justice in behaviour (3) justice in production (4) justice in exchange.

**1.** **आचरण में न्याय :-**

**Justice in conduct :-**

स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष और दया पूर्ण कार्य का वर्तमान और उसका मूल्यांकन आचरण में न्याय का स्वरूप है। **स्वधन** का तात्पर्य श्रम नियोजन का प्रतिफल, कला तकनीकी, विद्वत्ता विशेष प्रदर्शन, प्रकाशन किए जाने के फलस्वरूप प्राप्त पुरस्कार और उत्सवों के आधार पर किया गया आदान-प्रदान के रूप में प्राप्त पारितोष रूप में प्राप्त धन या वस्तुएँ से हैं।

Presence of righteous ownership of wealth, righteous man-woman relationship and kindness in work, and its evaluation, is the practical form of justice in conduct. **Righteous ownership of wealth** means - wealth or goods received as remuneration (received for deployment of labour), award (received for some special display or exhibition of skills, arts, technique or knowledge), and gift (receipt of wealth or goods given voluntarily based on festivals or relationships).

**स्वनारी, स्वपुरूष :-**

विवाह पूर्वक स्थापित दाम्पत्य संबंध जिसका पंजीयन ग्राम मोहल्ला सभा में होगा।

Conjugal relationship in marriage which shall be registered in the village council.

**दया पूर्ण कार्य :-**

**Kindness in work & behaviour :-**

1) मानव चेतना पूर्वक मूल्यों की पहचान और उसका निर्वाह।

Recognition & fulfilment of values by way of humane consciousness.

2) संबंधों की पहचान और निर्वाह क्रम में तन, मन, धन रूपी अर्थ का अर्पण समर्पण।

Offering and dedicating resources (body, mind & wealth) for recognition and fulfilment in relationships.

3) नि:सहाय, कष्ट ग्रस्त, रोग ग्रस्त और प्राकृतिक प्रकोपों से प्रताडि़त व्यक्तियों को सहायता प्रदान करना।

Helping the people who are helpless, distressed, sick or struck by natural disasters.

4) प्राकृतिक, सामाजिक और बौद्धिक नियमों का पालन आचरण पूर्वक प्रमाणित करते हुए मानवीय परंपरा के लिए प्रेरक होना।

Being an inspiration to the human tradition by abiding by the natural, social & intellectual laws, and evidencing them by way of conduct.

5) जो जैसा जी रहा है, कार्य कर रहा है उसका मूल्यांकन करना। जहाँ-जहाँ सहायता की आवश्यकता है वहाँ सहायता प्रदान करना।

Whatever one is doing, and whichever way one is living, to evaluate that. Wherever there is a need, to provide appropriate assistance.

6) पात्रता हो उसके अनुरूप वस्तु न हो, उसके लिए वस्तु को उपलब्ध कराना ही दया है।

If someone has the receptivity but does not have the content, making available the content is kindness.

**2.** **व्यवहार में न्याय (मानवीय व्यवहार) :-**

**Justice in behaviour (humane behaviour) :-**

मानवीय व्यवहार मानव तथा नैसर्गिक संबंधों व उनमें निहित मूल्यों की पहचान और उसका निर्वाह करना है। मानव परंपरा में मानव संबंध प्रधानत: सात प्रकार से गण्य है :-

1) माता - पिता

2) पुत्र - पुत्री

3) गुरू - शिष्य

4) भाई - बहिन

5) मित्र - मित्र

6) पति - पत्नी

7) स्वामी - सेवक (साथी-सहयोगी)

Humane behaviour comprises recognition of relationship (with humans, and with the rest of nature) and fulfilling of values inherent in them. There are seven kinds of human relationships in human tradition :-

1) Mother-father AND child (parent-child)

2) Brother-sister (siblings)

3) Husband-wife (spouse)

4) Teacher-student

5) Friend-friend

6) Guide-assistant (master-attendant)

7) Systemic or societal relationships

**उपरोक्त संबंधों में निहित मूल्य निम्न है :-**

**Following are the values inherent in the above-mentioned relationships :-**

**स्थापित मूल्य शिष्ट मूल्य**

विश्वास सौजन्यता

स्नेह निष्ठा

कृतज्ञता सौम्यता

गौरव सरलता

ममता उदारता

वात्सल्य सहजता

सम्मान सौहार्द्रता (स्पष्टता)

श्रद्धा पूज्यता

प्रेम अनन्यता

**Established values Civic values**

Trust Collaborativeness

Affection Dedication

Gratitude Humility

Glory Simplicity

Care Generosity

Guidance Spontaneity

Respect Cordiality

Reverence Devoutness

Love Non-dualness

मानव संबंधों में साम्य मूल्य विश्वास तथा पूर्ण मूल्य प्रेम है। बिना विश्वास के कोई भी संबंध का निर्वाह संभव नहीं है। संबंधों में विश्वास का निर्वाह न कर पाना ही अन्याय है, जिसका सुधार भावी है।

‘Trust’ is the foundation value and ‘love’ is the complete value in human relationships. Fulfilling a relationship is not possible in the absence of ‘trust’. Inability to fulfil ‘trust’ itself is injustice, which can be corrected.

**मानव के नैसर्गिक संबंध तीन प्रकार से गण्य है :-**

**Human relationship with the rest of nature is of three types :-**

1) पदार्थावस्था के साथ संबंध

Relationship with the material order.

2) प्राणावस्था (अन्न, वनस्पति) के साथ संबंध

Relationship with the plant order (grains, vegetation, etc.).

3) जीवावस्था (पशु-पक्षी आदि मानवेतर जीवों) के साथ संबंध

Relationship with the animal order (animals, birds, etc.)

**उपरोक्त संबंधों में उपयोगिता मूल्य दो प्रकार से गण्य है :-**

**In the above-mentioned relationships, object value is of two types :-**

1) परस्पर पूरकता, उदात्तीकरण के रूप में रचना-विरचना क्रम में उपयोगिता व कला मूल्य।

Usefulness value and aesthetic value in the form of mutual complementariness & evolution in the course of formation & deformation.

2) परमाणु में विकास क्रम में उपयोगिता-पूरकता सहज प्रमाण।

Evidence of complementariness & usefulness in the course of development in atom.

**उपयोगिता का स्वरूप निम्न है :-**

**Following is the true form of usefulness :-**

1) प्राकृतिक सम्पदा (खनिज, वनस्पति तथा पशु-पक्षी) का उनके संतुलन सहज अनुपात में उपयोग।

Use of natural resources (minerals, vegetation, and animals & birds) in such a way that their balance is maintained.

2) प्राकृतिक सम्पदा में अवरोध न डालना।

Use of natural resources in such a way that their uninterrupted supply is maintained.

3) प्राकृतिक सम्पदा समृद्ध होने-रहने में सहायक बनना।

Assistance in creating & maintaining enrichment in natural resources.

(नैसर्गिक पवित्रता संतुलन को समृद्ध बनाए रखे बिना मानव स्वयं समृद्ध नहीं हो सकता।)

(Humans themselves cannot be prosperous unless they maintain the purity & balance in nature)

**3.** **उत्पादन में न्याय :-**

**Justice in production :-**

1) प्रत्येक व्यक्ति परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना।

Each person shall produce more than the needs of the family.

2) प्रत्येक व्यक्ति में आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने योग्य कुशलता, निपुणता व पाण्डित्य को प्रमाणित करना, जिसका दायित्व शिक्षा संस्कार समिति को होगा।

Each person producing evidence of skills, proficiency & mastery for producing more than the needs; its responsibility shall be with the education-*sanskar* committee.

3) उत्पादन के लिए व्यक्ति में निहित क्षमता योग्यता के अनुरूप उसे प्रवृत्त करना जिसका दायित्व “उत्पादन कार्य सलाह समिति” का होगा।

To encourage each person towards production in accordance with their aptitude (inherent potential & capability); its responsibility shall be with the production advisory committee.

4) उत्पादन के लिए आवश्यकीय साधनों को सुलभ करना इसका दायित्व “विनिमय कोष समिति” का होगा।

To make available all the necessary resources for production; its responsibility shall be with the exchange storage committee.

5) उत्पादन कार्य सामान्य आकाँक्षा (आहार, आवास, अलंकार) महत्वाकाँक्षा (दूरदर्शन, दूरगमन, दूरश्रवण) संबंधी वस्तुओं के रूप में प्रमाणित होना।

Evidence of production activities in the form of goods of common aspiration (food, shelter & clothing) and special aspiration (transport & telecommunications).

6) “उत्पादन कार्य सलाह समिति” व “विनिमय कोष समिति” संयुक्त रूप में सम्पूर्ण ग्राम की उत्पादन संबंधी तादाद, गुणवत्ता व श्रम मूल्यों का निर्धारण करेगी।

‘Production advisory committee’ and ‘exchange storage committee’ shall jointly determine the quantity, quality & labour values related to all the goods produced in the village.

**4.** **विनिमय में न्याय :-**

**Justice in exchange :-**

1) उत्पादित वस्तु के विनिमय कार्य सुलभ करना।

Making available the system for exchange of the goods produced.

2) विनिमय प्रक्रिया प्रथम चरण में, श्रम मूल्य को वर्तमान में प्रचलित प्रतीक मुद्रा के आधार पर मूल्यांकित करने की व्यवस्था रहेगी। जैसे स्थानीय उत्पादन को, जहाँ उसको बेचना है, उस मंडी की दरों पर आधारित उसका क्रय मूल्य निर्धारित होगा। ग्राम की आवश्यकता के लिए अन्य बाजारों से, वस्तुओं का विक्रय मूल्य, उन बाजारों के क्रय मूल्य पर आधारित होगा।

In the first stage (initial stage) of the exchange process, labour value shall be determined based on the system of prevalent symbolic currency. For example, the prices at which the village production is bought in the neighbouring markets will depend on the market prices. Similarly, the prices at which the goods needed in the village are bought, will also depend on the market prices.

3) द्वितीय चरण में श्रम के आधार पर प्रतीक मुद्रा को मूल्यांकन करने की व्यवस्था होगी व उसी के आधार पर क्रय विक्रय कार्य सम्पन्न होगा।

In the second stage, there shall be a system to determine the symbolic currency based on labour value, and all the sale-purchase shall happen on this basis.

4) तृतीय चरण में श्रम मूल्य के आधार पर वस्तु मूल्य का मूल्यांकन होगा जिसका आधार उपयोगिता व कला मूल्य ही रहेगा व इसी के अनुसार लाभ-हानि-संग्रह मुक्त पद्धति से विनिमय प्रक्रिया संपन्न होगी। अर्थात् विनिमय प्रक्रिया श्रम मूल्य के आदान प्रदान के रूप में सम्पन्न होगी।

In the third stage, object values shall be determined based on the labour value, which will remain based on usefulness value and aesthetic value. The exchange process shall happen by a method devoid of profit, loss or accumulation. In other words, the exchange process shall happen in the form of exchange of labour value.

“न्याय सुरक्षा समिति" सुरक्षा कार्य को ग्राम वासियों के तन, मन, धन रूपी अर्थ के सदुपयोग सुरक्षा के आधार पर क्रियान्वयन करेगा।

Security activities by the ‘justice security committee’ shall be carried out on the basis of righteous use and security of the resources (body, mind & wealth).

जैसे :-

1) ग्राम में न्याय सुरक्षा

2) उत्पादन एवं विनिमय सुरक्षा

3) परिवार सुरक्षा

4) मानवीय शिक्षा-संस्कार सुरक्षा

5) स्वास्थ्य संयम सुरक्षा

6) नैसर्गिक सुरक्षा

7) संगीत, साहित्य, कला संस्कृति-सभ्यता की सुरक्षा

For example :-

1) Justice security in the village

2) Production and exchange security

3) Family security

4) Humane education-*sanskar* security

5) Health-*sanyam* security

6) Security of rest of the nature

7) Security of music, literature, arts, culture, civility

“न्याय सुरक्षा समिति” ग्राम की सभी प्रकार की सुरक्षाओं के प्रति जागरूक रहेगी।

The ‘justice security committee’ shall remain aware about all aspects of security in the village.

**ग्राम सुरक्षा :-**

**Village security :-**

ग्राम सीमा में निहित भूमि का क्षेत्रफल और उस भू-भाग में निहित वन, खनिज, कृषि योग्य भूमि, बंजर भूमि, जल, जल-स्रोत, जल संरक्षण, भूमि संरक्षण, सामान्य सुविधा कार्य को सदुपयोग के आधार पर सुरक्षित करना ग्राम सुरक्षा का तात्पर्य है।

Village security means - to secure the area (and forests, minerals, agricultural land, barren land, water, water-resources, water conservation, land conservation, and common facilities included in such area), based on right-use, within the boundaries of the village.

ग्राम से संबंधित वन क्षेत्र और उपयोगी भूमि और स्वामित्व की भूमि ग्राम सभा के अधिकार व कार्य क्षेत्र में रहेगी। यदि कोई वन क्षेत्र व भू-खण्ड किसी गाँव से सम्बद्ध न हो ऐसी स्थिति में उसको किसी न किसी गाँव से सम्बद्ध करने की व्यवस्था रहेगी। ऐसे ग्राम क्षेत्र की सुरक्षा का दायित्व भी “न्याय सुरक्षा समिति” का होगा।

Forest areas, useful land and the owned land in the village shall be within the authority and jurisdiction of the village council. There shall be a system to attach it with some village if some forest area or piece of land is found to be not belonging to any village. Responsibility of security of such an area shall also be with the ‘justice security committee’.

**उत्पादन और विनिमय सुरक्षा :-**

**Production and exchange security :-**

1) उत्पादन सुरक्षा :- गाँव में जितने भी प्रकार के उत्पादन संबंधी मौलिकताएँ प्रमाणित होंगी उन सबके सुरक्षा का दायित्व न्याय सुरक्षा समिति, विनिमय कोष समिति का होगा। जैसे किसी उत्पादन कार्य में विशेष प्रकार की मौलिकता अथवा मौलिक प्रणाली अथवा मौलिक औजार, मौलिक विधि जो परंपरा में नहीं रही है, ऐसी स्थिति में उन सबको सुरक्षित किया जाएगा। इन सबसे सम्बन्धित मूल वाङ्गमय, डिजाइन, चित्रण, नक्शा, प्रक्रिया, प्रणाली और विधियों को लिपिबद्ध, सूत्र बद्ध कर सुरक्षित करेगा। आवश्यकता पड़ने पर लोकव्यापीकरण कराएगा व पुरस्कार की व्यवस्था करेगा।

Production security :- Justice security committee and exchange storage committee shall be responsible to keep secure all the production-related uniquenesses evidenced in the village. For example, if there is any kind of uniqueness, like unique technique or tools or procedure in some production activity, whose tradition is not yet established, in such a situation, all these shall be made secure. All original literature, designs, drawings, diagrams, processes, techniques and procedures related to these shall be well documented and preserved. Contributions towards uniqueness will be suitably rewarded, and if needed, circulation of the same shall be done.

2) औषधियों का अनुसंधान, वनस्पतियों का पहचान, ज्योतिष संबंधी अनुसंधान, हस्तरेखा व सामुद्रकि शास्त्र संबंधी साहित्य का अनुसंधान जो परंपरा में नहीं रहा है, उसको उपयोगिता के अनुसार उसकी सुरक्षा का दायित्व “सुरक्षा समिति” का होगा।

‘Security committee’ shall be responsible to keep secure the literature related to research on medicines, recognition of vegetation, research in astrology, palmistry and oceanography, whose tradition is not yet established, according to their usefulness.

3) साहित्य, कला, संगीत, शिल्प में परंपरा की श्रेष्ठता का अनुसंधान, जो परंपरा में नहीं थी, ऐसी प्रस्तुति होने की स्थिति में उसका यथावत् संरक्षण करेगा।

They shall secure, as it is, the research in excellence of literature, arts, music and crafts, whose tradition is not yet established.

4) खेलकूद, व्यायाम, अभ्यास में परंपरा से अधिक श्रेष्ठता और अनुसंधानों को संरक्षित करेगा।

They shall secure the research, and better than traditional results, in sports, exercises and practices.

उपरोक्त कार्य के लिए विनिमय कोष समिति, “न्याय सुरक्षा समिति” क्रम से उत्पादन कार्य सलाह समिति, “स्वास्थ्य संयम समिति”, “शिक्षा संस्कार समिति” के सहयोग से मूल्यांकन प्रक्रिया सम्पादित करेगा।

‘Exchange storage committee’ and ‘justice security committee’ shall do the evaluation process in consultation with and with cooperation of ‘production advisory committee’, ‘health *sanyam* committee’ and ‘education *sanskar* committee’.

**विनिमय में सुरक्षा :-**

**Security in exchange :-**

1) श्रम मूल्यों को उपयोगिता व कला मूल्य के आधार पर पहचानने की दिशा में “सुरक्षा समिति” निरंतर सजग रहेगी। एक श्रम मूल्य का आंकलन जो कुछ भी ग्राम स्वराज्य स्थापना दिवस में प्रमाणित रहेगा, उसकी गति के प्रति सतर्क रहेगा। निपुणता, कुशलता, कार्य गति, समय व साधन के कुल संयोग से श्रम का मूल्यांकन होगा। जैसे किसी एक वस्तु के निर्माण कार्य से, जिसका फलन स्थापना दिवस पर यदि एक रहा और बाद में यदि दो, तीन या चार हो गया, ऐसी अर्हता को ग्राम में सर्वसुलभ कराने का दायित्व “सुरक्षा समिति” का होगा। इसी प्रकार प्रत्येक वस्तु के संबंध में उत्पादन गति में वृद्धि करने और विनिमय में उसकी समृद्धि के अर्थ को सार्थक बनने का दिशा में कार्य सुरक्षा समिति करेगा।

‘Security committee’ shall continuously remain alert in the direction of recognising labour values on the basis of usefulness- and aesthetic-values. Labour values shall be benchmarked on the first day of establishment of the village self-governance, and the committee shall remain alert towards changes, if any, in the labour values. Labour shall be evaluated based on the sum total of skills, proficiency, production mechanism, time taken and the resources used. For example, it may be possible that initially the labour value of some object is ‘one’ which gradually increases to two, three or four; in such a case, the ‘security committee’ shall be responsible for disseminating this know-how to everyone in the village. Similarly, ‘security committee’ shall work in the direction of increasing the speed of production as well as enriching the process of exchange.

2) लाभ-हानि मुक्ति के संबंध में सतर्क रहना। उसके लिए सभी व्यवस्था प्रदान करना।

To remain alert towards ‘devoid of profit & loss’. To provide systems for this.

3) वस्तु की उत्पादन के आधार पर मूल्यांकन करने में सतर्क रहना व कार्य रूप देना।

To remain alert towards evaluation of goods on the basis of production, and to implement the same.

4) सभी विनिमय की संभावना को बनाए रखने में सतर्क रहना व प्रोत्साहित करना।

To remain alert towards all possibilities of exchange, and to encourage them.

**परिवार सुरक्षा :-**

**Family security :-**

1) प्रत्येक परिवार की महिमा और गरिमा को चेतना विकास मूल्य शिक्षा विरोधी वातावरण से दूषित होने से बचाना। प्रचार तंत्र द्वारा भ्रमित करने वाले सभी पक्षों से सम्पूर्ण परिवार को सतर्कता के लिए प्रोत्साहित करते हुए संरक्षित करना।

To safeguard the magnificence and glory of each family by protecting it from getting polluted by the environment hindering ‘consciousness development value education’. To secure by way of encouraging alertness in all families from all aspects of the misleading media.

2) साहित्य और कला को परिवार राज्य और ग्राम स्वराज्य के अर्थ में प्रदर्शन कार्य के लिए प्रवृत्त करना।

To stimulate literature and arts for showcasing family, state and village self-governance.

3) परिवारगत अंतर्विरोध की संभावनाओं को दूर करने के रूप में परिवारों को सुरक्षा प्रदान करना।

To provide security to families for eliminating possibilities of internal conflicts.

4) जागृति सम्पन्न एक परिवार की श्रेष्ठता को सभी परिवारों में सुलभ करने के रूप में परिवार को सुरक्षा प्रदान करना।

To provide security to families in the form of making excellence of one awakened family accessible to all families.

5) किसी परिवार के साथ आकस्मिक दुर्घटना, प्राकृतिक प्रकोप से, असाध्य रोग से क्षतिग्रस्त होने की स्थिति में, उनमें सान्त्वना व सहायता प्रदान करने के रूप में परिवार को सुरक्षा प्रदान करना।

To provide security to families in the form of providing them consolation and assistance if they face some accident, natural calamity or incurable diseases.

**शिक्षा संस्कार सुरक्षा :-**

**Education-*sanskar* security :-**

1) न्याय सुरक्षा समिति यह सुनिश्चित करेगी कि प्रत्येक ग्रामवासी को मानवीय शिक्षा (व्यवहार शिक्षा व व्यवसाय शिक्षा) ठीक से मिल रही है या नहीं। जो स्कूल छोड़ दिए हैं, स्कूल में नहीं आते हैं, उनके लिए उनके परिवार वालों से मिल जुलकर शिक्षा संस्कार को सुलभ कराएगी।

Justice security committee shall determine if each village resident is properly receiving humane education (behavioural education and professional education), or not. To those who skip school, or have dropped out, the committee, in collaboration with their families, will ensure access to education for them.

2) मानवीय शिक्षा में कहीं से भी व्यतिरेक उत्पन्न होता है तो उसको दूर करने की व्यवस्था करेगी।

It shall make arrangements to remove any obstructions in the humane education.

3) शिक्षकों का मूल्यांकन करेगी कि वे ठीक से शिक्षा प्रदान कर रहे हैं या नहीं? समय-समय पर आकर निरीक्षण-परीक्षण पूर्वक मार्ग दर्शन देगी।

It shall determine if the teachers are teaching properly or not. It will, from time to time, provide them guidance.

**स्वास्थ्य संयम सुरक्षा :-**

**Health-*sanyam* security :-**

1) ग्रामवासियों की बुरी आदतें, जैसे सिगरेट, बीड़ी, गाँजा, तम्बाकू, जर्दा, शराब, अफीम, चरस, जुआ आदि समाज विरोधी बुरे प्रभावों के निराकरण के प्रति उन्हें जागृत कर सुधारना और उन्हें सुरक्षा प्रदान करना। स्वस्थ, समाधान, समृद्धि पूर्वक जीने में विश्वास सम्पन्न करना।

To make village residents aware about how to recover from the adverse effects of bad habits like smoking, tobacco, drinking, drugs, gambling, etc., and to reform them, and to provide them security.

2) पशु धन की सुरक्षा करना।

To provide security to the livestock.

3) जान माल की हानि न हो ऐसी व्यवस्था करना।

To make suitable arrangements for safeguarding life and property.

4) वातावरण में यदि कोई प्रदूषण फैला रहा हो जो कि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, उसको रोकना।

To stop someone if they are causing health hazards by spreading pollution.

**नैसर्गिक सुरक्षा :-**

**Security of rest of the nature :-**

सुरक्षा समिति नैसर्गिक सुरक्षा के लिए निम्न नियमों को ध्यान में रखते हुए कार्य करेगी :-

Security committee shall keep the following guidelines in mind for security of the rest of nature :-

1) गाँव की प्राकृतिक सम्पदा का (खनिज, वन, जीव) उसके अनुपात के रूप में उपयोग करेगी।

It shall use the natural resources (minerals, forests, animals) in a proportionate manner.

2) प्राकृतिक सम्पदा के उत्पादन में किसी के भी द्वारा विघ्न न डालने देना।

It shall not allow anyone to obstruct production of natural resources.

3) प्राकृतिक सम्पदा के उत्पादन में सहायक होना, यह सुनिश्चित करना है।

It shall ensure that assistance is provided for production of natural resources.

**8.9 (4) विनिमय कोष समिति**

**Exchange storage committee**

आरंभ में ही अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में पारंगत रूप में समझ सहित समाधान, समृद्धि सम्पन्न व्यक्ति विनिमय कोष कार्य में भागीदारी करेंगे।

In initial stages, the persons who have understanding and expertise of undivided society & universal system, and are accomplished with resolution & prosperity, shall participate in the activities of exchange storage.

सौ परिवार के गांव के लिए अनुमानत: कम से कम तीन व्यक्ति विनिमय कोष में भागीदारी करेंगे। इसमें से एक व्यक्ति गाँव में उत्पादित वस्तुओं के अन्य स्थानों में, बाजारों में विक्रय करेगा एवं अन्य स्थान व बाजारों से वस्तुओं को विनिमय पूर्वक अथवा क्रय विधि से विनिमय कोष में लायेगा। दूसरा व्यक्ति लेखा जोखा व खातों की देख-रेख करेगा। तीसरा व्यक्ति सामान का लेन-देन करेगा व उनको भंडार में रखने की व्यवस्था करेगा। आवश्यकता पड़ने पर अन्य व्यक्तियों को भी विनिमय कोष में भर्ती किया जा सकता है।

It is estimated that in a village of 100 families, a minimum of three persons will participate in the activities of exchange storage. Out of these three, one person shall be responsible for selling the surplus goods produced in the village in the other markets, and also for buying the goods needed in the village (from other markets) and bringing them to the exchange store. The second person shall maintain the ledgers and books of accounts. The third person shall do the actual exchange with the village residents, and shall look after the storage in the exchange store. Other persons may also be co-opted for working of the exchange storage, if needed.

विनिमय कोष के काम काज को सुगम बनाने के लिए कम्प्यूटर को प्रयोग में लाया जायेगा। क्रम से विनिमय कोष व्यवस्था, पूरे राज्य व देश में, स्थापित हो जाने पर, ग्राम विनिमय कोष क्रम से, ग्राम समूह क्षेत्र , जिला मंडल, मुख्य राज्य व प्रधान राज्य के विनिमय कोष समितियों के साथ आदान-प्रदान से जुड़ा रहेगा। “विनिमय कोष” संविधान के अनुसार, कार्य करता रहेगा, जिसकी जिम्मेदारी विनिमय कोष समिति की होगा जो समय-समय पर खातेदार सदस्यों की सामान्य बैठक बुलाकर, उनके सामने प्रतिवेदन प्रस्तुत करेगा। सामान्य बैठक में बहुमत के आधार पर मार्गदर्शन प्राप्त करेगा।

Computers shall be used for ease of working in the exchange store. Eventually when this model is implemented and adapted by the whole state and country, the village exchange store will be linked with the exchange stores at village-cluster, block, district, state and the world tiers. ‘Exchange store’ shall always work according to the constitution, and the exchange store committee shall be responsible for this; and it shall call the general body meeting of the account holders from time to time, and present its report. They will receive inputs (based on the majority) from account holders in the general body meeting.

**8.9 (5) स्वास्थ्य संयम समिति**

**Health-*sanyam* committee**

ग्राम के सभी व्यक्तियों के स्वास्थ्य एवं संयम की जिम्मेदारी ग्राम स्वास्थ्य समिति की होगी। यह समिति शिक्षा संस्कार समिति के साथ मिलकर कार्य करेगी। स्वास्थ्य संयम संबंधी पाठ्यक्रम और कार्यक्रम को तैयार कर शिक्षा में सम्मिलित कराएगी। ग्राम में चिकित्सा केन्द्र की व्यवस्था, योगासन, व्यायाम, अखाड़ाखेल कूद व्यवस्था, स्कूल के अलावा खेल मैदान (स्टेडियम), सांस्कृतिक भवन क्लब आदि व्यवस्था का दायित्व, ग्राम स्वास्थ्य समिति का होगा। समिति स्थानीय रूप से उपलब्ध जड़ी-बूटियों द्वारा औषधि बनाने के लिए आवश्यकीय व्यवस्था करेगी। इसके साथ ही पशु चिकित्सा केन्द्र की व्यवस्था का दायित्व भी स्वास्थ्य समिति का होगा। समिति “समन्वित चिकित्सा” (आयुर्वेद, एलोपैथी, होम्योपैथी, यूनानी, योग प्राकृतिक, मानसिक) के उन्नयन की व्यवस्था करेगी।

Responsibility of health-*sanyam* of all persons in the village shall be with the village health committee. This committee shall work in conjunction with the education-sanskar committee. They shall create curriculum and content related to health-*sanyam*, and get it included in classroom education. Responsibility for health centre, *yoga*, exercise, gym, sports facilities, stadium (other than school), cultural centre, club, etc. in the village shall be with the village health committee. The committee shall make necessary arrangements for production of medicines from locally available herbs. Responsibility of the veterinary centre shall also be with the health committee. The committee shall implement systems for the advancement of ‘all-inclusive health’ (ayurveda, allopathy, homoeopathy, Greek, *yoga*, natural and mental).

सब ग्रामवासियों को स्वास्थ्य व्यवहार, आचरण संबंधी मूल्यों का मूल्यांकन, उपयोगिता व प्रयोजन मूलक पद्धति से समिति व्यवस्था प्रदान करेगी। अलंकार, प्रसाधन कार्य, शरीर स्वच्छता महिलाओं व बच्चों को रोग-निरोधी उपायों से अवगत करायेगा और सीमित व संतुलित परिवार के रूप में व्यवहृत होने के लिए व्यवस्था प्रदान करेगी। ऐसी जागृति के लिए व्यापक कार्यक्रम को समिति चलाएगी। सामान्य रूप में घटित अस्वस्थता को दूर करने के लिए घरेलू चिकित्सा में प्रत्येक परिवार को अथवा प्रत्येक परिवार में एक व्यक्ति को प्रवीण बनाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाए जाएँगे। घरेलू चिकित्सा से रोग शमन न होने की स्थिति में स्थानीय केन्द्र द्वारा चिकित्सा होगी। वहाँ राहत न मिलने की स्थिति में निकटवर्ती चिकित्सा केन्द्र में पहुँचाने और चिकित्सा सुलभ कराने की व्यवस्था ग्राम स्वास्थ्य समिति करेगी। चिकित्सा केन्द्र, चिकित्सालय, मातृत्व केन्द्र, प्रसवोत्तर केन्द्र की स्थापना यथासंभव ग्राम समूह परिवार सभा द्वारा किये जावेंगे।

This committee shall make arrangements, and provide systems, to all village residents for evaluation of values related to health, behaviour & conduct by way of usefulness and purposefulness. They shall establish systems for providing clothing, toiletries, personal hygiene, general precautions for females and children, and family planning. This committee shall make elaborate programs for achieving these objectives. They shall run various programs for recovering from minor ailments by imparting knowledge of home-made remedies to each family, or to one person in each family. If the patient doesn’t recover by home medicines, treatment shall be provided at the local health centre. If even that doesn’t provide relief, the village health committee shall make arrangements to take the patient to a bigger health centre, and ensure that the requisite treatment is provided. As far as possible, arrangements for setting up medical centres, hospitals, maternity homes and post-natal care centres shall be made by the village-cluster family councils.

**8.10 मूल्यांकन, प्रोत्साहन प्रक्रिया**

**The process of evaluation and encouragement**

ग्राम सभा द्वारा विभिन्न समितियों के कार्य का मूल्यांकन निम्न मार्गदर्शक सिद्धांतों द्वारा किया जायेगा। सभी समितियों का कार्य सभा सदस्य सम्पन्न करेंगे।

Following are guiding principles based on which evaluation of the activities of various committees shall be done by the village council. Members of the committees shall carry out the activities of the respective committees.

**1.** **उत्पादन कार्य सलाह समिति का मूल्यांकन**

**Evaluation of the production advisory committee**

“उत्पादन कार्य सलाह समिति” का मूल्यांकन निम्न आधारों पर किया जायेगा :-

Evaluation of the ‘production advisory committee’ shall be done on the following basis :-

1) कृषि, पशुपालन, वनोपज, हस्त कला, ग्राम शिल्प, कुटीर उद्योग, ग्रामोद्योग के कुल उत्पादन का मूल्यांकन।

Evaluation of the total production in agriculture, animal husbandry, forest produce, handicrafts, cottage industries & village industries.

2) उत्पादन में कार्य गति का मूल्यांकन।

Evaluation of the production mechanism and time taken in production.

3) उत्पादन में गुणवत्ता व उत्पादकता का मूल्यांकन।

Evaluation of quality & productivity in production.

4) उत्पादन कार्य में कुशलता व निपुणता का मूल्यांकन।

Evaluation of skills & proficiency in production activities.

5) उत्पादन के लिए आवश्यकीय कच्चेमाल/वस्तुओं की सहज सुलभता का मूल्यांकन।

Evaluation of easy availability of the necessary raw materials / input goods for production.

6) प्राकृतिक नियमों का पालन करते हुए प्रदूषण विहीन प्रणाली से उत्पादन और उत्पादन कार्य में तकनीकी परिवर्धन का मूल्यांकन।

Evaluation of pollution-free production while abiding by the natural laws, and of technical enrichment in production activities.

7) मानव परंपरा में आवश्यकीय व उपयोगी सामान्य आकाँक्षा (आहार, आवास, अलंकार) व महत्वाकाँक्षा (दूरगमन, दूरदर्शन, दूरश्रवण) संबंधी वस्तुओं में उत्पादन कार्य व सेवा कार्यों का मूल्यांकन।

Evaluation of production activities and support activities (in human tradition) related to objects of common aspirations (food, shelter & clothing) and special aspirations (transport and telecommunications).

**2.** **विनिमय कोष सलाहकार समिति का मूल्यांकन**

**Evaluation of the exchange storage advisory committee**

“विनिमय कोष सलाह समिति” का मूल्यांकन निम्न आधार पर होगा :-

Evaluation of the ‘exchange advisory committee’ shall be on the following basis :-

1) विनिमय सहजता व सुलभता का मूल्यांकन।

Evaluation of the ease and accessibility of exchange.

2) विनिमय में लाभ-हानि मुक्त प्रणाली का मूल्यांकन।

Evaluation of the ‘devoid of profit & loss’ aspect in exchange.

3) विनिमय प्रणाली में स्वच्छता का मूल्यांकन।

Evaluation of cleanliness in the exchange mechanism.

4) विनिमय क्रियाकलाप में गुणवत्ता, परिमाण, परिमापन, का मूल्यांकन।

Evaluation of quality, magnitude & measurements in the exchange activities.

5) विनिमय कोष द्वारा उत्पादन में प्रोत्साहन और सहायता का मूल्यांकन।

Evaluation of encouragement and assistance, in production, by the exchange store.

6) विनिमय श्रम में गति व गुणवत्ता का मूल्यांकन।

Evaluation of labour and quality aspects in exchange.

7) स्थानीय रूप से वस्तुओं का आदान प्रदान सुलभ रहेगा। बाह्य बाजारों से क्रय किया गया वस्तुओं का मूल्यांकन क्रय मूल्य के आधार पर आधारित रहेगा।

Exchange of locally produced goods shall be straightforward. Evaluation of goods procured from external markets shall be based on their purchase price.

8) साधन प्रबंधों का मूल्यांकन।

Evaluation of resources used in exchange.

**3.** **शिक्षा संस्कार समिति के कार्यों का मूल्यांकन**

**Evaluation of the activities of education-*sanskar* committee**

“ग्राम सभा” ग्राम के प्रत्येक व्यक्ति व परिवार में “शिक्षा संस्कार समिति” के कार्यों का मूल्यांकन निम्न आधारों पर करेगी :-

‘Village council’ shall evaluate the activities of ‘education *sanskar* committee’ in each person and family on the following basis :-

1) संबंधों का पहचान मूल्यों का निर्वाह, मानवीयतापूर्ण आचरण व व्यवहार का मूल्यांकन। परस्परता में समाधान।

Evaluation of recognition of relationships, fulfilling of values, humane conduct and behaviour. Resolution in human interactions.

2) स्वयं के प्रति विश्वास व श्रेष्ठता के प्रति सम्मान क्रिया, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन, व्यवहार में सामाजिक, उत्पादन कार्य में स्वावलंबन सहज विधि से मूल्यांकन।

Evaluation by way of the activity of self-confidence and respect for excellence, balance in talent & personality, sociability in behaviour, and self-reliance in production work.

3) मानवीय आचरण स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार का मूल्यांकन।

Evaluation of humane conduct, rightfully owned wealth, rightful man-woman, and kindness in work & behaviour.

4) ग्राम जीवन व परिवार व्यवस्था में विश्वास व निष्ठापूर्ण आचरण का मूल्यांकन।

Evaluation of confidence in the family system and village life, and of commitment in conduct.

5) ग्राम व्यवस्था व ग्राम जीवन में भागीदारी का मूल्यांकन।

Evaluation of participation in the village system and village life

6) प्रत्येक व्यक्ति व परिवार से किया गया तन, मन व धन रूपी अर्थ की सदुपयोगिता का मूल्यांकन।

Evaluation of righteous use of resources (body, mind & wealth) by each person & family.

7) मानव स्वयं व्यवस्था के रूप में संप्रेषित, अभिव्यक्त, प्रकाशित होने व समग्र व्यवस्था में भागीदारी होने व उसकी संभावना का मूल्यांकन।

Evaluation if a person communicates, expresses & manifests as a self-organised person, with participation, and potential of participation, in the overall system.

8) किसी व्यक्ति में बुरी आदत हो तो उसके, उससे (बुरी आदत से) मुक्त होने के आधार पर सुधार का मूल्यांकन।

Evaluation of a person based on their reformation (recovery) from some bad habits.

**4.** **न्याय सुरक्षा समिति का मूल्यांकन**

**Evaluation of the justice security committee**

“न्याय सुरक्षा समिति” का मूल्यांकन निम्न आधारों पर होगा :-

Evaluation of the ‘justice security committee’ shall be on the following basis :-

1) आचरण में न्याय सुलभता का मूल्यांकन।

Evaluation of justice in conduct.

2) व्यवहार में न्याय सुलभता का मूल्यांकन।

Evaluation of justice in behaviour.

3) उत्पादन में न्याय सुलभता का मूल्यांकन।

Evaluation of justice in production.

4) विनिमय में न्याय सुलभता का मूल्यांकन।

Evaluation of justice in exchange.

5) तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा का मूल्यांकन।

Evaluation of security and righteous use of resources (body, mind & wealth).

6) ग्राम में प्राकृतिक वातावरण सहज सुरक्षा का मूल्यांकन।

Evaluation of security in & from the natural environment in the village.

7) उत्पादन एवं विनिमय सुरक्षा का मूल्यांकन।

Evaluation of security of production and exchange.

8) परिवार सुरक्षा का मूल्यांकन।

Evaluation of family security.

9) शिक्षा संस्कार सुरक्षा का मूल्यांकन।

Evaluation of security of education-*sanskar*.

10) स्वास्थ्य संयम सुरक्षा का मूल्यांकन।

Evaluation of security of health-*sanyam*.

11) नैसर्गिक सुरक्षा का मूल्यांकन।

Evaluation of security of natural resources.

**5.** **स्वास्थ्य संयम समिति के कार्यों का मूल्यांकन में, से, के लिए आधार निम्न प्रकार से रहेगा -**

**Evaluation of the activities of health-*sanyam* committee shall be as following :-**

1) व्यक्तियों में स्वास्थ्य के प्रति जागृति का मूल्यांकन शारीरिक व मानसिक संतुलन के आधार पर स्वस्थता का मूल्यांकन।

Evaluation of awareness in individuals regarding health; evaluation of general well-being based on physical & mental health.

2) व्यक्ति, घर, ग्राम, गली, मोहल्लों को स्वच्छ बनाए रखने में मूल्यांकन।

Evaluation of the upkeep and cleanliness of the individual, home, village, street & locality.

3) समाधान, समृद्धि, उपयोगिता, पूरकता विधि से परिवार वैभव सहज मूल्यांकन।

Evaluation of the family grandeur by way of resolution, prosperity, usefulness & complementariness.

4) रोग निरोधी उपायों के प्रति जागरूकता के आधार पर मूल्यांकन।

Evaluation of awareness regarding general precautions for prevention of diseases.

5) योगासन, व्यायाम, खेल के प्रति जागरूकता के आधार पर मूल्यांकन।

Evaluation of awareness regarding *yoga*, exercises and sports.

6) रोगी को शीघ्र चिकित्सा उपलब्ध कराने का मूल्यांकन।

Evaluation of timely availability of treatment to patients.

7) घरेलू चिकित्सा के प्रति जागरूकता का मूल्यांकन।

Evaluation of awareness regarding home-medicines.

8) स्थानीय जड़ी बूटियों के संरक्षण, संवर्धन व उनके प्रति जागरूकता उपयोगिता का मूल्यांकन।

Evaluation of security & enrichment regarding local herbs, and its awareness & usefulness.

भाग – नौ

कार्यक्रम सत्यापन घोषणा

Part - 9

Truthful declarations in, of & for programs

इस भाग में सभी समितियों द्वारा किये जाने वाले कार्यक्रमों को समिति आधार पर सत्यापन किया जायेगा।

Truthful declarations regarding programs undertaken by all committees shall be covered in this part.

**कार्यक्रम - 1**

**Program - 1**

1) समितियों का गठन कार्यकर्ताओं की पहचान व घोषणा।

Constitution of committees and recognition of workers, and declaration.

2) कार्यकर्ताओं में कार्य का बोध होने का सत्यापन।

Truthful declaration regarding awareness of duties in the workers.

3) कार्यकर्ताओं में दायित्व, कर्त्तव्य, उद्देश्य बोध प्रवृत्ति व निष्ठा का सत्यापन।

Truthful declaration regarding awareness, tendency & commitment towards responsibilities, duties and objectives in the workers.

**कार्यक्रम - 2**

**Program -2**

**शिक्षा-संस्कार समिति से सत्यापन**

**Truthful declaration from the education-*sanskar* committee**

1) मानवीय शिक्षा-संस्कार सर्व सुलभ होने का कार्यक्रम, प्रमाणित होने में से के लिए सत्यापन।

Program of accessibility to all of humane education-*sanskar*; truthful declaration in, by & for becoming an evidence.

2) मानवीय शिक्षा का प्रमाण हर परिवार में वर्तमान होने का सत्यापन।

हर परिवार समूह सभा सदस्य, निरीक्षण-परीक्षण विधि से सत्यापित करने का कार्यक्रम, ग्राम-सभा में सत्यापनों की प्रस्तुति सहज कार्यक्रम।

Truthful declaration regarding presence of evidence in each family of humane education.

Program of truthful declaration (by way of inspection & examination) by each member of the family-cluster council; program of truthful declarations in the village council.

3) शिक्षा-संस्कार किसी परिवार में अपूर्ण रहने पर पूर्णता के लिए कार्यक्रम परिवार समूह सभा में निहित रहेगा। इसके लिए शिक्षा-संस्कार समिति दायी होगा।

The family-cluster council shall have programs for completion of education-*sanskar* in a family if education-*sanskar* is found to be incomplete. Education-*sanskar* committee shall be responsible for this.

**कार्यक्रम - 3**

**Program - 3**

**न्याय सुरक्षा समिति से सत्यापन**

**Truthful declaration from the justice security committee**

ग्राम में न्याय सुरक्षा सर्व सुलभ होने का सत्यापन निरीक्षण-परीक्षण पूर्वक परिवार समूह सभा व समिति सदस्य करेंगे कार्यक्रम रहेगा।

There will be a program for truthful declaration regarding accessibility of justice security to all in the village. This shall be done by members of the family-cluster council and justice security committee, by way of inspection & examination.

1) न्याय सुरक्षा हर परिवार में प्रमाण वर्तमान होने का सत्यापन।

परिवार समूह सभा सदस्य व समिति निरीक्षण परीक्षण पूर्वक सत्यापित करने का कार्यक्रम निहित रहेगा।

Truthful declaration regarding presence of evidence in each family of justice security.

There shall be a program of truthful declaration (by way of inspection & examination) by each member of the family-cluster council and justice security committee.

2) न्याय सुरक्षा में किसी परिवार के साथ न्यून होने की स्थिति में उसे सम्पन्न करने का कार्यक्रम परिवार समूह सभा व समिति में निहित रहेगा और न्याय सुरक्षा समिति व सभा इसके लिये दायी रहेगी।

The family-cluster shall have programs for completion of justice security in a family if justice security is found to be inadequate. Education-*sanskar* committee and council shall be responsible for this.

**कार्यक्रम - 4**

**Program - 4**

**उत्पादन कार्य समिति से सत्यापन**

**Truthful declaration from the production work committee**

1) उत्पादन कार्य चिन्हित रूप में सर्वसुलभ होने का सत्यापन निरीक्षण-परीक्षण पूर्वक सत्यापित करेगा। कार्यक्रम परिवार समूह सभा में समाहित उत्पादन कार्य समिति सर्वसुलभता के लिये दायी रहेगी।

There will be a program for truthful declaration regarding evident accessibility of production work to all in the village, by way of inspection & examination. Production work committee, as part of the village-cluster council, shall be responsible for such accessibility.

2) उत्पादन कार्य पूर्वक हर परिवार सहज आहार-विहार-व्यवहार, आवास, अलंकार, शरीर पुष्टि, पोषण-संरक्षण समाज गति के आधार पर परीक्षण-निरीक्षण कार्यक्रम है।

There shall be product-work programs to meet the needs of each family - pertaining to food, lifestyle, behaviour, shelter, clothing, physical health, nourishment, protection & societal functioning - on the basis of inspection & examination.

3) किसी परिवार में पर्याप्त उत्पादन न होने की स्थिति में उत्पादन कार्य समिति का संयोजन मार्गदर्शन से पर्याप्त रूप देने का सत्यापन होगा।

There will be a truthful declaration by the production work committee regarding the steps taken and guidance given to the families where production is less than their needs.

**कार्यक्रम - 5**

**Program - 5**

**विनिमय कोष समिति से सत्यापन**

**Truthful declaration from the exchange storage committee**

1) हर ग्राम सभा से मनोनीत अनुप्राणित विनिमय कोष समितियाँ विनिमय के लिए प्रस्तुत ग्राम के सभी वस्तुओं का भण्डारण व विनिमय, ग्राम में जो वस्तुएँ उत्पादित नहीं हो पाई उसे अन्य ग्राम से विनिमय पूर्वक प्राप्त करना निहित कार्यक्रम है।

Storage and exchange of the goods produced in the village and offered for exchange, and to procure goods not produced in the village from other markets, shall be the main program of the exchange storage committees nominated and inspired by the village council.

2) हर विनिमय कोष समिति में भण्डारण प्रबंधन रहेगा।

Storage & godown facilities shall be managed by respective exchange storage committees.

3) हर विनिमय कोष समिति सदस्य परिवार और परिवार समूह सभाओं के द्वारा किये गये वस्तुओं के मूल्यांकन में सहमत और पुनर्मूल्यांकन करने में ग्राम सभा की सहमति प्राप्त करने का अधिकार निहित रहेगा।

Each member of the exchange storage committee may agree with the evaluation (of goods) done by the families or family-clusters, or may re-evaluate them with the concurrence of the village council.

4) ग्राम में हर परिवारगत आवश्यकता के आधार पर वस्तु विनिमय विधि से उपलब्ध कराने का दायी (ग्राम सभा की होगी) होगा।

Responsibility of making available an appropriate method of exchange to all family needs in the village, shall be with the village council.

**कार्यक्रम - 6**

**Program - 6**

**स्वास्थ्य-संयम समिति से सत्यापन**

**Truthful declaration from the health-*sanyam* committee**

1) स्वास्थ्य-संयम समिति प्रस्तुत कार्यक्रम में प्रत्येक परिवार जनों का स्वास्थ्य संरक्षण होने का निरीक्षण-परीक्षण सहित परिवार समूह समिति से सत्यापन सम्पन्न रहना निहित रहेगा। व्यायाम, योगासन ऐसा सभी खेल स्वास्थ्य के लिए उपयोगी होने का कार्यक्रम निहित है। सार्थकता का सत्यापन रहेगा।

Program of the health-*sanyam* committee shall include truthful declarations from the family-cluster committee regarding the health & safety of all family members, by way of inspection & examination. The programs will include exercises, *yoga* and other sports beneficial to health. Truthful declaration of meaningfulness (of the committee) shall be done.

2) कार्यक्रम को निर्धारित करने का अधिकार ग्राम सभा से समिति के लिए प्रदत्त रहेगा। समिति द्वारा किया गया निर्णय परिवार समूह सभा के परामर्श तथा सम्मति से और ग्राम सभा की सहमति-स्वीकृति-प्रक्रिया से होगा।

The authority to decide the program shall be delegated by the village council to the committee. Decisions shall be taken by the committee in consultation with the family-cluster, and concurrence & acceptance of the village council - this shall be the process.

3) सभी परिवार वनौषधियों की आवश्यकता के अनुसार उपयोग करने की विधियों से सम्पन्न रहेंगे। सफलता का सत्यापन रहेगा।

All families shall be accomplished, as per their needs, in the methods of using herbal medicines. Success will be truthfully declared.

**ग्राम व्यवस्था :-**

**Village self-governance system :-**

व्यवस्था स्वरूप में वर्णित दस स्तरीय क्रमिक व्यवस्था में सभी पाँचों समितियाँ रहेंगी। क्रमिक-समिति क्रमिक-कार्यक्रम चिन्हित करते हुए क्रमिक-कार्यक्रम बनायेगी जो समय व स्थान के अनुसार तय किये जावेंगे।

All the five committees will be there at each tier of the ten-tier system described earlier. Committees at each tier shall identify and prepare their respective programs which will be decided based on place & time.

**(1)** **ग्राम सभा से विश्व राज्य सभाओं का घोषणायें**

**Declarations - beginning from the village councils till the world council**

1. स्वतंत्रता स्वराज्य वैभव का प्रमाण वर्तमान सहज घोषणा

Declaration regarding present evidence of the grandeur of independence & self-governance.

2. स्वयंस्फूर्त अर्थात् ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्मत निर्णयों के आधार पर कार्य-व्यवहार आचरण, व्यवस्था में भागीदारी के रूप में अभिव्यक्तियाँ, सम्प्रेषणा, प्रकाशन सहज घोषणा।

Declaration regarding expressions, communications & manifestations in the form of work & behaviour, conduct, and participation in the system on the basis of spontaneous decisions according to knowledge, wisdom & science.

**ज्ञान :-** तात्विक रूप में सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति रूपी सहअस्तित्व दर्शन ज्ञान, स्व स्वरूप रूपी जीवन ज्ञान, मानवत्व रूपी आचरण ज्ञान सहज सार्वभौमता का घोषणा।

**Knowledge :-** Declaration regarding universality of knowledge as - (1) holistic view of coexistence as the nature saturated in Omnipotence (elemental or fundamental knowledge), (2) knowledge of *jeevan* (knowledge of self), and (3) knowledge of humane conduct (humaneness).

**विवेक :-** विवेक मानव लक्ष्य व जीवन लक्ष्य सार्थक होने का विधि निश्चयन - ज्ञान।

**Wisdom :-** Knowledge of determination of the method of realising human goal and *jeevan* goal.

**विज्ञान :-** मानव लक्ष्य सफल होने के अर्थ में दिशा निश्चयन ज्ञान सहज सफलता का घोषणा।

**Science :-** Success in knowledge of determination of direction for realising human goal.

Declaration regarding the above.

**(2)** **व्यवहार सहज सुलभता का घोषणा**

**Declaration regarding ease of accessibility of & to behaviour**

**तात्विक** रूप में एक से अधिक जागृत मानव एकत्रित होने और उसकी निरंतरता को परंपरा के रूप में बनाये रखना।

In the **elemental or fundamental form**, more than one awakened humans being available simultaneously, and maintaining its continuity in the form of tradition.

**बौद्धिक** रूप में ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्मत विधि से किया गया समाधान परंपरा।

In **intellectual form**, tradition of manifestation of resolution by way of knowledge, wisdom & science.

**व्यवहार** रूप में अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था अर्थात् दश सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी सहजता का घोषणा।

In **practical form**, participation in undivided society and universal systems, i.e., in the ten-tier system.

Declaration regarding the above.

**(3)** **आचरण सर्वशुभ होने का घोषणा (आचरण सर्व सुलभ होने का घोषणा ??)**

**Declaration regarding ease of accessibility of & to conduct**

**तात्विक रूप में :-** मानवत्व सहित व्यवस्था सहज प्रमाण।

**In the elemental or fundamental form :-** Evidence of systems with humaneness.

**बौद्धिक (तार्किक) रूप में :-** ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्मत अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन।

**In intellectual (logical) form :-** Expression, communication & manifestation according to knowledge, wisdom & science.

**व्यवहार रूप में :-** समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण परंपरा घोषणा।

**In practical form :-** Tradition of evidence of resolution, prosperity, fearlessness & coexistence.

Declaration regarding the above.

**(4)** **कार्य सफलता का घोषणा**

**Declaration of success in work**

**कार्य :-** तात्विक रूप में कायिक-वाचिक-मानसिक व कृत-कारित-अनुमोदित भेदों से है।

**Work, in the elemental or fundamental form,** is categorised as physical, verbal & mental, and doing, delegating & endorsing.

**कार्य :-** तार्किक रूप में उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनीयता परंपरा में सार्थक होने का घोषणा।

**Work, in intellectual (logical) form,** is being meaningful in the tradition of use, right-use and purposefulness.

**कार्य :-** व्यवहारिक रूप में नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, समाधान, सत्य सहज प्रमाण परंपरा होने का घोषणा।

**Work, in practical form,** is the tradition of evidence of law, regulation, balance, justice, resolution & truth.

Declaration regarding the above.

**(5)**

**मानवत्व :-** सामाजिक अखण्डता के अर्थ में सूत्र व्याख्या।

**Humaneness :-** Maxims and elaboration of & for undividedness in society.

**समाधान :-** सार्वभौमता के अर्थ में सूत्र व्याख्या।

**Resolution :-** Maxims and elaboration of & for universality.

**न्याय :-** संबंधों के अर्थ में सूत्र व्याख्या।

**Justice :-** Maxims and elaboration of & for relationships.

**सत्य :-** अनुभव प्रमाण सहज सूत्र व्याख्या, परंपरा सहज समाज गति के अर्थ में प्रमाण वर्तमान होने का घोषणा।

**Truth :-** Maxims and elaboration of & for evidence of realisation.

Declaration regarding presence of tradition of evidence of societal functioning.

**(6)**

**जागृति सहज प्रमाण परंपरा सुलभ होने का घोषणा :-**

**Declaration regarding availability of tradition of evidence of awakening :-**

अनुभव प्रमाण परम प्रमाणों में

Evidence of realisation is the ultimate evidence.

प्रमाणित करने कराने करने के लिए - संकल्प प्रमाणित करने

सहमत होने सहज बोधपूर्ण का परंपरा वर्तमान प्रवृत्ति

Bodh based on evidence for achieving, - Tradition of producing evidence of determination,

facilitating, endorsing of evidence tendency thereof

प्रमाण सहज चिंतन साक्षात्कार - चित्रण प्रमाणित करने का

परंपरा वर्तमान स्वरूप

Contemplation & discernment based - Tradition of producing evidence of visualisation,

on evidence its present status

प्रमाण सहज तुलन - विश्लेषण प्रमाणित करने का

परंपरा वर्तमान स्वरूप निर्णय

Deliberation based - Tradition of producing evidence of analysis,

on evidence in the form of decisions

प्रमाण सहज मूल्यों का आस्वादन - संबंधों का चयन प्रमाणित करने के लिए

परंपरा वर्तमान चयन सहित निर्वाह प्रमाण

Tasting of values based - Tradition of producing evidence selection of

on evidence relationships, evidence of fulfilling

समझा सोचा हुआ प्रमाण - समझाने में प्रमाण परंपरा

What one has understood, is evidence - in passing on, is the tradition of evidence

सीखा हुआ प्रमाण - सिखाने में प्रमाण परंपरा

What one has learnt, is evidence - in passing on, is the tradition of evidence

किया हुआ प्रमाण - कराने में प्रमाण परंपरा

What one has done, is evidence - in passing on, is the tradition of evidence

जीने देने में प्रमाण - जीने में प्रमाण परंपरा

Evidence in living - in letting live, is the tradition of evidence

**(7)**

पशुपालन, ऊर्जा संतुलन, वनवर्धन, वृक्षारोपण, वन्य पशु नियंत्रण-संतुलन सहज घोषणा

Declarations regarding animal husbandry, energy balance, afforestation, tree plantation, control & regulation of wild animals.

वन-वनस्पति, औषधियों का संरक्षण, संवर्धन, ऋतु संतुलनकारी कार्यक्रम, सफलता में, से, के लिए आंकलन घोषणा

Declarations regarding assessment in, of & for success of programs for protection & enrichment of forests, vegetation and herbal medicines, and of programs for climatic balance.

वन, खनिज, वनस्पतियों के संतुलन में ऋतु-संतुलन की पहचान करना, पहचान-संतुलन में सहमति प्रवृत्ति प्रमाण वर्तमान घोषणा।

Declarations regarding the present status and evidence of balance of forests, minerals & vegetation, and climatic balance, and approval.

**(8)** **विविध प्रकार से किया गया ऊर्जा संतुलन का घोषणा एवं सत्यापन।**

**Truthful declaration regarding energy balance implemented in various ways :-**

पशुपालन, कृषिकार्य, ग्राम शिल्प, आवास, ग्राम शिल्प कुटीर उद्योग, अलंकार सुविधा, ग्रामोद्योग, सम्मिलित ग्राम वैभव में श्रम नियोजन, सड़क बनाना एवं बनाये रखना, तालाब बनाना कुआँ बनाना सरोवर बनाना एवं बनाये रखना, नहर को बनाना एवं बनाये रखना, नदी नालों का पवित्रता को बनाये रखना, पानी, हवा, आग से सावधान रहना।

Animal husbandry, agriculture work, village crafts, shelter, cottage industries, clothing, village industries, physical participation in the overall village grandeur, making and maintenance of roads, making and maintenance of ponds, wells, canals & lakes, maintaining the cleanliness of rivers and rivulets, remaining safe from water, winds & fire.

गाँव में अपरिचित व्यक्ति से परिचय प्राप्त करना। परिचय होने के स्थिति में सूचना ग्राम परिवार समूह सभा सदस्यों को ऐसे व्यक्ति सहित प्रस्तुत करना यह हर ग्रामवासी का कर्त्तव्य होगा।

To verify the identity of strangers in the village. Upon verification, it shall be the duty of each villager to inform members of the family-cluster council regarding this.

**(9)**

हर परिवार का अपने-अपने निवास व दरवाजा सड़क को पवित्र एवं हरियाली शोभनीय रूप में बनाये रखना कर्त्तव्य।

It shall be the duty of each family to maintain cleanliness & decorum of their respective houses and entry doors.

आये हुए आगन्तुकों, अपरिचितों का परिचय प्राप्त करना कर्त्तव्य।

It shall be the duty of each family to verify the identity of visitors and strangers.

**आगंतुक :-** अपरिचित व्यक्ति की उपस्थिति अपेक्षाओं के अनुसार में पहचानना, मार्गदर्शन।

**Visitor :-** Presence of strangers, to understand their expectations, and to assist & guide them.

**अभ्यागत :-** अभ्युदयार्थ आमंत्रित नर-नारी का आगमन, सम्मान विधि से स्वागत करना।

**Reception :-** Arrival and respectful welcome of persons, males & females, invited for comprehensive resolution.

**अतिथि :-** आतिथ्यार्थ आवाहित नर-नारियों का आगमन में सेवा, सम्मान विधि से स्वागत करना।

**Guest :-** Arrival and respectful welcome of guests, and offering them hospitality.

**आतिथ्य :-** शिष्टता सहित अपने वस्तु व सेवा का अर्पण-समर्पण।

**Hospitality :-** Offering & dedicating objects & assistance with modesty.

**(10)** **मानवीयता सर्वसुलभ होने का घोषणा**

**Declaration regarding availability of humaneness to all :-**

हर परिवार मानवीयता पूर्ण आचरण, संबंध-संबोधन, मूल्य, नैतिकता, चरित्र सहज अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन सहित आहार-आवास-अलंकार संबंधी वस्तुओं से सम्पन्न रहना अधिकार स्वत्व स्वतंत्रता

Right, innateness & independence of each family to remain accomplished with goods related to food, shelter & clothing, along with expression, communication & manifestation of humane conduct, humane relationships & greetings, values, ethics & character.

**परिवार =** परस्पर सुख-शान्ति सहज प्रमाण में, से, के लिये समाधान, समृद्धि पूर्वक प्रमाण परंपरा प्रस्तुत करना

**Family =** To present tradition of evidence by way of resolution & prosperity in, by & for the evidence of mutual happiness & peace.

**(11)** **जागृति सुलभता सहज घोषणा**

**Declaration regarding ease of accessibility of & to awakening**

v हर जागृत मानव परिवार में शरीर सहज आयु अनुसार श्रम व कार्य करना, यह स्वयंस्फूर्त होना, स्वत्व-स्वतंत्रता-अधिकार के आधार पर है।

In all awakened families, doing physical work & labour depends on the age of the family member, this happens effortlessly, and is their innateness, independence & authority.

v शिशु काल तीन से पाँच वर्ष तक - 3 से 5 वर्ष तक

Age of childhood - 3 to 5 years

कौमार्य अवस्था पाँच से बारह वर्ष तक - 5 से 12 वर्ष तक

Pre-pubescent age - 5 to 12 years

युवावस्था बारह से बीस वर्ष तक - 12 से 20 वर्ष तक

Age of youth - 12 to 20 years

प्रौढ़ावस्था - 20 से 30 वर्ष तक

Age of adulthood - 20 to 30 years

परिपक्वावस्था - 30 से 70 वर्ष

Age of maturity - 30 to 70 years

परिपक्वावस्था सत्तर वर्ष के अन्तर वृद्धावस्था - 70 वर्ष के अनन्तर

में निहित ज्ञान विवेक विज्ञान में भागीदारी में

प्रखर होना, शरीर में क्रमिक शिथिलता

In old age (post the age of maturity), - Over 70 years

becoming expert in knowledge, wisdom &

science, gradual deterioration in the body

परिपक्वावस्था (यही पीढ़ी से पीढ़ी उन्नत होने का - परिपक्वता की निरंतरता ही परंपरा

प्रेरणा स्रोत जागृत परंपरा के अर्थ में आयु

आवश्यकता कर्त्तव्य घोषणा)

Old age (this is the source of inspiration - Continuity of old age, is indeed the tradition

for generation to generation progress, the

importance of age in awakened tradition,

duty - Declaration)

**(12)** **शिशु काल में लालन-पालन, पोषण-संरक्षण**

**Upbringing & rearing, nourishing & protecting during childhood**

**लालन :-** शिशु में खुशियाली मुस्कान की अपेक्षा में किये गये पोषण-संरक्षण, भाषा-अभाषा, भाव-भंगिमा, मुद्रा, अंगहार रूपी उपक्रम प्रकटन।

**Upbringing :-** Natural, visible efforts (in the form of verbal and non-verbal, gestures & postures, and actions) for nurturing & protecting the child only in expectation of a smile,

**पालन :-** शरीर पुष्टि, मनःस्वस्थता स्वस्थता के लिए किया गया उपक्रम।

**Rearing :-** Efforts made towards bodily growth, mental well-being and general health.

**पोषण :-** शरीर भाषा संबोधनों को प्रमाणित करना।

**Nourishing :-** Evidence of physical growth, language and greetings.

**संरक्षण :-** शारीरिक व मानसिक संतुलन संरक्षण।

**Protecting :-** Physical and mental balance, is protection.

**(13)** **शिशु काल से जागृति यात्रा घोषणा**

**Declaration of journey towards awakening since the childhood**

1. शिशुकालीन लालन-पालन, पोषण-संरक्षण कार्यों का दायित्व व कर्त्तव्य अभिभावकों का है।

Duty and responsibility of upbringing & rearing, nourishing & protecting the children is with guardians.

2. मानव सन्तान का लालन-पालन, पोषण-संरक्षण का कार्य अभिभावक का है। इस परंपरा में उत्सव, प्रसन्नता, खुशियाली है। शैशवकाल के अनंतर पड़ोसी बन्धुओं का मानव संस्कार पक्ष में दायित्व रहेगा।

Duty of upbringing & rearing, nourishing & protecting the child is with the guardian. There is celebration & happiness in this tradition. The neighbours will have a responsibility in the development of the *sanskar* aspect after childhood.

3. मानव में सभी संबंधों में संबोधन सभी परिवार परंपरा में प्रचलित है। इसे अखण्डता सहज प्रयोजन सार्थकता के अर्थ में प्रमाणित करना जागृति है।

In all traditions of families, greetings in prescribed form are used in relationships. To evidence it for the purpose of undividedness, for meaningfulness, is awakening.

मानवत्व सहित व्यवस्था में जीना-

Living in systems with humaneness-

4. मानव परंपरा शिक्षा संस्कार सहित जागृति पूर्वक अपने सन्तानों को ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्न बना सकते हैं, तद्अनुरूप संभाषण, अपेक्षानुरूप प्रमाण निर्देश सम्पन्न होना स्वभाविक है।

It is possible for the human tradition to accomplish their children in knowledge, wisdom & science by way of awakening, through education-*sanskar*. Accordingly, accomplishment in proper conversations & instructions, and the expected evidence & guidance, will naturally occur.

5. संबंधों का संबोधन, शिष्टता का दिशा निर्देशन संबोधन के साथ प्रयोजन भाव-भंगिमा, मुद्रा, अंगहार विधि से सन्तानों को निर्देशित करना हर अभिभावकों, पड़ोसी बन्धु, मित्रजनों का कर्त्तव्य-दायित्व होता है।

It is the duty & responsibility of every guardian, neighbour, family member & friend to guide the children by way of proper greetings in relationships, guidance regarding propriety, purpose with greetings, gestures, postures and body language.

6. शिशुकालीन शिक्षा, शिक्षा-संस्कार के दायी अभिभावक होंगे। जीते हुए के आधार पर स्वीकृति, जीने के आधार पर शिक्षा संस्कार सार्थक होता है।

Guardians shall be responsible for providing education-*sanskar* during childhood. Acceptance and education-*sanskar* is meaningful only when based on living.

7. कौमार्य काल में ग्रामवासी, शिक्षा संस्था व अभिभावकों का संयुक्त रूप में जीने के आधार पर सफल बनाने का कर्त्तव्य-दायित्व रहेगा।

During the pre-pubescent stage, it shall be the joint duty & responsibility of the village residents, educational institutions and guardians to make education-*sanskar* successful based on their own living.

8. युवावस्था में मानवीय शिक्षा-संस्कार को विद्यार्थियों में, से, के लिये आचरण सहित प्रमाण रूप देना अनुभव प्रमाण सम्पन्न अध्यापकों में अनिवार्य रहेगा।

During young age, it shall be essential for teachers who are themselves accomplished with evidence of realisation, to bring out humane conduct with evidence - in, by & for students - by way of humane education-*sanskar*.

9. हर मानव सन्तान युवकों के फलन के रूप में अनुभव प्रमाण सम्पन्नता फलित होना ही मानवीय शिक्षा-संस्कार की सफलता है। इसका सत्यापन अभिभावक, विद्यार्थी करेंगे। अध्यापक दृष्टा पद में वैभव सम्पन्न होगा।

Attainment of evidence of realisation by all children, by the time they reach adulthood, is indeed the success of humane education-*sanskar*. Guardians and students shall make truthful declarations regarding this. Teachers shall be established in the grandeur of the perceiver plane.

10. हर नर-नारी का मानवीय शिक्षा संस्कार सम्पन्न रहना ग्राम, मोहल्ला, देश, धरती में मानव का वैभव है।

All humans, males & females, being accomplished in humane education-*sanskar* is the grandeur of humans in villages, localities, countries & Earth.

11. जागृत मानव परंपरा में सम्पूर्ण मानव का अपने में सामाजिक अखण्डता और सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या में प्रमाण होना सहज है।

In awakened human tradition, it is natural for all humans to be the evidence in maxims & elaboration of undivided society & universal system.

12. जागृत मानव परंपरा में ही समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाण सहित नियम, नियंत्रण, संतुलन समेत सर्व सुख-शान्ति सहज विधि से जीना होता है। यही स्वराज्य है।

Living with happiness & peace - along with law, regulation & balance, and with resolution, prosperity, fearlessness & coexistence - occurs only in awakened human tradition. This indeed is self-governance.

13. कम से कम सोलह-अठ्ठारह अधिक से अधिक बीस वर्ष की अवस्था में श्रम साध्य कार्यों को करने का दायित्व-कर्त्तव्य होना आवश्यक है।

Sense of duty & responsibility towards labour oriented tasks by the time a person is 16 to 18 years of age (maximum by the age of 20), is essential.

14. प्राकृतिक ऐश्वर्य पर उपयोगिता मूल्य के अर्थ में श्रम नियोजन फलस्वरुप समृद्धि सार्थक होना पाया जाता है।

Deployment of labour for application of usefulness value on the natural abundance is meaningful when it leads to prosperity.

15. श्रम कार्य हर नर-नारी में, से, के लिये स्वस्थता, समृद्धि, सेवा के लिए आवश्यक है।

Labour & work is essential in, by & for all humans, males & females, for health, prosperity and service.

16. खेल,व्यायाम एवं श्रम स्वस्थ रहने का उपाय है। आवश्यकता व समय के अनुसार श्रम नियोजन हर ग्राम सभा, परिवार समूह सभा के निश्चित सामूहिक कार्य और परिवार से स्वीकृत होना भी रहेगा।

Sports, exercise and physical labour is the way to remain healthy. Depending on needs & time, physical labour shall also be subject to acceptance of the family as well as collective activities decided by village council & family-cluster council.

17. श्रम नियोजन हर मानव में, से, के लिये आवश्यक है।

Deployment of labour is essential in, by & for all humans.

18. श्रम नियोजन पूर्वक उपयोगिता व कला मूल्य ही प्रमाणित होता है। स्वास्थ्य संतुलन के लिए भी श्रम, समय नियोजन होता है।

Only usefulness value and aesthetic value is evidenced by the way of deployment of labour. Deployment of labour & time is also for maintenance of health.

19. सम्पूर्ण उपयोगितायें सामान्य व महत्वाकाँक्षा संबंधी उपलब्धि होगी।

All usefulnesses are achievements related to common-aspirations and special-aspirations.

20. हर नर-नारी युवा काल से प्रौढ़ावस्था के फलन तक श्रम नियोजन योग्य होते हैं। श्रम करने की प्रवृत्ति जागृति पूर्वक सफल विधिवत् होता है।

All humans, males & females, are capable of putting in physical labour from the onset of youth till they are in adulthood. Tendency for putting in physical labour naturally ensues by way of awakening.

21. शरीर की सभी अवस्थायें सदा दृष्टव्य है।

All stages of the human body are always apparent.

22. मानवीय शिक्षा-संस्कार पूर्वक ही हर नर-नारी में, से, के लिए मानवत्व सहज मानसिकता प्रमाणित होना पाया जाता है।

It is only by way of humane education-*sanskar* that mindset of humaneness is evidenced in, by & for all humans, males & females.

23. हर मानव का समझने के लिए ध्यान देना आवश्यक है और समझा हुआ को प्रमाणित करने के लिए ध्यान देना बना रहता है।

One must pay attention if one wants to understand, and one naturally remains attentive for evidencing what one has understood.

24. हर मानव का ज्ञानावस्था में होना ही समझदारी में, से, के लिए प्रवृत्ति व अध्ययन व समझ प्रमाण है। यही परंपरा है।

The fact that all humans belong to the knowledge order is the evidence of tendency, study & understanding in, of & for wisdom. This indeed is the tradition.

25. सर्वमानव सहअस्तित्व में ही समझदार होना नित्य समीचीन है।

The possibility of humans attaining understanding in coexistence, is always imminent.

26. सर्वमानव अपने वैभव को समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी सहज विधि से प्रमाण पहचान होना ही मानवीय परंपरा इतिहास वर्तमान है।

To recognise & evidence their own grandeur by way of understanding, honesty, responsibility & participation is indeed the humane tradition. This is the history so far.

**(14)** **मानव संस्कृति प्रमाण घोषणा**

**Declaration regarding evidence of human culture**

**संस्कृति**

**Culture**

**तात्विकता :-** पूर्णता (क्रियापूर्णता, आचरण पूर्णता) के अर्थ में स्वीकृत समझ सहित प्रकाशन।

**In the elemental or fundamental form :-** Acceptance & understanding along with manifestation for completeness (activity-completeness & conduct-completeness).

**बौद्धिकता :-** मूल्यों के अर्थ में प्रकाशन।

**In intellectual (logical) form :-** Manifestation of & for values.

**व्यवहारिकता :-** मानवीयता के अर्थ में कला साहित्य का प्रकाशन, जागृति व सतर्कता सहित वर्तमान- क्रियापूर्णता समाधान के अर्थ में, आचरण पूर्णता जागृतिपूर्णता के अर्थ में, सजगता अनुभव संपन्न प्रमाण के रूप में स्पष्ट है।

o जीना ही दर्शन प्रकाशन कला है।

o श्रेष्ठ, श्रेष्ठतर, श्रेष्ठतम विधि से जीने की कला का प्रकाशन ही संस्कृति है। यह संज्ञानीयता में नियंत्रित संवेदना पूर्वक मानवीय संस्कृति है। समाधान सहज है।

**In practical form :-** Publication of arts & literature for humaneness; presence of awakening & wakefulness at all times. It is clear that activity-completeness is for resolution, conduct completeness is for awakening-fullness, and wakefulness is for the evidence of realisation.

o Life is the philosophy, manifestation is an art.

o Manifestation of the art of living in a good way, in a better way, in the best way, itself is culture. This is the humane culture where sensoriality is regulated by cognisance. This occurs by way of resolution.

**(15)** **संबंध उत्सव घोषणा**

**Declaration regarding celebration of relationships**

प्रत्येक परिवार पूरा ग्राम परिवार के साथ तालमेल बनाये रखने का अधिकार।

The right of each family to live harmoniously with the whole village family.

हर परिवार उत्सव संबंध

Each family - celebration of relationships

हर तरह कला संबंध

Relationship with respect to arts

संस्कृति - संबंध

Relationship with respect to culture

शिक्षा लोक शिक्षा - संबंध

Relationship with respect to formal and informal education

विनिमय - संबंध

Relationship with respect to exchange

उत्पादन - संबंध

Relationship with respect to production

वस्तुओं का उपयोग - संबंध

Relationship with respect to use of goods

कला - संबंध

Relationship with respect to arts

साहित्य - संबंध

Relationship with respect to literature

मानव सभ्यता - संबंध

Relationship with respect to human civility

स्वास्थ्य - संबंध

Relationship with respect to health

अनुभव - संबंध

Relationship with respect to realisation

समाधान - संबंध

Relationship with respect to resolution

न्याय - संबंध

Relationship with respect to justice

नियम, नियंत्रण, संतुलन - संबंध

Relationship with respect to law, regulation & balance

इन सभी संबंधों में मानवीयतापूर्ण आचरण को प्रमाणित करना ही व्यवस्था है।

To evidence humane conduct in all these relationships, itself is the system.

**(16)** **हर्षोल्लास उत्सव घोषणा**

**Declaration regarding celebration of joy and cheerfulness**

**उत्सव =** सत्य, समाधान, न्याय, नियम, नियंत्रण, संतुलन के अर्थ में

**Celebration =** for truth, resolution, justice, law, regulation & balance.

**ऋतु कालोत्सव :**

**Seasonal celebrations :**

**1.** **वसन्त कालोत्सव**

**Celebrations during spring**

1.1 वसन्तोत्सव ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्मत विधि से फल-फूल औषधियों संग्रहण एवं लगाने का कार्यक्रम

Spring celebrations include programs of collection & plantation of fruits, flowers and herbs by way of knowledge, wisdom & science.

1.2 फल वाले वृक्षों, औषधियों पर शोध संरक्षण रोपण कार्योत्सव

Celebration related to work on research, protection & plantation of fruit trees & herbs.

1.3 प्राकृतिक ऐश्वर्य पर किया गया परीक्षण-निरीक्षण कार्यों का ज्ञान-विवेक-विज्ञान विधि से कार्यगोष्ठियों का आयोजन-संयोजन कार्यक्रम।

Program of organising workshops on developments in examination & inspection activities on the natural abundance, by way of knowledge, wisdom & science

1.4 सार्थक कला का मूल्यांकन उसका इतिहास परिवार सभा से ग्राम परिवार सभा में सूचना लिखित रूप में संग्रह करना।

Evaluation of meaningful arts; to properly collect & document its history from family-cluster council to the village family council.

**2.** **ग्रीष्म कालोत्सव :-**

**Celebrations during summers :-**

ग्रीष्म कालोत्सव ऋतु संतुलन, शोध संतुलन को बनाये रखने का शोध। प्रधानत: गाँव में शुद्धता वातावरण में पवित्रता और गाँव में आने जाने में सुगमता सहज मुद्दों पर सोच-विचार कर हर नर-नारी व्यवस्था में भागीदारी करेंगे। परिवार समूह, ग्राम, परिवार सभा सदस्य सोचेंगे ही।

Summer celebrations include climate balance, research, and research for maintaining the climate balance. All persons, males & females, shall think about and participate in the points related to cleanliness in the village, pollution-free environment and ease of commuting in the village. Members of family-cluster council and village family council, in any case, shall think about these points.

2.1 श्रेष्ठता की ओर कार्यगति प्रोत्साहन मूल्यांकन परस्परता में होना आवश्यक है।

Mutual encouragement and evaluation for movement towards excellence, is excellence.

2.2 सड़क, तालाब, घर-द्वार में सुधार निर्माण सफाई का कार्य उत्सव रूप में, आवश्यकता व प्रयोजन के अर्थ में स्वरूप देना वैभव है।

Giving shape to works related to improvements, construction & cleanliness of roads, water-bodies & homes as celebrations, and for fulfilment of needs, and purpose is indeed the grandeur.

2.3 सटीक श्रम नियोजन का मूल्यांकन।

Evaluation of the right deployment of labour.

**3.** **वर्षा कालोत्सव :-**

**Celebrations during rains :-**

3.1 हर परिवार में स्वास्थ्य संबंधी सतर्कता।

Watchfulness related to health in each family.

3.2 प्राकृतिक संतुलन के फलन जो गुणों के प्रति सतर्कता, कृषि सहज कार्य में शुभारंभ उत्सव।

Watchfulness towards attributes which are the offshoot (outcome) of natural balance, and happy beginning of the agricultural work, is celebration.

3.3 बीज, खाद, फसल संरक्षण में स्वायत्त सम्पन्न रहना उत्सव है।

Being autonomous in seeds, fertilisers and crop protection, is celebration.

3.4 हर परिवार अपने उत्पाद कार्यक्रम में गुणवत्ता व आवश्यकता के सन्दर्भ में जो ज्ञानार्जन होता है उसे लोक व्यापीकरण के लिए प्रस्तुत करना सामाजिक उत्सव है।

Presenting and spreading the knowledge earned by each family with reference to programs of their production and quality, is social celebration.

3.5 परिवारों में क्रियान्वित हस्तकला, ग्राम शिल्प कुटीर उद्योग व ग्रामोद्योग में उत्पादन कार्योत्सव समझदारी पूर्वक उपयोगिता को प्रमाणित करने में पूरा ध्यान रखना उत्सव।

Celebration related to work on handicrafts produced in families, village crafts, production in cottage industries and village industries, and to pay attention to evidence of usefulness by way of wisdom, is celebration.

**4.** **शरद कालीन उत्सव :-**

**Celebrations during autumn :-**

4.1 शरद कालीन उत्सव फसलों में स्वस्थता उसके संरक्षण-पोषण के फलन में उत्सव होना।

Celebration of harvesting healthy crops due to care & protection given to them.

4.2 सटीक समय में किया गया श्रम नियोजन में कृषि, पशुपालन फलित होने का उत्सव।

Celebration related to good results of timely deployment of labour in the areas of agriculture and animal husbandry.

4.3 हस्तकला का परस्पर गुणवत्ता, उपयोगिता के आधार पर परस्परता में पहचान होना उत्सव है।

Mutual recognition based on the quality and usefulness of handicrafts is celebration.

4.4 गृह व कुटीर उद्योग, ग्राम शिल्प, ग्रामोद्योग में उत्पादित वस्तुओं का परस्पर पहचान उत्सव है।

Mutual recognition of goods produced in & by cottage industries, village crafts and village industries, is celebration.

4.5 हेमन्त ऋतु उत्सव में अधिकाधिक फसल परिपक्व होने का उत्सव।

Celebration of high yielding crops in the pre-winter.

4.6 फसलों का संग्रहणोत्सव।

Celebration related to work on crop harvesting.

4.7 फसल संरक्षण कार्योत्सव।

Celebration related to work on crop protection.

4.8 वृक्षारोपण की सफलता आगे समय में जल, वन, खनिज संरक्षण के संबंध में सोच-विचार, सड़क व अहाता का सोच-विचार योजना।

Success of tree-planting, planning about the security of water, forests & minerals in the future, and thinking about planned roads and compounds, is celebration.

4.9 जल संसाधनों का स्थानीय सुविधा के अनुसार सदुपयोग करना।

Right use of water resources as per local needs and availability.

**5.** **शरद, हेमंत, शिशिर कालोत्सव सार्थकता सहज घोषणा**

**Declaration regarding meaningfulness of the seasons of autumn, pre-winter & winter**

5.1 जल व्यवस्था पर आवश्यकीय कार्यक्रम।

Programs necessary for water management.

5.2 औषधि संबंधी कार्यक्रम।

Programs related to medicines.

5.3 वनोपजों का संग्रहण कार्यक्रम।

Programs for gathering and storing products harvested from the forests.

5.4 वन औषधियों का बोनी एवं फसलों का संग्रहण का उत्सव।

Celebration related to plantation and harvesting of forest herbs & crops.

5.5 मानवीय शिक्षा संस्कार समिति की सार्थकता का मूल्यांकन हर परिवार समूह सभा में सम्पन्न ग्राम सभा के पटल में प्रस्तुत करना।

Evaluation of the meaningfulness of the humane education-*sanskar* committee in each family-cluster council, and it shall be presented to the village council.

5.6 मानवीय शिक्षा-संस्कार सहज प्रयोजन का मूल्यांकन परिवार समूह सभा सदस्य, समिति सदस्य संयुक्त रूप से करेंगे जिसकी सूचना ग्राम सभा के पटल में रहेगी।

Evaluation of the purpose of the humane education-*sanskar* committee shall be jointly done by the family-cluster council and committee members, and the village council shall be updated about the same.

5.7 न्याय-सुरक्षा का मूल्यांकन परिवार समूह व समिति सदस्यों का संयुक्त रूप में मूल्यांकन होगा।

Evaluation of justice security shall be jointly done by the family-cluster council and committee members.

**(17)** **विनिमय उत्सव घोषणा**

**Declaration regarding celebration of exchange**

**उत्सव**

**Celebration of**

1. उत्पादन कार्य व सफलता।

Production activities and their success.

2. विनिमय कोष कार्य व सफलता का।

Exchange storage activities and their success.

3. स्वास्थ्य-संयम कार्य व सफलता का मूल्यांकन उन समितियों के सदस्य एक परिवार समूह सभा के सदस्यों का संयुक्त निरीक्षण-परीक्षण, ग्राम सभा पटल में सूचना।

Evaluation of the activities and success of the health-*sanyam* committee shall be done jointly by the family-cluster council and committee members, and the village council shall be updated about the same.

4. स्वास्थ्य संयमोत्सव हर वर्ष कम से कम एक बार सम्पन्न होगा।

Health-*sanyam* festival shall be celebrated at least once a year.

**(18)** **समृद्धि प्रमाण घोषणा**

**Declaration regarding evidence of prosperity**

**विनिमय कोष**

**Exchange storage**

1. विनिमय सुलभता परीक्षण-निरीक्षण विनिमय कोष समिति सदस्य व परिवार समूह सभा सदस्यों का संयुक्त रूप में ग्राम सभा पटल में सूचना।

Evaluation of the ease & availability of exchange shall be done jointly by the family-cluster council and the exchange storage committee members, and the village council shall be updated about the same.

2. विनिमय विधि से सुधार व बदलाव होने की आवश्यकता के अनुसार ग्राम सभा की स्वीकृति और परिवार समूह सभा के प्रस्ताव के आधार पर होगा।

Improvements or changes in the system of exchange shall be made after such a proposal is made by the family-cluster council, and accepted by the village council.

3. विनिमय सुलभता हर परिवार में, से, के लिए सहज होना ही उद्देश्य रहेगा।

Each & availability of exchange in, by & for all families shall be the objective.

4. विनिमय-कोष उत्सव हर वर्ष एक बार सम्पन्न होता रहेगा।

Exchange storage festival shall be celebrated once a year.

**(19)** **समृद्धि घोषणा**

**Declaration of prosperity**

**उत्पादन कार्य**

**Production work**

1. ग्राम के हर परिवार में उत्पादन-कार्य सुलभता का परीक्षण-निरीक्षण कार्य का समिति सदस्य व परिवार समूह सभा सदस्य का संयुक्त प्रक्रिया, निरीक्षण-परीक्षण ग्राम सभा पटल में स्पष्ट सूचना रहेगा।

Evaluation of the ease & availability of production work shall be done jointly by the family-cluster council and the committee members, and the village council shall be updated about the same.

2. उत्पादन कार्य में सुधार बदलाव आवश्यक होने की स्थिति में परिवार समूह सभा प्रस्ताव ग्राम सभा की स्वीकृति के साथ सम्पन्न होगा।

Improvements or changes in production work shall be made after such a proposal is made by the family-cluster council, and accepted by the village council.

3. वर्ष में एक बार उत्पादन कार्य समिति का उत्सव सम्पन्न होगा।

Production work festival shall be celebrated once a year.

**(20)** **न्याय-सुरक्षा सर्व सुलभ होने का घोषणा**

**Declaration of availability of justice security to everyone**

1. ग्राम में रहने वाले सभी परिवारों में न्याय-सुरक्षा सुलभता का परीक्षण, निरीक्षण कार्य समिति सदस्य, परिवार समूह सभा के सदस्यों का संयुक्त कर्त्तव्य रहेगा। ग्राम मोहल्ला परिवारों में हुए न्याय सुरक्षा सुलभता सफलता का हर परिवार में, से, के लिए सत्यापन और शोध संभावना आवश्यकताओं पर कार्य गोष्ठी परिवार समूह सभा के द्वारा निर्णयों को लिपिबद्ध करना।

Evaluation of the ease & availability of justice security to all families residing in the village shall be the joint duty of the family-cluster council and the committee members. Availability of justice security to all families residing in the village, and its success, shall be the subject of truthful declaration, and a workshop shall be held by the family-cluster council for the possibility and need of further research on this, whose decisions shall be documented.

2. मानवत्व, मानवीयता पूर्ण आचरण और दश सोपानीय अथवा मानव व्यवस्था का सर्व सुलभ होना ही ज्ञानावस्था सहज, मानव सहज अपेक्षा व आवश्यकता व प्रयोजन है। इसलिये इसकी प्रमाण परंपरा ही स्वराज्य व स्वतंत्रता पूर्ण वैभव है।

Accessibility and availability of humaneness, humane conduct and the ten-tier system (humane system) to everyone is the expectation, need and purpose of humans in the knowledge order. Therefore, the tradition of its evidence is indeed the grandeur of self-governance and independence.

3. प्रत्येक परिवार में न्याय-सुरक्षा, समझदारी सहित ईमानदारी जिम्मेदारी व भागीदारी का संयुक्त रूप में मूल्यांकन है।

Evaluation is in the combined form of justice-security, and honesty, responsibility & participation along with understanding, in each family.

4. कहीं भी सुधार की आवश्यकता होने पर परिवार में सुधार हो इसलिए परिवार समूह सभा व ग्राम सभा क्रम से दायी है।

Improvement, if needed anywhere in a family, shall be the responsibility of the family-cluster council, and thereafter, of the village council.

5. हर वर्ष अथवा वर्ष में दो बार उत्सव न्याय-सुरक्षा उत्सव सम्पन्न होना रहेगा।

The justice-security festival shall be celebrated once or twice a year.

**(21)** **नित्य-उत्सव**

**Daily celebrations**

हर नर-नारी स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता का सम्मान करने में सहज होने का घोषणा

Declaration by each person, male and female, regarding confidence in oneself and respect for excellence.

1. स्वयं में विश्वास होना समझदारी सहज क्रियाकलाप उत्सव

Celebration of - confidence in oneself and actions based on understanding

2. श्रेष्ठता का सम्मान करना - उत्सव

Celebration of - respect for excellence

3. प्रतिभा सम्पन्नता - उत्सव

Celebration of - being talented

4. व्यक्तित्व सहज प्रमाण - उत्सव

Celebration of - evidence of personality

5. व्यवहार में समाजिक होना - उत्सव

Celebration of - being sociable.

6. व्यवसाय (उत्पादन कार्य) में स्वावलम्बन सहज - उत्सव

Celebration of - being self reliant in occupation (production work)

अमानव के लिये मानव, मानव के लिए देवमानव, देवमानवत्व के लिए दिव्य मानव, दिव्यमानवत्व के लिए दश सोपानीय व्यवस्था तंत्र में भागीदारी क्रम में परम श्रेष्ठता की परंपरा व सम्मान व्यवस्था सहज व्यवस्था।

There is system of respect and tradition of ultimate excellence by humane humans for inhumane humans, by godly humans for humane humans, by divine humaneness for godly humaneness, and by divine humaneness in, by & for participation in the ten-tier system

**(22)** **शोध - नित्य उत्सव - अनुसंधान**

**Research - Daily celebrations - Exploration**

1. व्यवहार व आचरण सुगमता के अर्थ में

For ease of accessibility to behaviour and conduct

2. मानवीय शिक्षा-संस्कार सुगम परंपरा के अर्थ में

For tradition of ease of humane education-*sanskar*

3. न्याय-सुरक्षा में सुगमता के अर्थ में

For ease of accessibility to justice and security

4. उत्पादन-कार्य में सुगमता के अर्थ में

For ease of accessibility to production activities

5. विनिमय कार्य में सुगमता के अर्थ में

For ease of accessibility to exchange activities

6. स्वास्थ्य-संयम कार्य में सुगमता के अर्थ में लोक व्यापीकरण पूर्वक प्रयोजन प्रमाण नित्य उत्सव है।

For ease of accessibility to health-*sanyam*

* Purpose and evidence of dissemination of all these, is daily celebrations.

**(23)** **नित्य उत्सव - प्रदर्शन सार्थकता का घोषणा**

**Daily celebrations - Declaration & presentation of meaningfulness**

1. मानव लक्ष्य को प्रखर रूप में प्रस्तुत करना

To present the human goal in an ingenious manner.

2. ज्ञान-विवेक-विज्ञान प्रवृत्ति को प्रखर रूप में प्रदर्शित करना

To demonstrate the tendency of knowledge, wisdom & science in an ingenious manner.

3. मानवीयतापूर्ण आचरण को प्रखर रूप में प्रदर्शित करना

To demonstrate humane conduct in an ingenious manner.

4. संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति में प्रखरता तृप्ति का प्रदर्शन।

Demonstration of satisfaction in relationships, values, evaluation and mutual satisfaction in an ingenious manner.

5. तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा पूर्वक समृद्धि का निरंतरता सहज प्रदर्शन।

Continuous demonstration of prosperity by way of right use \* security of resources (body, mind & wealth).

6. स्वधन, स्वनारी-स्वपुरूष, दया पूर्ण कार्य-व्यवहार का प्रखर रूप में कला साहित्य की प्रस्तुति श्रेष्ठता के अर्थ में प्रेरक होना सहज है।

Presentation of art & literature pertaining to righteous ownership of wealth, righteous man-woman relationship, and kind in work & behaviour, in an ingenious manner.

**(24)** **साहित्य कला सहज उत्सव**

**Festival of literature and arts**

1. रोग मुक्त स्वस्थ सुन्दर समाधान सम्पन्न परंपरा के रूप में प्रमाण प्रदर्शन प्रकाशन

Evidence, demonstration and exposition in the form of tradition free of disease, and rich with health, beauty & resolution.

2. मानवीय संस्कृति में श्रेष्ठता का प्रमाण प्रदर्शन प्रकाशन

Evidence, demonstration and exposition of excellence in humane culture.

3. मानवीय सभ्यताओं का प्रमाण प्रदर्शन प्रकाशन

Evidence, demonstration and exposition of humane civilities.

4. मानवीय आचार संहिता रूपी न्याय व्यवस्था का प्रमाण प्रदर्शन प्रकाशन

Evidence, demonstration and exposition of the system of justice in the form of humane code of conduct.

5. मानवीयता पूर्ण परिवार व्यवस्था व अखण्ड समाज वैभव का प्रमाण प्रदर्शन प्रकाशन

Evidence, demonstration and exposition of the grandeur of the humane family system and the undivided society.

6. सार्वभौम व्यवस्था वैभव का प्रखर प्रदर्शन श्रेष्ठता और मानव परंपरा में प्रेरकता हो।

Excellence and human tradition inspired by ingenious demonstration of the grandeur of the universal system

**(25)** **कला साहित्य सहज उत्सव सार्थकता का घोषणा**

**Declaration of meaningfulness of arts and literature festival**

1. मानव अपने बल के साथ दया पूर्वक सुखी होने का उत्सव

Celebration of humans being happy by way of kindness with strength.

2. रूप में सच्चरित्रता पूर्वक सुखी होने का उत्सव

Celebration of being happy by way of righteous character with appearance.

3. धन के साथ उदारता पूर्वक सुखी होने का उत्सव

Celebration of being happy by way of generosity with wealth.

4. पद के साथ न्याय पूर्वक सुखी होने का उत्सव

Celebration of being happy by way of justice with social status.

5. बुद्धि के साथ ज्ञान-विवेक-विज्ञानपूर्वक सुखी होने का प्रखर प्रदर्शन प्रेरक होता है।

Ingenious demonstration of being happy by way of knowledge, wisdom & science with intellect, is always inspirational.

**(26)** **साहित्य-कला प्रदर्शन**

**Display of literature and arts**

1. समाधान, समृद्धि सम्पन्न परिवार व्यवस्था का प्रखर प्रदर्शन, प्रकाशन प्रेरकता है।

A family accomplished with resolution & prosperity is a scintillating demonstration & example of systems, and is an inspiration.

2. मानवीयतापूर्ण मानसिकता का प्रखर प्रकाशन प्रदर्शन प्रेरणात्मक होना स्वाभाविक है।

Scintillating demonstration & example of humane mindset is naturally an inspiration.

3. सहअस्तित्व में चारों पद अवस्था व संबंधों को उपयोगिता-पूरकता के अर्थ में प्रखर प्रदर्शन-प्रकाशन।

Scintillating demonstration & example of the four orders, four realms and relationships (in coexistence) for usefulness & complementarity, is naturally an inspiration.

4. सहअस्तित्व में चारों पद ‘त्व’ सहित व्यवस्था के अर्थ में प्रखर प्रदर्शन-प्रकाशन प्रेरक है।

Scintillating demonstration & example of the four realms in coexistence for innateness with orderliness, is naturally an inspiration.

5. जागृत मानव परंपरा के अर्थ में किया गया नृत्य व गीत-संगीत, सभी प्रकार के वाद्यों, नृत्यों का प्रखर प्रदर्शन प्रकाशन प्रेरणादायी है।

Scintillating demonstration & example of dance, songs & music, and all forms of music instruments and dances for the awakened human tradition, is inspirational.

**(27)** **जागृति परंपरा वैभव घोषणा**

**Declaration of the grandeur of awakened tradition**

**नित्य उत्सव**

**Eternal celebration**

1. मानवीयतापूर्ण आचरण सहित व्यवहार व उत्पादन कार्य नित्य उत्सव है।

Behaviour and production work with humane conduct, is eternal celebration.

2. मानवीयतापूर्ण विचारों का अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा प्रकाशन नित्य उत्सव है।

Communication, expression & manifestation of humane thoughts, is eternal celebration.

3. मानवीयता सहज आहार-विहार-व्यवहार नित्य उत्सव है।

Humane food, lifestyle & behaviour, is eternal celebration.

4. जागृत मानव परंपरा में दृष्टा पद में नित्य उत्सव है।

There is eternal celebration in the perceiver plane in awakened human tradition.

5. जागृति सहज विधि से मानवीयता, देव मानवीयता और जागृति पूर्ण विधि से दिव्य मानवीयता पूर्वक सर्व शुभ घटना सहज परंपरायें नित्य उत्सव है।

Traditions of universal well-being in the form of occurrences of humaneness by way of awakening, and in the form of divine humaneness by way of godly humaneness & awakening-fullness, is eternal celebration.

6. हर नर-नारी जागृति पूर्वक व्यवस्था में जीना नित्य उत्सव है।

All humans, males & females, living in orderliness by way of awakening, is eternal celebration.

सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी ही मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान सूत्र व्याख्या नित्य उत्सव है।

Participation in the universal system is indeed the maxims & description of constitution in the form of humane code of conduct. This indeed, is eternal celebration.

संविधान हर नर-नारी का स्वत्व-स्वतंत्रता-अधिकार सहज अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन नित्य उत्सव है। मानवीयतापूर्ण आचरण जागृत मानव सहज प्रमाण है। सर्वदेश-काल में स्थित सर्वमानव जागृति सहज सम्पन्न होना-रहना चाहते हैं। सर्वमानव अथवा प्रत्येक मानव सर्व शुभ सुख, सौन्दर्य सम्पन्नता सहित स्व कल्याण सर्वशुभ संपन्न होना-रहना नित्य उत्सव है।

The constitution is the expression, communication & manifestation of innateness, independence & authority of all humans, males or females. This is eternal celebration. Humane conduct is the evidence of awakened humans. All humans, at all times & at all places, want to become & remain accomplished in awakening. Each and every human being in the state of universal well-being & happiness, along with their own well-being, is eternal celebration.

भाग – दस

स्वराज्य व्यवस्था

Part - 10

Self-governance system

**10.1 स्वराज्य व्यवस्था सहज गति**

**Functioning of self-governance system**

“अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या पर आधारित ग्राम मोहल्ला स्वराज्य है”

“Village locality self-governance is based on the maxims & description of undivided society.

ग्राम स्वराज्य की मूलभूत इकाई समझदार परिवार है। परिवार स्वयं मानव चेतना मूल्य शिक्षा सम्पन्न मानवीयता पूर्ण व्यवस्था सहज मौलिक रूप है। मानवीयता स्वयं स्वराज्य एवं स्वतंत्रता का सूत्र स्वरुप है। स्वराज्य का तात्पर्य न्याय सुलभता, उत्पादन सुलभता और विनिमय सुलभता है। इसके पूरकता में शिक्षा-संस्कार, स्वास्थ्य-संयम आवश्यक है। स्वतंत्रता का तात्पर्य प्रत्येक मानव का स्वानुशासन सहज प्रामाणिकता और समाधान पूर्वक अभिव्यक्त, संप्रेषित व प्रकाशित होने से है, जो सहअस्तित्व रूपी परम सत्य अनुभव पूर्वक विधि से जानने व मानने से है अर्थात् सहअस्तित्व में परस्पर संबंधों व मूल्यों को पहचानने व निर्वाह करने से है। यही शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा सुलभता स्त्रोत है।

‘Wise family’ is the fundamental unit of village self-governance. Family in itself is the primary form in, of & for a humane system accomplished with human consciousness value education. Humaneness in itself is the key to self-governance and independence. Self-governance means - accessibility to justice, accessibility to production, and accessibility to exchange; education-*sanskar* and health-*sanyam* complement these. Independence means - evidence of self-discipline in humans, and their expression, communication & manifestation by way of resolution, which occurs when they know and believe coexistence as the ultimate truth; in other words, recognising and fulfilling values in relationships in coexistence. This indeed is the source of accessibility to education and justice.

“अस्तित्व में प्रत्येक मानव मानवत्व सहित व्यवस्था है, और समग्र व्यवस्था में भागीदार है।” इसका प्रत्यक्ष रूप स्वतंत्रता के रूप में स्वयं में व्यवस्था और स्वराज्य के रूप में समग्रता के साथ भागीदारी है। समग्रता के साथ व्यवस्था में भागीदारी, एक से अधिक व्यक्तियों के साथ ही संभव है। इसलिए सहज रूप में जो एक से अधिक व्यक्तियों की सम्मिलित अभिव्यक्ति है, यही परिवार है। ऐसे परिवार में मानवीयता पूर्ण आचरण, व्यवहार सहित परस्पर बौद्धिक समाधान और भौतिक समृद्धि सुलभ होने की स्थिति में ही ग्राम स्वराज्य सहज सुलभ होगा जो अखण्ड समाज का आधार है।

“In existence, humans with humaneness are self-organised, and participate in the overall system”. Independence (organised in oneself) and self-governance (participation with entirety) is its evident form. Participation in the system, with entirety, is possible only when there are more than one persons. The combined spontaneous expression of these ‘more than one’ persons is the ‘family’. Only when humane conduct & behaviour, along with intellectual resolution and material prosperity, is available in such a family that village self-governance will materialise, which indeed is the basis of the undivided society.

परिवार मानव कुल में न्याय सुलभता सहज प्रमाण का तात्पर्य मानव व नैसर्गिक संबंधों की पहचान व उनमें निहित मूल्यों का निर्वाह ही है।

Meaning of the evidence of accessibility to justice in the family, and in humankind, is - recognition and fulfilling of values inherent in relationships, human as well as with rest of the nature.

“मानव परंपरा में स्वायत्तता का स्वरूप स्थिति में स्वतंत्रता (स्वानुशासन) व गति में स्वराज्य है।”

“True form of autonomy in human tradition is independence (self-discipline) in state, and self-governance in motion”.

उत्पादन सुलभता का तात्पर्य परिवार के प्रत्येक सदस्य को वयस्क होने तक व्यवसाय में स्वावलम्बी बनाने से है। परिवार में सभी वयस्क परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन कर सकें।

Meaning of accessibility to production is - making every family member self-reliant in occupation by the time they attain adulthood, so that all adult family members are able to produce more than the needs.

मानवीयता पूर्वक परिवार में उत्पादन का तात्पर्य प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन द्वारा उसके साथ पूरकता विधि से बिना क्षति के सामान्यकाँक्षा (आहार, आवास, अलंकार) व महत्वाकाँक्षा (दूरश्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन) संबंधी वस्तुओं के निर्माण से है। परिवार में भौतिक समृद्धि के लिए इससे अधिक की आवश्यकता नहीं है, इससे कम होने से भौतिक समृद्धि होना संभव नहीं है।

Meaning of production, in a humane family, is harmless manufacturing of goods related to common aspirations (food, shelter & clothing) and special aspiration (telecommunications & transport) through deployment of labour on natural resources by way of complementariness. Nothing more than this is not needed for material prosperity in the family. Anything short of that and there is no possibility of attaining material prosperity.

“विनिमय सुलभता” का तात्पर्य हर परिवार में से उत्पादित वस्तुओं को श्रम मूल्य के आधार पर दूसरे परिवारों के साथ लाभ-हानि मुक्त आदान-प्रदान से है ताकि हर परिवार को भौतिक समृद्धि का अनुभव हो सके। इस व्यवस्था में संपूर्ण विनिमय प्रत्येक परिवार द्वारा किए गए श्रम नियोजन को, अन्य परिवारों में श्रम मूल्य के आधार पर आदान-प्रदान करने से है। इसके अनुसार प्रथम चरण में ग्राम के विनिमय कोष द्वारा, प्रत्येक परिवार की आवश्यकता से अधिक उत्पादन को, बाह्य बाजारों में विक्रय कर, वहाँ से गाँव के लिए आवश्यक वस्तुओं को क्रय कर, ग्रामवासियों को उपलब्ध कराया जाएगा। ऐसी व्यवस्था, क्रम से ग्राम समूह, क्षेत्र मंडल, मंडल समूह, मुख्य राज्य, प्रधान राज्य और विश्व राज्य तक जुड़ा रहेगा। यही विश्व शान्ति सर्वशुभ सहज सूत्र है।

Meaning of “accessibility to exchange” is exchange, based on labour value, of goods produced in a family, with other families by a method devoid of profit or loss so that each family gets a feeling of material prosperity. In this system, all exchange is based on exchange of labour value put in by one family with that of other families. In the initial stages, the surplus production of a family shall be sold in the external markets, by the exchange store; and the needed goods shall be purchased and made available to the village residents. Incrementally, this system will be linked with village-cluster, village-area, block, block-cluster, district, state and the world family. This is the key to world peace and universal well-being.

ग्राम स्वराज्य सहज सुलभ होने के उपरान्त ही प्रत्येक मानव सहअस्तित्व समग्र व्यवस्था के साथ भागीदार होना और स्वयं मानवीयता, समाधान, समृद्धि, अभयता सहित पूर्ण व्यवस्था में व्यक्त होना सुलभ हो जाता है। यही जीवन जागृति का साक्ष्य है जो मानव परंपरा में चिरकाल से वांछा रही है। जीवन जागृति ही मानव में से सार्वभौम व्यवस्था सहज सार्थकता को प्रतिपादित प्रमाणित होना आवश्यक है क्योंकि प्रामाणिकता और समाधान ही मानव परंपरा में सार्वभौम अभिव्यक्ति है।

It is only after materialisation of, and accessibility to, the village self-governance that it becomes possible for everyone to participate in the system of coexistence, and express themselves in the overall system with humaneness, resolution, prosperity & fearlessness. This indeed is the evidence of the awakening of *jeevan*, which is long-awaited in the human tradition. Awakening of *jeevan* is the pre-requisite for delivering and evidencing meaningfulness of & by humans in the universal system; it is so because authenticity along with resolution indeed is the universal expression in human tradition.

“जीवन जागृति ही स्वयं अभिव्यक्ति में प्रामाणिकता, सम्प्रेषणा में समाधान और प्रकाशन में स्वतंत्रता तथा स्वराज्य है। यही प्रत्येक व्यक्ति अपने में व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी का प्रमाण है।” यही अखण्ड मानव समाज का सूत्र और स्वरुप है।

“Awakening of *jeevan* itself is authenticity in expression, resolution in communication, and independence & self-governance in manifestation. This itself is the evidence of a person being self-organised and participating in the overall system”. This is the key to, and true form of, the undivided society.

“अखण्ड सामाजिकता में पारंगत बनने और बनाने की क्रिया **प्रबुद्धता**। उसका आचरण, परिवार व्यवस्था में समाधान, समृद्धि सहज प्रमाण **संप्रभुता** और उसकी निरंतरता क्रम में संरक्षण व संवर्धन पूर्वक सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करने व कराने का कार्य **प्रभुसत्ता** है।”

The activity of becoming, and assisting in becoming, expert in & of undivided society is **enlightenment**. Its manifestation, or the evidence of resolution & prosperity in the family-based system, is **sovereignty**; and the activity of participating, and assisting in participating, in the universal system by way of conserving & enriching it, and in this manner ensuring its continuity, is **supremacy.**

**यही मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान का सूत्र है।** ग्राम स्वराज्य का अंतिम लक्ष्य अखण्ड सामाजिकता सहज निरंतरता है, जिससे समाज में प्रत्येक मानव को बौद्धिक समाधान व भौतिक समृद्धि, अभयता व सहअस्तित्व सार्वभौम रूप में अनुभव सुलभ हो सके।

This is the key to the constitution in the form of humane code of conduct. Continuity of undivided society is the ultimate goal of village self-governance leading to the universal accessibility of & to the realisation of intellectual resolution, material prosperity, fearlessness & coexistence to everyone in the society.

“परिवार केन्द्रित ग्राम स्वराज्य का अनुभव करना व कराना, इस योजना का मुख्य उद्देश्य है।” गाँव व मोहल्ला के प्रत्येक परिवार में प्रत्येक सदस्य मानवीयता पूर्ण आचरण करेगा। प्रत्येक मानव, मानव व नैसर्गिक संबंधों व उनमें निहित मूल्यों की पहचान व निर्वाह करेंगे व भौतिक समृद्धि को प्राप्त करेंगे (आवश्यकता से अधिक उत्पादन) और बौद्धिक समाधान को व्यक्त, संप्रेषित व प्रकाशित करेंगे। ऐसी अर्हता को सुलभ करा देना, ग्राम स्वराज्य है। ‘ग्राम स्वराज्य योजना’ का आधार समाधान समृद्धि को विकसित कर उसको व्यवस्था के रूप में क्रियान्वयन करना है, यही इसकी अवधारणा और प्रतिबद्धता है।

“Realisation, and assistance in realisation, of family based village self-governance system is the main objective of this plan”. Conduct of each and every member of every family in the village shall be humane. All humans shall recognise and fulfil human-human & human-nature relationships as well as the values inherent in them, and thereby achieve material prosperity (production of goods more than the needs) and also express, communicate & manifest intellectual resolution. The system which builds this ability in everyone, is village self-governance. Development of resolution & prosperity, and to implement it systematically, is the basis of the ‘village self-governance plan’. This indeed is its foundation and commitment.

**10.2 ग्राम स्वराज्य योजना के लिए पूर्व आंकलन**

**Initial assessment for village self-governance planning**

ग्राम स्वराज्य व्यवस्था को आरंभ करने के पूर्व यह आवश्यक है कि उस ग्राम के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर ली जाय। इस जानकारी, सर्वेक्षण एवं आंकलन के आधार पर ग्राम स्वराज्य व्यवस्था की निश्चित रूप में योजना बनायी जाये। जानकारी का प्रकार निम्न होगा :-

It is necessary to gather all information about the village before commencement of the village self-governance system. Specific plans about the village self-governance system may be made on the basis of this information, survey and assessment. Information to be gathered is given below :-

1. ग्राम का नाम, जिला, पोस्ट ऑफिस, पिन कोड, प्रान्त। स्थानीय तापमान, वर्षा, शीतमान, जलस्रोत, वन, खनिज तथा ग्राम से जुड़े भू-क्षेत्र चित्र रूप में गणना आंकलन।

Name of the village, district, post office, pin code, and state. Local temperatures in summers and winters, rainfall, water resources, forests, minerals, and calculation & maps of the areas in and around the village.

2. गाँव की जनसंख्या, आयु, आय, वर्ग, स्त्री, पुरुष, बच्चें, लड़का, लड़की के आधार पर।

Population of the village, age, income, groups on the basis of females, males, children, boys & girls.

3. प्राप्त शैक्षणिक स्थितियों, योग्यताओं का आंकलन 3 वर्ष से 10 वर्ष तक, 10 वर्ष से 18 वर्ष, 19 वर्ष से 30 वर्ष और 30 वर्ष से ऊपर कितने साक्षर हैं, कितने नहीं। कहाँ तक पढ़ें हैं?

Assessment of initial educational qualifications and competencies, for 3 to 10 years, 11 to 18 years, 19 to 30 years, and over 30 years - how many are literate, how many are not? Studied up to what level?

4. कितने लोग उत्पादन, नौकरी, मजदूरी, ग्राम शिल्प, हस्तकला, कुटीर उद्योग, ग्रामोद्योग में कार्य कर रहे हैं। कितने लोग बेरोजगार हैं।

How many persons are occupied in production, employment, labour, village crafts, handicrafts, cottage industries, and village industries? How many are unemployed?

5. कितने व्यापार करने में व्यस्त हैं। कितनी दुकानें हैं और कितने इन पर आश्रित हैं।

How many are occupied in business? How many shops are there, and how many people are dependent on them?

**10.2 (1) ग्राम की सामान्य सुविधाओं का आंकलन :-**

**Assessment of general resources and facilities in the village :-**

1. गाँव व गाँव के भू-क्षेत्र जनसंख्या विवरण सहित जलवायु समीपस्थ वन, वन-खनिज, सम्पदा, वनौषधियों का आंकलन।

Assessment of population details along with climate, nearby forests, minerals, other natural resources and herbs in the village and within the village boundaries.

2. गाँव में आवास, ईंधन, प्रकाश, पीने का पानी, मल-जल निकास व्यवस्था, पाठशाला, उर्जा स्रोतों, सड़क व्यवस्था, डाक घर, बैंक, सांस्कृतिक भवन, तालाब, नहर, नदी, जल स्रोत आदि का आंकलन व सर्वेक्षण।

Assessment and survey of residential facilities, fuel, electricity, drinking water, sanitary and sewer system, school, sources of energy, road infrastructure, post office, bank, cultural centre, ponds, canals, rivers, other water sources, etc. in the village.

**10.2 (2) उत्पादन संबंधी आंकलन :-**

**Assessment related to production :-**

कृषि भूमि, पड़ती भूमि, कृषि संभावित भूमि। सिंचाई व्यवस्था, जल के स्रोत, तालाब नलकूप, नहर, नदी आदि संबंधी स्थिति और संभावनाओं का आंकलन।

Cultivated land, uncultivated land, land which can be used for cultivation (maybe, with some effort). Assessment of the state of and possibilities in irrigation system, water sources, ponds, tubewells, canals, rivers, etc.

फसलों के प्रकार, कृषि उपज, तादाद, वर्ष-फसल चक्र, स्थानीय अभाव, समस्याएँ व संभावनाएँ।

Types of crops, agricultural output, yields, annual crop cycles, local scarcities, problems and possibilities.

कृषि संबंधी तकनीक व ज्ञान में पारंगत व्यक्तियों की संख्या। क्या वे अन्य को पारंगत बना सकते हैं?

Number of persons having expertise in knowhow and knowledge related to agriculture. Can others also become experts under their guidance?

उर्वरक व्यवस्था, गोबर कम्पोस्ट खाद की श्रेष्ठता आवश्यकता व रासायनिक खादों के उपयोग के संबंध में जानकारी एवं सतर्क होने का उपाय।

Fertiliser system, superiority & need of dung- and compost-based fertilisers;knowhow related to chemical fertilisers and awareness about their side-effects.

बीजों के प्रकार, उनके बारे में जानकारी। कृषि संबंधी औजारों, यंत्रों, कीटनाशक दवाइयों आदि की प्राकृतिक उपलब्धता स्वायत्तता, बीज खाद, पानी, उर्जा संतुलन व अभ्यास के बारे में जानकारी समझदारी।

Types of seeds, and knowledge about them. Availability of and self-reliance in agricultural tools, implements, natural insecticides, etc.; knowledge, understanding and practice of balance in seeds, fertilisers, water & energy.

पशुधन के बारे में पूरी जानकारी। उनकी तादाद, नस्ल, प्रकार के अनुसार। कितने कृषक, कृषि के साथ गौशाला रखते हैं? कितने गोबर गैस प्लांट हैं? कितना लगाना है?

Complete knowledge about livestock, according to their quantity, breed & type. How many farmers maintain their own cowsheds along with agriculture? How many animal-dung plants are there? How many more are needed?

हस्त शिल्प संबंधी उत्पादन जैसे - चित्रकला, मूर्तिकला, शिल्प कला, बुनाई, कढ़ाई, छपाई, रंगाई, बधाई पत्र, सूत कातना, इनग्रेविंग आदि में कितने लोग व्यस्त हैं? उनसे उपलब्ध तकनीक व उपलब्ध, उपयोग सहज आंकलन।

How many people are employed in production related to handicrafts, like - drawing, sculpture, knitting, embroidery, printing, colouring, yarn spinning, engraving, etc.? Assessment of the use of these products, and technology available.

ग्राम शिल्प संबंधी उत्पादन जैसे धातु कला, वस्त्र कला, रेशम, काष्ठ कला, मिट्टी और चर्म कला आदि में कितने लोग कर्माभ्यासी प्रशिक्षित व व्यस्त हैं। इनमें उपलब्ध तकनीक व अभ्यास का आंकलन। कुटीर उद्योग द्वारा उत्पादन कार्यों में कितने लोग व्यस्त हैं? वे क्या व कितना उत्पादन करते हैं? इसी तरह ग्रामोद्योग के बारे में आंकलन। सेवा कार्यों में लगे व्यक्तियों का सर्वेक्षण आंकलन।

How many people are experts, skilled & employed in production related to village crafts, like - metal crafts, textiles, silk, carpentry, shoemaking, etc.? Assessment of the technology available and skill levels. How many people are employed in production related to cottage industries? What and how much do they produce? Similar assessment about village industries. Information and assessment of people employed in the service sector.

**10.2 (3) विनिमय संबंधी आंकलन :-**

**Assessment related to exchange :-**

सभी उत्पादित वस्तुओं की संख्या, तादाद, प्रकार, उपयोगिता, गुणवत्ता, उपयोगिता, उपयोगिता मूल्य। वर्तमान में विनिमय व्यवस्था का आंकलन। कितने दुकानें हैं, कितने व्यक्ति विनिमय कार्य में लगे हुए हैं। गोदाम संरक्षण सहज आंकलन व्यवस्था का आंकलन।

Calculation of all the goods produced, their quantities, types, use, quality, and usefulness value. Assessment of the current exchange system. How many shops are there, how many people are occupied in the exchange work? Assessment of godown and storage facilities and system.

स्थानीय रूप से आवश्यक वस्तुएँ जो बाह्य बाजारों से खरीदी और गाँव में विनिमय की जाती हैं।

Assessment of goods needed in the village which are procured from other markets.

**10.2 (4) शिक्षा संबंधी आंकलन :-**

**Assessment related to education :-**

पाठशाला है या नहीं। यदि है तो कहाँ तक पढ़ाई होती है? कितने विद्यार्थी हैं? कितने शिक्षक हैं? आयु, वर्ग के आधार पर शिक्षा का सर्वेक्षण।

Is there a school or not? If yes, up to which grade? How many students? How many teachers? Survey or assessment of education based on age bracket.

शिक्षा पाठ्यक्रम कैसा? स्थानीय आवश्यकतानुसार शिक्षा दी जाती है या केवल किताबी ज्ञान दिया जाता है? शिक्षा प्राप्त कर कितने व्यक्ति गाँव में रह रहे हैं? कितने गाँव छोड़ दिए हैं? महिलाओं व बच्चों में जागरूकता कैसी है? कितने साक्षर हैं? कितने साक्षर होना शेष हैं? आयु वर्ग के अनुसार, शिक्षक स्थानीय हैं या बाहर के हैं?

How is the education curriculum? Does the education cover the local needs, or only bookish knowledge is provided? How many people stay in the village after getting education? How many have left the village? How is awareness about education in females and children? How many are literate? How many remain to be covered by literacy, as per age bracket? Are the teachers local, or from outside?

निकटवर्ती तकनीकी व अन्य समाज सेवी संस्थाओं के सहयोग की संभावना। ग्राम स्वराज्य कार्यक्रम सहज स्पष्टता।

Possibility of collaboration with the nearby technical and other social service organisations. Clarity about the village self-governance programs.

**10.2 (5) स्वास्थ्य संयम संबंधी आंकलन :-**

**Assessment related to health-*sanyam* :-**

1. जन्म व मृत्यु दर।

Birth and death rates.

2. सीमित व संतुलित परिवार के प्रति ग्रामवासी कितने प्रतिशत जागरूक हैं?

What percentage of village residents have awareness about the need of a small family?

3. अनावश्यक आदतों का सर्वेक्षण (गांजा, भांग, चरस, शराब, अफीम, धूम्रपान, जुआ आदि बुरी आदतों) वर्गीकरण व उसके लिए व्यक्तियों का नाम सहित आंकलन।

Survey and classification of unnecessary habits (bad habits like marijuana, hashish, alcohol, opium, smoking, gambling, etc.), and to record individual assessments, with names.

4. घरेलू चिकित्सा के प्रति जागरूकता और आंकलन।

Awareness & assessment regarding treatment at home.

5. स्थानीय रूप से उपलब्ध जड़ी-बूटियों के प्रकार व उनके औषधि के रूप में प्रयोग, उपयोग और संभावना।

Varieties of locally available herbs and possibility of their application & use as medicines.

6. सामान्य व विशेष चिकित्सा सुविधा का आंकलन।

Assessment of facilities regarding general and specialist treatment.

7. चिकित्सालय और औषधालय है या नहीं? व्यायाम शाला खेल व्यवस्था, योगासन-प्राणायाम प्रशिक्षण, सांस्कृतिक भवन है या नहीं? आपूर्ति योजना स्पष्ट रहना।

Whether a medical centre and dispensary is available or not? Gym, sports facilities, *yoga* training, cultural centre are there or not? Clarity about plans to overcome any shortcomings.

**10.2 (6) न्याय सुरक्षा संबंधी आंकलन :-**

**Assessment related to justice security :-**

1. ग्राम का प्रत्येक वयस्क व्यक्ति समझदारी सम्पन्न है या नहीं अपनी योग्यता और पात्रता के अनुसार उत्पादन व समाधान प्रस्तुत करता है या उत्पादन में भागीदार है या नहीं? के रूप में उत्पादन न्याय का आंकलन।

Whether every adult of the village is accomplished with understanding or not? Assessment of justice related to production as - whether, according to their respective ability & receptivity, they produce goods & resolution, or participate in production, or not?

2. उत्पादित वस्तुओं का शोषण विहीन पद्धति से कहाँ तक विनिमय, आदान-प्रदान हो रहा है - के रूप में विनिमय न्याय का आंकलन।

Assessment of justice related to production as - to what extent the exchange of produced goods is happening in an exploitation-free way.

3. स्वधन, स्वपुरूष/स्वनारी, दया पूर्ण कार्यों और तन, मन, धन रूपी अर्थ के सदुपयोग के आधार पर संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति, आचरण न्याय का आंकलन।

Assessment of justice related to relationships, values, evaluation, mutual satisfaction & conduct based on righteous ownership of wealth, righteous man-woman relationship, and righteous use of resources (body, mind & wealth).

4. संबंधों के साथ विश्वास निर्वाह के रूप में व्यवहार न्याय का आंकलन।

Assessment of justice related to behaviour as - fulfilling trust in relationships.

5. न्याय, समाधान समृद्धि पूर्वक जीने में कठिनाइयों का निराकरण।

Resolving the problems in living with justice, resolution & prosperity.

6. न्याय व्यवस्था में मूल्यांकन समीक्षा एवं आंकलन।

Evaluation, scrutiny and assessment in the justice system.

7. गाँव मोहल्ला सुरक्षा संबंधी आवश्यकताओं का आंकलन व वर्तमान में सुरक्षा व्यवस्था कैसी है?

Assessment of the needs related to village security. Assessment of the current security system.

**10.3 स्वराज्य व्यवस्था में दश सोपानीय इकाईयाँ -**

**Units in the ten-tier self-governance system -**

परिवार व सभा रूप में परिवारों में संस्कृति-सभ्यता का, सभा मे विधि-व्यवस्था का प्रकाशन

Manifestation of culture & civility in families in the form of councils; manifestation of law & system in councils.

1) परिवार सभा

Family council

2) परिवार समूह सभा

Family-cluster council

3) ग्राम मोहल्ला स्वराज्य परिवार सभा

Village-locality self-governance family council

4) ग्राम मोहल्ला समूह परिवार सभा

Village-locality cluster family council

5) स्वराज्य क्षेत्र परिवार सभा

Village area family council

6) मंडल स्वराज्य परिवार सभा

Block self-governance family council

7) मंडल समूह स्वराज्य परिवार सभा

Block-cluster self-governance family council

8) मुख्य राज्य परिवार सभा

District family council

9) प्रधान राज्य परिवार सभा

State family council

10) विश्व राष्ट्र राज्य परिवार सभा

World family council

**10.4 प्रधान राज्य परिवार सभाओं का अधिकार**

**Authority of state family councils**

1) हर प्रधान राज्य परिवार में पांचों आयामों के कार्य गति सहित अन्य आठों सभाओं और परिवारों से संबंधित सभी समस्याओं (राज्यनैतिक, आर्थिक, सामाजिक) का समाधान प्रस्तुत करेंगे ।

State family councils shall resolve any problems (political, economical or social) related to (1) the functioning of the five dimensions, and (2) the councils in the other eight tiers and the families.

2) सभी मुख्य राज्य सभाओं के साथ परामर्श यथा स्थिति आवश्यकता, पूरकता, उपयोगिता के आधार पर कार्यक्रमों को विश्व परिवार सभा से मनोनीत न्याय सुरक्षा समिति के हाथों में अर्पित करने का प्रस्ताव तैयार करेंगे ।

They shall have consultations with all state councils on urgent needs; prepare programs based on complementariness & usefulness, and present them as proposals to the members of the justice security committee of the world council.

**10.5 विश्व राज्य परिवार सभा का अधिकार**

**Authority of the world family council**

1) विश्व परिवार सभा में अन्य परिवार सभाओं का अधिकार यथावत रहेगा ही। पाँचों आयामों के कार्यक्रमों को विश्वव्यापी संतुलित बनाये रखने का अधिकार बना ही रहेगा।

World family council shall naturally have the authority similar to that of other family councils. Authority of maintaining global balance in the programs of all five dimensions shall also be there.

2) विश्व परिवार सभा में मौलिक अधिकार के रूप में बाकी अन्य नौ परिवार सभाओं में से सात परिवार सभाओं में पांचों आयामों का कार्य गति अधिकार, दायित्व, कर्तव्य वर्णित है। यह सभी विश्व परिवार सभा में समाहित रहेगा ही । इसके साथ-साथ विश्व परिवार सभा के निकटवर्ती प्रधान राज्य सभा में प्रमाणित कार्यकलापों को पूणर्त: निरीक्षण परीक्षण पूर्वक अपने निष्कर्षों से अवगत कराने का अधिकार रहेगा। साथ में आवश्यकीय प्रस्ताव रखने का अधिकार भी रहेगा। जिस पर कार्यगोष्ठी पूर्वक स्वीकार करने का व्यवस्था रहेगा ।

While talking of the authority of the world family council, it may be noted that the functioning, responsibilities & duties of the five dimensions in the remaining seven out of nine family councils, have already been described. All these will remain vested in the world family council also. Along with this, it shall be the world council’s prerogative to give feedback (based on examination & inspection) to the closest state council, on their authentic activities. It shall also be their prerogative to give necessary proposals and suggestions. There shall be a provision to accept them by way of discussions in workshops.

3) विश्व राज्य सभा में यह सुस्पष्ट हो चुकी है कि व्यवस्था के पांचों आयामों को सुगमता के लिए शोध अनुसंधान पूर्वक प्रस्ताव प्रस्तुत करने का मौलिक अधिकार रहेगा ही। उसमें प्रधान रूप में न्याय-सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए दूसरी भाषा में विश्व राज्य सभा के सदस्यों की दृष्टि में विश्व की सभी देशों की सीमाओं जब तक उन-उन देशों में निवासियों के मन में अपना-पराया बसा रहेगा तब तक उन-उन देशों की सीमा सुरक्षा का जिम्मेदारी और उन-उन देशों में पूरा धरती मानव देश होने का सत्य स्थापित करने का मौलिक अधिकार समाया रहेगा।

It has already been mentioned that it shall be the prerogative of the world family council to give suggestions based on due diligence, for ease of accessibility of all the five dimensions of the system. Keeping mainly the justice-security in mind, the authority to establish the truth that this whole earth is one country, shall remain part of that; in other words, till the time people living within the boundaries of different countries have the feeling of ‘us & them’, responsibility for the safety and security of their respective boundaries shall be within the jurisdiction of the world council.

4) जैसा-जैसा हर देशों में सीमित सीमा सुरक्षा की परिकल्पना रहेगी तब तक सबको भरोसा देने के लिए अथवा सीमा सुरक्षा का अधिकार विश्व राज्य सभा परिवार में अर्पित कर चुके हैं उन-उन देशों के निवासियों को भरोसा दिलाने के लिए विश्व राज्य परिवार सभा में समाहित सुरक्षा परिषद दूसरी भाषा में न्याय सुरक्षा समिति में सामरिक शक्तियाँ केन्द्रीकृत रहेगी। सुरक्षा समिति में हर प्रधान राज्य सभा का प्रतिनिधित्व आवश्यक है। यह जनसंख्या विधि से प्रतिनिधियों की संख्या स्वीकारना आवश्यक रहेगा।

Depending on the assessment of the security of their borders, and for those who have relinquished their border rights to the world council - for providing them assurance, the security council (or rather the justice-security committee of the world family council) shall have full control over the military infrastructure. Representation of each state council is essential in the security council. It shall be necessary to have the number of representatives in proportion to the population.

भाग – ग्यारह

हर व्यक्ति में परीक्षण सूत्र

Part - 11

Points of examination in everyone

**मैं अपने में क्या हूँ? कैसा हूँ? क्या चाहता हूँ? का समाधान रूप में**

**Who am I in myself? What is my true form? What do I want?**

**11 (1)**

**मैं क्या हूँ?**

**Who am I?**

मैं मानव मनाकार को साकार करने वाला मन:स्वस्थता सहज विधि प्रमाणित करने वाला हूँ। जागृति पूर्वक मन:स्वस्थता को प्रमाणित करता हूँ।

I am a human being, I am the one who materialises ideas and evidences mental well-being. I evidence mental well-being by way of awakening.

**मैं कैसा हूँ?**

**What is my true form?**

मैं ज्ञानावस्था सहज प्रतिष्ठा सम्पन्न इकाई हूँ। मैं शरीर व जीवन सहज संयुक्त साकार रूप हूँ। मानव परंपरा प्रदत्त है मेरा शरीर और सहअस्तित्व में परमाणु में विकास फलत: जीवन सहज स्व स्वरूप हूँ।

I am an entity belonging to the eminence of knowledge order. I am the combined form of body & *jeevan*. My body is provided to me by human tradition; and *jeevan* - my true form - is a consequence of the development of the atom in coexistence.

मैं जीवन सहज रूप में जानने, मानने वाला हूँ, मानव रूप में पहचानने, निर्वाह करने का क्रियाकलाप हूँ। शरीर के साथ में पाँच ज्ञानेन्द्रियों और पाँच कर्मेन्द्रियों व उसके क्रियाकलापों का दृष्टा हूँ।

I am, as *jeevan*, engaged in knowing and believing; as a human, I am the activity of recognising & fulfilling. I, with the body, am the perceiver of the five sensory organs and the five work organs, as well as their activities.

मैं मानवत्व सहित व्यवस्था हूँ।

With humaneness, I am in orderliness.

**मैं क्या चाहता हूँ?**

**What do I want?**

मैं मानव सहज रूप में बौद्धिक समाधान, भौतिक समृद्धि सहित सुखी होना, रहना चाहता हूँ।

As a human, I want to become & remain happy with intellectual resolution and material prosperity.

मैं जीवन जागृति में पारंगत सहज प्रमाण और उसकी निरंतरता चाहता हूँ। साथ ही भ्रम भय विपन्नता से मुक्त होना चाहता हूँ।

I want to be an evidence of awakening, and want its continuity. I also want liberation from delusion, fear & scarcity.

अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में स्वयं स्फूर्त विधि से भागीदारी करना चाहता हूँ। उसके योग्य क्षमता, योग्यता, पात्रता सम्पन्न होना, रहना चाहता हूँ।

I want to participate in the undivided society, universal system in an effortless manner. I want to become & remain accomplished with capacity, ability & receptivity for the same.

हर मानव को समाधान समृद्धि सम्पन्न होना देखना चाहता हूँ।

I want to see every human achieve the state of resolution & prosperity.

**11 (2)**

1. मैं अपने में क्या हूँ?

Who am I in myself?

1.1 मैं मानव हूँ।

I am a human being.

1.2 मैं मनाकार को साकार करने वाला मन:स्वस्थता का आशावादी और मन:स्वस्थता सहज पारंगत प्रमाण होने-करने वाला हूँ।

I have the capacity to materialise ideas, and am hopeful of mental well-being. I have the capacity to become, and make others, evidence of mental well-being.

2. मैं कैसा हूँ?

What is my true form?

2.1 मैं ज्ञानावस्था सहज प्रतिष्ठा सम्पन्न इकाई हूँ।

I am an entity belonging to the eminence of knowledge order.

2.2 मैं शरीर व जीवन सहज संयुक्त साकार रूप हूँ।

I am the combined form of body & *jeevan*.

2.3 मानव परंपरा प्रदत्त है मेरा शरीर और अस्तित्व में परमाणु में विकास फलत: जीवन सहज स्व स्वरूप हूँ।

My body is provided to me by human tradition; and *jeevan* - my true form - is a consequence of the development of the atom in coexistence.

2.4 मैं जीवन सहज रूप में जानने, मानने वाला व मानव रूप में पहचानने, निर्वाह करने का क्रियाकलाप करता हूँ।

I am, as *jeevan*, engaged in knowing and believing; as a human, I am the activity of recognising & fulfilling.

2.5 मैं शरीर को जीवंत बनाये रखता हूँ - चेतना सहित पाँच ज्ञानेन्द्रियों, पाँच कर्मेन्द्रियों का दृष्टा हूँ।

I keep the body alive; and with consciousness, I am the perceiver of the five sensory organs and the five work organs.

2.6 मैं मानवत्व सहित व्यवस्था हूँ, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने योग्य हूँ।

With humaneness, I am in orderliness and am able to participate in the overall system.

**11 (3)**

3. मैं क्या चाहता हूँ?

What do I want?

3.1 मैं बौद्धिक समाधान, भौतिक समृद्धि सम्पन्न होना चाहता हूँ।

I want to achieve intellectual resolution and material prosperity.

3.2 मैं जीवन जागृति में पारंगत प्रमाण सम्पन्न और उस में निरंतर जीना-होना-रहना चाहता हूँ।

I want to be an evidence of awakening, and want to live, be & remain continuously in this state.

3.3 मैं भ्रम, भय, कुण्ठा, निराशा, पशुता, क्रूरता, द्रोह-विद्रोह, शोषण संघर्ष युक्त अपराध रूपी जीव चेतना से मुक्त जागृत मानव चेतना संपन्न स्वयं की पहचान बनाये रखना चाहता हूँ।

I want liberation from the animal consciousness comprising delusion, fear, despair, frustration, animality, cruelty, offence, revolution, exploitation & conflict, and want to be recognised as someone who is accomplished in the awakened human consciousness.

3.4 अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में स्वयं स्फूर्त विधि से भागीदारी करना चाहता हूँ।

I want to participate in the undivided society, universal system in an effortless manner.

3.5 सर्वशुभ परंपरा में भागीदारी करने योग्य क्षमता-योग्यता-पात्रता सम्पन्न रहना चाहता हूँ।

I want to become & remain accomplished with capacity, ability & receptivity for participating in the tradition of universal well-being.

3.6 सर्वशुभ के अर्थ में साथ ही सर्वशुभ सौभाग्य संपन्न होते रहना चाहता हूँ।

I want to be, and remain, dedicated to universal well-being. I also want to be, and remain, blessed with universal well-being.

3.7 सर्व शुभ सौभाग्य सुन्दर सुख केवल सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्न परिवार सहज प्रमाण मानवीयता पूर्ण आचरण ही है इसमें मैं पारंगत प्रमाण होना चाहता हूँ।

Evidence of a family accomplished with comprehensive resolution, and humane conduct is indeed the universal well-being, blessing, desirable & pleasant.

**11 (4)**

**दश सोपानीय परिवार सभा सदस्यों का आचरण सहज परिभाषा :-**

**Definition of the conduct of members of family councils in the ten-tier system :-**

मानवीयता पूर्ण आचरण, सोच, विचार, विज्ञान, विवेक, ज्ञान अनुभव प्रमाण होना रहना

To be, and remain, evidence of humane conduct, thoughts, science, wisdom & knowledge.

**11 (5)**

**मानव सहज परिभाषा :-**

**Definition of a human being :-**

v मनाकार को साकार करने वाला वर्तमान में मन:स्वस्थता सहज प्रभाव प्रमाण प्रस्तुत करने वाला है।

The one who materialises ideas, and presents the evidence of mental well-being.

v मन:स्वस्थता में जीने वाला से सोचने वाला अनुभव पूर्ण समझ के रूप में प्रमाणित होने वाला है।

The one who lives with mental well-being, and becomes evidence of understanding full of realisation.

v मनाकार को उत्पादनों के रूप में प्रमाणित करने वाला है।

The one who evidences production based on materialisation of the ideas.

v आहार, आवास, अलंकार, दूरश्रवण, दूरगमन, दूरदर्शन संबंधी वस्तुओं के उपयोग उत्पादन में भागीदारी करने वाला और सदुपयोग प्रयोजनशील प्रमाण प्रस्तुत करना।

The one who participates in the use & production of objects of food, shelter, clothing, telecommunications & transportation, and presents the evidence of their righteous use & purpose. .

**11 (6)**

**मानवीयता पूर्ण आचरण :-**

**The humane conduct :-**

v मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहज प्रमाण सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी सहज प्रमाण।

Evidence of values, character & ethics; evidence of participation in the universal system.

v मूल्य सहज प्रमाण - संबंधों को व्यवस्था सहज प्रयोजनों के अर्थ में पहचान, संबंधों में निहित मूल्यों का निर्वाह है।

Evidence of values - is the recognition of relationships with reference to purposes, and fulfilling the values inherent in relationships.

v चरित्र = स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दया पूर्ण कार्य-व्यवहार।

Character = Righteous wealth, righteous man-woman relationships, and kindness in work & behaviour.

v नैतिकता = तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग-सुरक्षा।

Ethics = Righteous utilisation of resources (body, mind & wealth).

**11 (7)**

**मूल्य**

**Values**

v सम्पूर्ण संबंध निश्चित है।

All relationships are definite (well-defined, unambiguous, explicit, precise).

v परिवार सभा संबंध, शिक्षा संस्कार संबंध, न्याय सुरक्षा संबंध, उत्पादन कार्य विनिमय कार्य संबंध , स्वास्थ्य संयम संबंध

Family council relationship, education *sanskar* relationship, justice security relationship, production work relationship, exchange storage relationship.

v संबंधों की पहचान सहित निर्वाह निरंतरता में स्थापित मूल्य प्रमाणित होता है।

Established values are evidenced in the continuity of recognition & fulfilment in relationships.

हर संबंधों की पहचान, निर्वाह प्रयोजनों के अर्थ में निरंतरता है।

Continuity is for the purpose, which is recognition & fulfilment in relationships

प्रयोजन हर नर-नारी की आवश्यकता है। स्वयमेव समग्र व्यवस्था मे भागीदारी ही प्रयोजन है।

It is the need of all humans, males & females, to understand the purpose. Spontaneous participation in the overall system itself is the purpose.

जीवन मूल्य - 4

*Jeevan* values - 4

मानव मूल्य - 6

Human values - 6

स्थापित मूल्य - 9

Established values - 9

शिष्ट मूल्य - 9

Civic values - 2

वस्तु मूल्य - 2

Object values - 2

प्रमाण ही मानव समाज गति है।

Evidence is at the root of societal functioning.

**11 (8)**

**सर्वशुभ में स्वशुभ**

**One’s own well-being (is inherent) in the universal well-being**

उपरोक्त अपेक्षायें सर्वशुभ के अर्थ में प्रमाणित होना ही जागृति सहज वैभव है। जागृति ज्ञान, विवेक, विज्ञान सहज संयुक्त वैभव है। यह हर नर-नारी में, से, के लिए स्वत्व स्वतंत्रता अधिकार है।

Evidencing the above-mentioned expectations with reference to universal well-being is the grandeur of awakening. Awakening is the combined grandeur of knowledge, wisdom & science. This is the innateness, independence & authority in, of & for all humanes, males & females.

समझदारी हर मानव में, से, के लिए अविभाज्य वर्तमान है। हर मानव परंपरा के रूप में वर्तमान होना सर्वविदित है। इसी आधार पर हर मानव जागृत अथवा भ्रमित रहना पाया जाता है। हर नर-नारी सहज चाहत जागृति है। जागृति परंपरा सहज विधि से ही सर्व सुलभ होता है।

Wisdom is the inseparable presence in, of & for all humans. It is obvious to all that every human being is present in the form of tradition (as part of the tradition). It is on this basis that a person is either awakened or deluded. In all humans, males & females, the desire is for awakening only. Awakening becomes accessible to everyone only by way of tradition.

सर्वमानव में कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता आदिमानव काल से प्रकाशित रहा है। इसका साक्ष्य यही है कि आहार, आवास, अलंकार पद्धतियों को विविध रूप में अपनाया और दूरश्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन साधनों में विविधता का होना स्पष्ट है। उक्त क्रिया प्रवृत्ति एवं घटना के अनुसार स्पष्ट है कि सभी देशकाल में मानव ने कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता का सतत प्रयोग प्रस्तुत किया है।

Manifestation of imagination and free-will has been obvious in all humans since ancient times. Acceptance of diversity in food, shelter & clothing is its testimony; diversity is clearly visible in telecommunications & transportation too. It is clear from these observations that humans have used their imagination and free-will abundantly, at all paces, in all times.

सर्व मानव कल्पनाशीलता के लिये कर्म स्वतंत्रता का और कर्म स्वतंत्रता के लिए कल्पनाशीलता का प्रयोग करते आया है। आदिमानव काल से इक्कीसवीं (21वीं) शताब्दी तक मानव परंपरा विविध समुदायों के नाम से प्रचलित रही जो राज्य व राष्ट्र कहलाते रहे।

All humans have always deployed their free-will for imagination, and imagination for free-will. Human tradition has been prevalent as diverse sects since ancient times till now (the twenty-first century), which have been popularly called states or nations.

राज्य-राष्ट्र की अस्मिता, स्वीकृति व मान्यता में अखण्डता, सार्वभौमता व अक्षुण्णता सहज पावन शब्दों को दुहराया जाता है। यह भी देखने को मिलता है कि अधिकांश देशों की भौगोलिक स्थितियाँ व उनमें निवास करने वाले लोगों की जनसंख्या बदलती रही। ऐसे बदलाव के मूल में मानव सहज कल्पनाओं की विविधता का होना ही समझ में आता है।

In the haughtiness & beliefs of these states & nations, noble words like undividedness, universality & intactness are frequently mentioned. It is also often seen that geographical boundaries and population of most countries keeps on changing. It may be safely concluded that the imagination of humans is at the root of all these changes.

मानव समुदाय रूप में इक्कीसवीं शताब्दी तक नस्ल, रंग, भाषा, जाति, मत, पंथ, सम्प्रदाय, वर्ग रूप में परस्पर पहचान होना पाया जाता है। नस्ल-रंग जंगल युग से, भाषा-जाति ग्राम युग से, मत-पंथ सम्प्रदाय धार्मिक राजनीतिक युग से, वर्ग आर्थिक राजनीतिक युग से गण्य हुआ है। इस शताब्दी के आरंभ तक इस धरती के सर्वाधिक देश जिनका अपना अपना संविधान है आर्थिक-राजनीति परस्त हो चुके है।

It is observed that till this twenty first century, human sects recognise each other on the basis of race, colour, language, caste, beliefs, faith, creed & class. Race & colour since the prehistoric times, belief & faith since the advent of religion & politics, and class got established since the advent of economics. At the dawn of the twenty-first century, most countries having their own constitutions, have succumbed to the politics of economics.

जागृतिपूर्वक अखण्ड रूप में सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्न सामाजिकता सहज (धार्मिकता), आर्थिक और सार्वभौम व्यवस्था रूप में पाये जाने वाले परिवार मूलक राज्य व्यवस्था नीति ही, जागृतिपूर्ण परंपरा स्थापित होने की आवश्यकता धरती बीमार होने के कारण हो चुकी है।

There is a clear need (which is yet unfulfilled) of religion accomplished with comprehensive resolution in the form of undividedness, and of family-based self-governance system which would lead to universal economic system; in other words, there is an urgent need of awakened tradition, due to the unabated global warming on Earth.

अभी तक ऐसी स्थिति घटित न होने के कारण मानवीयतापूर्ण विचारधारा ध्रुवीकृत न हो सकी है। अब अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन ज्ञान विचार “मध्यस्थ दर्शन” सहअस्तित्ववाद अध्ययनार्थ प्रस्तुत है।

As such a state (awakened tradition) has not been witnessed so far, there has been no reference point for humane ideology. In this background, Existence based human centred contemplation, knowledge & thought, or ‘Madhyasth Darshan’ Co-existentialism, Is now being presented for study by the humans.

मानव परंपरा सहज वैभव को संज्ञानीयता सहज धारक-वाहकता में पहचाना जाता है। परंपरा में संतान विधि समाई रहती है। यही वंश एवं पीढ़ी से पीढ़ी के रूप में पहचान है। मानव परंपरा में कल्पनाशीलता विधि से पहचान करते हुए आहार, आवास, अलंकार व दूरश्रवण, दूरगमन, दूरदर्शन संबंधी यंत्रों व वस्तुओं का उत्पादन सुलभ हो गया है। यह मानव की परिभाषा के अनुसार अधूरा रहा। मानव परिभाषा “मनाकार को साकार करने वाला मन:स्वस्थता का आशावादी है व जागृत होने व प्रमाणित होने वाला है।”

Grandeur of the human tradition is recognised in the form of bearer-holder (beholder) of cognisance. Progeny is part of the tradition. This is what is meant by descendents or future generations. Production of objects and items related to food, shelter, clothing, telecommunications & transport is widely available now. But, as per the definition of a human being, this is incomplete. Definition of a human being is ‘One who materialises the ideas and is hopeful of mental well-being, and has the potential for awakening & evidencing’.

हर मानव मानसिक रूप में स्वस्थ, शारीरिक रूप में स्वस्थ, व्यवहार रूप में स्वस्थ, उत्पादन रूप में स्वस्थ, व्यवस्था रूप में स्वस्थ रहना चाहता है। यह परंपरा में सुलभ न होने के कारण मानव जाति समुदाय मानसिकता से ग्रसित पाई जाती है।

Each and every human wants to be mentally & physically, as well as healthy in behaviour, in production & in systems. As this is not available in the tradition, humankind is afflicted by sectarian mindset.

**विचार**

**Thoughts**

मन:स्वस्थता का प्रमाण परंपरा सुलभ होना आवश्यक हो गया है क्योंकि धरती बीमार हो रही है। धरती की तापग्रस्तता, जंगल का कम होना, खनिज, कोयला, तेल, विकिरणीय धातुओं का शोषण आदि सर्वविदित है। इसके फलस्वरूप प्रदूषण प्रभाव, मानव में व्यापार मानसिकता, शोषण संघर्ष वंचना के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण व प्रौद्योगिकी प्रवृत्तियों में वृद्धि हुई है।

Because of unabated global warming, it is essential now that the evidence of mental well-being becomes available. Global warming, deforestation, and exploitation of minerals, coal, crude oil and radioactive elements, all this is well-known. Consequently, pollution, commercial mindset in humans, education & training for exploitation, conflict & manipulation, and dependency on technology has increased.

मानव के द्वारा मनाकार को साकार करने में इतनी लम्बी अवधि बीत गई है और मानव अपने कार्यों के फलस्वरूप घोर विपदाओं से घिर गया है। इससे छूटने के लिए मानव को केवल मन:स्वस्थता को अपनाना ही शेष है। यह प्रस्ताव मानव के सम्मुख आ चुका है। इसके लिए सर्वप्रथम शिक्षा-संस्कार संस्थायें, द्वितीय समाज सेवी संस्थायें, तृतीय धर्म-संप्रदाय पंथ-मतवादी संस्थायें, चतुर्थ सभी राजनीतिक संस्थायें दायी है। वरीयता क्रम भले बदले पर शिक्षा संस्थाओं से लेकर अन्य संस्थाओं का लोक व्यापीकरण होना अवश्यंभावी है। नस्ल, जाति, रंग, भाषा भेद धर्मगद्दियों या राजगद्दियों में समाये हुए हैं। इस तरह हर नर-नारी किसी न किसी राज-धर्म-शिक्षा गद्दी परस्त होना पाया जाता है। इस 21वीं शताब्दी के आरंभ काल तक सभी राज्य शक्ति केन्द्रित शासन परंपरा में होना पाया जाता है। भौतिकवाद परस्त विज्ञान शिक्षा ही सम्पूर्ण देशों में प्रकारान्तर से पहुँच चुकी है। ऐसी विज्ञान शिक्षा सम्पन्न सर्वाधिक नर-नारी धन, साधन को प्रधान मानते हैं।

So much time has passed since humans started devoting time towards materialising their ideas but as a result of their own actions, they are in deep trouble. To extricate themselves from it, embracing mental well-being is the only way out. Now, this proposal (of Madhyasth Darshan) is available to humankind. First and foremost, educational institutions, then social service organisations, thirdly religious organisations, and lastly the political organisations are responsible for this. Even though this ranking may change, a fundamental change from educational institutions to the other three is destined to happen. Race, class, colour & language all deeply ingrained in the seats of religion and politics. In this manner, all humans, males & females, become loyal to some or the other seat of politics, religion or education. By the initial stages of this twenty-first century, all states have become part of the tradition of ‘power centric rule’. One way or the other, science education based on materialism has reached all countries. Almost all humans, males & females, accomplished in such education give a lot of importance to wealth and resources.

धन का स्वरूप प्रतीक मुद्रा के रूप में मान्य है। मानने में एवं होने में दूरी इतनी ही है कि ‘मान्यतायें कल्पना प्रधान वाली होती है’ और ‘होना निरंतर प्रमाण है’ जो पीढ़ी से पीढ़ी लोगों को बोध स्वीकृति व प्रमाण होता है। सम्पूर्ण अस्तित्व सहअस्तित्व रूप में ही नित्य विद्यमान है। यह सर्व मानव में, से, के लिये अनुभव मूलक विधि से अनुभवगामी पद्धतिपूर्वक बोध सुलभ होता है। यही मूलत: सार्थक अध्ययन सूत्र है। मानवत्व त्व रूपी आचरण ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्मत सूत्र व्याख्या है।

Representative currency is believed to be the true form of wealth. The only gap between belief and truth is that ‘beliefs are mostly in the imagination’ and ‘truth is everlasting evidence’ which is understood, accepted & evidenced by all generations. Whole existence is perpetually present as coexistence. This becomes available in, by & for all humans by realisation-rooted method and realisation oriented path. This indeed is the key to meaningful study. Humane conduct is the maxims and elaboration in accordance with knowledge, wisdom & science.

**11 (9)**

**मानवीयतापूर्ण आचरण ही संविधान सूत्र व्याख्या है**

**Humane conduct is the maxims and elaboration of Constitution**

मानव जागृति पूर्वक ही मानवीयतापूर्ण आचरण सहित अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन है। सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व अनुभव मूलक विधि से समझ में आना ही जागृति है। यह प्रमाण विधि से परंपरा है। हर मानव में समझने की प्रवृत्ति सहज विधि से निहित है। जीवन व शरीर का संयुक्त रूप में ही हर मानव विद्यमान है। हर नर-नारी का सहज समझदारी सम्पन्न होना ही जागृत चेतना और यही मानव चेतना जागृति है।

Humane conduct along with expression, communication & manifestation is only by way of awakening. Understanding of existence as coexistence, by realisation rooted method itself is awakening. Its tradition is formed by way of evidence. All humans have a built-in, natural tendency to understand. All humans are present as a combined form of *jeevan* and body. Humans becoming accomplished in ‘understanding’ itself is awakened consciousness, and this is indeed the humane consciousness, or awakening.

जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना ही जागृति, चेतना-जागृति अथवा समझदारी है। नामकरण करना मानव परंपरा सहज मौलिक प्रकाशन है। इसका साक्ष्य इस धरती पर मानव में विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में पनपती भाषा शब्द के रूप में सुनने को मिलता है। सभी भाषायें शब्दों के रूप में सुनने को मिलती है। यह सर्वविदित है। अर्थ नाम से नामी समझ में आता है।

Knowing, believing, recognising & fulfilling is indeed the awakening, consciousness development, or understanding. Giving a name is a fundamental activity in human tradition. Its testimony is - we all can hear words in various languages developing in diverse geographies on Earth. All languages can be heard in the form of words. It is well-known. Meaning of the ‘named’ is understood by the nomenclature (or, ‘Name’ indicates the meaning of the ‘named’).

हर देश काल में परंपरा के रूप में चल रही सभी भाषायें शब्द व भाव (नाम) के रूप में है। मानव ने संवेदनाओं को नाम से उच्चारणों को भाषा माना है। जानने के लिए शब्दों द्वारा इंगित अर्थ ही है। शब्दों का अर्थ किसी वस्तु-क्रिया, फल-परिणाम, स्थिति-गति का नाम ही है। नाम सहज स्वीकृतियाँ मानव में, से, के लिये होना दृष्टव्य है। इन स्वीकृतियों के मूल में मानव सहज कल्पनाशीलता कर्म स्वतंत्रता का प्रयोजन है ही।

Languages prevailing at all places, in all times, are in the form of words and meanings (or, use words which indicate objects or feelings). Giving names to, or using specific words for, sensoriality has been assumed as language by humans. However, meaning or the reality indicated by the words, is what needs to be understood. Meaning of a word is nothing but - some object or activity, some result or consequence, or some state or motion. Acceptances for names are clearly witnessed in, by and for humans. The purpose of imagination and free-will inherent in humans is at the root of these acceptances.

विगत से सुनने में आ रहा शुभ-कल्याण, उद्धार-मोक्ष, पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक संबंधी उपदेश सर्वाधिक रहस्यमय रहे हैं। पाप-पुण्य को रहस्यमय ईश्वर की तृप्ति और अनुग्रह से जोड़ा गया है। इनके विविध रूप हैं जो मानव की सामुदायिक मानसिकता के स्पष्ट कारण ही है।

Sermons being heard since the ancient past regarding well-being & relief, emancipation & salvation, immorality & morality, and heaven & hell, have mostly remained mysterious. Immorality & morality were connected to the approval and grace of God. These are in diverse forms, which are the apparent reasons for the sectarian mindset.

समुदायों की परिकल्पना से सभी समुदायों में परस्पर द्रोह-विद्रोह, शोषण, युद्ध और संघर्ष की प्रवृत्तियाँ प्रबल हुई जो घटना क्रम में स्पष्ट है। आज जब भौतिक-विज्ञान सभी देशों में फैला हुआ है फिर भी इस इक्कीसवीं सदी तक प्रचलित विज्ञान विधि से कोई मानव अध्ययन समाधान सूत्र लोकगम्य नहीं हो पाया है। इसलिए विज्ञान के मुद्दे पर भी पुनर्विचार करना आवश्यक हो गया है।

The imagination of sects strengthened among sects the tendencies of mutual offence & revolution, exploitation, war and conflict, which can be verified through historical observations. In contemporary times when the education of science is popular in all countries, this same education is unable to provide even a single theory regarding the study of humans. Hence, a rethink on science is also needed.

प्रचलित विज्ञान में तकनीकी एवं ज्ञान का सम्मलित रूप में होना माना गया है जिसमें तकनीकी भाग यंत्र वस्तुओं के निर्माण व उपज के रूप में इसमें नियोजित होने वाली कारीगिरी तकनीकी है जिसमें प्राणावस्था से सम्बन्धित सभी तकनीकी उपज ज्ञान के अर्थ में सदा से रहा है। जैसे कृषि उपजाने और पशुपालन के रूप में पहचाना गया है।

Technology and knowledge are assumed to be in the same category as per the prevailing science, out of which the technology part relates to the knowhow and techniques deployed for manufacturing & production of objects, while all the technology related to agricultural produce in the plant order is related to knowledge. Its examples are agriculture & animal husbandry.

माटी, पत्थर, धातु, मणि, काष्ठों से औजार-वस्तुएं, वस्तु-यंत्र-उपकरण बनाने की क्रिया को तकनीकी कहा जाता है। दूसरे शब्दों में आहार, आवास, अलंकार, दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन संबंधी वस्तु-यंत्र उपकरणों के उत्पादनों में जो श्रम नियोजन होता है उस तौर तरीके को तकनीकी कहा जाता है। ऐसे प्रयोजनार्थ विद्वानों द्वारा प्रस्तावित ज्ञान मूल में ही गलत हो गया क्योंकि उन्होंने अस्तित्व को मूलत: अस्थिर होना माना है। यह सच्चाई के विपरीत हो गया। इस मुद्दे पर सोच-विचार पूर्वक जाँचने पर पता चला कि अस्तित्व सहअस्तित्व रूप में स्थिर, विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति निश्चित होना पाया है। यही ‘अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन’ - ‘मध्यस्थ दर्शन’ ‘सहअस्तित्व वाद’ है।

The activity of manufacturing and producing tools, objects, machines & instruments using soil, stones, metals, gemstones & wood is popularly called technology. In other words, the diverse ways in which labour is deployed for the production of objects, machines & instruments related to food, shelter, clothing, transport & telecommunications, is called technology. The knowledge proposed by scholars who approve of such deployment, proves to be wrong because they believe that the existence is unstable. This is not aligned with reality. Upon serious consideration and verification on this point, it has been concluded that the existence, as coexistence, is stable, and development progression, development, awakening progression & awakening is definite. This itself is ‘existence based human centred contemplation’, ‘Madhyasth Darshan’ and ‘Co-existentialism’.

भौतिक वादी विज्ञान के अनुसार अव्यवस्था की नजरिया से अस्थिरता और अनिश्चितता की ओर गति हुई है। फलस्वरूप व्यापार के चंगुल में सारा मानव अथवा सर्वाधिक मानव फंस चुके हैं। बाजार लाभ के चंगुल में फंसा ही है। व्यापार शोषण क्रिया का नाम है। शोषण के साथ अपना-पराया की दीवाल बनी ही रहती है। व्यापारी भी जिसके साथ अपनत्व होता और संबंधों की पहचान होती है उनके साथ व्यापार नहीं कर पाता है।

By following the course of materialism, humankind has moved towards instability & uncertainty. Almost all humans are now trapped in the clutches of commerce & profits. Markets are in any case in the grip of profits. In this manner, exploitation is happening under the garb of commerce. The boundaries of us and them are always there in exploitation. Even the merchants indulging in exploitation, are unable to exploit those whom they consider their own and recognise the relationship with them.

सहअस्तित्ववादी विधि से यह समझ में आता है कि परमाणु में ही विकास क्रम, विकास होता है क्योंकि भौतिक-रासायनिक व जीवन क्रियाकलाप के मूल में परमाणु ही आधार वस्तु, आधार है। परमाणु में निहित कार्यरत अंशों की संख्या भेद से आचरण भेद होता है जिसके कारण मृदु, पाषाण, मणि, धातु दृष्टव्य है। यही परमाणु-अणु की विविध स्थितियाँ यौगिक क्रिया के लिए प्रवृत्त, कार्यरत व फलित रहना है।

Development progression and development happens only in the atom - this understanding comes by existential method. It is so because it is only the atom which is at the root of all physico-chemical and *jeevan* activities. Differentiation in the number of particles in atoms causes differentiation in their conduct (or properties). Soil, rocks, gemstones & metals are its obvious examples. It is indeed these diverse states of atoms & molecules which have tendency for, remain active for, and result into *yogic* activity.

यौगिक क्रिया विधि से सम्पूर्ण रसायन तंत्र क्रम से धरती पर हरियाली सबको समझ में आता है। रासायनोत्सव के रूप में प्राण कोशाओं से रचित रचनायें धरती पर हरियाली के रूप में है और प्राण कोशाओं से ही जीव शरीर व मानव शरीर भी रचित है जिसकी विरचना निश्चित होना भी सर्वविदित है। समृद्ध मेधस से सम्पन्न जीव शरीरों को भी जीवन संचालित करता है जबकि प्रत्येक मानव शरीर को जीवन ही संचालित करता है।

By *yogic* method, greenery or vegetation appears as a result of all chemical systems - this is easy to understand for everyone. This chemical vibrancy is in the form of compositions on Earth made of molecular structures in the form of greenery; all the animal bodies and human bodies are also made up of the cellular structures. It is well known that all these compositions eventually and certainly decompose. Animal bodies having developed brains are driven by *jeevan*, and the human bodies are also driven by *jeevan*.

जीवन क्रिया गठनपूर्ण परमाणु के रूप में वर्तमान रहता है। यही चैतन्य इकाई व जीवन है। हर मानव ‘जीवन’ व शरीर का संयुक्त रूप है। यह सहअस्तित्व सहज वैभव है। जीवन ही आशा जीने की आशा प्रमाण सहज आशा तक, विचार संवेदनात्मक से संज्ञानीयता तक, इच्छाएं संवेदनायें चिंतन से संज्ञानीयतात्मक चित्रण तक, ऋतम्भरा (सत्य सम्पन्न प्रमाणित करने का प्रवृत्ति) रूप में प्रमाण, सहअस्तित्व में अनुभव मूलक क्रम से सम्पन्न होना समझ में आता है। यही जागृत जीवन वैभव होना पाया जाता है और जागृत जीवन में अनुभव बल अनुभव का बोध बल, बोध का चिंतन साक्षात्कार बल, साक्षात्कार का तुलन बल और न्याय-धर्म-सत्य सहज आस्वादन बल जीवन वैभव है। जागृत जीवन की पहचान हर मानव कर सकता है, करने योग्य है फलस्वरूप व्यवस्था में सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्नता में प्रमाणित होता है।

*Jeevan* activity remains present in the form of the constitutionally complete atom. This itself is the conscious unit, or *jeevan*. All humans are the combined form of *jeevan* and body. This is the grandeur of coexistence. *Jeevan* itself is understood as the one which becomes progressively accomplished in - hope (from hope of living to hope of evidence), thoughts (from sensoriality to cognisance), desires (from visualisation of sensoriality to visualisation of cognisance), evidence in the form of resoluteness (determination to be accomplished in truth), and realisation (in coexistence). This indeed is the grandeur of the awakened *jeevan*. Realisation strength, *bodh* strength based on realisation, contemplation strength based on *bodh*, deliberation strength based on contemplation, and tasting strength of justice, *dharma* & truth - all this in the awakened *jeevan*, is indeed the grandeur of *jeevan*. Every human being can recognise the awakened *jeevan*, has the capacity to do so, and as a result evidences accomplishment of comprehensive resolution in the systems.

इक्कीसवीं सदी तक भौतिकवादी विज्ञान ने ‘मानव’ को भौतिक-रासायनिक वस्तु में निरूपित कर भ्रमित मानव को और भ्रमित किया है जिसके कारण मानव प्रदूषण फैलाया और धरती रोग ग्रस्त हो गई। सभी समुदाय परस्परता में द्रोह-विद्रोह, शोषण और युद्ध मानसिकता व प्रक्रिया से पक्के हो गये हैं जो मानव कुल के लिए अप्रत्याशित घटना है। यह स्पष्ट है। इसके उभरने के लिए जागृत मानव सहज आचार संहिता मध्यस्थ दर्शन सहस्तित्ववाद, शास्त्र हर मानव के लिए अध्ययन पूर्वक विचार निर्णय सहित प्रमाणित होते रहने, जीने देने, जीने में, से, के लिए प्रशस्त प्रस्ताव है।

By the twenty-first century, science based on materialism has depicted ‘humans’ as physico-chemical entities, and in the process has further increased the confusion of the deluded humans. Consequently, humans are spreading pollution and Earth’s temperature is increasing. All sects have become rigid due to the mindset of inter-sectarian offence, revolt, exploitation and wars. It is obviously an unexpected and unwelcome occurrence for humankind. Code of conduct of awakened humans, literature of Madhyasth Darshan Co-existentialism is a groundbreaking and pioneering proposal for becoming and remaining evidence by way of study, with harmonious thoughts and decisions, and for letting live and living.

भाग – बारह

Part - 12

मानव चेतना सहज आचरण सूत्र

Code of Conduct conforming to humane consciousness

**जीव चेतना से मानव चेतना ही भ्रम से जागृति**

**Movement from animal consciousness to humane consciousness is indeed the movement from delusion to awakening**

**भ्रम :**  अधिमूल्यन, अवमूल्यन, निर्मूल्यन दोष वश शरीर को जीवन मानना, यही सम्पूर्ण अवैध को वैध मानने का आधार है।

Delusion : Assuming body to be the *jeevan* due to over-valuation, under-valuation and non-valuation flaws; this itself is the basis for assuming everything illegal to be legal.

**भ्रांति :** भ्रम प्रवृत्ति वश किया गया कार्यकलाप व्यवहार विचार को सही मानना

Misunderstanding : To assume to be correct the activities, behaviour or thoughts under delusion.

**स्वेच्छा :** समाधान सहज सुखी होना।

Human desire : Being happy as a result of resolution.

12.1 भ्रम, भ्रान्त मानव, जागृत मानवेच्छा

Delusion, deluded humans, desire of awakened humans

1.1 भ्रमित मानव भी जागृति के प्यासे हैं। फलस्वरुप जागृति सहज रूप में लोक व्यापीकरण संभावना समीचीन है।

Deluded humans also have the thirst for awakening. Therefore, the possibility of dissemination of awakening is imminent.

1.2 मनाकार को साकार करने में मानव सफल है। मन:स्वस्थता के लिए अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन विधि से अध्ययन सुलभ हुआ।

Humans have been successful in materialising their ideas. Study by way of existence rooted human centred contemplation is now available for mental well-being.

1.3 भ्रमित मानव भी सुरक्षित रहना चाहता है।

Deluded humans also want to be safe and secure.

1.4 भ्रमित मानव भी न्याय सुलभता चाहता है।

Deluded humans also want accessibility to justice.

1.5 भ्रमित मानव भी न्याय पाना चाहता है।

Deluded humans also want justice.

1.6 परंपरा का तात्पर्य शिक्षा संस्कार अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था व सर्वतोमुखी समाधान जो बीसवीं शताब्दी तक स्थापित नहीं हो पाया। भौतिक विचार परंपरा के अनुसार, संरचना के आधार पर चेतना निष्पत्ति बताई जाती है जबकि ईश्वरवादी विचार के अनुसार चेतना से वस्तु निष्पत्ति बताई जाती है। इन दोनों का शोध करने के उपरान्त, अनुसंधानपूर्वक पता लगा कि सहअस्तित्व नित्य वर्तमान, परम सत्य होना पाया गया। इसमें उत्पत्ति की कल्पना ही गलत निकली।

The meaning of tradition is - humane education-*sanskar*, undivided society and universal systems; although these are yet to be established till the twentieth century. As per the theories of materialism, the genesis of consciousness is out of physical compositions, while as per the theories of spirituality, genesis of the physical compositions is out of consciousness. After delving deep into (investigating) both these theories, it was found by way of exploration that co-existence is ever present and is the ultimate truth. Thus all theories and imagination of genesis turned out to be wrong (erroneous).

1.7 मानव लक्ष्य सार्थक, सर्व सुलभ होने पर्यन्त अध्ययन शोध में प्रवर्तित अनुसंधान रहेगा ही।

Until the human goal becomes meaningful and accessible to everyone, study and investigation towards exploration will continue unabated.

1.8 मानवीयता मानव में सफल होने के अर्थ में सम्पूर्ण अनुसंधान शोध, कार्य-व्यवस्था, अभ्यास बदलाव होना ही स्वाभाविक है।

It is natural that all exploration, investigation, work & systems, and practices will continue to change for humaneness to be established in humans,

1.9 सर्वशुभ के अर्थ में सम्पूर्ण प्रयासों की सार्थकता है।

All endeavours are meaningful only if they are for universal well-being.

1.10 शुभाकांक्षा सर्व मानव में निहित है।

Aspiration for good is inherent in all humans.

1.11 जाने हुए को मानना, माने हुये को जानना ही मानव की आवश्यकता है। यही समाधान व प्रमाण के लिए सूत्र है।

Humans need to believe what they know, and need to know what they believe. This indeed is the maxim for resolution and evidence.

1.12 जानने-मानने की सम्पूर्ण वस्तु सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व ही है।

Existence in the form of co-existence is the whole content of knowing and believing.

1.13 मानव अधिकार, विधि व नीतियों का ध्रुवीकरण चाहता है अर्थात् इनमें स्थिरता निश्चयता को पहचानना व निर्वाह करना चाहता है।

Humans want pivoting of rights, laws and policies; in other words, want to recognise stability and certainty (definitiveness) in these aspects and fulfil them accordingly.

1.14 कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता, सुखापेक्षा ही शोध एवं अनुसंधान का आधार है।

Imaginativeness, free-will and expectation of happiness are the basis of investigation and exploration.

1.15 अनुसंधान निश्चित समाधान के लिए अनुभव सहज अनुक्रम विधि तर्कसंगत स्पष्टता है।

Exploration is the logical step-by-step clarity aligned with realisation, for the well-defined resolution.

1.16 समस्त सूचनाओं का ग्रहण करने वाला मानव ही है। यही अखण्डता, सार्वभौमिकता सहज तथ्य ग्रहण व ध्यानाकर्षण के लिए आधार है।

Humans are the ones who receive (grasp) all the pieces of information. This indeed is the basis of receiving (grasping), and paying attention to, the facts related to undivided-ness and universality.

12.2 जीवन लक्ष्य, मानव लक्ष्य

Jeevan goal, human goal

**जीवन लक्ष्य :** सुख, शांति, संतोष, आनंद

Jeevan goal : Happiness, peace, contentment and bliss.

**मानव लक्ष्य :** समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में, से, के लिए प्रमाण

Human goal : Evidence of, by, for resolution, prosperity, fearlessness and co-existence.

2.1 भाषा में हर विचार सूचना का आधार है।

Each thought, when communicated, is a piece of information.

2.2 मानव मूल्य सहज सफलता जीवन लक्ष्य में, से, के लिए सफलता है।

Success of human values is the success in, of, for the human goal.

2.3 सफलता का तात्पर्य जागृति व जागृति सहज प्रमाण ही है।

Meaning of success is - awakening and the evidence of awakening.

2.4 सर्व शुभ मानव तथा जीवन मूल्य सूत्रों की व्याख्या है।

Meaning of universal well-being is - description (explanation, living) of human values and jeevan values.

2.5 जीवन लक्ष्य सार्थक होने के प्रमाण में मानव लक्ष्य प्रमाणित होना आवश्यक है। मानव लक्ष्य प्रमाणित होते ही जीवन मूल्य सफल होता है यही सर्व शुभ परंपरा है।

The evidence of achievement of the *jeevan* goal lies in the evidence of human goal. Jeevan values become successful (are actualised) as soon as human goal is evidenced. This indeed is the tradition of universal well-being.

2.6 जागृत मानव परंपरा में ही सुख, शांति, संतोष, आनंद रूपी जीवन लक्ष्य और समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाण ही मानव का लक्ष्य है।

*Jeevan* goal of happiness, peace, contentment & bliss and human goal of resolution, prosperity, fearlessness & co-existence are evidenced only in humane tradition.

2.7 मन:स्वस्थता को प्रमाणित करने के उद्देश्य से ही जागृति अवश्यंभावी होता है।

When the aim is evidence of mental well-being, awakening is ensured.

2.8 सुदूर विगत से ही मानव जीवन में मौलिक रूप से सुरक्षित एवं सुखी होने की अपेक्षा बनी रही। इसलिए ‘मध्यस्थ दर्शन’ सहअस्तित्ववाद को अपनाना निश्चित हो गया। इससे सफलता सुनिश्चित है।

Since the ancient past, humans have always had the basic desire of being safe and happy. It is essential to embrace Madhyasth Darshan Co-existentialism for this.

2.9 मानवापेक्षा सदा से सुरक्षित, सुखी रहने की है।

Human expectation, since eternity, has been to remain safe and happy.

2.10 सीमायें इकाईयों में, से, के लिए है।

Boundaries are in, of, for units.

2.11 मानव लक्ष्य मानवत्व के योगफल में ही जागृति मूलक शिक्षा, न्याय सुरक्षा, उत्पादन कार्य, विनिमय कार्य, स्वास्थ्य संयम कार्य है।

The combination of human goal & humaneness results in education, justice-security, production work, exchange work & health-*sanyam* work rooted in awakening.

2.12 नियति सहज नियम ही विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति के अर्थ में है।

Only the laws aligned with destiny foster development progression, development, awakening progression & awakening.

2.13 हर मानव जंगल युग से इस वर्तमान युग तक सुरक्षित रहना चाहता रहा है।

Since ancient times to the present times, all humans have always wanted to remain safe.

2.14 सुरक्षित विधि से ही सर्व मानवापेक्षा सहज अभय सहित जागृति क्रम से जागृति की ओर गतिशील होना स्वाभाविक है।

It is only by way of safety along with fearlessness in human expectation, that humans move naturally from awakening progression to awakening.

2.15 समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सूत्र व्याख्या रूपी आचरण, व्यवहार, कार्य, व्यवस्था ही सर्वशुभ परंपरा है। स्वान्त: सुखवाद, सुविधा-संग्रहवाद, व्यक्तिवाद, मनोगत मनोकामनावाद प्रवृत्ति से किया गया कार्य व्यवहार से मानव समाधानित नहीं हुआ। अस्तु, सहअस्तित्ववादी नजरिया से किया गया कार्य-व्यवहार, शिक्षा-संस्कार, संविधान-व्यवस्था ही मानव के लिए शरण है।

The conduct, behaviour, work and system which is in the form of definition and description of resolution, prosperity, fearlessness and co-existence is indeed the tradition of universal well-being. Work and behaviour done in pursuits of personal happiness, comforts & accumulation, narrow-mindedness and getting their wishes fulfilled did not result in resolution in, of, for humans.

2.16 सहअस्तित्ववादी समझ के अनुसार विवेक व विज्ञान विधि से सदा सत्य, अन्तिम सत्य, परम सत्य समझ में आता है। भ्रमपूर्वक किया गया कामनावश संवेदनात्मक क्षणिक सुखाभास घटना रूपी असत्य स्पष्ट होता है। औचित्य क्रम से निश्चियों के आधार पर किया गया कार्य-व्यवहार, फल-परिणामों के आधार पर समझदारी की तृप्ति ही जीवन लक्ष्य व मानव लक्ष्य की सार्थकता है।

The truth, the last truth, the ultimate truth is understood by way of wisdom and science based on the understanding of co-existentialism. It becomes clear that under delusion, the longing and experience of momentary happiness by way of sensoriality is only fleeting & transient, and untrue. Meaningfulness of *jeevan* goal and human goal is the satisfaction of one’s own understanding based on the work and behaviour done, and consequences thereof, based on conclusions drawn in the process of understanding (study).

2.17 जागृति सहज शुभ सर्व मानव में, से, के लिए स्वीकार है।

Well-being as a result of awakening is acceptable to all humans.

2.18 सर्वशुभ के लिए कार्य, व्यवहार, विचार जागृतिपूर्वक सार्थक होता है।

Work, behaviour and thoughts for universal well-being is successful only if based on awakening.

2.19 मानवत्व रूपी स्वधर्म विधि से सभी विधाओं में, से, के लिए मानव समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व का प्रमाण है। यही सुख, शान्ति, संतोष, आनंद सम्पन्नता है। यही धर्म है। स्वधर्म ही मानवधर्म, मानवधर्म ही सुख, सुख ही समाधान है।

It is only by way of their own *dharma*, which is humaneness, that humans are the evidence in, of, for resolution, prosperity, fearlessness & co-existence in all aspects of living. This itself is being accomplished with happiness, peace, contentment and bliss. Own *dharma* means human *dharma*, human *dharma* means happiness, and happiness means resolution.

2.20 मानव लक्ष्य के लिए किए गये कार्य-व्यवहार के आधार पर आहार, विहार, व्यवहार भी सर्वशुभ सहज व्याख्या है।

Food, lifestyle and behaviour is the description of universal well-being on the basis of work and behaviour done for human goal,

2.21 स्वयं में, से, के लिए किये गये निरीक्षण-परीक्षण से जीवन सहज पहचान होती है।

Appreciation of *jeevan* is from observation and examination done in, of, for oneself.

2.22 मानवीय आहार को पहचानना सर्व मानव में, से, के लिए आवश्यक है।

It is essential for all humans to appreciate human food.

2.23 अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा से प्रस्तुत आशय अन्य को समझ में आना है। यह प्रकाशन सूचनात्मक है। सूचनायें अध्ययन पूर्वक अनुभव प्रमाण रूप में अभिव्यक्तियाँ हैं।

Expression and communication is successful if others can understand the intent or meaning. Expressions are manifestations of realisation, and this is information.

12.3 जागृति, जागृत परंपरा, जागृत मानव

Awakening, awakened tradition, awaken humans

**जागृत परंपरा :** अनुभव मूलक समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व सहज वैभव परंपरा।

Awakened tradition : Tradition of the grandeur of realisation-rooted resolution, prosperity, fearlessness and co-existence.

**जागृत मानव :** सहअस्तित्व में अनुभव मूलक अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा प्रकाशन।

Awakened humans : Expression, communication and manifestation in realisation rooted in co-existence.

3.1 हर मानव में निर्भ्रमता ही सहअस्तित्व में जागृति है।

Delusionless-ness in all humans itself is the awakening in co-existence.

3.2 जागृति मानव में से, के लिए नियति सहज स्वीकृति है।

Awakening is the predestined acceptance in, by, for humans.

3.3 जागृत परंपरा सहज हर नर-नारी में जागृति अनुभव मूलक प्रमाण है।

All humans, males and females, in awakened tradition are evidence of awakening and realisation.

3.4 जागृति का धारक-वाहक केवल मानव ही है।

Only humans are the beholders (bearers-holders) of awakening.

3.5 जागृति सहज प्रमाण ही मानवत्व सहित परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था एवं सर्व मानव में अखण्ड समाज में सार्वभौम व्यवस्था के रूप में प्राप्त अधिकार है। प्राप्त अधिकार का तात्पर्य विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति विधि से प्राप्त अधिकार से है। यह जागृत परंपरा नियति प्रदत्त है।

In the form of the family based self governance system and undivided society, universal system, evidence of awakening is the natural right available to all humans. Naturally bestowed right means the right bestowed by development progression, development, awakening progression and awakening. It is a given (predestined) in awakened tradition, and is bestowed naturally.

3.6 हर मानव में, से, के लिए सार्थकता अस्तित्व में जागृतिपूर्वक सफल होना ही सहज है।

Natural meaningfulness in, of, for all humans in existence is to succeed in their own awakening.

3.7 जागृति सर्व मानव अथवा हर नर−नारी में, से, के लिए मौलिक, सर्वप्रथम अधिकार, आवश्यकता है। यही सर्वमानव स्वीकार योग्य सूत्र है।

Awakening is the fundamental & foremost right & need of all humans, males and females. This is indeed the maxim acceptable to all humans.

3.8 सर्व मानव में, से, के लिए जागृति सहज शिक्षा संस्कार नियति सहज विधि से होता है।

Education-*sanskar* inherent to awakening happens in, by, for all humans in a predestined manner.

3.9 जागृति हर नर-नारियों में, से, के लिए परंपरा के रूप में स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार है।

Awakening in all humans, males and females, is self-ness, independence and right in the form of tradition.

3.10 हर नर-नारी नियति विधि से अर्थात् सहअस्तित्व विधि से नियमित, संतुलित, नियंत्रित होना अनुभव कर सकते है, प्रमाणित कर सकते हैं एवं प्रमाणित होना ही जागृति है।

By way of destiny or by way of coexistence, it is possible for all humans, males and females, to be in, and evidence, the state of self-discipline, self-regulation and balance. Evidence itself is awakening.

3.11 तर्क संगत पद्धति का तात्पर्य प्रयोजन पूर्वक किया गया क्रियाकलाप, कार्य व्यवहार में प्रमाणित होने योग्य प्रणाली सहित प्रेरणाकारी क्रिया है।

Meaning of logical process is - inspirational activities done purposefully along with mechanism which is evidence-able in work and behaviour.

3.12 जागृति के प्रमाण में ही समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी और फल परिणाम, समझदारी की पुष्टि में होता है।

It is in evidence of awakening that understanding is nourished as the result of understanding, honesty, responsibility and participation.

3.13 समझदारी सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान ज्ञाता के रूप में एवम् मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में होना-रहना ही जागृति सहज प्रमाण है।

Understanding the holistic view of existence, being the knower who has the knowledge of *jeevan,* and being the beholder of knowledge of humane conduct for the universal system, is indeed the evidence of awakening.

3.14 हर मानव में, से, के लिए व्यवस्था में भागीदारी का प्रमाण आचरण ही है।

The evidence of their participation in the system in, by, for all humans is their conduct.

3.15 मानवीयता पूर्ण आचरण ही हर मानव इकाई का वर्तमान है।

Humane conduct is manifest in all humane humans.

3.16 वर्तमान होने का प्रमाण ही आचरण सहित होना।

Being with a definite conduct is the evidence of manifestation.

3.17 जागृति सर्व मानव में, से, के लिए स्वीकृत अथवा स्वीकारने योग्य आवश्यकता है।

Awakening is acceptable to, or worth accepting to, all humans.

3.18 स्वीकृति आवश्यकता में, से, के लिए प्रवर्तनशीलता हर मानव में स्पष्ट है।

It is clear that acceptance tends to trigger, and be triggered by, the need in all humans.

3.19 परंपरा जागृत रहने के आधार पर ही मानव पीढ़ी से पीढ़ी प्रेरित व स्फूर्त रहना पाया जाता है।

Humans remain inspired and energised from generation to generation only on the basis of tradition being awakened.

3.20 मानव कुल में, से, के लिए जागृति अर्थात् समझदारी अक्षुण्ण सतत् स्रोत परंपरा के रूप में सर्व सुलभ होता है।

The everlasting, never-drying source of awakening, or understanding, becomes available to humankind in the form of tradition.

3.21 जागृत परंपरा में ही मानवीय शिक्षा संस्कार, मानवीय आचरण संहिता रूपी संविधान, मानवीयता पूर्ण परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था सहित सहअस्तित्व में अनुभव मूलक व्यवहार व प्रयोग, उत्पादन कार्य, विनिमय कार्य, स्वास्थ्य-संयम कार्य, न्याय-सुरक्षा कार्य, मानवीय शिक्षा-संस्कार कार्य सहज प्रमाण सम्पन्नता का बोध सहित स्वयं में विश्वास पूर्वक श्रेष्ठता का सम्मान सम्पन्न होना है।

It is only in the awakened tradition that humane education-*sanskar*, constitution in the form of humane code of conduct, family rooted self-governance system along with *bodh* of accomplishment of evidence of realisation rooted behaviour & experimentation, production work, exchange work, health-*sanyam* work, justice security work, humane education-*sanskar* work in coexistence along with self-confidence resulting in respect for excellence, are accomplished.

3.22 जागृत परंपरा में ही जीवन ज्ञान, सहअस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान स्वीकृत रहता है और स्वीकार योग्य शिक्षा संस्कार प्रणाली पद्धति नीति स्पष्ट रहता है।

It is only in the awakened tradition that the knowledge of *jeevan*, knowledge of the holistic view of coexistence and knowledge of humane conduct remains acceptable, and the policies, methodologies and techniques of acceptable education-*sanskar* remain clear.

3.23 जीवन का अध्ययन क्यों और कैसे के साथ होता है। मानव सहज उद्देश्य पूर्ति प्रक्रिया प्रणाली पद्धति का स्पष्ट बोध और अनुभव होता है। फलत: प्रमाण परंपरा होना सहज है।

*Jeevan* is studied with ‘why’ and ‘how’. It leads to clear understanding and realisation of the mechanism, methodology and process fulfilment of human goal. Consequently, it is natural for the tradition of evidence to be established.

3.24 जागृत जीवन ही दृष्टा, कर्ता, भोक्ता पद से समाधान संपन्न है।

It is the awakened *jeevan* which is resolution-accomplished in the perceiver, doer and enjoyer plane.

3.25 सहजता से जीवन जागृत होने का उपाय सार्वभौम व्यवस्था सर्व शुभ के अर्थ में सोच-विचार, निर्णय, समझ एवं कार्य-व्यवहार परंपरा ही है।

The natural process of jeevan to be awakened is the tradition of thought process, decisions, understanding and work & behaviour directed towards universal systems and well-being.

3.26 जागृति में, से, के लिए अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिंतन ही वाङ्गमय के रूप में मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद है।

Madhyasth Darshan Co-existentialism is indeed the existence rooted human centred contemplation in, by and for awakening in the form of literature.

3.27 सहअस्तित्व रूपी परम सत्य अनुभव, प्रमाण, बोध, संकल्प, साक्षात्कार, चित्रण, न्याय-धर्म-सत्यात्मक तुलन, विश्लेषण सहज आस्वादन पूर्वक चयन क्रियाकलाप ही जागृति पूर्ण जीवन मानसिकता प्रमाण है।

Realisation of the ultimate truth in the form of co-existence, evidence, *bodh*, determination, discerning, visualisation, justice-*dharma*-truth centric deliberation, analysis, and selection activity based on such tasting is indeed the evidence of the awakened jeevan mindset.

3.28 जागृति पूर्ण जीवन मानसिकता ही स्वायत्तता है जो मानव परंपरा में ही प्रमाणित होता है।

Awakened jeevan mindset is indeed the autonomy which gets evidenced only in human tradition.

3.29 ज्ञानावस्था में मानव भ्रमवश पीड़ित अथवा जागृतिपूर्वक सुखी होना स्पष्ट है।

It is clear that humans in the knowledge order are miserable under delusion and are happy after awakening.

3.30 जीवंत मानव सहज मानसिक निर्णयों के आधार पर क्रिया-प्रक्रिया के विश्लेषण से मूलत: मानसिकता स्पष्ट होती है।

Based on the decisions of a conscious person, their mindset is revealed by analysing their activities and thought process.

3.31 मानव परंपरा में सार्थकता, सफलता जागृति है।

Awakening indeed is the meaningfulness and success in human tradition.

3.32 जागृत परंपरा में, से, के लिए सहअस्तित्व में अनुभव सहज समझ सहित परमाणु अंश, परमाणु, अणु, अणु रचित रचना, यौगिक क्रिया, रसायनिक उर्मी, प्राण सूत्र रचना विधि, प्राण कोषा, प्राण कोषाओं से रचित रचना बीज−वृक्ष विधियों के विकास क्रम सार्थक होना स्पष्ट होता है और परमाणु में विकास, गठनपूर्णता, जीवन पद, जीवनी क्रम, जीवन जागृति क्रम, जागृति स्पष्ट होता है।

In, by and for the awakened tradition, understanding aligned with realisation in coexistence leads to clarity about the meaningfulness of development progression comprising subatomic particles, atoms, molecules, compositions made up of atoms, chemical compounds, chemical advancement, chromosomes, genetic code, cells, cellular structures, and seed & tree; and development in atom, constitution completeness, *jeevan* plane, living world progression, *jeevan* awakening progression, and awakening also become clear.

3.33 जागृत मानव परंपरा में ही भौतिक, रासायनिक एवं जीवन क्रियायें सहअस्तित्व में अध्ययन सम्पन्नता जागृत मानव समझा रहता ही है।

It is indeed in the awakened human tradition that the awakened humans have clear understanding of physical, chemical and *jeevan* activities, and of accomplishment of study in coexistence.

3.34 जागृति हर मानव में, से, के लिए मौलिक अधिकार है।

Awakening is a fundamental right in, of and for all humans.

3.35 जागृति ही मानव में, से, के लिए मौलिक स्वत्व है।

Awakening itself is the essential self-ness in, of and for humans.

3.36 चारों अवस्थाओं के साथ ही मानव का होना स्पष्ट है। जीने के लिए जागृति आवश्यक है।

It is obvious that humans can exist only with the four orders. Awakening is essential for living (happily).

3.37 हर मानव का अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा और प्रकाशन में जागृति या भ्रम स्पष्ट होता है।

Awakening or delusion is obvious in the expression, communication or conduct of every human being.

3.38 हर नर-नारी जागृत होना व रहना चाहते हैं।

All humans, males or females, want to be, and remain, awakened.

3.39 हर नर-नारी जागृति क्रम में भ्रमित तथा जागृति पूर्ण विधि से प्रमाणित होते हैं।

All humans, males or females, are deluded when in awakening progression, and become evidence by way of awakening.

3.40 हर मानव को सदा जागृति में संपन्न होने वाली आशा, विचार, इच्छा, संकल्प, प्रमाण, अनुभव बोध, साक्षात्कार, तुलन, आस्वादन क्रियाओं का पहचान होना है। क्रियाओं को पहचानना ही जीवन की सम्पूर्ण पहचान है।

All humans must always recognise the activities of hope, thought, desire, determination, evidence, realisation-*bodh*, discerning, analysis, tasting which are accomplished in awakening. Recognising the activities indeed is completely recognising the *jeevan*.

3.41 मन वृत्ति में, वृत्त चित्त में, चित्त बुद्धि में, बुद्धि आत्मा में और आत्मा सहअस्तित्व में अनुभूत होना ही ‘स्व’ निरीक्षण परीक्षण है।

Realisation of *mun* in *vritti*, of *vritti* in *chitt*, of *chitt* in *buddhi*, of *buddhi* in *atma* and of *atma* in coexistence is indeed self-observation and self-examination.

3.42 जागृत मानव परिभाषा सूत्र के आधार पर मानवीयता सहज व्याख्या है मन:स्वस्थता सहज प्रमाण है।

Description of humaneness, and evidence of mental well-being, are based on the definition of the awakened human.

3.43 मानव इन पाँच कोटि में गण्य है, अमानव कोटि में पशु मानव और राक्षस मानव, मानव कोटि में मानव, अतिमानव कोटि में देव मानव और दिव्य मानव।

Humans are categorised in these five categories - animalistic humans and demonic humans (inhumaneness), humane humans (humaneness), and godly humans and divine humans (higher humaneness).

3.44 जागृत मानव ही समाधानित एवं समृद्ध होता है।

Only the awakened humans are resolved and prosperous.

3.45 जागृत मानव से देव मानव, देव मानव से दिव्य मानव श्रेष्ठ परंपरा है। भ्रमित अमानव के लिए जागृत मानव श्रेष्ठ है इस क्रम में श्रेष्ठता का सम्मान विधि स्पष्ट है। दिव्य मानव पद में ही समानता सम्पन्न व पूर्ण होता है।

Godly human tradition exceeds (is better than) awakened human tradition, and divine human tradition exceeds godly human tradition. Awakened humans exceed deluded humans in the inhumane category. On this course, respect for excellence is obvious. Only in the divine human plane, equality is established and complete.

3.46 दिव्य मानव और देव मानव जागृति पूर्णता को प्रमाणित करते हुए मानवीयता पूर्ण आचरण सहित व्यवस्था में वैभव है।

Divine humans and godly humans, while evidencing complete wakefulness along with humane conduct, are the grandeur in orderliness.

3.47 मानव, देव मानव, दिव्य मानव का मानवीयता पूर्ण आचरण सहित अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना स्वाभाविक है।

Along with humane conduct, participation of humane humans, godly humans and divine humans in undivided society, universal system, is natural.

3.48 जागृत मानव में न्याय दृष्टि जीवन ज्ञान प्रधान, धर्म सत्य दृष्टि; जन बल, धन बल, यश बल कामना सहित प्रवृत्तियाँ एवं धीरता प्रधान धीरता, वीरता, उदारता सहज स्वभाव सहित आचरण में स्पष्ट होता है।

The perspective of justice, and knowledge of jeevan, is primary in awakened humans, along with the perspectives of *dharma* and truth. Tendencies along with wish for people strength, wealth strength & reputation strength, and innate nature of primarily fortitude, along with courage & generosity, are obvious in their conduct.

3.49 देव मानव पद में वैभवित हर नर-नारी में यश बल प्रवृत्ति; न्याय, धर्म प्रधान सत्य दृष्टि; वीरता, उदारता, दया प्रधान स्वभाव; आचरण में प्रमाण सहित अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी स्पष्ट होता है।

Tendency of reputation strength; primary perspectives of justice and *dharma*, along with the perspective of truth; innate nature primarily of fortitude & courage, along with generosity; evidence in conduct along with participation in undivided society, universal system is obvious in all males and females established in the godly human plane.

3.50 दिव्य मानव पद में हर नर-नारी परम सत्य दृष्टि प्रधान धर्म, न्याय, मानव लक्ष्य, जीवन लक्ष्य प्रमाणित होता है और दया, कृपा, करूणा प्रधान धीरता, वीरता, उदारता सहज स्वभाव होता है।

Primary perspective is of truth, along with the perspective of justice and *dharma;* and human goal and *jeevan* goal is evidenced in all males and females established in the divine human plane. Their innate nature is primarily of kindness, grace & compassion, along with fortitude, courage & generosity.

3.51 जागृत मानव रूपी ज्ञानावस्था के अनन्तर देव व दिव्य मानव पद समीचीन रहता है।

Humans belonging to the knowledge order, after attaining awakening, are close to the godly human plane and divine human plane.

3.52 देव मानव पद में हर नर-नारी में जन-धन कामनायें गौण और यश बल कामना प्रधान होती है। इस कारण से मानव, देव मानव का सम्मान करना स्वाभाविक रहता है साथ में समानता का सम्मान होता ही है।

Wish for people strength and wealth strength is secondary, and wish for reputation strength is primary for all humans in the godly human plane. Due to this humans naturally respect godly humans; and there is respect for equality.

3.53 दिव्य मानव पद में हर नर-नारी जन, धन, यश बल कामना से मुक्त सहअस्तित्व रूपी परम सत्य में अनुभूत परम ऐश्वर्य रूपी स्वतंत्रता व स्वराज्य सहज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी सहित प्रमाण प्रस्तुत करना, कराना स्वाभाविक रहता है।

In the divine human plane, humans are liberated from the wish for people strength, wealth strength and reputation strength. Instead, they are realised in the ultimate truth in the form of coexistence, and naturally produce, and enable others to produce, evidence along with participation in the universal system which encourages,and is encouraged by, independence and self-governance.

3.54 समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी में परिपक्वता प्रमाण सम्पन्नता ही दिव्य मानव पद सहज ऐश्वर्य और सार्थकता है।

Maturity & evidence accomplishment in understanding, honesty, responsibility & participation is indeed the grandeur and meaningfulness of the divine human plane.

3.55 दिव्य मानव पद में सम्पूर्ण जीवन मूल्य, मानवत्व तथ्य प्रमाणित रहता है।

All *jeevan* values and all aspects of humaneness are evidenced in the divine human plane.

3.56 मानव ही जागृति सहज प्रमाणों का धारक वाहक है।

Only humans are the beholder of evidence of awakening.

3.57 मानव व देव मानव क्रियापूर्णता सहज प्रमाण है। दिव्य मानव आचरणपूर्णता का प्रमाण है।

Humane humans and godly humans are evidence of activity completeness. Divine humans are evidence of conduct completeness.

3.58 मानवीयता पूर्ण मानव ही समझे हुए को समझाने, सीखे हुए को सिखाने, किए हुए को कराने में प्रमाणित रहता है। यह जागृति का साक्ष्य है।

Only humane humans are unwavering in passing on to others what they have understood, what they have learnt, and what they have done. This is the testimony of awakening.

3.59 समझे हुए को समझाने में, से, के लिए जागृति सहज प्रमाण समाधान के रूप में प्रमाणित होता है। यही मन:स्वस्थता का वर्तमान है। यही मन:स्वस्थता है।

In, by and for passing on to others what one has understood, awakening is evidenced as resolution. This is the presence of mental well-being. This is mental well-being.

3.60 सीखा हुआ को सिखाने, किया हुआ को कराने में समृद्धि के लिए सम्पन्न होने वाला कर्माभ्यास सहज स्वीकार होता है। यही मनाकार को साकार करने का प्रमाण है।

In passing on to others what one has learnt, and the skills they have mastered, work-practices accomplished for prosperity become acceptable. This is the evidence of materialising the ideas.

12.4 सार्थकता, प्रयोजन, नियति

Meaningfulness, purpose, destiny

**सार्थकता :** सहअस्तित्व में अखण्डता, सार्वभौमता सहज सूत्र व्याख्या ही अभ्युदय सहज परंपरा

Meaningfulness : Maxims and elaboration of undividedness and universality in coexistence itself is the tradition of enlightenment.

**प्रयोजन :** उपयोगिता, पूरकता

Purpose : Usefulness, complementariness.

**नियति :** सहअस्तित्व सहज प्रकटन वर्तमान

Destiny : Emergence and presence in, by and for coexistence

4.1 विद्यार्थियों में सफलता सार्थकता ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता के लिए जिज्ञासा सहित निष्ठा प्रमाण परंपरा से है।

Success and meaningfulness of the students is by curiosity to be accomplished in knowledge, wisdom & science, along with evidence of commitment in tradition.

4.2 सेवक (सहयोगी) की सार्थकता कर्त्तव्य निर्वाह से है।

Meaningfulness of attendant (assistant) is by fulfilment of duty.

4.3 स्वामी (साथी) की सार्थकता दायित्व निर्वाह करने में से है।

Meaningfulness of the master (guide) is in and by fulfilment of responsibility.

4.4 उत्पादन में सार्थकता सामान्य आकाँक्षा व महत्वाकाँक्षा संबंधी वस्तुओं से समृद्ध होने के लिए प्रयुक्त कुशलता, निपुणता, पाण्डित्य से है।

Meaningfulness in production is by the efficiency, proficiency & mastery deployed for having the objects of common aspirations and higher aspirations in ample quantities.

4.5 न्याय सुरक्षा कार्य की सार्थकता उभय अथवा परस्पर तृप्ति के अर्थ में है।

Meaningfulness of justice security work is for mutual or ambi-satisfaction.

4.6 स्वास्थ्य संयम कार्य की सार्थकता, जागृति को अभिव्यक्त करने के अर्थ में है।

Meaningfulness of health *sanyam* work is for expression of awakening.

4.7 समझदारी की सार्थकता सर्वतोमुखी समाधान सहज प्रवृत्तियों के रूप में कार्य-व्यवहार के रूप में है।

Meaningfulness of understanding is in the form of tendencies of and for resolution, and associated work and behaviour.

4.8 ईमानदारी का प्रयोजन नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, समाधान, सत्य में विश्वास व इसमें निरंतरता सहज प्रमाण है।

Evidence of confidence in law, regulation, balance, justice, resolution & truth, and the continuity thereof, is the purpose of honesty.

4.9 स्वयं में विश्वास का प्रयोजन जागृति सहज अक्षुण्णता (निरंतरता) में है।

Purpose of self-confidence is in the continuity of awakening, OR

Continuity of awakening is the purpose of self-confidence.

4.10 श्रेष्ठता सहज सम्मान व प्रयोजन मूल्यांकन परस्परता में तृप्ति, पूरकता व उपयोगिता के अर्थ में है।

Respect, purpose & evaluation of excellence is for mutual satisfaction, complementariness & usefulness.

4.11 प्रतिभा का प्रयोजन समाधान, स्वायत्तता के अर्थ में, स्वायत्तता का प्रयोजन जागृत परंपरा में समझ, कार्य-व्यवहार, समझ में निपुणता, कुशलता, पांडित्य शिक्षा-संस्कार परंपरा में से जो प्राप्त रहता है उसे अन्य को समझाने, सिखाने, कराने में विश्वास से है।

Purpose of talent is for resolution & autonomy. Purpose or meaning of autonomy is the confidence to pass onto others the understanding, work-behaviour, efficiency, proficiency & mastery which one has received from the awakened tradition of education-*sanskar*.

4.12 व्यवसाय में स्वावलंबन का प्रयोजन परिवारगत आवश्यकता से अधिक उत्पादन और समृद्धि का प्रमाण है।

Purpose of self-reliance is the evidence of prosperity, which is producing more than what the family needs.

4.13 व्यवहार में सामाजिक होने का प्रयोजन अखण्ड समाज व सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी है।

Purpose of sociality in behaviour is participation in the undivided society and universal system.

4.14 अखण्ड समाज व सामाजिकता का प्रयोजन, समाधान, समृद्धि, अभयता, सहअस्तित्व सहज प्रमाण परंपरा सर्वसुलभ होना रहना ही है।

Purpose of the undivided society and universal system is the availability in tradition of the evidence of resolution, prosperity, fearlessness & co-existence.

4.15 सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी का प्रयोजन समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण है।

Evidence of resolution, prosperity, fearlessness & co-existence is the purpose of participation in universal system

4.16 समाधान सहज प्रयोजन सुख है।

Purpose of resolution is happiness.

4.17 समाधान, समृद्धि सहज प्रयोजन सुख, शान्ति है।

Happiness & prosperity is the purpose of resolution & prosperity.

4.18 समाधान, समृद्धि, अभय सहज प्रयोजन सुख, शान्ति, संतोष है।

Happiness, prosperity & contentment is the purpose of resolution, prosperity & fearlessness.

4.19 समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रयोजन सुख, शान्ति, संतोष, आनंद है।

Happiness, prosperity, contentment & bliss is the purpose of resolution, prosperity, fearlessness & co-existence.

4.20 आनंद सहज प्रयोजन सहअस्तित्व में, से, के लिए अनुभव सहज प्रमाण पूर्ण वैभव है।

Grandeur full of evidence of realisation in, from & for co-existence is the purpose of bliss.

4.21 संतोष का प्रयोजन अनुभव सहज प्रमाण बोध और अभिव्यक्ति होने का संकल्प मन:स्वस्थता सहज प्रमाण है।

Evidence of realisation-*bodh,* of determination of being expressive and of mental well-being is the purpose (or meaning) of contentment.

4.22 शांति का प्रयोजन अनुभव सहज प्रमाण बोध, संकल्प का साक्षात्कार-चित्रण अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा प्रमाण है।

Evidence of realisation-*bodh* and of discernment-visualisation, expression & communication of determination and is the purpose (or meaning) of peace.

4.23 सुख का प्रयोजन अनुभव सहज प्रमाण बोध, संकल्प, साक्षात्कार, चित्रण व तुलन, विश्लेषण अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा और प्रकाशन है।

Evidence of realisation-*bodh,* determination, discernment, visualisation, deliberation, analysis, expression, communication and manifestation is the purpose (or meaning) of happiness.

4.24 आस्वादन का प्रयोजन अनुभव सहज प्रमाण, बोध, संकल्प, साक्षात्कार, तुलन, विश्लेषणपूर्वक निश्चित मूल्यों में तादात्म्यता, तदाकार, तद्रूरूप विधि से मूल्यों का आस्वादनपूर्वक संबंधों का चयन, निर्वाह रूप में प्रमाण अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन है।

Evidence of realisation-*bodh,* determination, discernment, visualisation, deliberation, oneness, concordance & consonance in definite values by way of analysis and by selecting relationships (over sensory happiness), fulfilment in the form of expression, communication and manifestation is the purpose (or meaning) of tasting.

4.25 संवेदनाओं का प्रयोजन संज्ञानीयता में से नियंत्रित रहना है।

Purpose (or meaning) of senses is to remain regulated in and by cognisance.

4.26 संज्ञानीयता का प्रयोजन जागृति सहज प्रमाण है।

Evidence of awakening is the purpose of cognisance.

4.27 जागृति का प्रयोजन मानवत्व सहित सहअस्तित्व सहज प्रमाण परंपरा में ही भौतिक-रासायनिक वस्तुओं का सदुपयोग, प्रयोजनशील होना और जीवन क्रिया तथा जागृति को प्रमाणित करना और मूल्यांकन करना है।

Right utilisation and purposefulness of physico-chemical objects, and to evidence and evaluate *jeevan*-activities and awakening in the awakened tradition, is the purpose (or meaning) of awakening.

4.28 भौतिक-रासायनिक वस्तु का उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजन का प्रमाण शरीर पोषण-संरक्षण, समाज गति में नियोजन है।

Nutrition & protection of the human body, and deployment in societal functioning is the evidence of utilisation, right utilisation and purpose of physico-chemical objects.

4.29 सदुपयोग का प्रयोजन व्यवस्था में पूरकता सहज प्रमाण है।

Evidence of complementariness in the system is the purpose (or meaning) of right utilisation.

4.30 प्रमाणशीलता का साक्ष्य आवर्तनशीलता व समाधान समृद्धिकरण में नियोजन है।

Investment in cyclicity and resolution prosperity is the testimony of movement towards evidence.

4.31 आवर्तनशीलता का प्रयोजन, बार-बार घटित होना है।

यथा:

i. संगठन-विघटन, विघटन-संगठन, मृदा-पाषाण मणि-धातु की ओर, मणि-धातु मृदा-पाषाण की ओर

ii. रचना-विरचना, विरचना-रचना, बीज वृक्ष की ओर, वृक्ष बीज की ओर

Recurring, repeated occurrence is the purpose (or meaning) of cyclicity.

For example:

i. Composition-dissolution, dissolution-composition of soil-stones towards gems-metals, and of gems-metals towards soil-stones.

ii. Composition-dissolution, dissolution-composition of seeds towards trees and trees towards seeds.

4.32 सार्वभौमता का प्रयोजन मानव इकाई अथवा ज्ञानावस्था रूपी इकाई में, से, के लिए ज्ञान, विवेक, विज्ञान विधा से स्वीकृति सहज पूरकता उपयोगिता और दर्शन सहित विचार व्यवस्था में भागीदारी सहजतापूर्वक सार्वभौमता अखण्डता परंपरा नित्य समीचीन होने रहने से हैं।

Complementarity, usefulness and holistic view & thoughts of acceptance by way of knowledge, wisdom & science in, by, for humans of the knowledge order along with participation in systems and eternal accessibility to the tradition of undividedness, is the purpose of universality.

4.33 सर्व मानव में, से, के लिए जागृति सहज ज्ञान, विवेक, विज्ञान, योजना पूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार, अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी ही नियति है।

In, by and for all humans, knowledge, wisdom & science of awakening, work and behaviour done with proper planning, and participation in the undivided society universal system - this indeed is the destiny.

4.34 नियति = सहअस्तित्व सहज नियम, नियंत्रण, संतुलन पूर्वक विकास और जागृति मानव में, से, के लिए प्रमाणित होने रहने से है।

Destiny = Evidence of development and awakening as per law, regulation & balance in co-existence, in, by & for humans.

4.35 सहअस्तित्व मानव परंपरा में नित्य प्रभावी होना ही नियति है।

Co-existence is eternally effective in human tradition. This indeed is destiny.

4.36 नित्य वर्तमान ही सहअस्तित्व है।

Existence is eternally present (or, whatever is eternally present, is co-existence).

4.37 नियति विधि से परिणाम परिवर्तन होते हैं। फलत: विकास व जागृति प्रमाणित होता है।

Changes occur in results by way of destiny. Consequently, development and awakening are evidenced.

4.38 नियति नित्य प्रभावी है। यह वर्तमान है।

Destiny is eternally effective. This is extant.

4.39 ज्ञानावस्था नियति क्रम में प्रमाणित वैभव है।

Knowledge order is the evident grandeur in destiny progression.

4.40 सर्व मानव में, से, के लिए मानवत्व सहित व्यवस्था परिवार में प्रमाणित होना और स्वराज्य मूलक परिवार व्यवस्था में भागीदारी करने के रूप में स्पष्ट होता है।

In, by and for all humans, humaneness along with the system becomes clear in the form of evidence in the family, and participation in the family system rooted in self-governance.

4.41 समाधान, समृद्धि, अभयता सहित सहअस्तित्व में प्रमाणित होना ही जागृत मानव सहज समाधान, समृद्धि सहित सौभाग्य है।

Being evidence in co-existence along with resolution, prosperity & fearlessness indeed is the serendipity of in and by an awakened person.

12.5 सहअस्तित्व, व्यवस्था

Co-existence, system

**सहअस्तित्व :** सत्ता में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति

**व्यवस्था :** न्याय, समाधान, समृद्धि, अभय, नियम, नियंत्रण, संतुलन सहअस्तित्व सहज वैभव ही नित्य वर्तमान है।

Co-existence : Sentient & insentient nature saturated in Omnipotence.

System : Justice, resolution, prosperity, fearlessness, law, regulation, balance, and grandeur of co-existence is indeed eternally present.

5.1 नियति, नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य रूपी सहअस्तित्व ही परम सत्य है।

Co-existence in the form of destiny, law, regulation, balance, justice, *dharma* & truth is the ultimate truth indeed.

5.2 सहअस्तित्व में, से, के लिए नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म व सत्य नित्य वर्तमान प्रकाशन है। यही नियति है।

Law, regulation, balance, justice, *dharma* & truth in, by & for co-existence is the eternally present manifestation. This indeed is destiny.

5.3 अस्तित्व ही सहअस्तित्व रूप में नित्य वर्तमान है।

It is the existence indeed which is eternally present in the form of co-existence.

5.4 सहअस्तित्व अनादि और अनवरत (निरंतर) है।

Co-existence is beginning-less and perpetual (continuous).

5.5 सहअस्तित्व अनादि, शाश्वत, अनन्त और व्यापक है।

Co-existence is beginning-less, eternal, unending (endless) and Omnipresent.

5.6 सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति ही चार अवस्थाओं व पदों में गण्य है।

Nature saturated in Omnipotence is categorised in four orders and four realms.

5.7 सहअस्तित्व में भौतिक, रासायनिक व जीवन क्रियाकलाप ही विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति में, से, के लिए प्रमाण है। जीव शरीर और मानव शरीर भी प्राण कोशाओं से रचित रहता है। इसकी विरचना भी होती है। इसमें से रचना को जन्म, विरचना को मृत्यु कहा जाता है।

Physical, chemical & *jeevan* activities in co-existence are the evidence in, of and for development progression, development, awakening progression & awakening. Animal bodies as well as human bodies are compositions of cells. They decompose also. In these, composition is called birth while decomposition is called death.

5.8 पदार्थावस्था में संगठन-विघटन एवं प्राणावस्था में रचना-विरचना है। जीवावस्था क्रूर-अक्रूर एवं ज्ञानावस्था भ्रम-निर्भ्रम है।

There is integration disintegration in the material order, and composition decomposition in the plant order. Animal order is cruel-uncruel and the knowledge order is deluded non-deluded.

5.9 रचना-विरचना, विरचना-रचना परिणाम का द्योतक होते हुए मूल पदार्थ का अस्तित्व नित्य वर्तमान है।

Composition decomposition and integration disintegration are indications of result, while existence of the basic material is eternally present.

5.10 अस्तित्व न ही घटता है न ही बढ़ता है, स्थिर है।

Existence is stable, it does not increase or decrease.

5.11 अस्तित्व सहज नित्य वर्तमान ही है। यही स्थिरता, दृढ़ता, निश्चयता, निरंतरता, नियति सहज नित्य है।

Existence is eternally present. The stability, firmness, certainty, continuity is eternal.

5.12 पूर्ण, पूर्णता व सम्पूर्णता ही सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व सहज नित्य वैभव है।

Complete, completeness and wholeness is indeed the eternal grandeur of co-existence.

5.13 अस्तित्व सहज वस्तु में, से, के लिए व्यापक वस्तु स्थिति पूर्ण एवं स्थिति पूर्ण सत्ता में सम्पृक्त प्रत्येक एक अपने ही वातावरण सहित सम्पूर्ण होना पाया जाता है।

It is observed that the Omnipresent reality in existence is the absolute state; and each unit in existence is complete in itself with its own environment while being saturated in absolute state Omnipotence.

5.14 सम्पूर्णता ही प्रत्येक एक भौतिक-रासायनिक इकाईयो में, से, के लिए यथास्थिति है।

Completeness is the actual state in, of and for each physico-chemical unit.

5.15 प्रत्येक एक अपने यथास्थिति पूर्वक ही “त्व” सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करते हैं।

Each unit, as per its actual state, is organised in itself with its -ness and participates in the overall system.

5.16 सहअस्तित्व ही नित्य शाश्वत वर्तमान है।

Co-existence is perpetually eternally present.

5.17 सहअस्तित्व का अर्थ व्यापक वस्तु में ही सम्पूर्ण एक-एक वस्तु संपृक्त नित्य वर्तमान और अविभाज्य है।

Each unit is saturated in the Omnipresent reality, is eternally present in the Omnipresent reality and is inseparable from the Omnipresent reality - this is the meaning of coexistence.

5.18 हर मानव भी एक-एक रूप में गण्य है। मानवत्व सहित मानव ही अपने में वैभव है।

Humans are also counted as units. Only the humans with humaneness are glorious in themselves.

5.19 मानव ‘त्व’ सहित व्यवस्था होना, समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज स्पष्टता है और पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था में नियम, नियंत्रण, संतुलन पूर्वक व्यवस्था स्पष्ट है।

It is apparent that humans who are self-organised with their -ness, participate in the overall orderliness. Orderliness is apparent in the material order, plant order and animal order by way of law, regulation & balance.

5.20 व्यवस्था नियति सहज नित्य वैभव है। यह हर मानव में, से, के लिए समझ में आना आवश्यक है।

Orderliness is the eternal grandeur of destiny. This understanding is essential in, by and for all humans.

5.21 नियति सहजता का तात्पर्य नियम, नियंत्रण, संतुलन के अर्थ में मानवेत्तर प्रकृति की व्यवस्था और न्याय, धर्म (समाधान), सत्य सहज ही मानव ध्रुवस्थ है। ध्रुवस्थ का तात्पर्य निश्चित स्थिति-गति से है।

Grandeur of destiny means - system of rest of nature for law, regulation & balance, and pivotisation of humans to justice, *dharma* (resolution) & truth. Pivotisation means definite state and motion.

5.22 सहअस्तित्व में, से, के लिए नियति निश्चित वर्तमान है।

Destiny is definite and operating (working) in, from and for coexistence.

5.23 मानवेत्तर प्रकृति नियम, नियंत्रण, संतुलन, पूरकता-उपयोगिता विधि से ‘त्व’ सहित व्यवस्था है।

Each unit of rest of nature is in harmony, with its -ness, by way of law, regulation, balance, complementariness and usefulness.

5.24 संबंधों की पहचान के आधार पर हर नर-नारी नियंत्रित होना पाया जाता है।

All males and females are observed to be regulated on the basis of recognition of relationships.

5.25 समझदारीपूर्वक ही नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, समाधान (धर्म), सत्य जागृत मानव परंपरा में, से, के लिए प्रमाण है।

Law, regulation, balance, justice, resolution (*dharma*) and truth are evidence in, by and for the awakened human tradition only by way of understanding.

5.26 सहअस्तित्व में प्रत्येक एक सभी ओर प्रकाशमान है। व्यापक वस्तु सभी एक-एक में प्राप्त है क्योंकि सभी अवस्था में सभी इकाईयाँ व्यापक सत्ता में सम्पृक्त हैं।

Each unit in coexistence is lucent all-around. The omnipresent reality is available in each unit because all units (in any order) are saturated in omnipresent Omnipotent.

5.27 व्यापक वस्तु स्थितिपूर्ण है, क्योंकि जहाँ इकाईयाँ है और जहाँ इकाईयाँ नहीं है ऐसी उभय स्थिति में व्यापक वस्तु है। व्यापक वस्तु असीमित है और सभी एक-एक वस्तु का सीमित होना रहना स्पष्ट है।

Omnipresent reality is the absolute state because it is present where units are there, or even where units are not there. Omnipresent reality is infinite, while each unit is undoubtedly finite.

5.28 व्यापक में जड़-चैतन्य प्रकृति सहज सम्पृक्तता ही प्रत्येक एक में ऊर्जा संपन्नता और क्रियाशीलता है। जीवन जागृति क्रिया सहज पहचान सहित आचरण है।

Saturation of each unit in nature, whether sentient or insentient, is the cause of its being endowed with energy, and being active.

5.29 परस्पर पहचान संबंध व मूल्य निर्वाह ही जागृति सहज प्रमाण है।

Mutual recognition, and fulfilment of relationship and values, is indeed the evidence of awakening.

5.30 जड़ प्रकृति में कार्य सीमायें जो जितना लम्बा, चौड़ा, ऊँचा होता है जैसा एक परमाणु एक धरती अपने वातावरण सहित उतना ही विस्तार में कार्यरत रहना, प्रभाव सीमा सम्पन्न रहना, हर इकाईयों में परस्परता में निश्चित अच्छी दूरियाँ रहता है।

In insentient nature, each unit (e.g. an atom, a planet), along with its environment, is active and effective in the expanse and within the limits of its length, breadth and height. A definite healthy distance is always there between all units.

5.31 परस्परता में अच्छी दूरियाँ एक दूसरे के प्रभाव क्षेत्र से मुक्त स्थिति-गतियाँ हैं।

Healthy distances for units are the areas devoid of their effect on each other’s state and motion.

5.32 अच्छी दूरी, स्थिति गतियाँ स्वयं स्फूर्त रहती है। परमाणु, अणु, प्राण कोषाओं से रचित रचना, ग्रह-गोल, सौर व्यूह, आकाशगंगा, पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था नियंत्रण संतुलन के रूप में होना मानव को विदित होता है। साथ ही यह भी समझ में आता है कि भ्रमित मानव अनियंत्रित है। न्याय, समाधान (मानव धर्म), सत्य सहज जागृत परंपरा में नियंत्रण सहज है।

Healthy distance, state and motions are spontaneous. Atoms, molecules, cellular compositions, planets, solar systems, galaxies, material order, plant order, animal order - humans become aware that all these are regulated and balanced. They also observe that deluded humans are unregulated. Regulation is natural in the awakened tradition of justice, resolution (*dharma*) and truth.

5.33 न्याय, संबंधों में प्रयोजन सहज पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति संतुलन ही मानव परंपरा में नित्य उत्सव है।

Justice - which is recognition of purpose in relationships, fulfilment of values, evaluation & mutual satisfaction - is indeed the eternal celebration in human tradition.

5.34 तृप्ति व संतुलन ही सर्व मानव में, से, के लिए स्वभाव गति एवं प्रमाण है।

Satisfaction and balance is normal or natural working and evidence in, of and for all humans.

5.35 सहअस्तित्व में अखण्ड समाज गति रूपी सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी प्रमाणित एवं वर्तमान होना ही जागृत मानव सहज वैभव है।

Evidence and practice of participation in the universal system in the form of undivided society in coexistence is indeed the grandeur of awakened humans.

5.36 सहअस्तित्व नित्य प्रमाणित वर्तमान और प्रभावी है।

Coexistence is eternally evident, present and effective.

5.37 सहअस्तित्व में ही समाधान, समृद्धि, अभय अर्थात् वर्तमान में विश्वास सम्पन्नता जागृत मानव परंपरा में प्रमाण है।

Resolution, prosperity and fearlessness (having trust in the present) is indeed the evidence in awakened human tradition in coexistence.

5.38 सहअस्तित्व विधि में, से, के लिए व्यापक वस्तु में सम्पूर्ण एक-एक वस्तु प्रेरित रहना स्पष्ट हो चुका है।

It is already clear that each unit is inspired in the Omnipresent reality in, by and for coexistence.

5.39 व्यापक वस्तु पारगामी पारदर्शी होना परम प्रतिष्ठा है। व्यापक वस्तु में सम्पूर्ण जड़ चैतन्य रूपी एक-एक वस्तु संपृक्त प्रेरित होना रहना नित्य सहअस्तित्व सहज वैभव है।

The Omnipresent reality being permeating and transparent is the ultimate eminence. Each insentient and sentient unit being saturated and inspired in the Omnipresent reality is the eternal grandeur of coexistence.

5.40 प्रत्येक एक वस्तु व्यापक वस्तु में संपृक्तता वश नित्य निरपेक्ष उर्जा में सदा प्रेरित रहना स्वत्व है। व्यापक वस्तु पारगामी होने का प्रमाण संपूर्ण प्रकृति स्वयंस्फूर्त विधि से ऊर्जा संपन्नता क्रियाशीलता है, इसलिए सत्ता (व्यापक वस्तु) में संपूर्ण एक-एक वस्तु (जड़-चैतन्य) सम्पृक्त है जिसका दृष्टा जागृत मानव ही है।

Always remaining inspired in the absolute energy due to being saturated in the Omnipresent reality is the essence of all realities. Spontaneous energy endowment and activity in the whole nature is the evidence of Omnipresent reality being permeating.

5.41 अविनाशिता (नित्यता) सहअस्तित्व रूप में सदा वर्तमान ही है। सहअस्तित्व में ही विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति पद अथवा पदों के रूप में स्पष्ट है।

Non-annihilation (eternalness) is always present in the form of coexistence. Development progression, development, awakening progression and awakening are obvious in coexistence in the form of planes.

5.42 खनिज, वनस्पति व जीव संसार ऋतु संतुलन के अर्थ में प्राकृतिक नियम और इनकी परस्परता में पूरक, उपयोगिता नियम वर्तमान है इन तीनों स्वरूपों में विद्यमान सभी इकाइयाँ त्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी नियम सहज वर्तमान यही पूरकता विधि है।

Natural laws are for minerals, vegetation, animals and climatic balance, and the laws of complementariness and usefulness are in their mutuality. All entities belonging to these three orders are in harmony in themselves and participate in the overall system as per the natural laws, this indeed is the way of complementariness.

5.43 पूरक विधि से ही उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनीयता जागृत मानव परंपरा में, से, के लिए नित्य वैभव रुप में वर्तमान है।

It is only by way of complementariness that use, right-use and purpose is present in the form of eternal grandeur in, of and for the awakened human tradition.

5.44 हर मानव में, से, के लिए जागृति जीवन लक्ष्य सहज प्रमाण व्यवस्था है। मानवत्व अनुभव अनुभवमूलक विधिपूर्वक सफल हैं।

There is provision for evidence of awakening as the goal of *jeevan* in, by and for all humans. Humaneness is evidenced by the realisation rooted method.

5.45 व्यापक वस्तु पारदर्शी, पारगामी, साम्य ऊर्जा सहज सत्ता, स्थिति पूर्ण सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति स्थितिशील है यही भौतिक-रासायनिक और जीवन इकाईयों में बलसम्पन्न क्रियाशील, परिणामशील, विकास क्रमशील, विकास, जागृतिशील, जागृति व जागृतिपूर्ण अवस्था व पदों में नित्य वर्तमान होना सहज है।

The Omnipresent reality is transparent, permeating, Omnipotence as equilibrium energy, and relative-state nature saturated in the absolute-state Omnipotence. This is indeed naturally and eternally present in all physico-chemical and *jeevan* units as energy-endowment, activeness, and result, in development progression, development, awakening progression, awakening and awakening-full orders or planes.

5.46 भौतिक, रासायनिक व जीवन क्रिया पद भेद से अर्थ भेद होना प्रमाणित है।

It is proven that meaning is distinguished by the distinction of physical, chemical and *jeevan* activity.

5.47 क्रियाशीलता ही आचरण के रूप में स्पष्ट है।

Activeness itself is seen in the form of conduct.

5.48 श्रम, गति और परिणाम और परिणाम का अमरत्व, श्रम का विश्राम, गति का गन्तव्य के रूप में सम्पूर्ण क्रियायें स्पष्ट हैं।

All activities are clear in the form of effort, motion and result, and satisfaction of effort, destination of motion, and immortality of result.

5.49 सम्पूर्ण क्रियायें सहअस्तित्व में, से, के लिए ही है।

All activities are in, of and for coexistence.

5.50 अवस्था व पद भेद से आचरण भेद है। जो यथास्थिति सहज वर्तमान है।

Conduct is distinguished by the distinction of order and plane. It is present as per the actual reality.

5.51 अस्तित्व में प्राणपद, भ्रान्तिपद, देवपद और दिव्यपद प्रसिद्ध है।

Physico-chemical plane, delusion plane, godly plane and divine plane are famous.

5.52 प्राणपद में पदार्थावस्था से प्राणावस्था विकास व प्राणावस्था से पदार्थावस्था ह्रास क्रम में पूरकता-उपयोगिता विधि से वैभव है।

Grandeur of the physico-chemical plane is in complementarity and usefulness of development from material order to plant order and regression from plant order to material order.

5.53 विकास व ह्रास क्रम में प्राणपद चक्र विधि से वर्तमान है। यही भौतिक-रासायनिक क्रिया है।

Development and regression is in the form of a cycle in the physico-chemical plane. This is indeed the physico-chemical activity.

5.54 जीवावस्था में जीवन शरीर रचना के अनुसार वंशानुषंगीय विधि से कार्यरत रहता है।

In animal order, *jeevan* remains active as per the animal body in that specific species.

5.55 क्रिया-प्रक्रिया-आचरण से ही परस्परता विधि में, से, के लिए प्रत्येक का मूल्यांकन होता है।

Each one is evaluated in, by and for mutuality by way of activity, process and conduct.

12.6 जागृत मानव परंपरा

Awakened human tradition

6.1 मानव परंपरा में हर नर-नारी पीढ़ी दर पीढ़ी अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन होने के आधार पर, जानने-मानने के आधार पर अपने को परस्परता में पहचानता, निर्वाह करता है।

In human tradition, all males and females, in all generations, recognise themselves in mutuality and respond on the basis of knowing and believing, by way of expression, communication and manifestation.

6.2 दुर्घटनाओं के आधार पर आधारित सूचनायें सूची बनकर रह जाती है, न कि जीने के रूप में परंपरा।

Informations based on misfortunes remain as catalogues, and not a tradition to be followed in living.

6.3 मानव ही जागृति सहज शिक्षा-संस्कार पूर्वक मानवीय संस्कृति-सभ्यता, विधि-व्यवस्था का धारक-वाहक है। यही मानवीयता पूर्ण परंपरा है।

Humans indeed, by way of education-*sanskar* of awakening, are beholders of humane culture & civility and legislation & system. This itself is the tradition full of humaneness.

6.4 सहअस्तित्ववादी समझ ही जागृत परंपरा है।

Understanding of coexistence is indeed the awakened tradition.

6.5 जागृति सम्पन्न मानव परंपरा में निर्वाह सहज मूल प्रवृत्तियिाँ साक्ष्य है।

Basic tendencies of response are observed in the awakened human tradition.

6.6 प्रत्येक जागृत मानव (नर-नारी) समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी का धारक-वाहक है अथवा होना चाहता है। यही मानव परंपरा सहज अक्षुण्णता है।

All awakened humans, males and females, are (or want to be) beholders of understanding, honesty, responsibility & participation. This indeed is the intactness in human tradition.

6.7 समझदारी, ईमानदारी रूपी सहज सार्थकता ही जागृत मानव परंपरा है।

Meaningfulness in the form of understanding and honesty is indeed the awakened human tradition.

6.8 मानवत्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज स्वीकृति, अभिव्यक्ति की सम्प्रेषणा प्रकाशन प्रमाण है। यही जागृत मानव परंपरा है।

Acceptance, expression, communication and manifestation of humaneness in oneself and participation in the overall system is indeed the evidence. This itself is the awakened human tradition.

6.9 सर्व मानव जागृति पूर्वक स्वीकृति सहित किया गया कार्य-व्यवहार व्यवस्था सहज रुप में प्रमाणित होना ही सत्य स्वीकृत सम्पन्न मानव परंपरा है।

Evidencing of work and behaviour done by all humans with acceptance after awakening is indeed the human tradition amenable /agreeable to or accomplished with truth.

6.10 जागृत परंपरा सर्व मानव में अखण्ड समाज के अर्थ में सार्थक है।

Awakened tradition is meaningful to all humans for the undivided society.

6.11 सर्व मानव का सम्पूर्ण कार्य-व्यवहार, उत्पादन-विनिमय, स्वास्थ्य-संयम, न्याय-सुरक्षा, शिक्षा-संस्कार सहित अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में प्रमाण प्रस्तुत करना ही जागृत परंपरा है।

Producing evidence by all humans in the undivided society & universal system along with all the work-behaviour, production-exchange, health-*sanyam*, justice-security, education-*sanskar* is indeed the awakened tradition.

6.12 यथास्थितियों के आधार पर ही विकास व जागृति सहज वैभव मानव परंपरा में प्रमाणित होता है।

Grandeur of development and awakening is evidenced in human tradition only on the basis of actual states.

6.13 मानव परंपरा ही जागृति सहज वैभव का धारक-वाहक है क्योंकि मानव ज्ञानावस्था में नियति विहित इकाई है।

Only the human tradition is the beholder of the grandeur of awakening because humans are the naturally placed units in knowledge order

6.14 ज्ञानावस्था में हर नर-नारी सोच-विचार समझ के आधार पर अपनी पहचान बनाते हुए, जानते मानते हुए देखने को मिलता है।

All humans, males and females, on the basis of their thought process, are observed to be knowing and believing, and striving to make their mark (or, to be recognised).

6.15 हर नर-नारी स्व निर्णय के अनुसार आजीविका पूर्वक कार्य-व्यवहार करने लगता है तब से अपने को समझदार मानना होता है।

All humans, males and females, believe that they are wise when they start earning their livelihood as per their own decisions.

6.16 सर्व मानव सुखी होने के अर्थ में ही स्वतंत्र अन्यथा परतंत्र कार्य-व्यवहार करता है।

It is only for happiness that all humans undertake independent work & behaviour, otherwise their work & behaviour is not independent.

6.17 हर मानव में, से, के लिए भी आशा, विचार, इच्छायें स्वयं स्फूर्त होता हुआ स्पष्ट है।

It is obvious that hopes, thoughts and desires emerge naturally in, from and for all humans

6.18 हर जागृत मानव अनुभव मूलक प्रमाण बोध, संकल्प, साक्षात्कार, चित्रण, तुलन, विश्लेषण और सहअस्तित्व रूप सत्य सहज आस्वादन पूर्वक चयन क्रिया सम्पन्न होता है।

All awakened humans are accomplished with the activities of realisation based evidence, uprightness, discerning, visualisation, deliberation, analysis and selecting with tasting of truth as coexistence.

6.19 हर मानव जागृति पूर्वक मानव लक्ष्य, जीवन लक्ष्य सफलता में, से, के लिए शुभ कार्य-व्यवहार पूर्वक उपकार करता है।

All humans, after awakening, do benevolence by way of noble/ right work and behaviour for success in, by and for human goal and *jeevan* goal.

6.20 शुभ सर्व मानव में स्वीकृत है।

Well-being is acceptable to all humans (or, all humans are amenable to well-being).

6.21 शुभ सहज परंपरा ही समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व है।

Tradition of well-being itself is resolution, prosperity, fearlessness and coexistence.

6.22 सर्वशुभ कार्य, व्यवहार, व्यवस्था, आचरण, विचार, ज्ञान, विवेक, विज्ञान ही मानव कुल में, से, के लिए नित्य उत्सव है।

Work, behaviour, system, conduct, thought, knowledge, wisdom and science for universal well-being is indeed the eternal celebration in, by and for humankind.

6.23 जीवन लक्ष्य व मानव लक्ष्य सहज प्रमाण परंपरा ही सर्व शुभ है।

Tradition of the evidence of *jeevan* goal and human goal is indeed the universal well-being.

6.24 सर्वशुभ परंपरा में भागीदारी से ही सर्वशुभ सुलभ रहता है।

Participation in the tradition of universal well-being ensures universal well-being.

6.25 सर्व मानव को मानवीयता के आधार पर पहचानना ही अखण्ड समाज के रूप में सर्वशुभ के लिए प्रमाण है।

To recognise all humans on the basis of humaneness is indeed the evidence of universal well-being in the form of undivided society.

6.26 सर्व मानव मानवत्व सहित परिवार में प्रमाणित होना और वैभव सहज स्वराज्य मूलक परिवार व्यवस्था में भागीदारी करने के रूप में स्पष्ट होता है।

Grandeur of humaneness in all humans is evidenced in the family, and becomes obvious as participation in the self-governance based family system.

6.27 जागृत मानव परंपरा में हर नर-नारी स्वानुशासनपूर्वक अखण्ड सामाजिकता के अर्थ में अभिव्यक्त रहते हैं और मानवत्व सहित परिवार में व्यवस्था, परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रमाणित होता है।

In the awakened human tradition, all humans (males and females) express themselves, in a self-disciplined way, for undivided sociality; and they are evidenced as harmony in family and participation in the self-governance based family system.

6.28 जागृत परंपरा में हर नर-नारी स्वयं में समग्र अस्तित्व में, परस्पर मानव संबंधों में और मानवेत्तर प्रकृति के साथ व्यवस्था सूत्र के आधार पर विश्वास ही स्वयं में विश्वास है।

In the awakened tradition, self-confidence in all humans (males and females) emanates on the basis of confidence in universal laws in the whole existence, in human-human relationships and in relationships with the rest of nature.

6.29 जागृत परंपरा में हर नर-नारी नियम, नियंत्रण, संतुलनपूर्वक न्याय, धर्म, सत्याभिव्यक्ति सम्प्रेषणा प्रकाशन में सार्थक एवं समान है।

In the awakened tradition, all humans (males and females) are successful and equal in expression, communication and conduct by way of law, regulation and balance.

6.30 समस्त मानव जागृतिपूर्वक ही व्यवस्था में, से, के लिए प्रमाणित होता है।

All humans become evidence in, by and for the system only after awakening.

6.31 मानव परंपरा में संबंधों के आधार पर न्याय प्रमाणित होता है।

In human tradition, justice is evidenced only in relationships.

6.32 सर्वशुभ में ही स्वशुभ समाया है। यही अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन सहज ध्रुव बिन्दु है।

One’s own well-being is included in the universal well-being. This is indeed the main theme of Existence Based Human Centred Contemplation.

6.33 सर्व मानव में शुभ ही मानव परंपरा सहज वैभव है।

Well-being, in, of and for all humans is the grandeur of human tradition.

6.34 सर्वशुभ का स्रोत नित्य समीचीनता सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन सहज समझ, लक्ष्य, दिशा, निर्णय क्रियाकलाप ही चिंतन का स्वरूप है। यह साक्षात्कार है।

Holistic view of existence (as coexistence) is the eternal source of universal well-being. Understanding, goal, direction, decisions and actions aligned with this are a form of contemplation. This is discernment.

6.35 मानव परंपरा में ही जागृति सहज परंपरा वैभव है।

Grandeur of the tradition of awakening is available only in human tradition.

6.36 सर्व मानव में, से, के लिए जागृति सहज समझ, विचार, व्यवहार कार्य का अपनाना आवश्यक है।

It is important for in, by and for all humans to embrace understanding, thought, behaviour and action of awakening.

6.37 जागृत मानव परंपरा में अनुसंधान और शोधपूर्वक जागृति का वैभव परंपरा सहज रुप में सार्थक है।

The grandeur of awakening is meaningful in the form of tradition by way of exploration and investigation in the awakened human tradition.

6.38 दृष्टा पद व जागृति मानव परंपरा में ही प्रमाणित होता है।

The perceiver plane and awakening are evidenced only in human tradition.

6.39 हर नर-नारी अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में सर्वस्वीकृत विधि से सुख सुन्दर समाधान सहज वैभव सम्पन्न होना प्रमाणित है।

It is evidenced that all humans, males and females, in the undivided society and universal system are accomplished with the grandeur of happiness, pleasantness & resolution, by way of comprehensive acceptance.

6.40 जागृति व जागृति पूर्णता में, से, के लिए मानव परंपरा संतुलित और सुरक्षित है।

Human tradition is regulated and secure in, by and for awakening and awakening ful-ness.

6.41 जागृति पूर्वक मानवीयतापूर्ण परंपरा मानव कुल में ही जागृति सहज वैभव है। यह मानव चेतना, देव चेतना व दिव्य चेतना सहज वैभव है।

Humane tradition by way of awakening is the grandeur of awakening only in humankind. This is the grandeur of humane consciousness, godly consciousness and divine consciousness.

6.42 जागृत परंपरा निरंतरता के अर्थ में ही वैभव सम्पन्न है।

The awakened tradition is accomplished with grandeur only for continuity.

6.43 मानव परंपरा सहज घटना, पदार्थ, प्राण, जीवावस्था के समृद्ध होने के उपरान्त ही ज्ञानावस्था का उदय है।

Human tradition, or the emergence of knowledge order, occurred only after the maturation of material order, plant order and animal order.

6.44 सर्वशुभ के अर्थ में ही शुभ कामनायें विचार व्यवहारपूर्वक प्रमाण है।

Evidence of aspirations for good is in thoughts and behaviour. Aspirations for universal good are indeed the aspirations for good.

6.45 सर्व मानव ज्ञानावस्था सहज इकाई है।

All humans are units of the knowledge order.

6.46 मानव ही सम्पूर्ण अध्ययनपूर्वक ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्न होना ही मानवाधिकार स्वत्व स्वतंत्रता अधिकार पूर्वक सार्थक होना पाया है। कार्य-व्यवहार-व्यवस्था व व्यवस्था में भागीदारी सम्पन्न होना जागृत मानव परंपरा में वैभव है।

It is only the humans who, by way of study, become accomplished in knowledge, wisdom & science. This indeed is human rights which is found to be meaningful with the rights of humaneness and independence. Becoming accomplished in work, behaviour, system and participation in the system is the grandeur in awakened human tradition.

6.47 मानव परंपरा में सौंदर्य व्यक्तित्व प्रधान रुप में जागृति है।

In human tradition, awakening is the main characteristic of beauty and personality.

6.48 हर नर-नारी में, से, के लिए समान अधिकार समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी के रूप में है।

In, by and for all humans, males and females, equal rights are in the form of understanding, honesty (sincerity), responsibility and participation.

6.49 ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्मत काल, क्रिया, निर्णयवादी कार्य, विचार, मानसिकता सहित समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण ही सर्वशुभ और परंपरा है, अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन मानव में, से, के लिए जीता-जागता व्यवहार और व्यवस्था में भागीदारी के रूप में स्पष्ट होता है। (very similar to point 7.5)

Action, thought & mindset based on time, activity & decision and aligned with knowledge, wisdom & science, along with evidence of resolution, prosperity, fearlessness & coexistence is indeed the universal good and the tradition. Expression, communication and conduct (demeanour - conduct towards others) are obvious in, by and for humans as their behaviour and participation in the system in day to day living.

6.50 शुभकामनायें जागृतिपूर्वक मानव लक्ष्य व आचरण के रूप में प्रमाणित होता है।

Wishes for good are evidenced as (attainment of) human goal and conduct by way of awakening.

6.51 मानव परंपरा में ही समस्त प्रकार के प्रवर्तनों के मूल में सुखी होने की आकांक्षा समाया रहता है।

Aspiration for happiness is inherent at the root of all types of pursuits in human tradition.

6.52 शुभ की चाह मानव जाति में सहज प्रकाशन है। सर्वशुभ ज्ञान सहज योजना पर्यन्त शोध अनुसंधान होना स्वाभाविक है।

Aspiration for good is obvious in humankind. Till the time there are plans based on knowledge of universal good, investigations and explorations will be there.

6.53 अधिकार विधि नैतिकता सहज प्रभाव सहित कार्यक्रम ही व्यवस्था है।

Program along with influence of rights, statute and ethics is the system indeed.

6.54 हर शुभ प्रेरणा मानव में, से, के लिए कार्य स्वयं स्फूर्त प्रवृत रूप में स्पष्ट है।

It is obvious that all inspiration for good in, by and for humans tends to result naturally in action.

12.7 ज्ञान, समझदारी, अध्ययन, संज्ञानीयता

Knowledge, understanding, study, cognisance

**ज्ञान :** सहअस्तित्व रूपी दर्शन, जीवन, आचरण सहज संयुक्त ज्ञान प्रमाण

**Knowledge :** Knowledge and evidence of holistic view of coexistence, of *jeevan* and of humane conduct

**समझदारी :** ज्ञान, विवेक, विज्ञान सहित प्रमाण

**Understanding :** Evidence along with knowledge, wisdom and science.

**अध्ययन :** अधिष्ठान की साक्षी में अनुभव प्रमाण सम्पन्न होने के अर्थ में किया गया क्रियाकलाप

**Study :** Activities undertaken in the witness of *atma* for attaining the evidence of realisation.

**संज्ञानीयता :** ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्नता सहज प्रमाण

**Cognisance :** Evidence of accomplishment in knowledge, wisdom and science.

7.1 मानव परंपरा में विकास क्रम, विकास और जागृति क्रम, जागृति सहज समझ ज्ञान सार्थक होता है।

Understanding and knowledge of development progression, development and awakening progression, awakening becomes meaningful in human tradition.

7.2 मानवीयतापूर्ण आचरण सहज समझ ज्ञान है।

Knowledge is the understanding of humane conduct.

7.3 सहअस्तित्व में, से, के लिए जानना, मानना ही ज्ञान और पहचानना, निर्वाह करना प्रमाण उसका सर्व सुलभ होना ही सर्वशुभ ज्ञान है।

Knowing, believing in, by and for coexistence is knowledge; recognising, fulfilling is evidence; and this being within reach of everyone is indeed the knowledge of and for universal good.

7.4 मानव में जानना, मानना ही पहचान व निर्वाह करने का आधार है।

In humans, knowing, believing is indeed the basis of recognising and fulfilling.

7.5 ज्ञान-विवेक-विज्ञान समस्त निर्णयवादी कार्य-विचार, मानसिकता सहित अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन मानव में, से, के लिए जीता जागता जागृति सहज व्यवहार और व्यवस्था में भागीदारी के रूप में स्पष्ट होता है। (very similar to point 6.49)

Action, thought & mindset based on time, activity & decision and aligned with knowledge, wisdom & science, along with expression, communication and conduct (demeanour - conduct towards others) are obvious in, by and for humans as their behaviour and participation in the system in day to day living.

7.6 अभिव्यक्ति संप्रेषणाापूर्वक समझदारी, ईमानदारी, भागीदारी स्पष्ट होता है और सम्प्रेषणा प्रकाशनपूर्वक ही हर मानव मानवत्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज रुप में प्रमाणित है।

Understanding, honesty and participation become clear by way of expression and communication. It is indeed by way of communication and expression that all humans are evidenced as harmony in themselves and as participation in the overall system.

7.7 सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य सहअस्तित्व है। अस्तु, सहअस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान और मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान ही सम्पूर्ण ज्ञान है। ज्ञान के आधार पर अथवा ज्ञान सम्मत विधि से मानव लक्ष्य को पहचानना विवेक है। मानव लक्ष्य स्वयं में समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण है जिसके लिए दिशा निर्धारित कर लेना विज्ञान है।

Insentient and sentient nature saturated in Omnipotence, is coexistence. Knowledge of the holistic view of coexistence, knowledge of *jeevan*, and knowledge of humane conduct is indeed the complete knowledge. Recognising the human goal on the basis of knowledge, is wisdom. Human goal in itself is the evidence of resolution, prosperity, fearlessness and coexistence, and determining the direction towards that, is science.

7.8 समझदारी ही मानव में, से, के लिए अविभाज्य अक्षुण्ण ऐश्वर्य है।

Understanding is the integral, perpetual grandeur in, by and for humans.

7.9 समझदारी का वैभव सुख, समाधान, समृद्धि, परस्परता में विश्वास और नित्य उत्सव होता ही रहता है। इसके लिए समझदारी बौद्धिक प्रयोग, विवेकपूर्वक तथा समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाणित होने की विधि से सर्व मानव सुखी होते हैं। इसका प्रयोग न्याय व समाधानपूर्वक सार्थक सुखी होना पाया जाता है। धन का प्रयोग उदारतापूर्वक करने से सार्थक सुखी होते हैं। बल का प्रयोग दया पूर्वक जीने देने व जीने के रूप में सार्थक होता है। रूप के साथ सच्चरित्रता, यथा - स्वधन, स्वनारी, स्वपुरूष, दयापूर्वक किया गया कार्य-व्यवहार विचार से ही सार्थक सुखी होना होता है। यह सर्वशुभ होने की विधि है जो लोकशिक्षा और शिक्षा-संस्कार पूर्वक सार्थक होता है।

Continuity of happiness, resolution, prosperity, trust in mutuality and eternal celebration is the grandeur of understanding. Use of reason and wisdom are essential for understanding. All humans become happy by evidence of resolution, prosperity, fearlessness and coexistence. Its use is found to be in justice, and meaningfulness & happiness by way of resolution. Humans become happy and meaningful by way of wealth when it is used with generosity. Strength is meaningful when used in letting others live (with kindness), and living. Humans become happy and meaningful by way of form and appearance only with character. Character is righteous acquisition of wealth, righteous man-woman relationship, and work & behaviour done with kindness. This is the way to universal good, and it is actualised by public education and education-*sanskar*.

7.10 परस्परता में पूरकता व उपयोगिता पूरकता विधि विदित होना ही यथास्थिति ज्ञान है।

Knowing the way of complementariness in mutuality and usefulness, complementariness, is the knowledge of the existing state (status quo).

7.11 यथास्थिति ज्ञान में ही ‘त्व’ सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी स्पष्ट होती है।

It is only in the knowledge of the current state (status quo) that harmony in oneself, and participation in the overall system, becomes clear.

7.12 जीवन ज्ञान, सहअस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान का संयुक्त रूप में सम्पूर्ण अध्ययन, बोध और अनुभव होना जागृति है।

Awakening is the complete study, enlightenment and realisation of the collective of knowledge of *jeevan*, knowledge of holistic view of coexistence and knowledge of humane conduct.

7.13 जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में मानव का अध्ययन है।

Study of humans is as collective of *jeevan* and body.

7.14 मानवत्व ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्मत होना, विज्ञान विवेक के आधार पर व्यवहार बोधगम्य होना, फलस्वरूप योजनाओं के आधार पर कार्य-योजना सम्पन्न होना जिसका फल, परिणाम मूल ज्ञान के अनुरूप होना सर्वतोमुखी समाधान है।

Comprehensive resolution is - humaneness aligned with knowledge, wisdom & science, complete conception of behaviour based on science & wisdom, resulting in plans leading to action-plans whose outcome is in accordance with the original knowledge.

7.15 सहअस्तित्व परम सत्य होना ही ज्ञेय है।

Coexistence is the ultimate truth, is the object of knowledge (to be known).

7.16 जीवन ज्ञान ही ‘स्व’ स्वरूप ज्ञान है।

Knowledge of *jeevan* is the knowledge of self.

7.17 जीवन ज्ञान स्वयं में विश्वास का आधार है।

Knowledge of *jeevan* is the basis of self-confidence.

7.18 ज्ञाता पद में मानव में, से, के लिए जीवन ज्ञान, सहअस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान ही सम्पूर्ण ज्ञान प्रमाण परंपरा है।

In, by and for the humans in perceiver plane, knowledge of *jeevan*, knowledge of holistic view of coexistence, and knowledge of humane conduct is indeed the tradition of evidence of complete knowledge

7.19 ज्ञान सम्पन्नता सहज प्रमाण ही जागृति पूर्ण दृष्टि, दृष्टा पद सहज अभिव्यक्ति व प्रमाण और परंपरा में, से, के लिए त्राण व प्राण है।

Evidence of accomplishment of knowledge is the perspective full of awakening, expression and evidence of perceiver plane, and zeal and life in, by and for tradition.

7.20 समझदारी जीवन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान, सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान है।

Understanding is the collective of knowledge of *jeevan*, knowledge of humane conduct and knowledge of holistic view of existence as coexistence.

7.21 समझदारी के अनुसार विवेक-विज्ञान से सम्पन्नता जागृत मानव सहज निर्णय व विचारों के रूप में है।

Being accomplished in wisdom & science in accordance with understanding is in the form of decisions and thoughts of awakened humans.

7.22 जिम्मेदारियाँ संबंधों के आधार पर है।

Responsibilities are on the basis of relationships.

7.23 भागीदारी अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में, से, के लिए है।

Participation is in, by and for undivided society, universal orderliness.

7.24 मानव में, से, के लिए सहअस्तित्व ज्ञान-विवेक-विज्ञान पूर्वक ही नित्य व नैसर्गिक और मानव के साथ विधिवत जीना सहज है।

It is only with knowledge, wisdom & science of coexistence that humans are able to live perpetually with the rest of nature, and with other humans.

7.25 मानव परंपरा में शुभ कामना सहज है।

Aspiration for good is naturally there in human tradition.

7.26 अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिंतन बनाम “मध्यस्थ दर्शन” सहअस्तित्ववाद मानव जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान सम्पन्न होने की सूत्र व व्याख्या है। यह अध्ययन पूर्वक बोध अनुभव सम्पन्न होना समीचीन है।

Existence Based Human Centred Contemplation, or Madhyasth Darshan Co-existentialism is the definition and description of humans becoming accomplished (adept) in knowledge of *jeevan*, knowledge of holistic view of existence and knowledge of humane conduct. Its enlightenment and realisation by way of study is imminent.

7.27 सहअस्तित्ववादी दृष्टि में, से, के लिए सम्पूर्ण अध्ययन है।

All the study is in, from and for the perspective of coexistence.

7.28 अस्तित्व क्यों? कैसा है? का उत्तर तर्कसंगत विधि से व्यवहार प्रमाण रूप में है। कितना है? का उत्तर आवश्यकता से अधिक है।

Rational answer to the ‘why and how’ of existence is in the form of evidence in behaviour. Answer to ‘how much’ is - it is more than sufficient / adequate / enough.

7.29 अस्तित्व कैसा है? सहअस्तित्व रूप में है।

Existence is in the form of coexistence, is the answer to ‘how’.

7.30 क्यों है? का उत्तर विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति के रूप में, से, के लिए नित्य वर्तमान होने-रहने के लिए है।

To be and remain eternally present in, as and for the form of development progression, development, awakening progression and awakening, is the answer to ‘why’.

7.31 सहअस्तित्व में जागृत मानव सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन होना ही जागृति सहज मानवीयता नित्य समीचीन है। इसका नित्य संभावना स्पष्ट है।

Production, in coexistence, of more than sufficient for awakened humans is indeed the humaneness arising out of awakening, and it is imminent. Its perpetual possibility is obvious.

7.32 अस्तित्व कैसा है? यह चार अवस्था और चार पदों में स्पष्ट है। यही क्यों कैसे का उत्तर है।

Existence, obvious in four orders and four realms, provides answer to the ‘how’ part. This also answers the ‘why’ part.

7.33 हर मानव ‘है’ का अध्ययन करता है। ‘होना’ ही ‘है’ के रूप में वर्तमान है।

All humans study what ‘is’. ‘Being’ indeed is present as ‘is’.

7.34 ‘होना’ और ‘है’ निरंतरता के अर्थ में रहना स्पष्ट है निरंतरता सूत्र अर्थात् व्यापक वस्तु में सम्पृक्त प्रकृति सम्पूर्ण एक-एक अथवा चारों अवस्था, चारों पद सम्पृक्त हैं। यही सम्पूर्ण अस्तित्व है।

It is obvious that ‘being’ and ‘is’ pertain to continuity. All units of nature in four orders and four realms are saturated in the Omnipresent reality, this is indeed the crux of continuity. This is indeed the complete existence.

7.35 भौतिक, रासायनिक और जीवन क्रिया का अध्ययन इनके मूल में परमाणु ही स्वयं स्फूर्त विधि से क्रियाशील होने रहने का अध्ययन है। स्वयंस्फूर्तता साम्य ऊर्जा सम्पन्नता में है।

Study is of physical, chemical and *jeevan* activities, and at its root, of the atom remaining spontaneously active. Spontaneity is in being endowed in equilibrium energy.

7.36 जागृत मानव ज्ञानावस्था व देव पद में होने के आधार पर, जीवन और शरीर का संयुक्त रूप में अध्ययन और जागृति पूर्ण विधि से जीने का अध्ययन है।

Awakened humans are in the knowledge order, and in godly realm. Study is in the combined form of *jeevan* and body. Study of living is only by way of awakening completeness.

7.37 जागृति अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में जीने का अध्ययन साथ में जीवन लक्ष्य, मानव लक्ष्य, नियति लक्ष्य सार्थक सूत्र-व्याख्या ज्ञानपूर्वक सफल होने के लिए अध्ययन सुलभ है।

Study of living in undivided society and universal systems, and of awakening, is available. Along with this, knowledge-based study and definition-description of achieving *jeevan* goal, human goal and the destiny goal, as well as for succeeding in achieving all these, is also available.

7.38 सर्वशुभ ज्ञान, ज्ञान-विवेक-विज्ञान पूर्ण कार्य व्यवहार व्यवस्था, फल परिणाम के फलन में अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सहज वर्तमान ही अभ्युदय सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व है।

Knowledge of well-being of all, work and behaviour full of knowledge, wisdom, science, and system resulting in the ever-present state of undivided society, universal system, this indeed is enlightenment, comprehensive resolution, prosperity, fearlessness and coexistence.

7.39 प्राणपद, भ्रातंपद, देवपद, दिव्यपद में सम्पूर्ण जड़-चैतन्य प्रकृति विद्यमान है। मानव परंपरा में देवपद, दिव्यपद परंपरा ही जागृति सहज प्रमाण हैं।

All insentient-sentient nature is present in the physico-chemical realm, deluded realm, godly realm and divine realm. Tradition of godly realm and divine realm is indeed the evidence of awakening in human tradition.

7.40 मानव में, से, के लिए अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन ही समझदारी सहज सम्मान व प्रमाण है।

Existence Based Human Centred Contemplation is indeed the magnificence and evidence of understanding in, by and for humans.

7.41 अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति समझ में परिपूर्णता है। समझदारी में परिपूर्णता का तात्पर्य मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र में भागीदारी प्रमाणित होने से है।

Existence Based Human Centred Contemplation is the completeness in understanding of development progression, development, awakening progression & awakening in existence (in the form of coexistence).

7.42 मानव में, से, के लिए सहअस्तित्व सहज, सम्पूर्ण समझ ही परिपूर्णता है।

Understanding of coexistence is the complete understanding in, of and for humans.

7.43 मानव कल्पनाशीलता कर्म स्वतंत्रता सहज बहुआयामों में प्रवर्तनशील है। इसलिए सहअस्तित्व सहज प्रमाण सम्पन्न होना भावी है।

Imagination and free-will of humans is naturally versatile in multiple dimensions. Accomplishment of the evidence of coexistence is therefore a certainty.

7.44 सहअस्तित्व में प्रत्येक इकाई अपनी स्वभाव गति सहज प्रमाण में ही ‘त्व’ सहित व्यवस्था के रूप में होना अध्ययनगम्य है।

It is studiable and verifiable that each unit in coexistence is evidence of orderliness with its -ness only when it is in its natural state and motion.

7.45 सहअस्तित्व सहज विधि सूत्र नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य ही है। जिसे चारों अवस्था व पदों में देखा जा सकता है।

Law, regulation, balance, justice, *dharma* and truth - these are the keys to the existential method. It can be verified in all the four orders and four realms.

7.46 ज्ञान अवस्था में होने के कारण हर मानव का सहअस्तित्व में ज्ञान सम्पन्न होना सहज है। समझदारी ही ज्ञान सम्पन्नता है।

By virtue of their belonging to the knowledge order, it is natural for all humans to be accomplished in the knowledge of coexistence. Understanding is indeed the accomplishment in knowledge

7.47 समझदारीपूर्वक ही मानवीयता प्रमाणित होता है। यह परस्परता में स्पष्ट होता है।

Humaneness is evidenced only by way of understanding. It is seen in mutuality.

7.48 संवदेनायें शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्धेन्द्रिय क्रिया के रूप में स्पष्ट है। संज्ञानीयतापूर्वक संवेदनाएं नियंत्रित रहती हैं। संज्ञानीयता के अभाव में संवेदनाएं अनियंत्रित रहती है। संज्ञानीयता मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना सहज वैभव है।

Sensations are obvious in the form of sound, touch, form, taste and smell. Sensations remain self-regulated only by way of understanding. Sensations remain unregulated in the absence of understanding. Understanding is the grandeur of humane consciousness, godly consciousness and divine consciousness.

7.49 संज्ञानीयतापूर्वक अथवा जागृतिपूर्वक मानवीयता सहज कार्य-व्यवहार, व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रमाणित होती है।

Humaneness in work and behaviour is evidenced in the form of participation in systems only after cognisance or awakening.

7.50 समझदारी में, से, के लिए अध्ययन कार्यकलाप का सफल होना ही अभ्युदय है।

Enlightenment is the successful completion of study in, by and for understanding.

7.51 समझदारी के अनन्तर प्रमाणित होना ही श्रेय है। श्रेय सर्वशुभ अभ्युदय सहज परंपरा है।

To become evidence after understanding, is excellence indeed. Tradition of universal well-being and enlightenment, is excellence.

7.52 प्रेय का तात्पर्य चार विषयों के वश में किया गया विचार-कार्य-व्यवहार से है।

Thought, work and behaviour undertaken under the influence of the four instincts is indulgence.

7.53 जागृत मानव पद में हर नर-नारी संवेदनाओं का नियंत्रण एवं समाधान सम्पन्नता सहित ऐषणा नियम त्रय प्रवृत्ति सहित व्यवस्था में प्रमाणित होते रहता है।

All humans, males and females, in the awakened status become and remain evidence in systems - with regulation of sensations, resolution accomplishment and tendency towards the law of desire-trio.

7.54 मानव ही अस्तित्व में ज्ञानावस्था के पद में प्रतिष्ठा है। इसलिए समझदार होना आवश्यक है।

In existence, only humans are established in the knowledge order. Therefore, to be knowledgeable is a must.

7.55 ज्ञानावस्था मौलिक रूप में सार्थक, स्थिर, निश्चित वैभव है।

Knowledge order in its true form is meaningful, stable, and well-defined grandeur.

7.56 जागृत मानव ही ज्ञाता पद में है इसलिए ज्ञेय और ज्ञान का धारक-वाहक होना पाया जाता है।

Only the awakened humans are in the knower plane, they are therefore the beholders of knowledge as well as the object of knowledge.

7.57 समाधान ही सुख है। समझदारी पूर्वक समृद्ध सम्पन्न मानसिकता सहित किया गया श्रम नियोजन से समृद्धि सुलभ होता है।

Resolution itself is happiness. Deployment of hard work with the mindset replete with understanding leads to achievement of prosperity.

7.58 समझदारी सहअस्तित्व सहज विधि से सर्व सुलभ रहता है।

Understanding is always available to everyone by way of coexistence.

7.59 तर्कसंगत पद्धति का तात्पर्य प्रयोजनपूर्वक किया गया प्रक्रिया कार्य-व्यवहार में प्रमाणित होने योग्य प्रणाली सहित प्रेरणाकारी प्रयोजनशील क्रिया है।

Logical path denotes the inspirational, purposeful actions which are capable of being evidenced in work and behaviour.

12.8 जीवन, दृष्टापद

*Jeevan*, the perceiver-plane

**जीवन :** गठनपूर्ण परमाणु, परिणाम का अमरत्व सहित नित्य विद्यमान होना, रहना यही चैतन्य इकाई जीवन है।

**Jeevan** : Constitutionally-complete atom, and its ever-presence due to immortality of result, this sentient entity is *jeevan*.

**दृष्टा पद :** मानव में शून्याकर्षण ही नियन्त्रित संवदेना सम्पन्न प्रभाव समेत सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण बोध संकल्प सहित, बोध संकल्प चिंतन चित्रण सहित, चिंतन चित्रण क्रम सहित तुलन विश्लेषण पूर्वक आस्वादन चयन क्रियाकलाप सहित दृष्टा पद में होना रहना है। यही समझदारी सम्पन्नता है। इसके लिए स्त्रोत चेतना विकास मूल्य शिक्षा-संस्कार है।

**The perceiver-plane** : Zero attraction in humans is being in the perceiver-plane while accomplished in and in the effect of regulated sensations along with realisation in coexistence and cognisance determination, cognisance determination along with contemplation visualisation, contemplation visualisation along with tasting selection by way of deliberation analysis in an orderly manner. This is indeed the accomplishment of understanding. Consciousness development value education is its source.

8.1 जागृत जीवन ही ज्ञाता पद में वैभव है। ज्ञान सम्पन्न होना ही जागृति और मानव कुल में ज्ञाता पद सहज प्रमाण है।

Awakened *jeevan* indeed is the grandeur of perceiver-plane. Becoming knowledgeable is the evidence of awakening and the perceiver-plane in humankind.

8.2 सहअस्तित्व में गठनपूर्णतावश जीवन रूपी परमाणु अमर, अपरिणामी, चैतन्य इकाई, नित्य होने का अध्ययन होता है।

It is by way of constitutional-completeness in coexistence that *jeevan*-atom becomes studiable as immortal, unchanging, conscious unit, and eternal.

8.3 जीवन में जागृति व जागृति पूर्णता है और जीवन नित्य है, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता सहित आहार-व्यवहार पूर्वक स्वस्थ शरीर का भी मूल्यांकन होता है।

Awakening and awakening completeness is in *jeevan*, and *jeevan* is eternal. A healthy body is evaluated by food and behaviour along with activity-completeness and conduct-completeness.

8.4 जीवन में ही स्वयं का, जीव जगत व जीवन महिमा का पहचान विचार निश्चयन दृढ़ता प्रमाण, सहअस्तित्व में अनुभव सहज प्रमाण, अनुभव का बोध सहज संकल्प, न्याय-धर्म-समाधान-सत्य सहज स्वीकृति विश्लेषण, मूल्यों का आस्वादन सहित संबंधों का चयनपूर्वक कार्य-व्यवहार में, से, के लिए अध्ययन व्यवहार अनुभव है।

Study, behaviour and realisation of itself (of *jeevan*) and of the living world - and evidence of recognition, thoughts, certainty & perseverance; evidence of realisation in coexistence; determination of the cognisance of realisation; acceptance & analysis of justice, *dharma*, resolution & truth; and selection pertaining to tasting of values in relationships in work and behaviour - happens only in *jeevan*.

8.5 जीवन ज्ञान में मन, वृत्त, चित्त, बुद्धि, आत्मा में निश्चित क्रियाकलापों का अध्ययनपूर्वक बोध, अनुभव, अनुभवपूर्वक बोध है। अनुभव प्रमाण ही परम है।

Knowledge of *jeevan* comprises the understanding of definite activities of *mun, vritti, chitt, buddhi, atma* by way of study, as well as realisation of the same after realisation. Evidence of realisation is ultimate.

8.6 मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि, आत्मा में परावर्तन प्रत्यावर्तन द्वारा मानव में प्रमाण बोध होता है। अध्ययन पूर्वक अनुभव बोध, अनुभव प्रमाण बोध होता है।

Evidence confirmation is achieved in humans through introspection and manifestation in *mun, vritti, chitt, buddhi, atma*. Understanding of realisation and evidence of understanding of realisation happens by way of study.

8.7 जीवन में अनुभव प्रमाण का परावर्तन बोध सहित होना प्रमाणों का नित्य स्रोत है।

Occurrence of manifestation of evidence of realisation, along with cognisance, is the eternal source of evidences.

8.8 जीवन जागृति अनुभव सहज प्रयोजन होने का बोध व प्रमाण समाधान है।

Resolution is the cognisance and evidence of awakening in *jeevan* as the purpose of realisation.

8.9 मानव में जीवंतता का तात्पर्य शरीर व जीवन संयुक्त रहने तक है।

Aliveness in humans is till the time body and *jeevan* are together.

8.10 सभी अंग अवयव सहित शरीर को जीवन ही जीवंतता प्रदान कर स्वस्थ सुरक्षित बनाये रखता है। फलस्वरूप जीवन अपनी जागृति को प्रमाणित करता है। यही जीवंतता का तात्पर्य है।

It is jeevan which provides aliveness to the body (along with all body parts), as well as keeps them healthy and safe. As a result, *jeevan* authenticates its awakening. This is the meaning of aliveness.

8.11 मन में आशा, वृत्ति में विश्लेषण, चित्त में चित्रण के योगफल में मनाकार साकार होता है। यह सभी समुदाय परंपरा में स्पष्ट है। ऐसे समुदायों में मन:स्वस्थता सहज आवश्यकता बना ही रहता है।

Materialisation of ideas happens as the aggregate of hope in *mun*, analysis in *vritti* and visualisation in *chitta*. It is obvious in all sectarian traditions. In all such sects, there is a perpetual need for mental well-being.

8.12 सीमायें अवस्था व पदों के आधार पर अखण्डता का बोध, भ्रमवश एक-एक समुदाय समूह के रूप में वर्तमान है। जीवन नित्य है इसलिए जीवन में आशा व सुख धर्म प्रमाणित होना निश्चित है।

Boundaries, orders and realms are the basis for cognisance of undividedness. Under delusion, various sects are present in the form of groups. *Jeevan* is eternal, therefore evidence of *dharma* (hope and happiness) in *jeevan* is a certainty.

8.13 अस्तित्व धर्म शाश्वत् पदार्थावस्था में द्रष्टव्य है। पुष्टि धर्म देशकालीय प्राणावस्था में स्पष्ट है। आशा धर्म जीवावस्था में स्पष्ट है। मानव में सुख धर्म प्रतिष्ठा स्पष्ट है। यही जागृति है। समाधान = सुख; समस्या = दु:ख।

The ‘existence’ *dharma* is perpetually visible in the material order. The ‘growth’ *dharma* is visible in the plant order at all places and times. The ‘hope’ dharma is visible in the animal order. ‘Happiness’ *dharma* is visible in humans. This indeed is awakening. Resolution = happiness; problem = misery.

8.14 जागृति जीवन में, से, के लिए सहज प्रतिष्ठा है। शरीर रचनानुसार वंश रूप में स्पष्ट है। मानव धर्म सुख है क्योंकि जीवन नित्य है। मानव धर्म जागृतिपूर्वक प्रमाण व अक्षुण्ण है। जीवन सहअस्तित्व में अनुभवपूर्वक प्रमाण है। मानव तथा जीवों की शरीर रचना के मूल में रसायन द्रव्य प्राण कोषा के रूप में है। यह रसायन भौतिकता का वैभव है।

Awakening is the natural achievement in, by and for *jeevan*. Composition of the human body is obvious as per its race. However, human *‘dharma*’ is happiness because *jeevan* is eternal. Evidence of human *‘dharma*’ is by way of awakening, and it is unchanging. *Jeevan* is evidenced in coexistence by way of realisation. Chemical matter, in the form of cells, is at the root of human and animal bodies. These chemicals are the grandeur of the material order.

8.15 जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह कर पाना जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में, से, के लिए होता है न कि केवल शरीर या जीवन में, से, के लिए। इसलिए संयुक्त रूप से मानसिकता को परस्परता में पहचानने का आधार है।

Ability to know, believe, recognise and fulfil is in, by and for the combined form of body and *jeevan*, and not in, by and for body only or *jeevan* only. Therefore, it is essential to recognise the mindset mutually in the combined form.

8.16 हर मानव समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में, से, के लिए प्रमाणित रहना ही सर्वशुभ है।

All humans being evidence in, of and for resolution, prosperity, fearlessness and coexistence is indeed the universal well-being.

8.17 जागृति सहज परंपरा ही सम्पूर्ण मानव सहज वर्चस्व है।

Tradition of awakening indeed is the glory of humankind.

8.18 जीवन में सम्पूर्णता अनुभव मूलक अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा प्रकाशन ही जागृति है।

Realisation based expression, communication and manifestation is the completeness in *jeevan*. This indeed is awakening.

8.19 जीवन वर्चस्व जागृति है।

Awakening is the glory of *jeevan*.

8.20 जीवन सार्थकता जागृति है।

Awakening is the meaningfulness of *jeevan*.

8.21 जीवन प्रमाण जागृति है।

Awakening is the evidence of *jeevan*.

8.22 जीवन सहज ऐश्वर्य वैभव के रूप में जागृति है।

Awakening is the splendour of *jeevan* in the form of its grandeur.

8.23 जीवन ही मानव परंपरा में जागृति क्रम में अथवा जागृतिपूर्वक होना पाया जाता है।

It is only the *jeevan* in human tradition which is found to be in awakening progression or awakened.

8.24 मानव परंपरा में भी जीना जीवंतता पूर्वक पीढ़ी से पीढ़ी निरंतर क्रिया-प्रक्रिया है।

In human tradition too, living is a generation to generation, continuous activity by way of aliveness.

8.25 स्व निरीक्षण परीक्षणपूर्वक ही समझ, जागृति और स्वयं में विश्वास होना पाया जाता है।

Understanding, awakening and self-confidence are achieved only by self-examination.

8.26 हर नर-नारी में समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी सहज प्रमाण प्रस्तुत करने का समान अधिकार है जो सार्वभौम है। यह अधिकार कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित भेदों से प्रमाणित होता है। यही विधि सूत्र है।

All humans, males and females, have a universal equal right to present evidence of understanding, honesty and responsibility. This right is evidenced with the distinction of physical, verbal, mental, doing, delegating and endorsing. This is the code of nature.

8.27 जीवन ज्ञान पूर्वक स्व-स्वरूप में विश्वास दृढ़ता ही दृष्टा पद प्रतिष्ठा है।

Perseverance and confidence in oneself is the accomplishment of perceiver-plane which is achieved by way of knowledge of *jeevan*.

8.28 दृष्टा पद प्रतिष्ठापूर्वक सहअस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीय आचरण में, से, के लिए दृढ़ता, प्रक्रिया, प्रयोजन मूल्यांकन होता है।

Evaluation of perseverance, process and purpose in, of and for holistic view of coexistence and humane conduct occurs after establishment in the perceiver-plane.

8.29 दृष्टा पद जागृति ही समझदारी का प्रमाण है।

Perceiver-plane and awakening is the evidence of understanding.

8.30 समझदारी, ईमानदारी का संयुक्त प्रमाण ही ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहज प्रमाण है।

Knowledge, wisdom and science is the overall evidence of understanding and honesty.

8.31 दृष्टा पद सहित जागृति में ही मानवत्व सहज प्रमाण है।

Evidence of humaneness is only in perceiver-plane and awakening.

8.32 समझदारी पूर्ण प्रमाण सम्पन्नता ही दृष्टा पद है। यह परंपरा सहज देन है।

Accomplished with evidence of understanding is indeed the perceiver-plane. It is a gift of, from and for tradition.

8.33 दृष्टा पद में ही जागृतिपूर्वक, सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाणित होता है। यही प्रखरता है।

Comprehensive resolution, prosperity, fearlessness and coexistence is evidenced only in the perceiver-plane by way of awakening. This itself is ingenuity / resourcefulness / dexterity.

8.34 दृष्टा पद में स्वयं स्फूर्त विधिवत प्रवृत्तियाँ सर्वशुभ कार्य-व्यवहार में प्रमाणित होती है।

Spontaneous tendencies are evidenced in the perceiver-plane in work and behaviour for universal well-being.

8.35 उत्पादन-कार्य संबंधों में निर्वाह विधि से किया गया कार्य-व्यवहार व व्यवस्था में भागीदारी में दृष्टा पद का प्रमाण व्यवस्था सहज रूप में स्पष्ट होता है।

Evidence of the perceiver plane comprehensively becomes clear in the work and behaviour done in production-work relationships by way of fulfilment, and in participation in the system.

8.36 दृष्टा पद प्रतिष्ठा में मानवीयता पूर्ण पहचान ही आधार व प्रमाण है।

Identity full of humaneness is the basis and evidence of establishment in the perceiver plane.

8.37 दृष्टा पद प्रतिष्ठा ही जागृति सहज प्रमाण है।

Establishment in the perceiver plane is the evidence of awakening.

8.38 दृष्टा पद सहज जागृति में ही ज्ञान, विवेक और विज्ञान का स्पष्ट प्रयोजन प्रमाणित होता है।

Clear purpose of knowledge, wisdom and science is evidenced only in the state of awakening in the perceiver plane.

8.39 दृष्टा पद में जागृत मानव ज्ञातत्व, वक्तृत्व व कृत्तत्व सम्पन्न है।

Awakened humans in the perceiver plane are accomplished with knowledge, teaching and gratitude.

8.40 दृष्टत्व-ज्ञातत्व सहज विधि से स्वत्व वक्तृत्व अविभाज्य है।

Self-ness and teaching is inseparable from seeing and knowledge.

12.9 अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था

Undivided society, universal system

**अखण्ड समाज :** मानव जाति, धर्म समझ, लक्ष्य समान होने के आधार पर।

**Undivided society** : is on the basis of human race, understanding of religion, and goal being the same.

**सार्वभौम व्यवस्था :** चारों अवस्थाएं व पदों के साथ मानव समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में ‘जीने देना, जीना’ प्रबुद्धता, संप्रभुता व प्रभुसत्ता सहज प्रमाण है।

**Universal system** : is the evidence of enlightenment, autonomy and sovereignty of humans living with resolution, prosperity, fearlessness & coexistence with the four orders and four realms following the principle of ‘let live and live’.

9.1 सहअस्तित्व सहज विधि से सर्वतोमुखी समाधान सहज सर्वशुभ ज्ञान, विचार, कार्य, व्यवहार, आचरण ही अखण्डता और सार्वभौमिकता सहज प्रमाण है।

Knowledge, thoughts, behaviour & conduct for universal well-being, aligned with comprehensive resolution, by co-existential method, is indeed the evidence of undividedness and universality.

9.2 जागृत मानव परंपरा में सार्थकता सहज प्रमाण अथवा मानवत्व सहज साक्ष्य रुपी अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था और उसकी निरंतरता ही अक्षुण्णता है।

In awakened human tradition, evidence of meaningfulness, or evidence of humaneness in the form of undivided society and universal system, and continuity thereof, indeed is conservation.

9.3 जागृत मानव परंपरा सहज सार्थकता के साक्ष्य में प्रबुद्धता, संप्रभुता, प्रभुसत्ता स्पष्ट होना आवश्यक है। यही सार्वभौमता, अखण्डता व अक्षुण्णता सहज सूत्र व्याख्या है।

Clarity of enlightenment, autonomy and sovereignty is essential for the meaningfulness of awakened human tradition. This indeed is the maxim and elaboration of universality, undividedness and conservation.

9.4 प्रबुद्धतापूर्ण सत्ता रूप में अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था ही है। प्रबुद्धता ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नतापूर्ण प्रमाण परंपरा है।

Enlightenment in Omnipotence itself is in the form of the undivided society, universal system. Enlightenment is the tradition of evidence full of knowledge, wisdom and science.

9.5 सम्पूर्ण मानव अर्थात् प्रत्येक नर-नारी अपने में एक समझदार इकाई रूप में पहचानना आवश्यक है यह अखण्ड समाज सूत्र है।

It is essential to recognise that all humans, males and females, are wise in themselves. This is the link to undivided society.

9.6 अखण्ड समाज का तात्पर्य सर्व मानव को एक जाति, एक धर्म, एक आचरण के रूप में पहचानना समीचीन है।

मानव जाति एक, कर्म अनेक

मानव धर्म एक, समाधान अनेक

धरती एक, राज्य अनेक

सत्ता सहज व्यापक अखण्ड वस्तु रूपी ईश्वर सर्वव्यापक, देवता अनेक

Meaning of undivided society is to recognise all humans in the form of one race, one religion and one conduct.

Human race is one, while deeds are many.

Human religion is one, while resolutions are many.

Earth is one, while states are many.

God is an indivisible, omnipotent, omnipresent reality, while gods are many.

9.7 मानव लक्ष्य एक समान

जीवन मूल्य एक समान

मानव मूल्य एक समान

स्थापित मूल्य एक समान

शिष्ट मूल्य में मानवत्व समान

Human goal is the same for everyone.

*Jeevan* values are the same for everyone.

Human values are the same for everyone.

Established values are the same for everyone.

Humaneness is inherent in civic values.

9.8 मानव जीवन रूप में समान

जीवन क्रिया समान

जीवन लक्ष्य समान (जीवन मूल्य के रूप में)

जागृति पूर्ण जीवन में अखण्डता सार्वभौमता सहज प्रवृत्तियाँ समान (सुख, शांति, संतोष, आनंद)

As far as jeevan is concerned, all humans are similar.

*Jeevan* activity is similar.

*Jeevan* goal is similar.

Tendencies of undividedness and universality (happiness, peace, contentment, bliss) are similar in all awakened *jeevans*.

9.9 जागृत मानव समाज विधि से अखण्ड समाज है।

Awakened human society leads to undivided society.

9.10 मानवीयता पूर्ण व्यवस्था सार्वभौम है ही।

Systems replete with humaneness are naturally universal.

9.11 सर्व मानव में, से, के लिए परिभाषा समान व्याख्यानुसार कार्य-व्यवहार-आचरण का फल-परिणाम-प्रभाव सत्य-न्याय-समाधान-नियम-नियंत्रण-संतुलन समान है।

As the definition of humans is the same for everyone, the result-effect of work-behaviour-conduct, and truth-justice-resolution-law-regulation-balance are all the same for everyone.

9.12 मानव में, से, के लिए समझदारी समान

ईमानदारी समान

जिम्मेदारी समान

भागीदारी से फल परिणाम समान है।

Understanding in, by and for humans is the same.

Honesty (Conscientiousness) is the same.

Responsibility is the same.

Result of participation is the same.

9.13 जागृत मानव (प्रत्येक नर-नारी) में, से, के लिए अनुभव प्रमाण, समाधान, सत्य, न्याय समान है।

Evidence of realisation, resolution, truth and justice is the same in, by and for all awakened humans (males and females).

9.14 जागृत मानव में, से, के लिए नियम, नियंत्रण, संतुलन समान है।

Law,regulation and balance is the same in, by and for all awakened humans.

9.15 जागृत मानव परंपरा में जीवन सहज अक्षय बल, अक्षय शक्ति समझ समान है।

In the awakened human tradition, inexhaustible strength, inexhaustible power, and understanding is the same for everyone.

9.16 जागृत मानव परंपरा में जीवन ज्ञान समान है।

In the awakened human tradition, knowledge of *jeevan* is the same for everyone.

9.17 जागृत मानव परंपरा में प्रत्येक नर-नारी में, से, के लिए मौलिकता सहज स्वत्व स्वतंत्रता अधिकार समान है।

In the awakened human tradition, self-ness, independence and right for uniqueness is the same for all males and females.

9.18 जागृत मानव परंपरा में मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहज समानता है।

There is similarity in values, character and ethics in awakened human tradition.

9.19 सर्व मानव में, से, के लिए जागृत जीवन समानता व्याख्या सूत्र ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का आधार है।

Similarity in maxims and elaboration of, from and for awakened *jeevan* indeed is the basis of undivided society and universal system.

9.20 जागृत मानव परिभाषा के अर्थ में समान होता है।

All awakened humans comply with the definition.

9.21 जागृत मानव परिभाषा, व्याख्यानुरूप आचरण में समान और आचरण का प्रयोजन समान है।

There is similarity in definition of awakened humans, in their conduct as elaborated, and the purpose of the conduct.

9.22 मानवत्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी ही जागृति का प्रमाण है। यह प्रत्येक नर-नारी में, से, के लिए समान है।

Humaneness and participation in the overall system is the evidence of awakening indeed. This is true for all humans, males or females.

9.23 अखण्ड सामाजिकता की स्वीकृति प्रत्येक नर-नारी में, से, के लिये होना आवश्यक है।

Acceptance of undivided society is essential for all humans, males or females.

9.24 व्यवस्था दश सोपनीय विधि से सार्वभौम होना नित्य समीचीन है। इसमें प्रत्येक नर-नारी भागीदारी करना समान है।

Systems are universal, and always closeby, as per the ten stepped model. There is equal participation for all males and females in it.

9.25 सम्पूर्ण मानव जाति एक होने के कारण मानव कुल एक फलस्वरूप अखण्ड समाज और अखण्ड सामाजिकता सहज समझदारी का लोक व्यापीकरण आवश्यक है।

Humankind is one as the human race is one. Therefore, dissemination of the understanding of undivided society and undivided sociability is essential.

9.26 सम्पूर्ण मानव का सार्वभौम लक्ष्य सदा सदा के लिये समान है। यही परंपरा का आधार है।

Universal goal of all humans is the same forever. This is the basis of tradition.

9.27 सर्व मानव शुभ अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी सम्पन्न होना ही वैभव है।

All humans becoming accomplished to participate in the good, in the undivided society universal system is indeed the grandeur.

9.28 सुदरू विगत से मानव परंपरा की गतिविधि, घटनाओं के आंकलन से पता चलता है कि अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था को पहचाना नहीं गया इसलिये विकल्प रुप में सहअस्तित्ववादी प्रस्तुति है।

Upon assessment of activities and incidents in human tradition since the ancient past, it is found that humans have not been able to understand undivided society and universal systems. Therefore, as an alternative, this co-existential presentation is offered.

9.29 अखण्डता सार्वभौमता ही वर्तमान में प्रमाण है।

Undividedness and universality is indeed the evidence at hand.

9.30 मानवीय संस्कृति-सभ्यता-विधि-व्यवस्था ही सार्वभौमता व अखण्डता सहज सूत्र व्याख्या है।

Humane culture-civility-law-system is the maxim and elaboration of universality and undividedness.

9.31 सर्वशुभ कार्य व्यवहार ही अखण्डता सार्वभौमता है। यही मंगल मैत्री सूत्र व्याख्या है।

Work and behaviour for universal well-being is indeed undividedness and universality. This itself is the elaboration of the maxim of blessed friendship.

9.32 समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण ही सर्वशुभ परंपरा है।

Evidence of resolution, prosperity, fearlessness and coexistence itself is the tradition of universal well-being.

9.33 जागृतिपूर्वक अनेक जाति, मत, सम्प्रदाय व धर्म वाले भी अखण्ड समाज के अर्थ में प्रमाणित होना समीचीन है।

By way of awakening, even the diverse castes, beliefs, sects and religions becoming evidence of undivided society, is proximate.

9.34 जागृतिपूर्वक जीने वाले हर नर-नारी अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या को प्रमाणित करते हैं। यही सर्वशुभ है।

All males and females leading an awakened life always continue to evidence the maxims and elaboration of undivided society and universal systems. This indeed is the universal well-being.

9.35 बहुआयामी प्रवृत्ति ही विविधता का आधार है। जागृतिपूर्वक सभी आयामों में समाधान प्रमाणित होता है यही एकता का आधार है।

Multi-dimensional tendency itself is the basis of diversity. Resolution is evidenced in all dimensions only by way of awakening. This is indeed the basis of unity.

9.36 सभी अवस्थाओं में प्रत्येक एक व्यापक वस्तु में संपृक्ततावश पहचान (परस्परता) निर्वाह ही स्वयंस्फूर्त व्यवस्था है।

Based on the fact that all units of all the four orders are saturated in the Omnipresence, they are mutually recognising and fulfilling, and are inherently in orderliness.

9.37 सर्वशुभ ज्ञान-विज्ञान, विवेकपूर्ण योजना कार्य-व्यवहारपूर्वक पाई जाने वाली सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाण है। जागृति मानव परंपरा सहज वैभव व्यवस्था है।

Plans full of knowledge, science & wisdom for universal well-being are the evidence of resolution, prosperity, fearlessness & coexistence attained by work and behaviour. This indeed is the grandeur of awakened human tradition.

12.10 स्वराज्य, स्वतंत्रता, स्वत्व

Self-governance, Independence, Self-ness

**स्वराज्य :** स्वयं में, से, के लिए जागृत मानव परंपरा सहज वैभव

(प्रबुद्धता, संप्रभुता, प्रभुता सहज प्रमाण परंपरा)।

**Self-governance :** Grandeur of awakened human tradition in, from and for oneself.

(Tradition of evidence of enlightenment, autonomy, supremacy)

**स्वतंत्रता :** स्वयं स्फूर्त विधि से मानव चेतना पूर्वक अक्षुण्णता, सार्वभौमता सहज सूत्र व्याख्या सहज प्रमाण परंपरा है।

**Independence :** is the tradition of evidence of maxims and elaboration of continuity and universality by way of humane consciousness in a self-motivated manner.

**स्वत्व :** मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

**Self-ness :** Systems with humaneness, participation in the overall systems.

10.1 प्रबुद्धता सहज प्रमाण सहअस्तित्ववादी, ज्ञान-विवेक-विज्ञानपूर्ण सर्वशुभ संगत समाधान पूर्ण प्रमाण है। संप्रभुता सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्नता का प्रमाण और प्रभुसत्ता प्रबुद्धता पूर्ण सत्ता के रूप में अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था ही वैभव है। यही स्वतंत्रता और स्वराज्य है।

Evidence of enlightenment is the evidence full of co-existential knowledge, wisdom & science, full of resolution aligned with universal well-being. Autonomy is the evidence of accomplishment of comprehensive resolution, and grandeur is undivided society, universal systems in the form of omnipresent supremacy enlightenment. This indeed is independence and self-governance.

10.2 स्वराज्य को प्रमाणित करने के लिए स्वयं स्फूर्त रहना ही स्वत्व स्वतंत्रता है। मानवत्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना स्वराज्य है।

Remaining self-motivated to evidence self-governance is self-ness and independence. Systems with humaneness and participation in the overall system itself is self-governance.

10.3 संप्रभुता सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्नता सहज प्रमाण है और प्रभुसत्ता प्रबुद्धता पूर्ण सत्ता (परंपरा) के रूप में अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था ही वैभव है यही स्वतंत्रता स्वराज्य है।

Autonomy is the evidence of accomplishment of comprehensive resolution, and grandeur is undivided society, universal systems in the form of omnipresent supremacy enlightenment (tradition). This indeed is independence and self-governance.

10.4 स्वतंत्रता ही प्रबुद्धता व प्रभुसत्ता का प्रमाण है और मानवत्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी ही प्रभुसत्ता है। यही स्वत्व है, जागृत मानव परंपरा है।

Independence is indeed the evidence of enlightenment autonomy, and the system with humaneness and participation in the overall system itself is sovereignty. This itself is self-ness and the awakened human tradition.

10.5 ‘स्वत्व’ ही स्वतंत्रता व अधिकार को प्रमाणित करने का स्रोत है।

Innateness indeed is the source for evidencing independence and right.

10.6 स्वायत्तता स्वयं स्फूर्त स्व अनुशासन रूपी स्वत्व स्वतंत्रता, स्वराज्य अधिकार वैभव है।

Autonomy is the grandeur of innateness, independence, self-governance and rights in the form of natural self-discipline.

10.7 जागृत मानव सहज परंपरा में आवश्यकताएं सीमित होना, आवश्यकता से अधिक संभावना विद्यमान रहना फलस्वरूप समृद्धि होना समीचीन है।

In the awakened human tradition, finiteness of the needs and continuous possibility of having more than what is needed, resulting in prosperity, is proximate.

10.8 आवश्यकता का निश्चय जागृत मानव परिवार में, से, के लिए होता है।

Needs are determined in, by and for the awakened human family.

10.9 हर परिवार में आवश्यकताएं निश्चित होने के कारण ही आवश्यकता से अधिक उत्पादन सहज है।

As the needs in each family are well-determined, production of more than what is needed is possible.

10.10 हर मानव के लिए अनुभव प्रमाण सम्पन्न होना स्वत्व स्वतंत्रता अधिकार है।

To be accomplished with evidence of awakening is the innateness, independence and right of all humans.

10.11 स्वत्व के अनुरूप किया गया लक्ष्य व दिशा निर्धारण ही स्वतंत्रता है।

Determination of goal and direction aligned with innateness is indeed the independence.

10.12 ज्ञान, विवेक, विज्ञान संपन्नता ही स्वत्व अविभाज्य सम्पदा है जो वैभव का आधार है।

To be accomplished with knowledge, wisdom and science are the assets inseparable from innateness which is the basis of grandeur.

10.13 स्वतंत्रता स्वयंस्फूर्त विधि से लक्ष्य व दिशा निर्धारण सहित प्रमाण क्रिया है जो आगे-आगे स्पष्ट योजना व प्रमाण कार्ययोजना गति का उदय सहज प्रवृत्ति है।

Independence is the effortless authentic activity along with determining goal and direction which, going ahead, gives rise to the ability to make clearer plans and certainty in action plans.

10.14 स्वायत्तता स्वयंस्फूर्त विधि से परिवार व्यवस्था ग्राम मोहल्ला स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी के रूप में स्पष्ट होती है। यही जागृति सहज प्रमाण है।

Autonomy intuitively becomes clear in the form of effortless participation in the family system and the village self-governance system. This is indeed the evidence of awakening.

10.15 स्वत्व ही अधिकार या अधिकार ही स्वत्व, स्वतंत्रता ही विधि या विधि ही स्वतंत्रता, व्यवस्था ही मूल्य-चरित्र-नैतिकता या मूल्य-चरित्र-नैतिकता ही व्यवस्था है। इस प्रकार सर्वशुभ सर्वमानव में, से, के लिए समीचीन है।

Innateness is the right or right is innateness, independence is the law or law is independence, system is values-character & ethics or values-character & ethics is the system. In this manner, universal well-being is within reach of, by and for all humans.

12.11 ब्रह्म वर्चस्व

Supremacy (glory) of *Brahma*

वर्चस्व परिभाषा : जागृति दृष्टा पद सहज प्रमाण

Supremacy definition : Evidence of being in the awakened perceiver plane.

(super = of high grade or quality; better; exceptional)

11.1 अखण्डता सार्वभौमता सहज रूप में मानवत्व प्रमाणित होना ही प्रज्ञा है। यही सत्यानुभूत ब्रह्मवर्चस्व है।

Evidence of humaneness in the form of undividedness and universality itself is insight (*pragya*). This realisation of truth is indeed the supremacy of *Brahma*.

11.2 प्रज्ञा सहज प्रमाण ही मेधाविता, तेजस्विता, ओजस्विता और ब्रह्मवर्चस्वता है। अनुभव सहज प्रमाण, चिंतन साक्षात्कार सहज प्रमाण, ज्ञान-विवेक-विज्ञान संपन्नता सहित किया गया कार्य-व्यवहार फल-परिणाम ज्ञान सम्मत होने में दृढ़ता विश्वास ही प्रज्ञा है। ब्रह्मवर्चस्व है।

Evidence of knowledge itself is talentedness, augustness, liveliness and supremacy of *Brahma*. Evidence of realisation, evidence of contemplation visualisation, work and behaviour done with accomplishment of knowledge-wisdom-science, firmness and confidence in being with knowledge, is insight indeed. This itself is the supremacy of *Brahma*.

11.3 समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी सहज धारक वाहकता ही वर्चस्व स्वयं स्फूर्त विधि है।

Beholding understanding, honesty, responsibility and participation is the effortless route to supremacy.

11.4 वर्चस्व ही स्वतंत्रता स्वराज्य के रूप में परम ब्रह्म वर्चस्व है।

Supremacy itself in the form of independence and self-governance, is the ultimate supremacy of *Brahma*.

11.5 मानव में ही वर्चस्वी होने की कामना सदा से रहा है जिसका प्रमाण जीवन जागृति पूर्ण मानसिकता सहज सफल सार्थक होता है।

Desire for supremacy has always been there in humans, and its evidence is successfully realised by way of the awakened mindset.

11.6 सार्वभौमिकता सहज मानसिकता ही मानव में, से, के लिए वर्चस्व है।

Mindset of universality is indeed the supremacy in, of and for humans.

11.7 व्यक्ति, जागृति पूर्वक ब्रह्मवर्चस्व सहज सर्वशुभ सूत्र व्याख्या है और सार्वभौमिकता ही मानव वर्चस्व सहज प्रमाण है।

Maxims and elaboration of universal well-being and supremacy of *Brahma* emerge from humans only after awakening, and universality is indeed the evidence of supremacy of humans.

11.8 वर्चस्व सर्व सुलभ होने की पहचान करने की प्रवृत्ति और परम सत्य में अनुभव प्रमाण ही ब्रह्म वर्चस्व है। यही व्यापक वस्तु में चारों अवस्था व पदों का अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन है।

Tendency of recognising the accessibility of supremacy to all, and evidence of realisation in the ultimate truth is indeed supremacy of *Brahma*.This itself is the expression, communication and manifestation of the four orders and four realms in the omnipresent reality.

11.9 जागृत होना ही ब्रह्म वर्चस्व प्रवृत्ति का आधार है।

Being awakened is indeed the basis of the tendency of supremacy of *Brahma*.

11.10 परस्परता में अनुभव प्रमाण सहज पहचान होना ही प्रकाशमानता है परस्परता में पहचान निर्वाह ब्रह्म वर्चस्व है।

Recognition in mutuality based on evidence of realisation itself is lucency. Recognising and fulfilling in the mutuality itself is supremacy of *Brahma*.

11.11 सुख एवं समाधान पूर्वक जीने के लिये मन:स्वस्थता प्रधान आवश्यकता है। इसका प्रमाण स्वयं में ब्रह्म वर्चस्व है।

Mental well-being is the essential need for living with happiness and resolution. Supremacy of *Brahma* in oneself is its evidence.

12.12 अनुभव प्रमाण

Evidence of realisation

12.1 हर मानव में, से, के लिए परावर्तन-प्रत्यावर्तन के रूप में ज्ञान, विवेक, विज्ञान सहज आवर्तनशीलता की क्रिया स्पष्ट है। इसी आवर्तन प्रक्रिया क्रम में सहअस्तित्ववादी नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सर्वतोमुखी समाधान, सहअस्तित्व रूपी परम सत्य, अध्ययन विधि से बोधगम्य प्रमाणित होने के संकल्प विधि से अनुभव प्रमाण होना पाया जाता है। यही अनुभव प्रमाण है। यही जागृत मानव परंपरा है।

The activity of inspection of knowledge, wisdom and science In the form of manifestation-reflection, is apparent in, to and for all humans. It is in this process of inspection that evidence of realisation occurs by way of determination to understand and evidence law, regulation, balance, justice, dharma, truth, comprehensive resolution, ultimate truth in the form of coexistence, by way of study. This itself is the evidence of realisation. This is indeed the awakened human tradition.

12.2 क्रम से सर्वशुभ है। अनुभव सार्वभौम अक्षुण्ण परम है जिसके आधार पर ही मानव चेतना सहज व्यवहार, प्रमाण, सामाजिक अखण्डता के अर्थ में व उत्पादन कार्य, प्रयोग, प्रमाण, समाधान पूर्वक समृद्धि के अर्थ में प्रमाणित होना नित्य समीचीन है।

Universal well-being occurs gradually. Realisation is universal, unwavering and ultimate. It is on this basis that evidence - of behaviour and evidence for undividedness, and of production work, experimentation, evidence for prosperity and resolution - based on humane-consciousness is always within reach.

12.3 सर्व शुभ सहज अनुभव प्रमाण परंपरा ही सुख, शान्ति, संतोष, सहज वैभव, सर्वसुलभ होना आनंद है।

Evidence of realisation in universal well-being itself is happiness, peace and contentment, and the accessibility of its grandeur to everyone, is bliss.

12.4 जीवन वैभव व प्रमाण अनुभवमूलक विधि से प्रमाणित होता है।

The grandeur and evidence of *jeevan* is evidenced by the realisation-rooted way.

12.5 मानवीय शिक्षा-संस्कार अनुभव प्रमाणमूलक होना समाधान है।

Humane education-*sanskar* rooted in realisation and evidence, is resolution.

12.6 सर्व मानव का प्रमाण अनुभव-अभ्यास पूर्वक है।

Evidence of all humans is by way of realisation and practice.

12.7 अनुभव प्रमाण ही जागृति है।

Evidence of realisation itself is awakening.

12.8 अनुभव प्रमाण मूलक विधि से ही अनुभवगामी अध्ययन सुलभ सहज गति प्रभाव है।

It is only by way of evidence of realisation that realisation-oriented study occurs at a steady pace and is effective.

12.9 मानव में, से, के लिए अध्ययन आवश्यकता है।

Need of study is in, by and for humans.

12.10 साक्षात्कार क्रिया के मूल में अनुभव प्रमाण, बोध, संकल्प ही नित्य स्रोत है क्योंकि जीवन नित्य है एवं जीवन में, से, के लिए अनुभव, प्रमाण क्रियाएं नित्य वर्तमान है।

Evidence of realisation, *bodh* and determination are the eternal sources at the root of *sakshatkar*. It is so because *jeevan* is eternal and the activities of realisation and evidence are eternally present in, by and for *jeevan*.

12.11 सहअस्तित्व में अनुभव प्रकाश ही अनुभव बोध साक्षात्कार होता है।

Realisation in coexistence leads to realisation, *bodh* and *sakshatkar*.

12.12 जीवन में अनुभवमूलक साक्षात्कार क्रिया स्वयं में निरंतर समाधान है। यही चिंतन है।

Activity of realisation-rooted *sakshatkar* in *jeevan* is the everlasting resolution indeed. This itself is contemplation.

12.13 अध्ययन का फल परंपरा नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म (समाधान), सत्य सहज अनुभव बोध क्रियाशीलता ही है। आचरण के रूप में नियम, कार्य व प्रभाव सीमा में नियंत्रण, प्रवृत्तियों के रूप में संतुलन, परस्पर तृप्ति के रूप में न्याय, समाधान सहज रूप में धर्म है। व्यापक में अनन्त नित्य वर्तमान शाश्वत, वैभव के रूप में सत्य बोध अनुभव-व्यवहार-प्रयोग प्रमाण है।

Activeness in, of and for law, regulation, balance, justice, *dharma* (resolution) and realisation-rooted *bodh* in truth is indeed the result of study. Law is in the form of conduct, regulation is within the boundaries of work and field, balance is in the form of tendencies, justice is in the form of mutual satisfaction, and *dharma* is in the form of resolution. Realisation in truth and the evidence of realisation-behaviour-experimentation in the Omnipresence is in the form of infinite, ever-present, eternal grandeur.

12.14 अपरिवर्तनीय अभिव्यक्तियाँ अनुभवमूलक है।

Never-changing expressions are rooted in realisation.

12.15 जीवन में, से, के लिए दस क्रियाओं में सामरस्यता अर्थात् अनुभवमूलक विधि सहज प्रमाण ही जागृति है।

Harmony in the ten activities in, of and for *jeevan*, or evidence of realisation, itself is awakening.

12.16 सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में अनुभव प्रमाण ही सम्पूर्ण ज्ञान है।

Evidence of realisation in existence as coexistence is the complete knowledge.

12.17 सहअस्तित्व में, से, के लिए किया गया अनुभव मानव परंपरा में ही प्रमाणित होता है।

Realisation accomplished in, of and for coexistence is evidenced only in human tradition.

12.18 अनुभवमूलक व्यवहार, प्रयोग, क्रियाकलाप ही अभिव्यक्ति है जो अखण्डता व सार्वभौमता सहज व्यवस्था ही है।

Realisation-rooted behaviour, experimentation and activities are referred to as expressions which are systems aligned with undividedness and universality.

12.19 व्यवस्थात्मक प्रमाण व्यवहार व आचरण है और व्यवस्था में ही सम्प्रेषणा, अभिव्यक्तियाँ प्रमाण रूप में स्पष्ट हैं।

Behaviour and conduct is the evidence of the system, and communications and expressions in the system itself are evidence.

12.20 सहअस्तित्व में अनुभव ही अभिव्यक्ति सूत्र है।

Realisation in coexistence is the maxims of expression.

12.21 सहअस्तित्व में अनुभव सहज प्रमाण ही सम्पूर्ण जागृति, जागृतिपूर्ण जीवंतता है।

Evidence of realisation in coexistence itself is complete awakening and fully-awakened liveliness.

12.13 मानव-मानवत्व

Human-humaneness

13.1 हर जागृत मानव अपनी पहचान को अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा व प्रकाशन रूप में विस्तार भी चाहता है यह प्रमाणित होना मानवत्व है।

All awakened humans want the outreach of their identity in the form of expression, communication and manifestation. Its being evidenced, is humaneness.

13.2 मानव में, से, के लिए अखण्डता सूत्र-व्याख्या ही विस्तारता सहज शरण है।

Maxims and elaboration of undividedness is the only refuge for outreach in, by and for humans.

13.3 ज्ञान, विवेक, विज्ञान संपन्नता सहित मानवीय आहार, विहार, व्यवहार निष्ठा सहित प्रतिभा सहज प्रमाण के रूप में संतुलन ही व्यक्तित्व है। यही मानवत्व है।

The meaning of personality is - accomplished in knowledge, wisdom & science along with commitment to humane food, lifestyle & behaviour, and balance in the form of evidence of talent. This itself is humaneness.

13.4 व्यवहार में सामाजिकता का तात्पर्य मानवत्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी है।

‘Sociable in behaviour’ means participation in the overall system with humaneness.

13.5 मानवीयता ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था के रूप में नित्य वैभव, समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व है। यह मानवत्व है।

Eternal grandeur in the form of undivided society and universal system, resolution, prosperity, fearlessness and coexistence - this indeed is humaneness.

13.6 मानव परंपरा में मानवत्व ही जीवंत वैभव ही मानवत्व है।

Humaneness indeed is the lively grandeur in and of humane tradition.

13.7 मानव जीवन और शरीर का संयुक्त रूप में मानवत्व का प्रमाण है।

Humans are the combined form of *jeevan* and body.

13.8 मानव को अपनी मौलिकता को समझना और प्रमाणित करना ही मानवत्व है।

For humans, to understand and evidence their uniqueness is humaneness.

13.9 मानव ज्ञानावस्था में होने के कारण ज्ञान, सहअस्तित्व सहज दर्शन ज्ञान, सहअस्तित्व में ही जीवन होने के कारण जीवन ज्ञान, सहअस्तित्व में ही मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान है। दृष्टा पद में प्रतिष्ठा सम्पन्न होने के कारण समग्र ज्ञान ऊपर के तीन क्रम में स्पष्ट होता है। यही मानवत्व है।

Humans belong to the knowledge order, and are satisfied only by knowledge. Knowledge comprises the knowledge of holistic view of coexistence, knowledge of jeevan (as *jeevan* too is in the coexistence), and knowledge of humane conduct (which is also in the coexistence). Upon establishment in and accomplishment of the perceiver plane, it becomes clear that complete knowledge comprises the above-mentioned three categories. This itself is humaneness.

13.10 मानव जीवन में सर्वतोमुखी समाधान ज्ञान मूलक विवेक-विज्ञान विधि से प्रमाणित होता है। यह मानवत्व है।

Comprehensive resolution in *jeevan* in humans is evidenced by way of wisdom and science rooted in knowledge.

13.11 मानवीयता संस्कृति-सभ्यता, विधि-व्यवस्था का संयुक्त और निष्ठा सहज आचरण प्रमाण ही मानवीय संस्कार है। यह मानवत्व है।

Combined conduct, with commitment, and evidence of humane culture-civility and legislation-system itself is humane-sanskar. This is humaneness.

13.12 व्यवस्था में प्रमाणित होना, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना, करने के मूल में दिशा व लक्ष्य निश्चित विचार मानसिकता का रहना जो सर्वतोमुखी समाधान के रूप में स्पष्ट रहता है। यह मानवत्व है। विचार मानसिकता के मूल में ज्ञान सम्पन्न रहना ही सम्पूर्ण ज्ञान अथवा समझ ही पूर्ण स्वीकृति, पूर्ण स्वीकृति ही विवेक सम्मत विज्ञान, विज्ञान ही विचार, विचार ही सर्वतोमुखी समाधान, यही अभ्युदय सूत्र है जिसके व्यवस्था क्रम में योजना, कार्य योजना, जिसका फल परिणाम, सहअस्तित्व ज्ञान सम्मत होना ही मानव संस्कृति सभ्यता का प्रमाण वर्तमान होता है। मानव संस्कृति-सभ्यतापूर्वक विधि-व्यवस्था स्पष्ट होता है। यह मानवत्व है।

Mindset with clarity of definite direction and goal is at the root of being evidenced in the system, and participation in the overall system. This is obvious in the form of comprehensive resolution. This is humaneness. Being accomplished with knowledge at the root of mindset, is complete knowledge; this understanding itself is complete acceptance; complete acceptance itself is science aligned with wisdom; science itself is thought; thought itself is comprehensive resolution - this indeed is the maxim of enlightenment which lead to plans and action-plans, whose natural result and consequence is becoming knowledgeable in coexistence which is the eternal evidence of humane civility and culture. Law-regulation becomes clear by way of humane culture-civility. This is humaneness.

13.13 जागृत मानव संस्कृति ‘जीने देने और जीने’ के अर्थ में सभ्यता है। यह मानवत्व है।

Awakened human culture is for ‘let live and live’ which is civility. This is humaneness.

13.14 मानव ही न्याय धर्म सत्य सहज समझदारी पूर्वक मानवत्व सहित व्यवस्था में प्रमाणित होना पाया जाता है।

It is found that only humans, with the understanding of justice, *dharma* and truth, become evidence in the system.

13.15 न्याय समाधान सहअस्तित्व पूर्वक प्रमाण होना ही जागृति और मानवत्व है।

To become the evidence by way of justice, resolution and coexistence is awakening and humaneness indeed.

13.16 मानवत्व जागृति सहज प्रमाण है।

Humaneness is the evidence of awakening.

13.17 मानवत्व व्यवस्था सहज सूत्र है।

Humaneness is the maxims of the system.

13.18 मानवत्व मानव परंपरा सहज त्राण व प्राण है अर्थात् स्थिति गति है।

Humaneness is the liveliness and life of human tradition. In other words, it is the state and motion.

13.19 मानवत्व ही जीवन मूल्य व मानव लक्ष्य का सार्थक सफलतापूर्वक सार्वभौम रूप से वैभवित होने का नित्य सूत्र व स्रोत है। इसलिए हर नर-नारी समझदारीपूर्वक ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी सहज विधि है।

Humaneness indeed is the eternal maxim and source of meaningful, successful, continuous and universal establishment of *jeevan* values and human values.

13.20 शरीर और जीवन के सहअस्तित्व में ही जागृत मानव इकाई की पहचान है। यह मानवत्व है।

Recognition of awakened human beings is in the coexistence of body and *jeevan*. This is humaneness.

13.21 इस धरती पर रासायनिक भौतिक रचनाओं में, से, मानव शरीर रचना सर्वश्रेष्ठ रचना है क्योंकि मानव में, से, के लिये कल्पनाशीलता-कर्मस्वतंत्रता आदिमानव समय से होना स्पष्ट है।

Of all the physico-chemical compositions on Earth, composition of the human body is the best because imagination and free-will in, by and for have obviously existed since the times when humans were primitive.

13.22 मानव ही अपनी कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता के आधार पर शिला युग, धातु युग, ग्राम कबीला युग तक, ग्राम कबीला युग से राजा राज्य युग तक, राजा राज्य सम्प्रदाय (धर्म) युग से लोकतंत्र गणतंत्र शासन आधुनिक युग तक पहुचें हैं और मानव चरित्र मूल्य और नैतिकता से सम्पन्न नहीं हो पाया इसलिए विकल्प सहज प्रमाण रूप में अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद प्रस्तुत हो चुका है।

On the basis of their imagination and free-will only, humans have traversed through stone age, metal age, tribal age, to the times of kings and kingdoms, to the times of religions and progressed to the modern times of democracies and republics.

13.23 निरीक्षण परीक्षण सर्वेक्षण क्रियाकलापों को सम्पन्न करने वाला मानव ही है।

The activities of observation, examination and survey are accomplished only by humans.

13.24 मानव ही सम्पूर्ण आयाम, कोण, दिशा, परिप्रेक्ष्य, देशकाल का दृष्टा, ज्ञाता, कर्ता, भोक्ता के रूप में प्रमाणित होना ही जागृति है।

Humans evidencing as perceiver, knower, doer and enjoyer of all the dimensions, angles, directions, areas, places and times, is awakening

13.25 मानव बहुआयामी होने का तात्पर्य समस्त विधाओं में कल्पना, विचार, ज्ञान, विज्ञान, विवेकपूर्वक अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन करता है, करना चाहता है। यह जागृति में, से, के लिए सहज प्रमाण है।

Meaning of ‘humans are multidimensional’ is that humans do, or want to, exhibit, communicate and manifest imagination, thoughts, knowledge, science and wisdom in all domains. This is the evidence in, of and for awakening.

13.26 जागृत मानव में ही बहुआयामी समाधान प्रवृत्ति, दृष्टि, कार्य, व्यवहार होना पाया जाता है।

Tendency, perspective, work and behaviour of multidimensional resolution is found only in awakened humans.

13.27 जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने की प्रवृत्ति जागृत मानव में दृष्टव्य है।

The tendency to know, believe, recognise and fulfil is seen in awakened humans.

13.28 हर मानव शरीर यात्रा के आरंभ समय से ही कल्पनाशीलता और कर्म स्वतंत्रता का प्रकटन रहता ही है।

Imagination and free-will is naturally seen in all humans since birth.

13.29 कल्पनाशीलता ही सोच, विचार, अध्ययन करने का स्रोत है। कर्म स्वतंत्रता ही प्रयोग, कार्य, व्यवहार करने का आधार है। इसी क्रम में शोध अनुसंधान परंपरा है।

Imagination indeed is the source of engaging in all thinking and study. Free-will indeed is the basis of experimentation, work and behaviour. The tradition of research and exploration is in this context only.

13.30 मानव सहज अध्ययन पूर्वक मानवीय संविधान शिक्षा व्यवस्था व उत्पादन कार्य-व्यवहार विधि स्पष्ट होता है। यह मानवत्व है।

Humane constitution, education-*sanskar*, production, work and behaviour becomes clear only after study of humans. This is humaneness.

13.31 मानवत्व हर जागृत नर-नारी सहज आचरण में, से, के लिए प्रमाणित होता है।

Humaneness is evidenced in the conduct in, of and for all awakened humans, males and females.

13.32 मानवत्व हर नर-नारी का स्वत्व है।

Humaneness is the self-ness of all humans, males or females.

13.33 मानवत्व हर नर-नारी में समानता का सूत्र है।

Humaneness is the maxim (thread) of equality in all humans, males or females.

13.34 मानवत्व अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था का सूत्र है।

Humaneness is the maxim of the undivided society and universal system.

13.35 मानवत्व सर्व मानव का स्वत्व है।

Humaneness is the self-ness of all humans.

13.36 मानवत्व सर्व मानव का अधिकार है।

Humaneness is the right of all humans.

13.37 मानवत्व ही मूल्यांकन का आधार है।

Humaneness indeed is the basis of evaluation.

13.38 मानवत्व ही परस्परता में संबंध व सम्मान सहज सूत्र है।

Humaneness indeed is the maxim (thread) of relationship (bonding) and respect in mutuality.

13.39 मानवत्व ही समानता व श्रेष्ठता सहज आधार बिन्दु है।

Humaneness indeed is the base point of equality and excellence.

13.40 मानवत्व ही मानव सहज पहचान है।

Humaneness indeed is the uniqueness (distinguishing feature) of humans.

13.41 मानवत्व शिक्षा संस्कार का सूत्र व्याख्या है।

Humaneness is the maxim and elaboration of education-*sanskar*.

13.42 मानवत्व मानव परंपरा, अखण्डता, सार्वभौमता, अक्षुण्णता सहज सूत्र व्याख्या है।

Humaneness is the maxim and elaboration of human tradition, undividedness, universality and permanence.

13.43 मानवत्व मानव परंपरा में जागृति सहज प्रमाण है।

Humaneness is the evidence of awakening in human tradition.

13.44 मानवत्व मानव में, से, के लिए स्वयंस्फूर्त होने का स्रोत है।

Humaneness is the source of autonomy in, of and for humans.

13.45 मानवीय शिक्षा-संस्कार का प्रमाण मानवत्व है।

Humaneness is the evidence of humane education-*sanskar*.

13.46 समझदारी पूर्वक किया गया व्यवहार कार्य व्यवस्था में ज्ञान, विवेक, विज्ञान का स्पष्ट होना ही मानवीयतापूर्ण परंपरा है।

Engagement in behaviour and work with understanding, and clarity of linkage of knowledge, wisdom and science with the system, is indeed the humane tradition.

13.47 मानवीयता पूर्ण आचरण में, से, के लिए ज्ञान, विवेक, विज्ञान प्रमाणित होता है।

Knowledge, wisdom and science is evidenced in, by and for humane conduct.

13.48 जागृति के मूल में सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व ज्ञान, सहअस्तित्व में ही जीवन ज्ञान और मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान सम्पन्नता है। यह मानवत्व है।

Accomplishment in knowledge of existence which is in the form of coexistence, knowledge of jeevan which is also in coexistence, and the knowledge of humane conduct is at the root of awakening. This is humaneness.

13.49 मानवत्व ही मानव परंपरा में, से, के लिए सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण है।

Humaneness is the evidence of comprehensive resolution, prosperity, fearlessness and coexistence in, by and for human tradition.

13.50 मानवत्व मानव में ही प्रमाणित होता है।

Humaneness is evidenced only in humans.

13.51 मानवत्व ही जागृत मानसिकता रूप में प्रमाणित मूल्यांकित होता है।

Humaneness is evidenced and evaluated only as the awakened mindset.

13.52 हर जागृत मानव मूल्यांकन विधि से एक दूसरे को पहचानता और निर्वाह करता है। यह मानवत्व है।

Awakened humans recognise and fulfil other humans by way of evaluation. This is humaneness.

13.53 हर मानव में, से, के लिए जागृति सहज प्रमाण व मूल्यांकनाधिकार सहित स्वत्व स्वतंत्रता ही मौलिकता है।

Autonomy and independence along with evidence and right of evaluation of awakening - this indeed is the uniqueness in, of and for all humans.

13.54 मानव में, से, के लिए प्रमाणित व मूल्यांकित करना कराना मौलिक है।

To evidence and evaluate, and to be evidenced and evaluated, is unique in, to and for humans.

13.55 हर मानव में, से, के लिए जागृति सहज अधिकार मौलिक है।

The right of awakening is unique in, to and for humans.

13.56 अधिकार ही अनुभव, व्यवहार व प्रयोग प्रमाण है।

Right indeed is the evidence of realisation, behaviour and experimentation.

13.57 मानवीयता पूर्ण विधि से प्रमाणित होना अधिकार है।

To evidence by way of humaneness, is (human) right.

13.58 मानव परंपरा में कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता से मन:स्वस्थता सहज प्रमाण परंपरा तक अध्ययन कार्य है।

Activity of study in human tradition is until the tradition of evidence of healthy mindset is established by way of imagination and free-will.

13.59 हर नर-नारी नियंत्रित रहना चाहते हैं।

All humans, males and females, want to remain regulated.

13.60 जागृति सहज विधि से नियमपूर्वक हर नर-नारी नियंत्रित रहते हैं।

All humans, males and females, always remain regulated by way of awakening.

13.61 सामाजिक नियम ही स्वधन, स्वनारी, स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार है।

Righteous acquisition of wealth, righteous man-woman relationship, and kindness in work & behaviour is referred to as social laws.

13.62 हर मानव संतुलित रहना चाहता है। न्यायपूर्वक मानव संतुलित रहता है।

All humans want to remain balanced. Humans remain balanced by way of justice.

13.63 समाधानपूर्वक अखण्ड समाज के अर्थ में मानवीयतापूर्ण आचरण प्रमाणित होता है।

It is by way of resolution that humane conduct is evidenced for undivided society.

13.64 मानवीयता ही अखण्ड समाज सूत्र है।

Humaneness is the maxim of undivided society.

13.65 मानवत्व ही मानव परंपरा में शिक्षा-संस्कार, संविधान और सार्वभौम व्यवस्था सहज सूत्र है।

In human tradition, humaneness is the maxim of education-*sanskar*, constitution and universal system.

13.66 मानवत्व मानवीय गुण, स्वभाव, धर्म का संयुक्त अविभाज्य अभिव्यक्ति, संप्रेषणाा व प्रकाशन है।

Humaneness is the combined and integral expression, communication and manifestation of attributes, intrinsic-nature and *dharma*.

13.67 मानवत्व सर्व मानव में, से, के लिए समझ के रूप में स्वत्व, कार्य-व्यवहार में स्वतंत्रता, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी अधिकार है।

Humaneness in, by and for all humans, is the right of - autonomy in the form of understanding, independence in the form of work & behaviour and participation in the universal system.

13.68 मानवत्व रूपी स्वत्व के आधार पर ही स्वतंत्रता व अधिकार का प्रमाण होना सहज है।

Evidence of independence and right is on the basis of autonomy in the form of humaneness.

13.69 मानवत्व सर्वशुभ रूप में दृष्टा, ज्ञाता, कर्ता पद का वैभव होना ही जागृत मानव परंपरा है।

Grandeur of perceiver, knower & doer plane in the form of humaneness & universal well-being, is indeed the awakened human tradition.

13.70 प्रत्येक मानव में, से, के लिए मानवत्व ही वैभव है।

Humaneness is the grandeur in, of and for all humans.

13.71 हर जागृत मानव सहज सम्पूर्ण कार्य-व्यवहार सर्वशुभ सूत्र की व्याख्या है।

All work and behaviour of awakened humans is the elaboration of the maxims of universal well-being.

13.72 सर्वशुभ ही मानव सहज परिभाषा मानवीयतावादी व्याख्या, मानवीयता पूर्ण आचरण संविधान सहअस्तित्वपूर्ण दृष्टिकोण से शिक्षा संस्कार सुलभ है।

Accessibility to shiksha-*sanskar* which incorporates definition of humans, elucidates humaneness, humane conduct, constitution and perspective of coexistence, itself is universal well-being.

13.73 मानवीय शिक्षा संस्कार ही जागृत परंपरा में, से, के लिए सार्थक सूत्र व्याख्या प्रक्रिया है।

Humane education-*sanskar* is indeed the process of meaningful maxims and elaboration in, of and for the awakened tradition.

13.74 मानवीयता मानव के लिए नित्य समीचीन है।

Humaneness is always in close proximity for humans.

13.75 सर्व मानव में मन:स्वस्थता स्वयंस्फूर्त विधि से स्वयं व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी स्वयंस्फूर्त क्रम में सम्पन्न होता है।

Accomplishment of the healthy mindset occurs in all humans by way of self-motivation. Harmony in oneself and participation in the overall system is also accomplished gradually in a natural way.

13.76 मानव में, से, के लिए सहअस्तित्व सहज सम्पूर्ण समझ ही परिपूर्णता है।

Complete understanding of coexistence itself is repleteness in, by and for humans.

13.77 मानवीयतापूर्ण आचरण व्यवस्था के रूप में प्रमाणित होता है। यही मानवत्व सहित व्यवस्था तथा समग्र व्यवस्था में भागीदारी की सूत्र व्याख्या है।

Humane conduct is evidenced as the system. This indeed is the maxim and elaboration of harmony (with humaneness) in oneself and participation in the overall system.

13.78 जीवन मर्यादा मानवत्व सहित परिवार व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी है। मर्यादा का तात्पर्य जागृति, उसका प्रमाण ही मानवीयतापूर्ण आचरण है।

Family system with humaneness and participation in the overall system, is the dignity of *jeevan*. Dignity means awakening, and humane conduct is its evidence.

13.79 नियमित प्रवृत्ति व कार्य-व्यवहार, नैतिकता तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा ही है।

Disciplined tendency and work-behaviour, and ethics, is indeed the right-utilisation and security of the resources of body, mind & wealth.

13.80 जागृत मानव सहज कार्य-व्यवहार आचरण ही प्रधानत: मानवीय आचरण संहिता रूपी संविधान का मूल सूत्र है जिसकी व्याख्या में सभी आयामों, कोणों, देश-दिशा का स्पष्ट होना ही सम्पूर्ण संविधान है।

Work, behaviour and conduct of awakened humans is indeed the basic code of humane conduct in the form of constitution. Complete constitution is its elaboration and clarity in all dimensions, angles, places and directions.

13.81 मानवीयता ही मानवत्व है।

Humanity / humane-ness itself is humaneness.

13.82 मानवीयता जागृति सहज प्रमाण परंपरा है।

Humaneness is the tradition of evidence of awakening.

13.83 जानना मानना संबंध में मूल्य निर्वाह

मानना जानना मूल्यांकन

पहचानना निर्वाह करना उभय तृप्ति संतुलन

निर्वाह जीवन सहज नियंत्रण

Knowing-believing = Fulfilling values in relationship

Believing-knowing = Evaluation

Recognising-fulfilling = Optimum point of mutual happiness

Fulfilling = Regulation in, of and by *jeevan*

13.84 हर मानव में समझदारी होना ही मानवीयता पूर्ण आचरण स्पष्ट होता है।

Accomplishment of understanding in all humans is the humane conduct indeed.

13.85 विधि के आधार पर नैतिकता तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा के रूप में प्रमाणित होता है।

Ethics based on laws are evidenced as right-utilisation and security of resources (body, mind and wealth).

13.86 जागृति सहज अधिकार विधि सम्पन्नता ही मानवत्व है।

Accomplishment in law and the right of awakening itself is humaneness.

13.87 मानवत्व सहित नैतिकतापूर्वक, किया गया कार्य-व्यवहार समेत परिवार व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी नैतिकता सहज प्रमाण है।

Work and behaviour done with ethics and humaneness, along with familial system and participation in the overall system, is the evidence of ethics.

13.88 जागृतिपूर्वक जीने का अधिकार, विधि व नैतिकता से संयुक्त अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा प्रकाशन मानवत्व है।

The right to awakened living, and expression, communication & manifestation comprising laws and ethics, is humaneness.

12.14 मानवत्व सहज प्रमाण सूत्र

Maxims of evidence of humaneness

14.1 सहअस्तित्व में अनुभव सहित प्रमाणित होना = जागृति और मानवत्व है।

To be an evidence with realisation in coexistence = awakening and humaneness.

14.2 अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था स्वीकृत प्रमाण होना मानवत्व है।

Acceptance and evidence of the undivided society and universal system is humaneness.

14.3 मानवत्व :- मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना सहज परंपरा।

i. मानवीयता पूर्ण आचरण मानवत्व है।

ii. परिवार व्यवस्था में समाधान व समृद्धि सहज प्रमाण मानवत्व है।

Humaneness :- Tradition of humane consciousness, godly consciousness, divine

consciousness.

i. Humane conduct is humaneness.

ii. Evidence of resolution and prosperity in the familial system is humaneness.

14.4 दश सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी मानवत्व है। मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहज अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन मानवत्व है।

Participation in the ten-tier system is humaneness. Expression, communication and manifestation of values, character and ethics, is humaneness.

14.5 मानवीयता पूर्ण आचरण यथा स्वधन, स्वनारी, स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार संबंधों में पहचान, मूल्यों का निर्वाह व मूल्यांकन, उभय तृप्ति, तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा मानवत्व है।

Humane conduct (that is, righteous acquisition of wealth, righteous man-woman relationship, and kindness in work & behaviour; recognition of values in relationships, fulfilling of values, evaluation, and mutual happiness; right utilisation and security of the resources of body, mind and wealth) is humaneness.

14.6 सहअस्तित्व :- व्यापक वस्तु में सम्पृक्त सम्पूर्ण एक-एक जड़, चैतन्य प्रकृति जो चार पद एवं चार अवस्था में हैं। इनमें से मानव, मानवीय चेतना पूर्ण विधि से प्रमाणित होना मानवत्व है।

Coexistence :- All the sentient-insentient units of nature (which are in four planes and four orders) saturated in the Omnipresent reality. Out of these, to be evidenced by way of humane consciousness, is humaneness.

14.7 अनुभव सहअस्तित्व में होने व रहने का प्रमाण मानवत्व है।

Evidence of occuring and abiding of realisation in coexistence, is humaneness.

14.8 प्रमाण योजना के रूप में अखण्डता वर्तमान ही सार्वभौमता है। यह मानवत्व है।

Existence of undividedness as evidence and plan, itself is universality. This is humaneness.

14.9 होना ही वर्तमान रहना प्रमाण है। वर्तमान ही परंपरा, जागृति पूर्ण परंपरा ही मानवत्व है।

Existence of being is evidence. Existence itself is tradition, awakened tradition itself is humaneness.

14.10 जागृति, जानना मानना अथवा मानना जानना है। यह प्रमाणित होना मानवत्व है।

Knowing-believing or believing-knowing, is awakening. Its getting evidenced is humaneness.

14.11 अखण्ड समाज, सम्पूर्ण मानव को एक इकाई के रूप में जानना-मानना और प्रमाणित होना मानवत्व है।

Knowing-believing and evidencing the undivided society and all humans as one unit, is humaneness.

14.12 सार्वभौम व्यवस्था सर्व मानव स्वीकृत सहज कार्य नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य पूर्वक समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में, से, के लिए प्रमाण परंपरा मानवत्व है।

Universal systems; actions acceptable to all humans; tradition of evidence in, by and for resolution, prosperity, fearlessness, coexistence by way of law, regulation, balance, justice, *dharma*, truth - is humaneness.

14.13 समाज पीढ़ी से पीढ़ी के रूप में परंपरा है। यह जागृति पूर्वक मानवत्व सहज प्रमाण वर्तमान है, यही परंपरा सहज वैभव है।

Society, in the form of generation to generation, is tradition. By way of awakening, this is the evidence of humaneness in the present which indeed is the grandeur of tradition.

14.14 सर्व मानव एक इकाई के रूप में अखण्ड समाज अन्यथा समुदाय है। किसी समुदाय ने जिन गतिविधियों को अपनाया है उससे अखण्ड सूत्र-व्याख्या नहीं हो पाता है जबकि अखण्ड समाज में भागीदारी मानवत्व है।

All humans, as one unit, are undivided society, else they are sects. Undividedness cannot be defined and described within the purview of the activities adapted by a sect, while participation in undivided society is humaneness.

14.15 हर नर-नारी हर विधा में समाधान सम्पन्न रहना मानवत्व है।

All humans, males and females, accomplished in resolution in all dimensions, is humaneness.

14.16 हर मानव परिवार समाधान, समृद्धि सम्पन्न रहना मानवत्व है।

All human families accomplished in resolution and prosperity, is humaneness.

14.17 अखण्ड समाज में समाधान, समृद्धि, अभय परंपरा के रूप में होना मानवत्व है।

Tradition in undivided society in the form of resolution, prosperity and fearlessness, is humaneness.

14.18 सार्वभौम व्यवस्था में समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व परंपरा सहज विधि से सर्व सुलभता प्रमाणित होना मानवत्व है।

Easy accessibility of resolution, prosperity, fearlessness, coexistence to all by way of evidence of tradition in the universal system, is humaneness.

14.19 सहअस्तित्व अनुभव मूलक मानसिकता और कार्य-व्यवहार मानवत्व है।

Coexistence-based and realisation-based mindset and work-behaviour, is humaneness.

14.20 हर मानव में, से, के लिए स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता के प्रति सम्मान, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन, व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में स्वावलम्बी होना मानवत्व है।

Self-confidence, respect for excellence, balance in talent and personality, sociability in behaviour, and self-reliance in profession - in, by and for all humans, is humaneness.

14.21 ज्ञान, विवेक, विज्ञान रूप में समझे हुए को समझाने में, सीखा हुआ को सिखाने में, किया हुआ को कराने में निष्ठा मानवत्व है।

Dedication in passing on to others what one has understood, has learnt, and has done in the form of knowledge, wisdom and science, is humaneness.

14.22 श्रेष्ठता का सम्मान सहित मानव, देव, दिव्य मानव का त्व सहज परस्परता में पहचान और स्वयं में निष्ठा को व्यक्त करना अर्थात् अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन करना मानवत्व है।

Mutual recognition of innateness of humane humans, godly humans and divine humans, along with respect for excellence, and expression of dedication in oneself, in other words, expression, communication & exposition, is humaneness.

14.23 सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान, सहअस्तित्व में जीवन ज्ञान, सहअस्तित्व में मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान पूर्वक जीने देना, जीना मानवत्व है। यही समझदारी सहज प्रमाण है।

Letting live and living with the knowledge of the holistic view of existence as coexistence, knowledge of *jeevan* in coexistence, and knowledge of the humane conduct in coexistence, is humaneness. This is the evidence of understanding.

14.24 समझदारी के साथ ईमानदारी, ईमानदारी के साथ जिम्मेदारी, जिम्मेदारी के साथ भागीदारी मानवत्व है।

Honesty combined with understanding, responsibility combined with honesty, and participation combined with responsibility, is humaneness.

14.25 समझदारी समाधान, समृद्धि सम्पन्नता सहित उपकार कार्यों को करना मानवत्व है। ज्ञान, विवेक, विज्ञान रूप में समझा हुआ को समझाना, सीखा हुआ को सिखाना, किया हुआ को कराना उपकार है।

To engage in benevolent deeds while accomplished with understanding, resolution & prosperity, is humaneness. Passing on to others what one has understood, has learnt, and has done in the form of knowledge, wisdom and science, is benevolence.

14.26 सदा-सदा धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणा पूर्ण मानसिकता और परंपरा में कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित क्रियाओं में प्रमाणित होना रहना मानवत्व है।

Mindset continually full of fortitude, courage, generosity, kindness, grace & compassion, and being & remaining authentic in physical, verbal, mental, doing, deputing & endorsing activities, is humaneness.

14.27 सुख, शान्ति, संतोष, आनंद सहज निधि को समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व वैभव के रूप में प्रमाणित होना रहना मानवत्व है।

The treasure of happiness, peace, contentment & bliss being & remaining authentic as the grandeur of resolution, prosperity, fearlessness & coexistence, is humaneness.

14.28 कायिक, वाचिक, मानसिक व कृत, कारित, अनुमोदित क्रियाकलापों में समाधान सहज जागृति का प्रमाण मानवत्व है।

The evidence of awakening in physical, verbal, mental, doing, deputing & endorsing activities, is humaneness.

14.29 परिवार संबंधों को पहचानना, दायित्व व कर्त्तव्यों का निर्वाह करना मानवत्व है।

Recognising familial relationships, and fulfilling responsibilities and duties, is humaneness.

14.30 समझदारी-ईमानदारी ज्ञान रूप में विज्ञान-विवेक सहज रूप में, ईमानदारी-जिम्मेदारी चारों अवस्थाओं में संबंधों में पहचान के रूप में, जिम्मेदारी-भागीदारी नियति सहज नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य सहज विधिपूर्वक समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में, से, के लिए प्रमाणित रहना मानवत्व है।

Evidence - of understanding-honesty as knowledge, of science-wisdom as natural, of honesty-responsibility as recognition of relationships in all the four orders, of responsibility-participation as regulation, balance, justice, *dharma*, truth of destiny - in, of and for resolution, prosperity, fearlessness and coexistence, is humaneness.

14.31 सहअस्तित्व मानव परंपरा में, से, के लिए मानवेत्तर प्रकृति के साथ पूरकता, उपयोगिता, ऋतु संतुलन सहज प्रभावीकरण मानव और परस्पर मानव में न्याय व समाधान सहज विधि से समृद्धि वर्तमान में विश्वास परंपरा सहज रूप में प्रमाणित होना मानवत्व है।

Evidence in the form of tradition - of coexistence; of complementariness, usefulness with rest of the nature; of climate balance; of prosperity by way of mutual justice and resolution; of trust in the present - is humaneness.

14.32 हर परिवार समाधान समृद्धिपूर्वक प्रमाणित रहना मानवत्व है।

Perpetual evidence of resolution and prosperity in all families, is humaneness.

14.33 परिवार सहज हर संबंधों को जिम्मेदारीपूर्वक निर्वाह करना मानवत्व है।

Fulfilling all familial relationships with responsibility, is humaneness.

14.34 सार्वभौमता अखण्डता, अक्षुण्णता और प्रबुद्धता, संप्रभुता, प्रभुसत्ता सहज दृष्टि से देखना, समझना प्रमाणित रहना मानवत्व है।

To observe, understand and remain authentic with the perspectives of universality, undividedness, intactness, enlightenment, sovereignty & autonomy, is humaneness.

14.35 सर्वतोमुखी समाधान सहित उपकार प्रवृत्ति ही सहमतियाँ हैं। यही मानवत्व है।

Tendency of benevolence along with comprehensive resolution, is concurrence. This itself is humaneness.

14.36 सार्वभौमता को धरती के सर्व मानव ने स्वीकारा है अथवा स्वीकारने योग्य है। यह मानवत्व सहज सफलता में से के लिए आशावादिता है।

Universality has been accepted, or is worth accepting, by all humans on Earth. This is the hope for success in, of and for humaneness.

14.37 अखण्डता का प्रमाण मानवत्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी है। यह जागृत मानव परंपरा सहज वैभव व मानवत्व है।

Harmony in oneself and participation in the overall system is the evidence of undividedness. This is the grandeur of awakened human tradition, and humaneness.

14.38 जागृत मानव परंपरा में ही मानवत्व का पहचान, निर्वाह, मूल्यांकन, परस्पर तृप्ति, परस्परता में सन्तुष्टि फलस्वरूप वर्तमान में विश्वास (अभयता) स्पष्ट होता है। यह मानवत्व है।

Recognition of humaneness, fulfilment, evaluation, mutual happiness, mutual contentment leading to fearlessness (trust in the present) becomes clear only in awakened human tradition. This itself is humaneness.

14.39 जागृति पूर्ण मानव परंपरा में ही शिक्षा-संस्कार, संविधान, व्यवस्था, संस्कृति, सभ्यता सार्थक रूप में प्रमाण मानवत्व है।

Evidence of meaningful education-*sanskar*, constitution, systems, culture and civility occurs in awakened human tradition. This is humaneness.

14.40 सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण ही है यही मानवत्व है।

Realisation in coexistence, is evidence. This itself is humaneness.

14.41 सहअस्तित्व में जीवन लक्ष्य, मानव लक्ष्य सार्थक होना जागृति है यह मानवत्व है।

Realisation of *jeevan* goal and human goal in coexistence, is awakening. This is humaneness.

14.42 जागृति सहज निर्धारित लक्ष्य सार्थक होने में, से, के लिए निर्धारित दिशाओं, आयामों का समझ विचार कार्य व्यवहार प्रमाणित होना मानवत्व है।

Evidence of understanding, thoughts, work & behaviour related to the directions and dimensions in, by and for realisation of goal(s) determined based on awakening, is humaneness.

14.43 ज्ञान, विवेक, विज्ञान पूर्ण शिक्षा संस्कार परंपरा ही मानवत्व है।

Tradition of education-*sanskar* full of knowledge, wisdom and science, itself is humaneness.

14.44 धरती पर मानव इकाई की अखण्डता का प्रमाण, धरती का भाग विभाग होता नहीं, मानव धर्म अर्थात् सुखी होने के आधार पर राष्ट्र अखण्ड होने का प्रमाण मानवत्व है। अखण्ड राष्ट्र व्यवस्था दश सोपानीय होने का प्रमाण मानवत्व है।

Evidence of undividedness (united-ness) of humans on Earth (Earth itself is indivisible), and evidence of nations being united on the basis of happiness (human *dharma*), is humaneness. Ten-tiered system in, of and for undivided nations, is humaneness.

14.45 मानव सुख धर्मी होने का प्रमाण मानवत्व है।

Evidence of the fact that happiness is human *dharma*, is humaneness.

14.46 मानव शरीर रचना की विधि में असमानता, जीवन स्वरूप और जागृति के आधार पर समानता की समझ व प्रमाण मानवत्व है।

Diversity in composition and appearance of human bodies, and understanding and evidence of similarity in the constitution and awakening of *jeevan*, is humaneness.

14.47 जागृत मानव परंपरा में सार्वभौमता, अक्षुण्णता, निरंतरता के अर्थ में है, यह वस्तु के रूप में सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व ही है यह समझ व्यवहार कार्य मानवत्व है।

Universality in awakened human tradition is for intactness and continuity. In reality, it is the existence in the form of coexistence. Work and behaviour based on this understanding, is humaneness.

14.48 प्रबुद्धता समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी है। यह मानवत्व है।

Understanding, honesty, responsibility & participation, is enlightenment. This is humaneness.

14.49 संप्रभुता में सम्पूर्ण प्रबुद्धता को परंपरा के रूप में विधि और व्यवस्था सहज अर्थ में प्रमाणित करना मानवत्व है।

To evidence complete enlightenment in the form of tradition in autonomy for law and system, is humaneness.

14.50 जागृत मानव परंपरा में प्रभुसत्ता प्रबुद्धता पूर्ण विधि सहज सार्वभौम व्यवस्था रूपी सत्ता ही अक्षुण्ण है। यह मानवत्व है।

Universal system (as omnipotence) aligned with the way of sovereignty and enlightenment, is intact in awakened human tradition.

14.51 मूलत: प्रबुद्धता का लोकव्यापीकरण ही मानवत्व है।

Basically, dissemination of enlightenment itself is humaneness.

14.52 सर्व मानव का मानवेत्तर प्रकृति यथा पदार्थ, प्राण, जीव अवस्थाओं में स्थित वस्तुओं के साथ नियम, नियंत्रण, संतुलन को बनाये रखना मानवत्व है।

Maninatining law, regulation and balance with entities belonging to the rest of nature (material order, plant order and animal order), by all humans, is humaneness.

14.53 आवर्तनशीलता एवं ऋतु संतुलन नियम को बनाये रखना मानवत्व है।

Maintaining cyclicity and not disturbing the natural climate, is humaneness.

14.54 अनुपातीय रूप में खनिज वनस्पतियों का सुरक्षित किया जाना मानवत्व है। दश सोपानीय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था, यथा विश्व परिवार सभा से परिवार सभा का दायित्व व कर्तव्य है। परिवार सभा से यह विश्व राज्य परिवार सभा का कर्त्तव्य और दायित्व है। शिक्षा में इसका सार्थक अध्ययन आवश्यक है। यह मानवत्व है।

To secure minerals and vegetation (for future generations) by their proportional use, is humaneness. It is the responsibility and duty of the ten-tier family-based self-governance system. In other words, it is the duty and responsibility of all the tiers from family council to world family council. Its meaningful study in education is essential. This is humaneness.

14.55 मानवीय शिक्षा-संस्कार का दायित्व-कर्त्तव्य परिवार सभा से विश्व परिवार सभा में दायित्व-कर्त्तव्य रूप में निहित रहता है। इसका निर्वाह योग्य होना मानवीयता है।

Duty & responsibility of humane education-*sanskar* is inherent as responsibility & duty of all the tiers from family council to world family council. Ability to fulfil this is humaneness.

14.56 शिक्षा-संस्कार सर्वतोमुखी समाधानकारी ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्न होने का प्रमाण मानवत्व है। यह परंपरा का कर्त्तव्य हर मानव सन्तान का अधिकार है। यह मानवत्व है।

Evidence of accomplishment of education-*sanskar*, and of knowledge, wisdom & science leading to resolution, is humaneness. This is the duty of tradition and the right of each and every human offspring. This is humaneness.

14.57 जागृत शिक्षा परंपरा अखण्ड सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में सम्पन्न होना मानवत्व है।

Utilisation of humane education-*sanskar* for undivided society & universal system, is humaneness.

14.58 अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन ही मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद है। इस पर शिक्षा संस्कार में सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान बोध, जीवन ज्ञान बोध, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान बोध परंपरा होना मानवत्व है।

Existence based human centred contemplation itself is Madhyasth Darshan Co-existentialism. Tradition of *bodh* of holistic view of existence as coexistence, *bodh* of knowledge of jeevan, and *bodh* of humane conduct in education-*sanskar,* is humaneness.

14.59 शिक्षा में, से, के लिए व्यापक वस्तु रूपी साम्य ऊर्जा में सम्पूर्ण एक-एक वस्तु सम्पृक्त ऊर्जा सम्पन्न नित्य वर्तमान क्रियाशील विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति के रूप में होने की परम सत्य सहज अवधारणा सहित अनुभव सम्पन्न रहना मानवत्व है।

Each and every unit is ever-present, saturated, energised and active in equilibrium energy (which is the omnipresent reality), and is in development progression, developed, awakening progression or awakened - accomplishment of conception and realisation of this ultimate truth, is humaneness.

14.60 सहअस्तित्ववादी शिक्षा संस्कार पूर्वक प्रत्येक एक विद्यार्थी अपने ‘त्व’ सहित व्यवस्था है। समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने का अध्ययन व प्रमाण मानवत्व है।

Each and every student is in harmony with their ‘ness’ by way of co-existential education-*sanskar*. Study and evidence of participation in the overall system, is humaneness.

14.61 जागृत मानव सन्तानों का सहअस्तित्व सहज वैभव को अध्ययनपूर्वक जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने योग्य होने में बोध पूर्ण होना मानवत्व है।

Completeness of *bodh* in all human offsprings by way of study for enablement to know, believe, recognise and fulfil the grandeur of coexistence, is humaneness.

14.62 मानवीय शिक्षा-संस्कार में सहअस्तित्व नित्य प्रमाण होने के लिए बोध सम्पन्न होना, करना, कराना, करने के लिए सहमत होना मानवत्व है।

Becoming accomplished, and facilitating & endorsing accomplishment, of *bodh* for eternal evidence of coexistence in humane education-*sanskar,* is humaneness.

14.63 शिक्षा में मानवत्व का बोध होना सर्व मानव सन्तान में, से, के लिए मौलिक अधिकार है। यह मानवत्व है।

In education, becoming accomplished with *bodh* of humaneness is the fundamental right in, of and for all human offsprings.

14.64 मानवत्व का प्रमाण मानवीयता पूर्ण आचरण ही है।

Humane conduct is indeed the evidence of humaneness.

14.65 मानवत्व (मानवीयता पूर्ण आचरण) जागृत मानव सहज परिभाषा व्यवस्था और लक्ष्य को सार्थक रुप प्रदान करना, करने के लिए सहमत होना हर मानव में, से, के लिए अधिकार है।

To give, and endorse the giving of, an actual form to humaneness (humane conduct) and definition, system & goal of awakened humans is right in, of and for all humans.

14.66 परिभाषा संगत होने का तात्पर्य मन:स्वस्थता सहज मानसिकता सहित मनाकार को साकार कर प्रयोजन सहज परिवार आवश्यकता से अधिक उत्पादन कार्य में प्रमाणित रहने से है। यह मानवत्व है।

Meaning of being consistent with definition is - evidence of the healthy mindset while materialising ideas, and producing more than the purposeful needs of the family. This is humaneness.

14.67 व्यवस्था संगत होने का तात्पर्य परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी सहित दश सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी कृत, कारित, अनुमोदित प्रमाण से है। यह मानवत्व है।

Meaning of being consistent with the system is - evidence of participating (doing, delegating, endorsing) in the ten-tier system. This is humaneness.

14.68 लक्ष्य संगत होने का तात्पर्य समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज आचरण पूर्वक प्रमाणित होने से है।

Meaning of being consistent with goal is - evidence of resolution, prosperity, fearlessness & coexistence by way of conduct.

14.69 मानव ही बहुआयामी प्रवर्तनशील व प्रमाण होने के कारण ही अनुबंध पूर्णता के अर्थ में निबन्ध व प्रबन्ध कार्य सार्थक है। यह मानवत्व है।

As humans are versatile and evidence in multiple dimensions, all document and management work is meaningful for completeness of agreement (bond, relationship). This is humaneness.

14.70 संबंधो को जानना, मानना,पहचानना, निर्वाह करना मानवत्व है।

Knowing, believing, recognising and fulfilling in relationships, is humaneness.

14.71 ज्ञान, विवेक, विज्ञान पूर्ण संबंधों में, से, के लिए जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने के रूप में संकल्पित होना ही अनुबंध है। यह मानवत्व है।

Being resolute for knowing, believing, recognising and fulfilling in, of and for relationships by way of knowledge, wisdom and science, is agreement (bond, relationship). This is humaneness.

14.72 संबंध नित्य वर्तमान, वर्तमान अस्तित्व, अस्तित्व सहअस्तित्व, सहअस्तित्व वैभव, वैभव यथा स्थिति गति, मानव परंपरा में स्थिति गति समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी वस्तु व प्रयोजन यही संबंध ज्ञान-विवेक-विज्ञान सम्पन्नता है। यह मानवत्व है।

Relationship (bond) is eternally present, the present is existence, existence is coexistence, coexistence is grand, grandeur is state & motion, state & motion in human tradition is understanding, honesty, responsibility, participation, reality & purpose, this indeed is accomplishment in relationship (bond) and knowledge-wisdom-science. This is humaneness.

भूमि: स्वर्गताम् यातु, मनुष्यो यातु देवताम् ।

धर्मो सफलताम् यातु, नित्यम् यातु शुभोदयम् ॥

- ए. नागराज

May Earth become heavenly, and humans become gods,

May *dharma* prevail, and goodness arise forever.

charts below

मूल ग्रंथ

“अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन”

बनाम

“मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद”

दर्शन (मध्यस्थ दर्शन)

· मानव व्यवहार दर्शन

· मानव कर्म दर्शन

· मानव अभ्यास दर्शन

· मानव अनुभव दर्शन

वाद (सहअस्तित्ववाद)

· व्यवहारात्मक जनवाद

· समाधानात्मक भौतिकवाद

· अनुभवात्मक अध्यात्मवाद

शास्त्र (अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन)

· व्यवहारवादी समाजशास्त्र

· आवर्तनशील अर्थशास्त्र

· मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान

संविधान

· मानवीय आचार संहिता रूपी मानवीय संविधान सूत्र व्याख्या

परिभाषा

· परिभाषा संहिता

अन्य

· विकल्प एवं अध्ययन बिंदु

· आरोग्य शतक

मध्यस्थ दर्शन पर आधारित उपयोगी संकलन

परिचयात्मक संकलन

· जीवन विद्या एक परिचय

· दिव्य पथ (जीवन परिचय – श्रद्धेय श्री ए. नागराज)

सहयोगी संकलन

· संवाद भाग - 1

· संवाद भाग - 2

प्रकाशित पुस्तक प्राप्ति ईमेल :

books@divya-path.org

प्रकाशितएवं अप्रकाशित मूल प्रति डाउनलोड :

www.madhyasth.org

सामान्य पूछताछ :

info@divya-path.org

Madhyasth Darshan Information Portal /  
 ‘जीवन विद्या’ गतिविधि जानकारी :

www.madhyasth-darshan.info